FINAL REPORT

ON THE

SURVEY AND SETTLEMENT OPERATIONS

IN THE

CHAMPARAN DISTRICT,

1892 to 1899.

C. J. STEVENSON-MOORE, E4G., 1 C 8., BETTLEMENT OFFICER, NORTH BIHAR



Exicuita:

BENGAL SECRETARIAT PRESS.

1900.

Published at the BENGAL SECRETARIAT BOOK DEPOT, Writers' Buildings, Calcutta.

OFFICIAL AGENTS.

In India-

THACKER, SPINK & Co., Calcutta.
W. NEWMAN & Co., Calcutta.
THACKER & Co., Bombay.
HIGGINBOTHAM & Co., Madras.

SUPERINTENDENT, AMERICAN BAPTIST MISSION PRESS, Rangoon.

In London -

E. A. Arnold, 37 Bedford Street, Strand, W.C. Constable A. Co., 2 Whitehall Gardens, S.W. Sampson Low, Marston & Co., St. Dunstan's House Fetter Land, E.C. P. S. King & Son, 9 Bridge Street, Westminster, S.W. Luzao & Co., 46 Great Russell Street, W.C. Kegan Paul, Thench, Trodung & Co., Charing Cross Road, W.C. B. Quabitch, 15 Piccadilly, W.

On the Continent—
FRIEDI (NDER & SORN, 11 Carlstrasse, Berlin, Orro Harrissowitz, Leipzig, Karl, W. Hiersemann, Leipzig, Friert Leroux, 28 Ruo Bonaparte, Paris, Martinis Nathoff, The Hagno.

INDEX TO CONTENTS.

| | | | | | Para. | Page. |
|---|----------------|--------------|---------------|-----|----------------|-------------|
| 4.12.5 | | | | | | |
| Patroduction | *** | ••• | *** | *** | 1 | 1 |
| PA | RT I.— | GENERA | L. | | | |
| A Company | T | EARLY HIST | MAN | | | |
| | 1 8 8 1 1 1 | MUNIT STATE | 1081 111 | *** | *** . * * | _ 1-8 |
| First glimpees Ladent landmarks | ••• | ••• | *** | | 2 | 1-2 |
| The Buddhistic Period | ,,,, | •• | *** | | . 8 | * • 3 |
| Sempust Bajes | | ••• | ••• | | | 2 2 |
| Che Muhammadan Per | riod | ••• | *** | | 6 | 2-8 |
| Area | ••• | ••• | ••• | ••• | 7 | 3 |
| CEAPTER II.—PHY | YBICAL FE | ATURES ANI | Topograph | ¥ | | 8-13 |
| Tivaleal features | | | | 1 | | • |
| The three parganas—M | Cehni, Sen | raon, Maih | AUA | ::: | 9-12 | 3 8-4 |
| Rivers | ••• | | ••• | | 18-15 | 4-5 |
| Lakes | • • • | ••• | *** | | 16 | 5 |
| * | Bai | ' ls. | | | 1 | • |
| Jollector's account in 1 | R15 | | | | | |
| Vorthern tract | 07.0 | ••• | ••• | ::: | 17-18 19-20 | 5-6 Q |
| louthern ,, | .,, | ••• | ••• | | 21-23 | 6-7 |
| he importance of a sea | | | • | ••• | 24-25 | 7 |
| Repairs for neglect of i | nrigation | ••• | • ••• | ••• | 26-27 | 7 |
| | Rain | fall. | | | | |
| he normal district rain | | ••• | • | | 28-30 | 7-8 |
| he subdivisional rainfo he sadar rainfall for th | | 171 TOANS | ••• | ••• | 31 | 8 |
| he rainfall very capric | | years | ••• | | 82-88 84-85 | 8-9 9 |
| ependence of agricultu | re on the | rainfall | *** | | 86 | .9 |
| | Clima | ile. | | | | |
| ublic Health | | | | | 97 90 | 0.10 |
| emperature | | ••• | • • • | ``` | 87-89 40-41 | 9-10 10 |
| | Communic | • eddana | | | | |
| N. and Control | | • | | | | |
| ete of communications code in 1000 | | | f the century | | 42-48 | 10-11 |
| n in 1830 | ••• | ••• | ••• | | 41-46 | 11 11 |
| in 1845 | | ••• | ••• | | 47-48 49 | 11-12 12 |
| , in 1876 | | *** | ••• | | 60 | 12 |
| count expenditure on re | oeds | *** | ••• | ••• | 51 | 12 |
| nilways | mintrioner | 208 | ••• | ••• | 52 | 12 |
| spends for new railwa | yı | ••• | ••• | | 58 54 | 12 18 |
| attrays | ••• | ••• | *** | | 55 | 18 |
| ATTER | ••• | • • | ••• | ••• | 66 | 18 |
| stel communications | *** | ••• | *** | • | 57 56 | 18 • 18 |
| mining | *** | ••• | *** | | 69 | 18 |
| ORAFIER III.—Porus | LATENS A | ND Classe | 18 501 | | | |
| | Achtouls | rube | IN RELATION | 70 | | 18-20. |
| | | | | *** | ***** | |
| ما الما الما الما الما الما الما الما ا | | | | ı | | • |
| tir minutes | lation sin | m 1679 | *** | | 60 61 | 18-14 14 |

| | | | | | Para. | Page. |
|---|---|---|-------------|--------------|---|--------------|
| Features of the 189 | 1 consus - exper | naion of none | ulation | | 63 | 14-1 |
| Density of population | | | 111 | | 64 | 1 |
| The trend of agricu | | | ••• | | 65 | 15-1 |
|)bstacles to a correct | | | ••• | | 66-67 | 10 |
| Estimate of populat | ion dependent | on agricultui | re | • • • | 68 | 10 |
| Agricultural popula | | | | | 69-71 | 16-1 |
| pecific investigation | | | ••• | •• | 72 73 | • 18-1 |
| The position of relig | | 108 | • • | | 74 | 1: |
| Teponderance of fe Foreigners and imn | | ••• | • • | . | 75 | 1 |
| the Problem of Cha | mparan | | | | 76.77 | 19-2 |
| CHAPTER IV A: | n Historical S | | | PENUB | | 20-4 |
| | INIBITATION IN | OHAMPARA | | | | |
| ntroductory | • • • | , • | ••• | ••• | .78 | 2 |
| (i) | The Muhamma | idan Period. | | | | |
| The revenue jurisdi | ction of Sirkar | Champaran | ••• | | 79 | 2 |
| l'ho Ain-i-Akbari | • • • | | ••• | | 80-81 | 20-2 |
| l'odar Mull's assessi | | | | ••• | 82 | 2 |
| Thamparan in Akb | | | | | 83-85 | 2 |
| The agricultural c | | ran and Cl | iamparan | under | 86 | _ |
| Akbar compare Codar Mall's assess | | | ••• | . | 87-88 | 21-2 |
| Aurangzib's assessa | | | | | 89 | 21-2 |
| hmad Shah's asses | | | | <u>.</u> . 1 | 90 | \tilde{z} |
| he distinction bety | | | | } | 91 | 22- |
| and Revenue Adu | | isted into par | iods | } | 93 | ٠ 2 |
| | Muhammadans | | | 1 | 93 | 2 |
| | -Early English | | | .0 | | 2 |
| | The Permanen | | | 1 | 94-95 | 23-2 |
| | -Resumption of The 1st Profess | | | •••• | 96 97 | 2 |
| Bixth Period- | -Modern times | HOMAI TECVEN | no isin vey | ••• | 98 | 24-2 |
| Method of trea | | | • • | | 99 | 24-2 |
| (ii) E | Early English, 17 | 765—1790 2 | A.D. | | | |
| The Bettia Raj | *** | | | | 100-101 | 2 |
| The original Bettia | | | | | 102 | 25-2 |
| The revenue in the | | | AD. | • | 103-104 | 2 |
| Nawab Hoshiyar Je | ing's Rogister, | 1773 A D. | | . ' | 105 | 2 |
| Demand of 1582 an | at 1446 compare | (11) | | • • : | 106-108 | 26-2 |
| lugal Keshwa super The land revenue, I | | | • | ••• | 109-110 111 | 27-2 |
| in in in | ,, 17 | 790 A.D. | ••• | ••• } | 112 | 28-2 |
| | | | | 1 | | 29-3 |
| The Decembral Sett | iement, 1, 24 f | reminary i | ndmries | ••• { | 113-115 | 29-3 |
| Che revenue deman Che settlement-hold | | ennial Settle | meut) | • • • | $\begin{array}{c} 118 \\ 117 - 120 \end{array}$ | 30-3 |
| | The Perman | nt Settlement | | 1 | 22. 247 | |
| | - | | | 1 | 121-122 | 8 |
| The Third Period | hod of inquire | | • . | | 123 | 8 |
| | stried demand | ••• | | ••• | 124 | 8 |
| The Collector's met The permanently-se | 1582, 1773 and | 1793 A.D. | compared | | 125-136 | 32-3 |
| The Uollector's met The permanently-sc The settlements of | | 1 1790 A D. | | } | 127-129 | 8 |
| The Collector's met The permanently-sc The settlements of The incidence of re | venue, 1582 and | | -0.0 | | 130 | 33-8 |
| The Collector's mot The permanently-se The settlements of The incidence of re The incidence of re- | venue, 1582 and venue, tappa b y | tappa, in 1 | 790 | ••• | | } |
| The Collector's mot The permanently-se The settlements of The incidence of re The incidence of re Aspects of the Fern | venue, 1582 and venue, tappa by nanent Settleme | r tappa, in 1° | 790 | ••• ; | | |
| The Collector's mot The permanently-se The settlements of The incidence of re The incidence of re Aspects of the Pern The settlement-h | venue, 1582 and venue, tappa by nanent Settleme olders, real proj | r tappa, in 1° | | •• | 131-132 | 3 |
| The Collector's mot The permanently-se The settlements of The incidence of re The incidence of re Aspects of the Pern The settlement-h Defaults for re | venue, 1582 and venue, tappa by nanent Settleme olders, real prop venue | tappa, in 1 ent— entetors | ••• | ••• | 131-132 133-134 | 31-3 |
| Embarrassmen | venue, 1582 and venue, tappa by nanent Settleme olders, real proj | tappa, in 1 ent— enetors ar Estate | | ••• | 131-132 | 31-3 31-3 |

| | | | | | Para. | Page. |
|--|---------------|---------------|----------------|----------|--------------------|-------------|
| The Collector's view | on the char | acter of lane | dlords and c | ondition | | |
| of tenants | *** | ••• | | | • 139 | 35-3 |
| Redemption of land r | evenue | ••• | | | 140 | 3 |
| he chief crops | | | | • • • • | 141 | 3 |
| A change of sentimen | | Regulation | VII of 179 | 9 | 143 | 3 |
| logulation V of 1819 | 6.1.1.1.0 | | 6.41 3 | | 143 | 3 |
| he Collector's report | or 1816 or | the resour | oos of the d | letrict | 144 | 3 |
| Regulation XII of I | oi. Aite | mbred teor | Bathracton | 1 | | 3: |
| agency | ••• | ••• | • • • | ••• | 145 | 0 |
| (ir) 2 | The Resump | tion Proceed | lings. | • 4 | | • • |
| larly attempts | ••• | | | | 146-147 | 36-3 |
| Resumption based on | | rvay and sa | ttlement | ** | 148 | 33 |
| be principles of resu | | | · · · | | 149 | 3 |
| rogress and procedu | ro | ••• | | ••• | 150-152 | 38-39 |
| oints of interest | • • • | •• | ••• | | 153 | 3 |
| rivileged rents | | | ••• | | 154 | 39 |
| budkesht and pahike | | • • • | | | 155- | 39 |
| he terms of resumpt | ion settlem | ont | | | 156 | 35 |
| onclusions of the pro | ceedings ar | nd the result | ts | | 107 | 39-40 |
| | (v) Profess | onal Sure y | ·. | | | • |
| he revenue survey of | | | | | 158-159 | 4(|
| acidence of revenue, | | 01845 A | D | • • • • | 160-161 | 41 |
| ssorsed area of 1790 | and 1845 c | ompared, te | iona by tan | pa | 162-163 | 41-45 |
| he diara survey of I | 865 | | -t-t-a of cut. | 17. | 164-165 | 42 |
| emporarily-settled E | | ••• | • | | 166-167 | 42-48 |
| overnment Estates | | ••• | • | ::: | 168 | 48 |
| | (vi) Mode | rn Era. | | | | |
| hief Epactments | , | | | | 100 | 4: |
| evenue sales | • • | • • | ••• | ••• | 169 170 | 4: |
| ertitions | | | ••• | ••• | 171 | 43-44 |
| and registration | | | ••• | | 172-173 | 44 |
| PART IIT | HE PRES | ENT OPE | RATIONS | , | | |
| CHAPTER I | .— Ркоскот | RR AND P | R ОО К ИБЯ | | | 45-95 |
| oport has restricted | | | | | | 41 |
| aff | ٠٠٠ | ••• | ••• | ••• | 174 | 46 45 |
| otifications | ••• | ••• | | | 177 | 45 |
| | m | 0 | *** | | ••• | -310 |
| | TRAVERSE | OURVEY. | | | | |
| nnual Progress | • • • | *** | ••• | | 178-179 | 10 |
| CADASTRA | L SURVEY | AND KHAN | APURI. | | | |
| nnual Progress | ••• | | ••• | | 180-183 | 46-47 |
| ocal agency | 16.11 | | | | 184-177 | 47-48 |
| atry of field rates and | a Beld TODU | · | | | 188-192 | 48-49 |
| itry of reut and state | ns or KURDS | _ | ••• | ••• | 193-197 | 49-50 |
| rvey of big villages | ••• | ••• | • • • | ••• | 198-199 | 59-51 |
| e compilation of the | | the field | ••• | • • • | 200-204 | - 51 |
| straction of Areas in | the field | MOI DOIL | | ••• | 205 206-207 | 52 52 |
| rvey and record-write entry of transfers | ting for vill | age sites an | d homestes | lands | 208-209 | 52-53 |
| Mortgages | n't mouthaf | e or sais | | | 010 011 | 10 |
| Sales | ••• | • • • | | ••• | 210-211 | 53 |
| strict Board roads | • • • • | • • • | • • • | | 212-213 214-216 | 53 53-54 |
| unicipal survey | ••• | ••• | • • • | • • • | 214-216 217-225 | 54-55 |
| oundary disputes | • • | | | ••• | 226-227 | 55-66 |
| | | | | | | */ U = U U |

| | Para. | Page. |
|---|--------------------|--------------|
| ATTESTATION. | • | , |
| rogress | 228 | |
| he procedure of record-writing, and attestation in the same | | |
| sonson criticised | 229 | ້ 5€ |
| he attestation programme, year by year | 280-231 | 56-57 |
| he Hardia and Murla agreements | 232-233 | 57 |
| he Malhuban rents | 234 | 57 |
| ogus midillemen | 235 | 57-58 |
| roprietors acquiring raiyati rights | $\frac{236}{237}$ | 58 58 |
| he season J896-97. Progress checked by the famine | 238 | 58 |
| hief difficulty—The apathy of the raiyats in regard to their | 200 | 00 |
| own interests | 239-240 | 58 |
| rooedure | 241 | 59 |
| oints of interest | 242 | 59 |
| he Bettia Raja's saltpetre mahal | 243-247 | 59-60 |
| mbankment cess | 248-249 | 60-61 |
| lights in trees | 250-255 | 61-63 |
| he relative rights of landlord and tenant in trees | 256-258 | 63 |
| CARR-WORK. | | |
| Settlement of fair rents under section 104 of Bengal Tenancy Act. | | |
| Extent of the work—Large excess areas | 259-261 | 63-6 |
| noidence of section 104 cases on different holdings considered | 262 | 6 |
| The attitude of the Bettia Raj | 263 | 64-6 |
| ompromises | 264-265 | 6/ |
| The power of Revenue Officers to reject compromises asserted | 266-267 | 66 |
| Sir Charles Elliott's opinion on compromises | 268 | 6 |
| Ar. Colvin's procedure | 269-271 | 60 |
| The Lankaria-Sani test case: Mr. Colvin's judgment | 272-274 | 67-6 |
| Defects of Mr. Colvin's procedure | 275-281 282 | 67-6 6 |
| The Turkaulia case | 283-285 | 68-69 |
| he Legal Remembrancer's opinion on compromises | 286 | 6 |
| Ar. Lyon's protest against this opinion | 287-288 | 69-7 |
| The Invourable decision of the High Court | 289-290 | 7 |
| Present procedure in cases compromised | 291 | 7 |
| ontested cases; the size of the laggi-The Pipra case | 292-293 | 70-7 |
| Applications for increased rent in excess area. The case of | | _ |
| Bettin Raj | 294 | 7 |
| Prevailing rate cases. Procedure | 295-297 | 7 |
| Cases based "on rise in prices" No cases under section 30, Bengal Tenancy Act, based on | 298-299 | 7 |
| fluvial action Dengai Tenancy Act, pased on | 300 | 7 |
| Some cases considered | 301-303 | 72-7 |
| Camindar's difficulty in writing jamabandis after fair-rent | | |
| settlement | 304 | 7 |
| Court-fees in section 104 cases | 305 | 73-7 |
| Fair-rent settlement completed before amending Act of 1898 | 306 | 7 |
| Procedure in cump. Fair-rent schedule | 307 | 74-7 |
| Appeals | 308 | 75 7 |
| Stability of rents officially fixed and recorded | 309 | 75-7 |
| Statistics of fair-rent work | 310-315 316-317 | 76-7 77-7 |
| The fair-rents settled considered | 318-319 | 7 |
| Case-work under section 105 of Bengal Tenancy Act of 1885. Summary objections. | | |
| Objections uninnertant in Charmaran | 320 | 7 |
| Pechnical difficulties | 321-323 | 7 |
| The number of objections | 323 | 7 |
| Objections classified | 324 | ě |
| | 325-326 | 80-8 |
| Proportion of objections | | |

| | | | | | | Para. | Page |
|----------------------------------|-------------|---------------|-------------|--------------|----------|-------------|--|
| Case-u | ork under | acction 106 | of Bengal | Tenancy A | rt. | | officialist nathering has a register of the desired and the second |
| Mha amanat | .4 | | - | • | | 000 | 00. |
| The amount of Percentage of | | o holdings | ••• | ••• | ••• | 329 330 | 82- |
| The nature of | | o notataga | ••• | • • • • | •• | 331 | 83-4 1 |
| Disputes abou | | | ••• | *** | ••• | 332-334 | 84- |
| Ditto | роввевніс | | | | ••• | 335-337 | 85-8 |
| Ditto | status | ••• | | | 1 | 338-340 | 86-8 |
| | | ••• | ••• | ••• | | 341 | 8 |
| | | ••• | ••• | | | 842 | |
| udicial proce | | | | ward distr | | 343 | 87- |
| | D | RAPT PUBLI | CATION. | | | | |
| Progress | | | | | | 344 | |
| Staff | • • • | ••• | • • • | ••• | *** ' | 345 | |
| D | •••• | ••• | ••• | ••• | *** | 346-349 | 88-8 |
| 10064410 | | | | ••• | ••• | 010-013 | 00*0 |
| | F | NAL PUBLIC | CATION. | | | | |
| rogress | •• | •• | ••• | ••• | | 350 | 8 |
| Piece-meal pr | blication | ••• | | ••• | | 851 | (|
| inal Publica | | | ecords ultr | a vires | } | 352 | |
| | | OFFICE W | ork. | | | | |
| Linisterial sta | a | | | | | 352 | • |
| ummary of o | | ••• | *** | ••• | ••• | 363 | 90-9 |
| anglish office | mice work | ••• | ••• | • • • | ••• | 354 | |
| loord-room | | | • • • | • • • | ••• } | 355 | Ę |
| Lead Peshkar | 'e Departr | nant | • • | • • | *** ; | 356 | . |
| 'he Sarishtad | | | • • • | ••• | ••• | 357-358 | 91-9 |
| Badars miste | | CIncir | ••• | ••• | • • • | 359 | 92.0 |
| omputation of | | ry of cost | ••• | ••• | *** | 360 | () ~ () () |
| he settlemen | | | | tor's ray or | Lecon | 301 | 93-9 |
| faintenance o | f the Reco | rds | *** | | 1-100111 | 362-366 | 94-9 |
| | | | | | 1 | | |
| | Снаг | TER 11S | FATISTICS | ••• | • • • | | 95-14 |
| he prescribed | statistical | statementa | | | | 367 | 95-9 |
| otal area of | | | | | | 368 | 9 |
| rea surveyed | | ••• | | | | 369-370 | 96-9 |
| he fluctuation | g element | | | | 1 | 371 | 9 |
| he large area | of the dis | trict conside | ered | ••• | | 372 | ß |
| he area of th | | | | ••• | | 373 | 97-9 |
| he area of th | anss | ••• | | • • • | } | 374 | IJ |
| he area of vi | llagos | | | *** | | 375 | 98-9 |
| he size of hol | | ••• | | ••• | ! | 376 | 9 |
| he size of plo | its | | | , | bm (| 377 | y |
| catistical state | ement of a | gricultural | land units | thana by | thona | 378 | 9 |
| he large dim | | | | ••• | ••• | 379 | 9 |
| | | Cultivated a | rea. | | | | |
| معدم المشامان | | | | | | 24.2 | 60.10 |
| istrict area, c he cultivated | and uncul | tivated area | s of Cham | paran and | neigh- | 880 | 99-10 |
| bouring d | | | | ••• | | 381-382 | 10 |
| egree of cult | vation and | I density of | populatio | n compaço | d | 8 83 | 10 |
| hana percent | ages of cul | tivation cor | npared | • • • | ••• } | 3H4 | 10 |
| ultivation of | | | | ••• | ••• | 385 | 10 |
| dvance of cul | tivation it | Champara | n | *** | ••• | 386-387 | 10140 |
| The evide | noe of thal | chast record | 8 | *** | ••• | 388-389 | 102-10 |
| FEEL on many | ence of th | e old Raj j | amahandia | and that | records | | |
| | umed mal | | | | | 390-391 | 103-10 |

| | | | | Para. | Page. |
|---|-----------------|--------------|-----------|----------------|---|
| | valed area. | | | | ang dan di Miliando ang dinang mga mga mga mga mga mga mga mga mga mg |
| | - | | | 900 | 1.4 |
| Foneral Furrent fallow | • • • | *** | | 392 3£3 | · 10 |
| Current fallow | • • • | ••• | ••• | 394 | 10 |
| Expansion of oultivation | • • | •• | | 395-396 | 104-10 |
| Chana statistics | ••• | | | 397 | • 10 |
| Details of the cultivable area | | | | 398 | 10 |
| Old fallow | | | . | 399 | 10 |
| Mungo groves | , | | .] | 400 | 106-10 |
| | | | | | |
| Area unfit | for cultivation | 1. | | | |
| Vater | *** | | | 401 | 10 |
| illage sites | • • • | | | 402 | 10 |
| ummary | *** | | | 403 | 10 |
| , | W | | | | |
| The | Harvests. | | } | | |
| larvests and crops in Champe | aran | | | 404 | 10 |
| be relative importance of t | he three har | vests in Cha | mparan | | |
| compared with neighbour | ing districts | | ! | 405-406 | 108-10 |
| he relative importance of the | three harve | sts in the d | lifforent | ĺ | |
| thanas of Champaran | | | . 4 | 407 | 10 |
| he two subdivisions compare | d | • | | 408 | 109-11 |
| he thanas compared. Autur | | • | | 409 | 11 |
| Vintor harvest | | • • • | • • • | 410 | 110 11 |
| pring harvest | • • • | • | • | 411 | 110-11 |
| rrigation | 1 | | • • | 412 | 11 |
| The | Crops. | | | | |
| and mane Dina | | | | 410 | 11 |
| ood-orops—Rico ther food-graius, including p | nlana | • | •• | 413 | 111-11 |
| | | ••• | •• ; | 414 415 | 111-11 |
| heat, gram, marua, de. | ••• | | • • • • • | 416 | 11 |
| on-food crops—Indigo, oil-se | eds, opium | | ••• ; | 417 | 11 |
| seellaneous non-food crops- | | | | 418 | îi |
| abulated scale of percentages | of food end i | ion-food cro | ps | 419 | 11 |
| he crops in 1847 | | · | | 420 | 11 |
| elative importance of the chi- | ef food-orops | | an and | | |
| neighbouring districts con | | | | 421-423 | 11 |
| he vast rice area in Champar | an | , | | 424 | 114-11 |
| stent of non-food crops in | _ | | bouring : | 105 100 | 2.4 |
| districts compared | * * * | *** | | 425-426 | 11 |
| nana statistics of food-crops - | ••• | ••• | . } | 427 428-430 | 116-11 |
| arley | ••• | • • • | | 431 | 110-11 |
| aize | | | i | 432 | ii |
| odo | ••• | | | 453 | îi |
| heat | *** | | } | • 434 | 11 |
| ram | | • | . } | 435 | 11 |
| her food grains | ••• | | } | 436 | 117-11 |
| some atatistics of non-food or | ops | - | ••• | 437 | 113 |
| THE RESIDENCE OF HOR-1000 CO. | ••• | ••• | | 438 | 118-11 |
| digo | | • • • | ••• [| 439 | 11 |
| digo | · * | | | AAII ! | 11: |
| digo | ••• | ••• | ••• | 440 | |
| digo | ••• | ••• | ••• | 441 | 11: |
| l-seeds | ••• | ••• | ••• | 441 442 | 11: |
| digo l-seeds natching grass | ••• | | ••• | 441 | 11: |

| | | | | | Para. | Page. |
|--|------------------|-------------|-------------|----------|--------------------|---|
| • | Igricultural | Stock. | | | | • |
| Imount of live stock la | - | | ailable gra | zine | 445 | 119-12 |
| gricultural stock, than | | | | | 446 | 13 |
| gve-stock | ••• | | *** | | 447 | 19 |
| loughs and carts | ••• | | | ••• | 448 | 12 |
| ive-steck and population | on compared | ••• | ••• | ••• | 449 | 12 |
| filch kine | *** | • • • | • • | •••• | 450 | 12 |
| heep and goats | ••• | • • • | ••• | ••• { | 451 | 12 |
| ranght cattle tock, purely agricultu | ral of Char | THATAN A | nd other o | listmote | 452 | . 12 |
| compared | iai, or Chai | mlanon n | nd other t | | 453-454 | 12 |
| he than statistics for s | tock, purely | agricultu | ral | | 465 | 122-12 |
| he number of acres per | | | | | 456 | 12 |
| • | Sta tu s. | | | | Ì | |
| | | | | | , e ~ | un el |
| erij abstract | a land | ••• | • • • | ••• | 457 | 14 |
| aisar-i-Hind, or Crown | | • • • | *** | ••• | 458 459 | • 12 12 |
| he occupied area | AU 13HO | ••• | ••• | ••• | 460 | 12 |
| ropricturs' private land | section 116 | . Bengal | Tenancy A | .ct | 461 | • 11 |
| direct cultivation of | | | | | 462 | is |
| direct cultivation of | | | *** | | 463 | 12 |
| aiyats at fixed rates (s) | | | ••• | | 464 | 12 |
| ettled, or occupancy ra | iyats | | *** | j | 465 | 12 |
| on-occupancy raiyats | ••• | ••• | ••• | ••• (| 466 | 12 |
| ent-free holders | • • • | • • • | ••• | | 467 | 12 |
| oder-raiyats | | *** | ••• | ••• | 468 | 12 |
| coupancy the most im | | | | •••• | 469 | 12 |
| he relative areas in occ he thana statistics of s | | mmmiora s | nd tenants | ••• | 470-471 472-473 | $\begin{array}{c} 12 \\ 126 - 12 \end{array}$ |
| : | The Raiyati c | arca. | | | | |
| aiyats at fixed rates, a | nd settled ra | ivats | | | 474.477 | 128-12 |
| on-occupancy raigats | | ** | | | 478-479 | 129-13 |
| out-free holders | ••• | | *** | | 480 | 13 |
| nder-raiyats | ••• | | *** | | 481 | 1: |
| he elements of the raiy | ati holding | ••• | | • • • | 482-483 | 13 |
| | Rents | | | | | |
| • easons for lowness of c | ash rent-rate | s | | | 484 | 1.5 |
| he district rates | ••• | ••• | *** | | 485 | 18 |
| emparison with neight | | | *** | ••• | 496 | 13 |
| ariations in occupancy | | | | • • • • | 487-489 | 131-13 |
| omparison of the rates | | ifferent es | tatis | • • • | 490-411 | 13 |
| idigo factories as lesso | 78 | Č. M | • • • | | 492 | 13 |
| uestion of granting th | | Omcers | | ! | 41.9 | 13 |
| settle or reduce ren he district rent-roll, pa | | nt | *** | • • • | 493 494-495 | 13 |
| he increase of cultivati | or and root | .rgtna ili | ring tha | British | コンスペマイン | 10 |
| period | on and items | VII (A) | | | 496-499 | 135-18 |
| nhancement in the Est | | Madhuban | Babus | } | • 500 | 13 |
| nhancements obtained | by means of | abwab | ••• | ••• | 501 | 13 |
| bwab mentioned in old | l jamabandie | of Bettie | Raj | • • • } | 502 | •136-13 |
| ate of incidence of rev | anue and ren | it per acre | · · · · | . 1 | 503 | 13 |
| ariation of existing | | n the di | Horeut than | as, for | | • ** |
| different classes of | • | ••• | ••• | ••• | 504 | 13 |
| aiyats at fixed rates | ••• | ••• | • • • | ••• | 505 | 13 |
| on-occupancy raiyata ocupancy raiyata | | ••• | *** | • • • • | 506 507-508 | 138-13 |
| nder raiyara | •• | • • • | • • • | | 50, 509 | 13 |
| he proportion of produ | ra ta cash-ra | กร์ล | | ••• | 510-511 | 13 |
| | | | | | | |

| | | | | | Para. | Page. |
|---|------------------|------------------|-------------|---------|--------------------|--------------------|
| v | ARIETIES OF I | PRODUCE REV | ra. | | | • |
| | he transfer of | | | | | |
| | ne manyor ey | occupancy right | | | *10 | 140.14 |
| Field of inquiry | *** | ••• | | ••• | 512 | 140-14 |
| Sales and mortgag | | ••• | ••• | ••• | 513 514 | · 14 |
| Hasses of transfer Aarketable value (| | ioshta | ••• | ••• } | 515 | 14 |
| tensons for the gr | | | 708 | • | 516 | 14 |
| lomparison between | | | | | 517 | 14 |
| he Cana statistic | | | | | 518 | 143.14 |
| Vhole and part he | | • • • | ••• | | 519 | 14 |
| he thana statistic | | _ | ••• | ! | 520 | 14 |
| he value of land | in different th | anas | | ••• | 521 | 144-14 |
| he highest and lo | west rates | | | ••• | 522 | 14 |
| the transferability | 7 of occupancy | rights in Cha | mparan | ••• } | 523 | 145-14 |
| ho transfer by sal | lo of propriota | ry rights | • • • | ••• | 524 | 14 |
| , | CHAPTER III | IIndigo | ••• | ••• | •••• | 146-15 |
| | , | | | | 505 500 | 340.4 |
| he introduction a | | - | · ••• | ••• | 525-526 | 146-4 147-14 |
| ist of existing fac | | ••• | | ••• | $527 \\ 528-529$ | |
| rea under Indigo | | l by Indias () | 111 | | 530-532 | 148-14 149-15 |
| he extent of land | | | | ••• | 533-534 | 150-15 |
| he status o f fa ctor he p ro portio n of f | | | ••• | | 535-536 | 151-15 |
| ne broketeron or a | • | • | | | 000 000 | 202-20 |
| | Bystom of Inc. | igo cultivation. | | 1 | *0* | |
| irait as atom | *** | ••• | • • • | ••• | 537 | 15 |
| atta system | ••• | *** | ••• | *** | 538 | 15 |
| xchange of lands | | | | ••• | 539 540 | 15: 15: |
| hushki system ho kustauli, or sh | ilemi avetam | ••• | ••• | • • • • | 541-542 | 152-15 |
| no kurtaun, or su art ag:cement | IKIIII BY NUUILI | • • • | *** | | 513 | 153 |
| he general advant | tages and diss | dvantages of | Indigo cul | | 544-549 | 153-15 |
| greement (satta) | | | *** | | 550 | 154-15 |
| greement (satta) | | ••• | *** | | | 155-15 |
| CHAPTER IV | STATISTICAL I | COTIMATE OF | ruv Mare | PIAL | | |
| | THE LOWER | | | | | 156-17. |
| amines in Champ | aran | | | | 551-560 | 156-15 |
| tatistical examina | | elements of a | oricultural | | 001-050 | 100-10 |
| perity | *** | *** | | ••• | 561 | 15 |
| utturn per acre | ••• | ••• | *** | | 562-564 | 158-166 |
| verage price of th | | *** | | ••• | 565 | 160-16. |
| he gross value of | the agricultur | | ••• | ••• ! | 566 | 16. |
| he cost of cultivat | | • | | į | | |
| Seed | *** | ••• | *** | | 567 | 163 |
| Cost of labour | | | | ; | 568 | 16: |
| Total ooet | ••• | ••• | *** | •• } | 569-572 | 163-16 |
| est of living | | ••• | *** | ••• | 673 | 164-16 |
| he net income per | | ropped area | | ••• | 574-575 | 16 |
| he subsistence hel | ding | | | ••• | 576-577 | 165-169 |
| flicial opinion on | | | | ••• | 578-582 | 166-167 |
| he proportion of 1 | perry nordings | of the warion | s coetas | ••• | 583-584 585-589 | 167-169 168-169 |
| | - | T OF THE APPLION | | ••• | 590 | 169-17 |
| | • | ••• | • • • | ••• | 591-594 | 170-17 |
| andless labourers | 8 | ••• | ••• | ••• | 595 | 170-17 |
| andless labourers eneral conclusion | | | | | UVU) | 2.6 |
| andless labourers eneral conclusion he money-lender | ••• | ••• | • • • | ••• | 598 | 17 |
| he relative agriculandless labourers eneral conclusion he money-londer he profits of labourers to cost of onlying | ir | ••• | ••• | ••• | 596 | 17. |
| andless labourers eneral conclusion he money-lender | ir | | | { | 596 | 17. |

| | | | | , | Para. | Page. |
|---|-----------------------|-----------|---|---------------------------------------|-----------------------|----------|
| CHAPTER V.—RECOVE | | | | r Costs. | ***** | 171-176 |
| Summary of progress | ••• | | | | • 597-5 9 9 | 172-173 |
| Establishment | *** | ••• | ••• | | 600 | 173 |
| Procedure | ••• | | ••• | ••• | 601 | 173 |
| Financial results | ••• | *** | | | 602-604 | 173-174 |
| Certificates | ••• | | ••• | 1 | 605 | 174 |
| Disposal of recovery reco | | | | | 606 | 174 |
| Cost of collection | | ••• | ••• | | 607 | 175 |
| Adjustment of advances | | ••• | | ••• | 608 | 175 |
| Expenditure and receipts | | | | | 609-611 | 175-176 |
| • | | | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | • | 110-110 |
| Chapte | R VI.—Mis | CELLANE | ous. | | | |
| Dross an | d dicellings | of the pe | ople. | | | |
| Male dress | ••• | ••• | 44.4 | | 612 | 176 |
| Female dress | ••• | ••• | | | 613 | 176 |
| Dwelling-houses | ••• | ••• | ••• | | 614 | 176 |
| Agricultural ceremonies | | *** | ••• | | 615 | 176-177 |
| • P • • • • • • • • • • • • • • • • • • | ••• | ••• | ••• | ••• | | 110-111 |
| Dc | me sti e oeren | ionies. | | | | • |
| Marriage ceremonies | ••• | ••• | ••• | | 616-617 | 177-178 |
| Funeral ceremonies | | | | 1 | | |
| Hindu | ••• | ••• | *** | ••• | 618 | 178 |
| Muhammadan | ••• | | | ••• | 619 | 178-179 |
| Peremonies on the first d | .∗y of the ye | ar | ••• | •• | 620 | 179 |
| Price of cattle | ••• | ••• | • | ••• | 621 | 179 |
| Village customs | • • • | • • • | | | 622 | 179 |
| Appendices | ••• | *** | *** | | 623 | 180 |
| Jonelusion | ••• | | ••• | ••• | 624 | 180 |
| LIST | OF APPE | NDICE | 8 | | i ! | |
| I.—District map | | | | | | |
| II.—List of officers | | on settle | emont dut | y in the | | •• • • |
| district of Char | mparan | | • | | ***** | í |
| IIIMilan khasra | | *** | ••• | | | ii |
| IV.—Crop statement | | • • • | *** | | | iii |
| VList of tenants' | agricultural | stock | • • • | | | iii |
| VI.—Terij abstract | | •• | ••• | | | iv |
| VIITransfer of prop | rietary righ | ts | *** | | ***** | v |
| VIII -Transfer of occu | | | ••• | | | vi |
| IX Agricultural calc | ndar of the | district | | | | vii-viii |
| X Financial statem | | ••• | • | ••• | | ix |
| | | | - | 1 | | |

^{*} T. A.-Reg. No. 8723J +200-9-4-1901.

FINAL REPORT

ON THE

SURVEY AND SETTLEMENT OPERATIONS

IN THE

DISTRICT OF CHAMPARAN.

Introductory.

......

In the final report of the Muzaffarpur Settlement operations, the extent to which the Champaran final report is subsidiary to it has been described. In the latter, problems of general interest and wide questions of policy will be either omitted altogether or dealt with very cursorily; but matters on which the Champaran operations, by virtue of the peculiar economic characteristics of the district have thrown a special light, will receive due prominence. Speaking more generally, both reports are drawn up on the same plan. They consist of two parts. The first part is occupied with general matter of economic interest and with a historical sketch of Land Revenue administration in the district. The second part is confined to an account of the Survey and Settlement operations recently brought to a conclusion.

PART I.-GENERAL.

CHAPTER I.

EARLY HISTORY.

The agricultural development of the district of Champaran is of comparatively recent date; indeed, the process of reclamation still goes on. Its name denotes that it was formerly one vast jungle, aranya or forest of champaka, a wild flowering plant. In the Vishnu and other Purans mention is often made of a "Champakaranya" alongside of the Shalagrami or Namyani river, which is another name for the Gandak, and the context warrants a belief that it is this district, or a portion of it, that is there referred to. According to the descriptions of "Champakaranya" contained in ancient writings, it was but a place of retreat for Hindu ascetics, where, removed from wordly ambitions, surrounded by the silence of a vast untrodden forest, they could contemplate to the full the Eternal Presence.

2. The present district of Champaran consists of only three large parginas, which, however, are split up into tappas, and the tappa is the fiscal division most used and best understood in the district. If, then, as l'andit Rama Ballabh Misra holds, this fiscal term is identical with the Sanskrit word tapas, meaning the abode of spiritual meditation, the opinion that the predominant idea in olden time associated Champaran with a place of religious sanctuary obtains strong corroboration. And this opinion will bear a good deal of scrutiny. For tradition has it that Tappa Duho Suho was originally the tapoban or forest of spiritual meditation of Dhruba, who was connected with the story of Raja Uttanpada and his two wives, popularly known as the Du and Su Ranis; and it is after the two wives that it is now called. Again, all the tappas of the district, with rare exceptions, have names peculiarly Hindu and associated with some Hindu sage, like Chanki, Deoraj, Mando, Sugaon, Jamhauli, &c., &c., and the whole district is dotted over with places held in religious esteem as the traditional abodes of Hindu ascetics. Thus Valmiki, in. whose asrama or hermitage Sita, the banished spouse of Rama, is said to have

taken shelter, is reported to have resided near Sangrampur, and the village is believed to be indebted, for its name, to the famous fight between Rama and his two sons, Lawa and Kusha. This took place in the second of the four Hindu mythological cycles, viz., Satyuga, Treta, Dwapara, and Kalyuga. For the third cycle also tradition preserves a characteristic reference to this district. In the Mahabharata it is described how the Pandavas had ultimately to take a vow of spending twelve years in exile, one year of which they had to live strictly incognito on pain of having to repeat the exile in case of recognition. We are also told that this vow was successfully kept, the last and most critical year having been spent in the kingdom of Virat. The popular belief here is that that kingdom lay in this district; and its capital, where the five brothers resided a year, was situated at or near a village called Vairati, 6 or 7 miles west of Ramnagar. I refer to this tradition as indicating how even after portions had been reclaimed by a settled society, the district generally was far removed from the recognised haunts of Hindu social life. Indeed, even in later times, a portion of this tract seems to have served a somewhat similar purpose. Mr. Wyatt, the Revenue Surveyor of 1845, says:—

"In tappah Rajpur Sihoria, on the borders of the saul forest, are to be seen the ruins of the Bawangarhi, or ancient remains of 52 forts. It is said to have been the residence of Raja Burrah, who is supposed to have been contemporaneous with the Rajas of Semrowngarh and Nawnichgarh of Lauria Bazar. From the appearance of the country, and the immense forest round the Bawangarhi," we would suppose that Raja Burrah must have built this fortress in the wilds of Rajpur Schoria as a retreat for humself and his followers from the invasions or depredations of his more powerful reighbours of Semrown and Lauria to the south-east, and the hill tribes of Nipal and Bhutival to the north and north-west."

3. There is therefore good reason to believe that in old Hindu times this district was regarded merely as a place of religious retreat, and no attempt was made to extend to it a settled administration. In the words of the poet Kalidas, the revenue that the kings appear to have been content to levy from this portion of their charge was a certain share in the spiritual acquisitions of the hermits in return for the

peaceful protection they enjoyed.

There are not many remains of the Hindu Government which must eventually have extended to this region. At Kesaria there is a lofty brick mound topped by a solid brick tower. The brick tower is said to date from 200—700 A.D., but the mound is of an earlier period, and is associated with the name of Raja Ben Chakravarti, a traditional Emporor of India. At Lauria there are very extensive remains consisting of three rows of huge conical mounds. General Cunningham considered them to be sepulchral mounds belonging to the period antecedent to the rise of Buddhism, and places their date somewhere between 1500 and 600 B.C.

4. Coming down to the Buddhistic period, we must conclude that the district had meanwhile developed considerable social and administrative life. Were it otherwise, pillars proclaiming Asoka's edicts would not now be found at Lauriya and Arriraj.

5. After Buddhism had lost its influence, a powerful Hindu dynasty seems to have ruled at Semraon, on the borders of Nipal, where extensive ruins still remain. According to tradition this dynasty of kings ruled from 1097 A.D. until 1322, when Harsinh Dee, the last of the line, was driven out by the Muhammadans. Somraon has given its name to one of the parganas in this district.

6. What is known of the administration of this district during Muhammadan period.

Muhammadan period.

Muhammadan period.

The subsequent chipter dealing with its revenue history. I have sketched its earlier history (so far as the very meagre materials available admit) because the situation of this district removed from the successive streams of civilising influences, and its so recent introduction to any form of settled government, are important causes of the present backwardness and improvidence of its people.

Sirkar Champaran was subordinate to Sirkar Saran from Muhammadan times until 1866, when it was elevated to the rank of a separate district. It now forms the extreme north-western portion of the Patna Division and of

the territories under the administration of the Lieutenant-Governor of Bengal. It is bounded on the north by Nipal, the frontier line running along the summit of the Sameswar range; on the east, first by the Nipal terai, and then by the district of Muzaffarpur, the Baghmati river forming the natural boundary for about 35 miles; on the south by the districts of Muzaffarpur and Saran, and on the west by the districts of Saran and Gorakhpur. The Gandak river forms the natural boundary for the greater part of the distance on the western side, but a tract known as tappa Manpur Chaudand, consisting of 35 villages, and forming the police outpost of Dhanaha, attached to the Bagaha thana, lies on the western side of the river.

7. The total area of the district is 3,531 square miles, but of this, a tract of hill and jungle on the north-west was excluded from the scope of our operations under the Tenancy Act, and was only topographically surveyed. In addition to this an area of 30 square miles comprising 14 villages, which are situated on the western side of the river Gandak, and are in the criminal jurisdiction of the Gopalganj subdivision of the district of Saran, though they are within the revenue jurisdiction of Champaran, have been treated for the purposes of survey and settlement as belonging to the Saran district. Consequently the area dealt with in the present report comprises only 2,079,811 acres, or about 3,250 square miles.

CHAPTER II.

PHYSICAL FEATURES AND TOPOGRAPHY.

The general aspect of the greater part of the district is similar to that of the rest of North Bihar. In the south and east, the Physical features. country is level, highly cultivated, and well wooded. North of Sagauli, however, the area of waste land becomes much greater, and in the extreme north-west, just below the hills, the cultivated area becomes very sparse. Details of area under cultivation in different parts of the district will be given in the chapter on statistics. North of Ramnagar the country begins to undulate, until the area known as the Dun is reached. This consists of a range of low hills stretching for a distance of about 20 miles from east to west, and four or five miles in breadth. It is sparsely inhabited by an aboriginal tribe known as the Tharus, who carry on a good deal of cultivation in the valleys between the hills. North of the Dun hills lies the Sameswar range, the ridge of which forms the boundary between British territory and Nipal. The range extends to a length of about 46 miles, the highest point, Sameswar, being 2,884 feet above sea level. The hills are mostly covered with fine trees, but in places are barren and rocky. The population is scanty and consists chiefly of labourers employed in cutting timber and collecting jungle products. Leopards are not uncommonly met with in places, and a tiger has been shot near Harnatar within the last few years. There are fine passes across the range into Nipal, the chief are those of Sameswar and Bhiknathori. The scenery in the Sameswar pass is very striking.

9. Referring more particularly to the three parganas into which, as I have said above, the district is divided, we find parganas Mehsi and Semraon, almost coextensive as they are with thanas Madhubani and Dhaka respectively, cover a long narrow strip of land, running from the confines of Nipal on the north to the borders of Tirhut on the south, and separated from the latter on the east by the Baghmati and from the neighbouring pargana of Majhawa, on the west by the Tiar and Burri Gandak. In density of population, fertility of soil, abundance of rice-fields, and absence of uncultivated wastes, they are similar to the adjoining tract of Tirhut; and even the language spoken in this area is very closely allied to Tirhutia. The similarity is most marked in the southern pargana of Mehsi, and is less distinguishable as we proceed northwards to the Nipal Terai. These two sister parganas trace the erigin of their names to opposite sources.

10. Semraon, as I have said, derived its name from a Hindu principality established at a village of that name now lying within the limits of Nipal;

whereas Mehsi is associated with a Musalman legend. It is believed that there was a Hindu Sadhu by name Mahesh Koiri, whose distinguishing characteristic was that he lived solely on milk. One Halim Shah, a Muhammadan emperor, having turned fakir, came from the west to see the Hindu Sadhu and was astounded to see him extract milk from a heifer for his refreshment. Needless to say the Muhammadan magnate was much impressed by Mahesh Koiri's accomplishment and caused the tract to be named after him. This legend has, however, not been without a certain practical utility, for to this day there exist a Hindu mandap and a Musalman dargah, which were built side by side in the village of Mehsi under the express orders of Halim Shah, and all who would show honour to the one are asked to show equal honor to the other. The village was long a seat of a Musalman kazi, and in latter days a Mussif's Court was for a time located there. It is one of the few important Muhammadan villages in the district. It contains also a certain proportion of Hindus, but the two sects have been true to their traditions and live on terms of great amity.

two rather small thanas. The rest of the district is contained in the immense pargana of Majhawa; its northern and north-western boundaries march with Nipal, and the Gandak separates it from Raj Bhutwal of that State, and from the districts of Gorakhpur and Saran on the south-west and south. This enormous pargana can be divided into two portions, marked by a different degree of fertility; the portion of the east comprises the thanas of Adapur, Motihari, Kesaria, Govindganj and Bettia with small portions of Bagaha and Shikarpur, while the major portion of the two very extensive thanas last named comprise the portion to the west. Mr. Wyatt, the Revenue Surveyor, writing in 1845 described the chief physical feature of those two portions thus:—

"To the east the country partakes of the soil and climate of Mehsi and Tirhut, where indigo and poppy are grown in great abundance, and where the soil is rich and capable of producing almost every description of crop. There are small tracts of low jungle here and there along the banks of rivulets and streams, except in tappa Duho Suho, where there are larger tracts of low jungle adjoining the Nipal territory; and plots of high grass jungle are to be found throughout these minor subdivisions of Majhawa. The country to the west and north-west of Bettiah is not so well cultivated nor so populous as the eastern parts of Majhawa, and in tappas Chengwan Batsara and Manpur Chaudand about one-third of the land is waste and unproductive. The northern portion is chiefly covered with high grass, which is out and conveyed to Bettiah, Segauli, etc., and otherwise appropriated for grazing cattle, while the southern part of these tappas are chiefly waste, covered with large patches of jhow, reed jungle, and the mimosa catechu, from which a large quantity of catechu is made and sold at Bettiah, Gorakhpur and Patna."

12. I may incidentally remark here that the village Majhawa, which gives the name to the pargana, falls within the southern tract of "jhow and reed jungle," having its name perhaps from the "jhau," or wild reed so conspicuous in waste diara tracts; just as the district itself appears to have been called after the Champaka, another product of an uncultivated region. One more remarkable feature of this tract deserves mention:—"Along the borders of tappas Bahas and Balthur," writes Mr. Wyatt, "there can be seen a large swamp, called Bhas by the natives, a genuine bog during the greater portion of the year, impassable not only by human beings, but also by animals." This unpromising marsh, however, produces very abundant rice, the seed being thrown broadcast into the mud from cances. The crop is cut in the cold weather, being approached in the same manner. Even in the hot weather the prudent wayfarer feels his way with a stick or bamboo over the treacherous ground, so that it will be readily understood what great difficulties the Bhas swamp presented to the Survey Department. It fell into several villages. The portion comprised in each village was surveyed in a single plot without division according to holdings; one number was assigned to it and repeated in the khatish of every raiyat possessing an interest, the individual area in each case being noted in the "remarks" column.

13. The most important river in the district is the Gandak, which is navigable for ordinary country boats as far as Bagaha throughout the year. Shoals and rapids prevent boats of any size from proceeding above Bagaha. The bed of the

Gandak is higher than the level of the surrounding country, which is, however, protected from flood by an embankment extending continuously from a point just south of Bugaha to where the Gandak joins the Gangos at Sonepur. The Buri-Gandak, locally known as the Sikrahua, rises in the western extremity of the Sameswar range, and flows in a south-easterly direction through the district, dividing it into two clearly defined tracts, the north-eastern portion being, generally speaking, low paddy land unfit for the cultivation of indigo or important rabi crops, while the south-western portion contains a much larger proportion of uplands. During the first part of its course, until it turns south-wards at Lakhaura, north of Motihari, the Sikrahua is joined by about 12 important hill streams which are much used for irrigation. The control of the water-supply on some of them is, however, dependent on the Nipalese, who not unfrequently, by erecting embankments for their own use in Nipalese territory, stop the flow of the water at critical times.

14. Between the Sikrahna and the Gandak, the only important rivers are the Lalbeghia and the Dhanauti. The former flows into the Gandak to the north of Gobindganj. The latter was formerly a branch of the Lalbeghia, but its upper reaches have silted up, and it is now a sluggish stream falling into the Sikrahna to the east of Pipra Factory. The area on its banks is reported to be very unhealthy, and a large tract of country to the north-west of Motihari is uninhabited on this account. A project was mooted during the recent famine for reopening the connection which undoubtedly once existed between the Gandak and the Dhanauti, so as to ensure a flow of water along the bed of the latter, and thus render the neighbouring country

more healthy; but it unfortunately came to nothing.

15. Among minor streams, may also be noted the Tiar, which divides tappa Duho Suho from pargana Somraon and feeds the only canal, called the Tiar canal, in the district. The Pasáh which divides Bahás from Duho Suho; and the Uriya and the Pandeyi, which form the natural boundary between Nipal and this district for a considerable distance, also deserve mention. Then come the Pachnad, the Harha, the Sona Nadi and numerous other small rivulets, from which gold dust used at one time to be washed and collected. Mr. Wyatt opined that the gold dust was washed by the rivers out of the second and third ridges within the British territory. He added:—

"From the peculiar formation of these hills, which here become more rugged and fearfully precipitous, with light and scattered jungles about them, I am led to conclude that veins of gold may be discovered within these hills, which would amply compensate the Government for deputing a geologist and mineralogist to carry on his researches through this very interesting part of Champaran, viz., the Doon valley."

The lakes.

The most important of these are at Lalsaraya, Sugaon, Turkaulia, Motihari, Pipra, Siraha, Nawada and Tetaria. They evidently mark the course of what was once an important river. Indigo factories are built on the banks of most of them. The water never entirely dries up, but is considered very unhealthy. The fishery rights are of considerable value, though the fish caught have an unpleasant and muddy taste.

SOILS.

17. One of the oldest descriptions on record of the soil of the district, occurs in a report submitted to the Government of the Earl of Moira in 1815, by the Collector of Saran, when Saran and Champaran formed one zilla. It runs thus:—

"The general soil of the district of Saran is a mixture of sand and clay, that of Champaran in the parts most cultivated common earth only, but from a considerable portion of the district being still overrun with jungle, it is not ascertained of what quality it is chiefly composed.

Champaran is, on the whole, productive, but agriculture there being backward, and civilization less persect, from its vicinity to the hills, the defect is rather to be attributed to these causes than to that of the soil."

This shows how little was known of Champaran at that time. The Collector avoided committing himself by describing its soil as "common earth." With the Gandak flowing between the two districts, and in the rains, the country inundated on either side, small wonder, if the Collector of Saran's knowledge of the Sirkar of Champaran was of the flimsiest nature. To do the Collector justice, he had a belief in its fertility which later observations have served to confirm.

18. To the modern observer, the district appears to be divided into two well-defined tracts, by the Sikrahna, which traverses it from north-east to south-west; but the difference between these tracts is not confined to soil alone.

The northern tract.

The northern tract is called to northern tract.

The northern tract.

Th

20. The soil next in importance found in the northern tract is called chabhani—a thin loam—of light colour (the word is said to be derived from Brahmin). It is seldom sown with rice. Its chief products are maize, barley, gram, other pulses and oilseeds. The only other kind of soil found here that I need mention is balua or baldhus, a light, loose soil, in which sand predominates as its name denotes. It stands lowest in the scale of fertility; for only

maize or inferior millets can be grown on it.

21. While, then, the northern tract is a great paddy-producing area, the southern tract.

The southern tract.

Southern tract, on the other hand, is characterised by a predominance of upland or bhith, as it is styled, in contradistinction to paddy lands which are called dhanahar. Frequently, however, it is varied by stretches of bangar, notably in thanas Gobindganj and Kesaria, where the frequency of large tracts of marshy lands or chauss suitable for paddy is a striking physical feature.

22. The upland which is the predominant soil in this area is composed of fine light sand and clay. It is often impregnated with saline matter, more particularly towards the west, where a fair amount of trade in extracting saltpetre is still carried on. "The subsoil is generally a tenacious clay, often quite black; and below this again, sand is struck." The upland or uparwar, as it is termed by the inhabitants, can be divided into the following sub-classes:—

- (a) Dhobini ("bleached") which corresponds to babhani of the northern tract. This soil produces all autumn and spring crops.
- (b) Goenda, or upland, close to village sites, and specially manured with cowdung for special crops, like wheat and opium. When tending to exhaustion from continuous cultivation, it is left fallow for four months during the rains, and is then called chaumas. The goenda lands are consequently by far the most productive in the district, and are much sought after by the Opium Department and indigo planters. They are usually parcelled out into small plots, and almost every holding will be found to contain a portion of goenda.
- (c) Bhath, and more properly Bahath, means literally land periodically visited by flood. It is especially enriched by the fertilizing deposit of silt brought down by the floods, and is consequently very retentive of moisture. Sugarcane and root-crops (i.s., yams, potatoes, &c.) grow abundantly on it. It is necessarily found on riversides. In the famine of 1897, by producing an abundance of yams and common root-crops, it helped largely to alleviate the distress.
- (d) Baldhus, already described above.

- (e) Dhab—low sandy lands on the riverside, which stagnant flood water converts into marsh. In these a kind of coarse paddy, called bore dhan, is grown which is harvested in June or July.
- 23. Generally peaking, then, the northern area is a paddy-producing tract, while the southern grows millets, pulses, cereals and oilseeds. Indigo cultivation, too, is almost entirely confined to the southern tract, and the few indigo factories found in the north are mainly distinguished for carrying on a brisk trade in rice on a peculiar system which will be fully discussed later on.

24. From this it follows that the northern tract, though very rich and fertile, is in the absence of artificial irrigation, mostly dependent for its crop on a seasonable monsoon, and falls within the grip of famino on its failure. During the last great famine, the rice-producing areas of Ramnagar and Dhaka were the first to succumb to its effects, and the last to recover. Thana Adapur, equally a rice-producing area, but for which artificial irrigation

was obtained by drawing upon the hill streams, remained unaffected.

25. The southern tract, on the other hand, is comparatively safe owing to the variety of its crops, but here again, owing to an absence of irrigation,

there is widespread failure when the seasons are unfavourable.

26. It is usual to attribute the neglect of well-irrigation to the apathy of the people, their blind and indolent disposition, and want of enterprise. No doubt there is much in this reason, but the other side of the question must also be considered. During the famine of 1897 every encouragement, pecuniary or otherwise, was held out to the people to induce them to dig temporary wells, but without very marked results. The cause Mr. D. J. Macpherson, C.J.E., the Collector of the district, explained thus:—

- "Irrigation is seldom, if ever practised, in the loam soils, even where water can be had at a convenient level from wells or other sources. The cultivators believe that, where the soil is saliferous (as much of this is) irrigation brings up inferior salts, and elsewhere (apparently through some action on the texture of the soil, impairing its retentiveness of moisture), that if once begun, it must be continued for years."
- 27. Irrigation, however, is practised in the loam soils of other districts which are saliferous, but where, owing to the paucity of moisture, the necessity for it is always greater, thus accustoming the people to its use. No doubt it would be introduced in Champaran, too, were the need greater and more often recurring, and the cultivators less ignorant and indolent. But in ordinary years this district is blessed with fertility and natural moisture to an extent unequalled by any other district in Bihar, and if its peasantry are idle and indolent, it is largely because they can in normal years raise crops with so much case and so title exertion.

RAINFALL.

28. Rainfall, as I have implied in my comments on the soils of the district, is the most important factor in the agricultural economy of Champaran. Its importance cannot be better emphasised than by the following quotation from Mr. Macpherson's famine report:—

"The famine in Champaran was brought about by deficient and unfavourably distributed rainfall in 1895 and 1896."

29. The figures below show the normal distribution of rainfall over the several months of the year:—

| January | ••• | *** | ·67 | July | ••• | 11.57 |
|--------------|-----|-----|------|-----------|-----|-------|
| February | *** | ••• | -38 | August | *** | 11.94 |
| March | 141 | | ·37 | September | | 9.30 |
| | | | .77 | October | ••• | 3.04 |
| April May | | | 2.59 | November | 100 | .02 |
| June | ••• | *** | 8.19 | December | *** | -21 |
| | | | Gr | and Total | *** | 49 55 |

The heaviest fall comes between June and September, when it is required by both the autumn and winter crops. Substantial rain is also required in May and October, in May for the sowing of autumn crops and in October to bring the aghani paddy to muturity and to supply moisture for the sowing of spring crops. From November onwards light showers are useful to maintain moisture, but not very essential.

30. Unfortunately, however, the rainfall of the district is extremely capricious, sometimes varying very widely from the normal. The normal rainfall given above also differs considerably from that noted for 1874 by

Sir A. P. MacDonnell, as the following comparative table will show:-

| | YEAR. | January. | February. | Ks.7d. | April. | May. | June. | July. | August. | Beptember. | October. | November. | December. | Total. |
|-----------------------|----------|----------|-----------|--------|------------|--------------|--------------|----------------|----------------|---------------|--------------|-----------|------------|----------------|
| 4 | 1 | 2 | 3 | 4 | 6 | 6 | 7 | 8 | ø | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 1874 1 9 90 | *** ** * | *6.7 | 134 | 1:50 | ·48 ·77 | 2768 2759 | 8.10 H.32 | 11·75 11·57 | 10/80 11/94 | 11:98 0:80 | 8.16 8.97 | -03 a. | '34 '31 | 56*80 49*56 |

The difference of 7:25 inches in the totals is remarkable. It is mainly accounted for by the months of September and October, the normal total for these two months in 1874 being 20:09, against 12:84 now. If it is true that the rainfall of these two important months is growing lighter, it is a very evil signf. The normal for March in 1874 too was one inch higher than now.

The subdivisional rainfall.

31. The present normal figures for the two subdivisions are as under:—

| NAME OF BUILDIVISION. | January. | February. | March. | 4prıl. | K | June. | Julv. | d agust. | September. | Ortober. | November. | December. | Total |
|-----------------------|----------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|----------------|----------------|--------------|--------------|--------------|--------------|----------------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | ь | 6 | 7 | | 9 | 10 | 11 | 12 | 18 | 14 |
| Bettish Budar | 0.08 | 0:41 0:38 | 0°87 0°37 | 0:76 0:78 | 2 68 8 50 | 8:49 7:80 | 12:69 10:45 | 12:35 11:53 | 9:44 9:16 | 3.49 3.49 | 0.08 0.08 | 0°24 0 18 | 81°78 47°87 |
| Average | 0.07 | 0.84 | 0.37 | .77 | 71.26 | 8:19 | 11.57 | 11'84 | 8.20 | 3'54 | .113 | .51 | 40.55 |

The Bettiah subdivision returns 4:36 more inches for the year than the Sadar subdivision. Almost every month of the year contributes to this excess.

The Sadar rainfall for the last during the last 16 years is given in the following table:—

| 1,000 | Yeans. | Jeaner. | Felruary. | March. | April. | Жьу. | June. | Jaly. | August. | September. | October. | November. | December. | Total. |
|--|--|--|--|---|---|--|--|--|---|--|---|---------------------|-----------------|---|
| | 1 | 8 | з | • | 8 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 13 | 13 | 16 |
| 1885 1884 1985 1986 1986 1688 1698 1698 1693 1693 1693 1693 1693 1693 | *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** | 1:72 Nii '31 1:20 85 2:88 340 1:15 "68 "47 "03 "25 '58 | 1:27 1:27 1:11 1:27 1:11 1:20 1:40 | Nil 27 45 23 04 19 8:09 20 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 | 1:4/1 :43 :03 :01 :11 :80 8:14 :03 :03 :1:68 | 2 45 1 150 1 152 2 774 2 75 7 109 0 7 144 2 5 5 7 150 1 150 8 190 | 5:34 10:77 5:72 4:11 16:44 29:80 11:40 8:78 15:76 12:76 7:85 6:78 6:96 | 10°04 B'84 20°40 5°62 19°30 19°30 19°14 81°22 8°50 80°14 10°61 9°61 8°37 | 18:59 7:26 19:51 15:60 11:79 7:26 11:79 7:26 14:43 10:17 17:86 14:43 10:17 17:88 8:31 13:10 | TA 18-97 16-77 16-85 8-71 16-85 8-74 16-66 17-87 18-18 17-4 9-98 20-88 | 197 189 3 89 7 121 136 6 146 3 198 8 140 5 191 123 | "100 2.41 "08 | 1791 766 | 38-27 43-44 66-10 85-97 61-93 76-44 73-84 93-94 93-94 45-91 46-92 30-44 91-94 91-94 91-94 |

33. The total annual fall ranges between 88.63 in 1893 and 30.84 in 1896, the normal being 49.55. 1883 and 1884 were years of deficient rainfall but were followed by three consecutive years of very abundant rain reaching

the maximum (61.80) in 1887. In 1888, however, three is a sudden drop to 38.63, followed by an equally unusual rise to 78.44 in 1889. The record of 88.63 was reached in 1893. In 1894, again the fall was slightly short, succeeded by an abnormal rise to 64.92 in 18.55. In the year that led to the

great famine, 1896, the total fall was only 30.84 inches.

The rainfall very capricious. Critical months of the year are June to October. Now the normal fall for June is 8:19, but fin June 1886 only 4:11 inches fell, while 22:39 inches were recorded in the corresponding month of 1889. Similarly July varies between 6:30 of 1894 and 31:92 of 1893, against the normal fall of 11:57. Perhaps September is the most capricious of all going so low as '78 in 1883, whilst rising to 29:88 in 1896, against the normal 9:30. Extreme variations are noticeable, in every month with the results that even where the total rainfall reaches the normal it may be so unseasonably distributed as to cause acute distress. The following quotation from Mr. Macpherson's report fully illustrates this point:—

- "Although the rainfall of 1895 to 1896 was above the normal by 17.5 per cent, it was badly distributed. It was on the whole favourable for the crops until August, but it censed prematurely, none falling after the 21st of September and not even in the hathiya asterism when good rain is considered essential for the autumn rice crop, and for providing moisture for the rabi and indigo crops. There was moreover practically no rain at all throughout the cold weather, the total fall from October to March inclusive, amounting to only half an inch."
- 35. In both the famine years 1873-74 and 1896-97, there were serious deficiencies in the rainfall, from May to October 14-10 inches, or 30 per cent., below the normal in the former, and 19-19 inches, or over 40 per cent., in the latter. As Mr. Macpherson puts it—"The inevitable results in both the cases were acute, widespread and long distress."

36. The rainfall of the Champaran district is heavier than that of any other district of the Bihar Division. Owing to Dependence of agriculture this and to the general character of the soil, the on the rainfall.

Champaran raiyats place a most absolute reliance on it, and make little effort towards extraneous means to guard against its failure. But it is very capricious, and though as a consequence distress pays periodical visits to the more susceptible parts of the district, the cultivators are not spurred into effort and their absolute faith in the mensoon's beneficence remains unshaken. No wonder then that the records of the rain-gauge are most anxiously watched by the Collector of Champaran.

CLIMATE.

climates in Bihar. But this is true only to a very limited extent. Barring Ramnagar, and its notoriously unhealthy neighbourhood, the Terai of thanas Bagaha and Sikarpur, the district generally enjoys a pleasant and cool climate. From November to March it is very cold; but cloudy skies and cold weather showers are more frequent than in districts further removed from the hills. This is the characteristic noticeable throughout the year. The rainfall is heavier, and the climate of Champaran is damper, and therefore cooler than that of the sister districts of North Bihar. I need not describe the nature of the seasons, but one word is necessary regarding the evil reputation for unhealthiness from which the northern area suffers. How evil that reputation is, the following legend sufficiently illustrates: Once a stalwart pahlwan, an athleto, came to the Darbar of the Kaja of Ramnagar or Bettiah, and boasted of his prowess, saying he would defeat all the pahlwans in the Raja's service. On this the Raja asked him to wait for six months, after which period a match would be arranged at which he might vindicate his boast. To this the stranger agreed; so he was told off to live in a Terai village, where he soon contracted fever. At the end of six months he reappeared before the Raja pale, weak and consciated, admitted that he had been defeated by the greatest pahlwan in the Raja's service—fever—and implored peroission to return to his home.

service—fever—and implored permission to return to his home.

38. The most unhealthy period of the year is October—November, when a north wind blows off the hills. Its advent is invariably signalised by an

outbreak of malarial fever, and it was on this account found impossible during settlement operations, to start field work in this area earlier than December.

Indeed, special arrangements for the supply of quinine and similar anti-

fever medicines had to be made for the camps that did eventually go out. .

39. Admitting that there are parts of the district that give colour to the legend quoted above, we are now mainly concerned with the practical question whother the district is growing healthier, and this question can, I am glad to say, be decisively answered in the affirmative. As cultivation, accompanied by the cradication of noxious growths and by improved drainage, spreads further north, it steadily but surely drives fever back before it. The European planters who live in this area are, I believe, unanimous in the opinion that the improvement in its general healthiness during the last 20 years is quite extraordinary. The prospects for the further development of the agricultural capabilities of this area in the future are very hopeful.

40. The following is a comparative statement of maximum and minimum temperatures for the year 1874, and the average for the years 1896, 1897 and 1898:—

Temperature.

| . Mansels | | ATURE FOR AR 1874. | TEMPERATURE FOR THE YEAR 1898. | | | |
|-------------|----------|--------------------|--------------------------------|---------|--|--|
| · Month. | Maximum. | Minimum. | Maximum. | Minimum | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | | |
| January . | . 69 | 49 | 78 | 40 | | |
| 13.1. | 74 | 61 | 81 | 4.1 | | |
| X | 83 | +63 | 99 | 44 | | |
| A(1 | 87 | 73 | 105 | 61 | | |
| May | 94 | 79 | 104 | 66 | | |
| 7 | 89 | 80 | 97 | 72 | | |
| July | 89 | 81 | 93 | 76 | | |
| Λugust | 89 | 81 | 92 | 75 | | |
| September . | 90 | 76 | 73 | 71 | | |
| October | 86 | 74 | 91 | 58 | | |
| November | 81 | 62 | 96 | 53 | | |
| December | 71 | 51 | 76 | 43 | | |
| Average | 83.5 | 69.2 | 91.25 | 58.53 | | |

Assuming that in both years the methods of observation were proper, is a remarkable fact that for every mouth, the maximum temperatures of 1898 were higher than those of 1874, while the minimum were lower, and the range of variation therefore very much greater. This seems to be a marked phenomenon of recent years.

COMMUNICATIONS.

As in every other respect, so in the matter of communications also, the district presents a record of steady progress. State of communications at com-A brief description, from old correspondence, of proncement of the century. the state of communication at the beginning of this century will not be without interest, and will afford a striking contrast to the present accessibility of the district, which enabled Gevernment, during the recent famine, to rely entirely on the natural action of trade to supply the food required by the inhabitants.

In 1794 the Collector of Saran and Champaran made the following report to the Board in regard to communications in the northern portion of his

charge:-

The road from hence (Chapra), through the upper part of the district, to Sirkar Champaran is so bad during the rains that the passengers are obliged to wade in many places up to their waists in water. This road, I am informed, may be made passable with convenience at all seasons of the year by a few embankments being thrown up, and ditches made across the road, with bridges thrown over them to let the water off."

We find no mention of any other road in Champaran in the report, a striking instance of the disadvantages and neglect from which Champaran suffered by its amalgamation to a district, from the head-quarters of which it was far distant and well-nigh inaccessible.

44. Seven years later in 1800, we find another Collector submitting a similar report, which he prefaced with the follow-

Roads in 1800. ing characteristic remark :-

"As far as my local knowledge and enquiries extend, it does not appear that there are any roads in this district, except one commencing from the glat of Cherawn to Goodnah!"

Both the last named places are in Saran; but from the recommendations made by him in the same report, it is clear that the Collector. while speaking of the whole district, had also Sirker Champaran in view, and by roads he meant passable roads. Thus it is certain that at the beginning of the century Champaran had no road worth the name. But the Collector, "with a view to encourage a greater intercourse in trade with the inhabitants of Nipal and those of the hills situated in the northwards of this district," held "it an object of great importance that the roads from and to these stations be rendered more convenient and easy of access." The following were his recommendations:-

"One road would be required for the merchants who trade from Bengal, Bihar and other places to the cast and south to Nipal, and two for those from the upper provinces from the

This information he obtained from an 'intelligent native of the district. Such was the extent of official knowledge about the communications of a district permanently assessed about 10 years previously.

The Collector particularised his proposals in greater detail, thus:-

First road .- From Hajipur vid Sonepur to Nipal, crossing the Gandak at Govindganj and passing through Segouli, Narkatia, &c., to a place called Ghorparsara, very difficult of identification at present. It was to traverse Sirkar Champaran for 54 miles only, so the Collector estimated.

Second road .- From Darauli on the river Dewah in Saran to Choseparsah

in Nipal, also crossing the Gandak at Govindganj, 52 miles.

Third road.—From and to the same places, but traversing a different route, i.e., crossing the Gandak at Panditwa, and leading on to Machhargawan, Majhawa, Bagaha, Ramnagar and Sultanpur, and terminating at the hills, in all 72 miles in Sirkar Champaran.

47. One hundred and seventy-eight miles of roads, therefore, were recommended for construction in 1800 in this district, Bonds in 1830. but from a similar report in 1830, it appears that this mileage had by that time been considerably exceeded. The report runs

- "With regard to the Champaran Division of the district, the road to the Mallye cantonments from Sattar Chat, red Kalyanpore and Dhaka, is kept in a telerable state of cantonments from Sattai Chat, via Karyamporo and Timas, is kept in a tolerano state of repair, as well as the roads from the cantonments along the Nipal boundary, between the Tirhut and Gorakhpur districts." "Besides these roads in Champaran, I must add that there are now two other very good roads, the one from Bettiah to Tribeni, and the other from Bettiah to Ramnagar, for both of which we are indebted to the late visit from the Governor-General to the Province."
- He goes on to point out that there were numerous old roads throughout Champaran from north to south and east to west; and until they were repaired and opened for 'land carriage,' very little trade could be carried on, and the little that there was in that part of the district was mainly to be attributed to the Little Gandak, which afforded communication with the Ganges at Monghyr passing through the Tirhut district. The report very fittingly concludes :-

"Directly there is a regular thoroughfare for hackeries and beoparts, the increase of trade would be a hundredfold, and in all probability render this one of the most flourishing districts in India.

A picture too optimistic no doubt, but nevertheless vast strides had been made. Indigo-planters had already come on the scene, and had begun to reclaim the waste in the interests of their indigo cultivation. The Collector was not slow to point out that "the Government would now be able to avail itself of the assistance of indigo-planters," who were repairing and making roads "to facilitate the superintendence of their work."

49. Coming to the year of the revenue survey, internal communications are found in a stage of development still further

Roads in 1845 advanced:

"The principal roads which pass through Champaran are from Chapra, Muzaffarpur and Patna to Motihari, Segouli and Bettiah; from Bettiah to Gorekhpur rid Bagaha; from Bettiah eid Ramnagar to Tribeni and Nipal; from Motihari to Mallya and then to Nipal; and the high road from Segouli to Khatmandu; besides numerous cart-roads and bullock tracks which intersect this Division."

of Bengal, 28 principal roads in the district, of Bengal, 28 principal roads in the district, covering a length of 4373 miles. The total expenditure of the District Road Committee during the year was Rs. 82,520, of which Rs. 27,180 went on original works, and Rs. 49,790 on repairs. The Committee was replaced by the District Board, constituted, under Act III (B.C.) of 1885, in October of 1886; but during its administration it had brought under its control over 1,000 miles of road.

51. The following is a statement of the annual expenditure incurred by the District Board on roads during the last decade,

Recent expenditure on roads. 1887-88 to 1897-98:

| Year. | | | Original. | Repairs. | Total. |
|---------|-------|-----|-----------|----------------|----------------|
| (| | | Rs. | $\mathbf{Rs.}$ | $\mathbf{Rs.}$ |
| 1887-88 | | | 20,483 | 45,420 | 65,903 |
| 1888-89 | | | 12,907 | 34,264 | 47,171 |
| 1889-90 | ••• | | 11,965 | 35,172 | 47,137 |
| 1890-91 | ••• | ••• | 31,271 | 36,353 | 67.624 |
| 1891-92 | ••• | | 34,823 | 26,914 | 61,742 |
| 1892-93 | | ••• | 31,537 | 21,806 | 56,143 |
| 1893-94 | ••• | ••• | 87,628 | 23,040 | 60,668 |
| 1891-95 | | ••• | 38,018 | 27,957 | 66,005 |
| 1895-96 | ••• | | 42,427 | 21,837 | 64,264 |
| 1896-97 | • • • | | 23,451 | 11,637 | 34,088 |
| 1897-98 | ••• | ••• | 4,845 | 20,100 | 21,945 |

The small expenditure on roads in 1888-90, and again in 1892-93, was probably due to a diversion of funds to meet scarcity; and the famine of 1897 accounts for the enormous decrease under this head from 1896 to 1898.

Tresent condition of communisations.

Present condition of communications.

Present condition of communisprend. As Mr. Macpherson puts it in his famine
report, there is "about "the of a mile of road for
overy square mile of country, excluding the hills." The roads of this district,
in marked contrast to those of North Bihar generally, are often in a state of
great disreptir. Rents are so low that the resources of the district are slender,
and the District Board has not means sufficient for the up-keep of its long lines
of communication. These being admitted facts, it is noticeable that the cost of

original work often nearly doubles that of repairs. It is however largely absorbed in bridging existing roads.

13. In the matter of railways the district still presents a field for enterprise. The Tirhut State Railway, opened in the district since November 1883, traverses only 53 miles of it from Mehsi to Rettiah; and the terminus is still 80 to 70 miles from its northern frontier. The only other railway is that from Raxaul to Segauli, where it joins the Tirhut State Railway. It is 13 miles long, and taps the grain and passenger traffic from Nipal, but was opened under unfortunate auspices. It runs across a strong line of drainage, and during the big flood that occurred in September 1898, was most severely damaged owing to insufficient waterway. The Tirhut State Railway, from the same cause, was also badly breached, and traffic was at a standstill for over a month. The ongineering defects of these two lines, by giving the flood-water an accumulated volume and velocity that it would not otherwise have acquired, greatly increased its power for destruction. Steps have now been taken to enlarge the waterways.

The construction of two other lines is in contemplation; one from Bairagnia (the terminus of the Darbhanga-Sitamarhi branch), through Shikarpur and Ramnagar, to Bagaha; the other from Bettiah to Bagaha; the object being that the Nipal and North Champaran grain traffic may reach Gorakhpur and the North-Western Provinces direct, without a long detour through Muzaffarpur and Saran.

Waterways. Candak, for boats of 1,000 maunds; the Baghmati, for boats of 400 to 500 maunds; and the Bur-Gandak or Sikrahua, for boats of 200 to 300 maunds burden. The other rivers are little better than hill-streams; almost dry for most of the year, but in the monsoon deep, and flowing with great rapidity.

56. The bridges are very few in number over even the more important streams. There are only two bridges of any size, both over the Sikrahna; one at Segauli, and the other at Champatha. The Collector, in his general administration report of 1885-86, written almost immediately after their construction, observes as follows:—

"The enormous relief to trade given by the construction of these two bridges may be estimated from the returns of the traffic that actually passed over them. In the year 1885-86 54,314 carts, 33,463 pack ponies, and 21,684 pack-bullocks passed over the Segauli bridge; and 41,430 carts, 61,517 pack-ponies, and 19286 pack-bullocks over the Champtha bridge. No doubt there is very great room for development in this direction, but the District Board is sure to be hampered for many years to come by the slenderness of its resources."

57. The income from ferries in Champaran, as may be surmised, is considerable. There are eight principal ferries under the District Board, yielding over Rs. 15,000 annually, four of which are over the Sikiahna at Lal Bighia. Piparpanti, Jatwa and Segauli. The number of minor ferries and ferries that ply during the rains is very considerable. Then there are the principal ferries over the Big Gandak, the most noted of which are at Dhekha or Sattarghat, Sangrampur, Gobindganj, Bariarpur, Pipra, Ratiwal and Bagaha.

78. In postal and telegraphic communication the district is still very backward. Obvious causes of this are that the population is purely agricultural and very ignorant, while the district itself is out of line of main communication and but half developed. Its administrative progress is hampered by its poverty.

59. To sum up, the district has been making steady progress since the beginning of the century in improving its internal and external communications, and if it still lags behind its neighbours, this is mainly owing to its limited resources. The want is greatest in the Bettia, subdivision, especially near Shikarpur and Rammagar, where a breakdown in supplies was seriously apprehended during the last famine. As these tracts are the most liable to famine, it is urgently desirable to bring the intended Bettia-Bagaha Railway line into existence as speedily as possible.

CHAPTER. III.

POPULATION AND CASTE IN RELATION TO AGRICULTURE.

Early estimates.

Collector of Saran, replying to a series of the population dutes back to the end of the last century, when the Collector of Saran, replying to a series of queries about the material condition of his charce, among other things, returned the population as 12 lakhs of souls. This was for both Sirkars Saran and Champaran, which then formed two subdivisions, so to speak, of a single district—an arrangement which the East India Company inherited from the Muhammarlans. His successor, replying to a similar inquiry a little more than a decade later, in 1811, raised the estimate to 25 lakhs, broadly recognising, probably apart from any question of accuracy, that a material advancement had been made. One has only to remember that in 1891 Champuran alone returned 18 lakhs,

and the two districts together over 42 lakhs, to realise how very great the subsequent increase must have been. The next attempt, made at the time of the revenue survey in 1845, was inaccurate. It was intended to base the estimate on a house census to be made by the surveyor, but these orders were apparently misunderstood, and recourse was had to the police, who returned the number of houses at 140,399. Assuming 6.13 souls per house, the population was put down at a little over 8 lakhs 60 thousand. Both the Magistrate and Mr. Wyatt, the Revenue Surveyor, suspected this estimate to be excessive. The attempt to obtain an accurate estimate of the population was repeated in 1854, when the houses were returned at 148,562, and the population at 668,529, allowing therefore 4.5 souls per house. In 1891 there were found to be over 6.2 souls per house, so that the 1845 average of 6.13 souls per house must have been much nearer the mark. Again in 1869 an attempt was made to ascertain the correct number of male agriculturists. The number returned was 341,271. Next followed the enumeration of the whole population through the agency of patwaris and chankidars, when details as to religion, sex and occupation were also called for. This, too, proved abortive, and it was not till 1872, six years after the elevation of the Sirkar Champaran to the status of an independent district, that the first regular census was taken. It demonstrated how very much too low all previous rough estiamtes had been.

Striking mercase of ropulation 20 per cent. This abnormal rise, in spite of the great famine of 1874, making all allowances for

great famine of 1874, making all allowances for errors of omission in the enumeration of 1872, can to a large extent be attributed to the undeveloped potentialities of the district. Even now the population is very sparse; there is abundance of rich land waiting for the plough, and rents are low. The agricultural development of the north of this district is still in its infancy, and thus in 1881 the increase in Bettiah subdivision was found to be 22 per cent., as against 17 per cent. in the head-quarter subdivision. In the extreme north malarial fever is the great enemy of progress, but one that increased cultivation is steadily driving back.

62. The following is a comparative statement of the population, than a by than a statistics, 1872, 181, 1801. The percentage of increase, than by than a found in 1881 is not supplied, as, owing to changes in than a jurisdiction, it would be only misleading.

| NAME OF THAMA. | 1 6 1 2 2 | Tota | ıl Populatio | Percent | | Remarks | |
|--|-----------------------|---|--|---|-------|--|---|
| AVAILED VIE BALLINGS | ! | 1872. | 1881. | 1891 | 1881. | 1891 | |
| 1 | | 2 | 3 | | 5 | 6 | 7 |
| Bagaha Shikarpur Bettu | | 114,879 170,760 289,623 | 197,420 182 044 328,471 | 216,074 209,724 334,087 | | 9:4 :6:2 3:3 | |
| Bettin Total | | 575,161 | 702,986 | 759,865 | 23-1 | 8:1 | |
| Adapur Dhaka Mouhari Colondganj Kesaria Madhuban | | 114,561 230,484 142,887 141,986 150,863 84,873 | 138,499 253,992 178,131 164,988 177,682 105,056 | 167, 119 269,719 190,207 170,640 183,673 109,542 | ••• | 20.9 6.2 6.7 8.6 3.4 4.12 | |
| Sadar Total | ••• | 865,65. | 1,018,673 | 1,699,600 | 17.7 | 8.0 | |
| District Total | | 1,440,415 | 1,721,608 | 1,859,465 | 19.6 | 8.1 | 1 |

63. In 1891 the total population was found to be 1,859,465, showing a moderate increase of 8:1 per cent. only over the figures of 1881. Hindus account for 1,590,044, or Expansion of population.

85 per cent., and Muhammadans for 267,319, or 14 per cent. The Bettia subdivision again comes out the better, though only

slightly. The only thanas that exceed the district average increase of 8·1 per cent. are Adapur and Gobindganj in the Sadar, and Shikarpur and Bagaha in the Bettia subdivision; Adapur, with an increase of 20·9 per cent., and Shikarpur (Hardi) with 15·2 per cent. These are contiguous thanas in the north-east of the district, bordering on Nipal, and they head the list by a long way. It is in this area, and in the north-west thana of Bagaha, where the increase was 9·4 per cent., that agriculture is so largely extending. Gobindganj probably derived its increase from the overflow of surplus population from Saran. The increase was small in Kesaria, Madhuban and Dhaka, where conditions approximate to those of the neighbouring district of Muzaffarpur. Mr. Dunhar Blyth, Collector of Champaran, in his District Census Report of 1891, thus expresses himself:—

"The increase in Hardi (Shikarpur) thana is due to the immigration of people from the districts of Saran and Gorakhpur, and from densely-populated parts of Champaran, into the fallow, but thinly-inhabited, tracts in the north-west of the Hardi thana, which were transferred from the jurisdiction of Bagaha. Adapur, which borders on Nipal, contains very fortile land; but until within recent years cultivation had not extended to it. All waste land in the thana is now being taken up, and in consequence there has been a very marked increase in the population. The pioneers of cultivation in this part of the district are the Tharas, and as the jungle is being cut and the cultivation extended, the tract is becoming less unhealthy, and land in it will become more and more southern parts of this district will, no doubt, in time lead to the northern portion of the district being more thickly populated than it is at present. A portion of it, however, which is covered withless thickly populated the same advantages to cultivators as other parts of the district, and the northern part of the district must always remain less thickly populated than the other parts of it."

64. The above remarks will be rendered more intelligible by perusal of the following statement, showing the density per square mile of the population of each thana in 1872, 1881 and 1891, the area at present cropped and available for cultivation, and the existing average rent-rates:—

| | • | | DENSITY | тва ястя | TE NILE. | PRUCENTAGE TO THE TOTAL AREA. | | | | ato : | of | |
|------------------|---|--|--|--|--|----------------------------------|---------------------------------|-------------------------------|----------------------------|--------------------------|----------------------------|----|
| Serial No. | Name of thans. | Area in square miles | 1873 | 1881. | 1891. | Net cropped area. | Cultur- able area. | Ares not available for culti- | ne oce | nt profugna | or ney | n- |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 6 | в | 7 | 8 | g. | | 10 | | 1 |
| 1 2 3 | Bagaha Shikarpur Bettia Bettia Total | 619 554 647 1,720 | 101 228 539 279 | 278 288 607 | 304 274 622 877 | 50 89 63 62 | 36 23 21 27 | 34 8 10 | 1 1 | () () () | 2 4 8 | |
| 6 6 7 8 | Adapur Dhaka Motihari Gobindganj Kesaria Madhuban | 224 885 290 286 273 122 | 511 684 495 522 561 658 | 618 766 620 607 661 815 | 717 808 660 658 683 819 | 86 83 71 70 79 61 | 8 10 20 19 12 10 | 7 7 0 11 9 | 2 2 1 1 1 2 | 1 8 11 14 13 | 2 1 4 3 8 3 | |
| | Sadar Total | 1,530 | 589 | 670 | 724 | 78 | 1.3 | 9 | 2 | 0 | ß | |
| | District Total. | 3,250 | 408 | 488 | 627 | 70 | 20 | 10 | 1 | 11 |) | |

The trend of agricultural myself with remarking here that in the case of the sadar subdivision, the reason why the average rentrate of thanas Motihari, Gobindganj and Kesaria is below Rs. 1-15, while that of Adapur, Dhaka and Madhuban is over Rs. 2, is to a certain extent due to a difference in soil. In the first three thanas, which are mainly west of the small Gandak, the prevailing soil is a light sand. In Adapur and Dhaka it is a thick clay, which grows very luxurious paddy crops. In Madhuban conditions

approximate to those in Tirhut. The density of population in Madhuban is 849, in Dhaka 803, and in Adapur 747. The density even in Adapur exceeds the North Bihar average by 83, the South Bihar average by 239, and the total Bihar average by 134. But I do not think the high rent-rates, except perhaps in Madhuban, are mainly and directly due to the high density of population. A wave of agricultural enterprise, starting from the southerly thanas, has flowed northwards through the thanas of Dhaka and Adapur within recent years, drawn by the extraordinary fertility of the soil. Having covered most of this tract, it is now speading to Shikarpur thana. Another flowing eastwards from the congested parts of Saran and Gorakhpur, is similarly making its way over thana Bagaha.

66. It is of course a matter of common knowledge that the district of Champaran is almost entirely agricultural; but when the material condition of a district is under investigation, it is essential to ascertain, with

approximate accuracy, what percentages of the population, as cultivators and as labourers, are mainly dependent on the produce of the soil for their livelihood, and it is much to be regretted that no means have been hit on in any census, hitherto made, of compiling reliable information on the subject. No person will state his chief means of livelihood to be other than the recognised occupation of his casto. Thus a very large number of Brahmins, who live entirely by cultivation assert their main occupation to be that of a priest. Again, a barber, who lives mainly by cultivating his land, asserts his horeditary profession to be his chief means of livelihood. Conversely a Koiri, who has been mulcted of his land and lives by labouring for others, still claims to be a cultivator; but even as a labourer he gains his livelihood out of the produce of the soil; so that, speaking broadly, and bearing in mind that it is usual for every one, whatever his occupation, who saves a little money to invest it in land, we can take it as a working axiom that detailed statistics of the proportion of the population dependent on agriculture are sure to return an under-estimate. In the census report for 1891, the population is apportioned, according to occupation, thus:-

| A | Agriculture | | | | | 1,323,125 |
|-----|------------------|------|-----|-------|-------|-----------------|
| B. | Professions | ••• | ••• | *** | | 4.077 |
| C. | Commercial | *** | | | *** | 25,988 |
| D. | Artisans | | | *** | ••• | 129,222 |
| F., | Pastoral | *** | ••• | ••• | *** | 2,634 |
| F. | Hunting and fish | ing | *** | • • • | *** | 8,971 |
| G. | Servico | *** | *** | ••• | *** | 25 1,467 |
| 11. | Unproductive gro | oups | | • • | • • • | 17,16 5 |
| | | | | Total | ••• | 1,859,465 |

67. Agriculture thus accounts for 72 per cent. of the population. The details do not bear investigation, as only 2,628 of these dependent on agriculture are shown as labourers, which must be incorrect; and for the reasons already stated, 72 per cent. is sure to be an under-estimate. There are no indigenous industries of any importance, and no large towns in the district. I should therefore take the proportion of the population, dependent on agriculture, at nothing less than 85 per cent.

68. Again, we have recorded 378,799 agricultural holdings in this district. Now villages are large, holdings are large, and there is little subdivision of holdings; so that not less than 300,000 of these holdings

must be held, each separately, by a separate family. The census figures show a family to consist of at least six units; and multiplying 300,000 holdings by this number, we get as a result very nearly a separate holding for each family in the district. It must of course be remembered that many families of artizans, and so on, hold only a few kathas of land on which they in no sense rely for their livelihood; but these figures serve to indicate in a very striking manner that, practically, the whole population has a stake in the land.

striking manner that, practically, the whole population has a stake in the land.

69. I have estimated that S5 per cent. of the population must be mainly dependent on agriculture for their livelihood; I will try to check this by another process of inquiry starting from the number of persons found to belong to the castes that are wholly or partly agricultural. I will preface the

calculation by a short notice of the more important castes. The Goalas constitute the caste strongest in numbers. They amounted in 1891 to 183,732 souls, and live almost entirely by cultivation and cattle-breeding. They can be treated as entirely and purely agricultural. Next come the Koiris with 108,877 souls. They are practically all pure cultivators—"the backbone of the Bihar peasantry", as they have so often been called. Rajputs and Brahmins come next, with 86,440 and 84,493 souls, respectively. They are almost antiply agricultural in this district. almost entirely agricultural in this district. Pandit Rama Ballabh Missra reports that the number of section 106 cases decided in the course of the settlement operations, is to a large extent accounted for by the Brahmins, who, as petty britders, cultivators and proprietors of small resumed estates, have all along been the most prominent figures in our camps and courts. The number of Chamars is 126,097; of Dosadhs 91,452, and of Kurmis 46,145; but only a portion of these are pure cultivators. After these come, in numerical importance Malle, Teli, Kandu and Musahar, the two last named supplying a large number of those persons who live partly by cultivation and partly by agricultural labour. Going lower down the numerical scale we find Bubhans or Bhuinhars numbering 28,496, all agricultural, most of the landlords and substantial raivats being draw from this caste. Then come Kayasths and Tharus with over 27,000 each. In the former, local intellect, such as it is, is concentrated. The latter are purely agricultural. The term "Maghawa," i.e., resident of pargana Majhawa, the synonym for a fool, is applied even to the Kayasths of Champaran by the Kayasths of other districts; but in the district itself, other castes respect the Kayasth as a man of brains. No doubt an old Sanskrit saying could be applied with propriety:-

"In a treeless country, even the caster-oil plant ranks as a tree."

Round the Tharus a controversy centres, it being disputed as to whether their origin is Indo-Aryan or aboriginal; but with this a settlement report has no concern. Mr. Blyth, as I have said, has styled them "the pioneers of cultivation." They inhabit mainly the tract of country in the northwest of the district called after them, the Tharuhat. Their tendencies are nomadic, they pay rent according to the plough, not the bigha. At the slightest sign of oppression, they go elsewhere in a body. They are careful and excellent cultivators, are well off and support themselves in season of famine. The remaining castes do not require detailed mention.

70. I subjoin a caste statement with a rough ostimate in each case

70. I subjoin a caste statement with a rough estimate in each case of the number that may be said to derive their liveliheed, wholly or in part, by agriculture or labour, classifying the rest as others:—

| Serial No. | Name of casto, | Total popula- | Рикв соы | IIVATOBS. | ROTTOM | tous who column ling, | LANDIRO | TING AND H LABOUR. H, | Мівсиі | . RUOAKAJ. | La La Lander in a latin mediter in a |
|---|---|--|--|--|--|-----------------------------|---|---------------------------------------|--|---|---|
| *************************************** | | 1130. | No. | Percent- | No. | Persont- | No. | l'agrant. | No. | Percent- | |
| 3 | | , | | 8 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| *** | Geais Bajput Bajput Brahman Keiri Bhutshar-Babhan Karwi Bhokh Teli Johaha Labat Damadh Chamar Kaiwar Radu Bajah Dumadh Chamar Rajah Dumadh Damadh | 1817、4. 64 (27 77 72 16 16 16 17 77 16 16 17 77 16 16 17 17 17 16 16 17 17 17 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 | 113,790 64,3315 60,510 76,234 18,974 10,720 51,053 35,225 60,286 36,286 36,286 37,711 31,061 44,689 88,406 14,706 15,706 16,706 | 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1 | 21,107 20,843 11,118 16,805 1,027 12,403 13,194 6,027 10,643 | | 20,002 83,663 44,696 31,277 31,460 44,535 31,277 31,460 44,535 31,274 11,244 13,823 11,244 13,823 11,244 13,823 11,460 1 | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | **** **** **** **** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** * | **** **** **** **** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** *** ** | Cultivation paxional and labour. Ditto and service. Cultivation and priced cust. Ditto and service. Ditto and do. Ditto and service. Cultivation. Ditto and service. Cultivation. Ditto and service. Cultivation. Ditto and service. |
| - | Others Grand Total | 27,005 383,454 1,900,455 | 24,616 196,787 1,866,886 | <u> </u> | 130,143 | 7 | 8,012 92,130 8 57,483 | 399 | 111,564 | ::- ::- E | Ditto and do Ditto and macellageous. |

71. I have divided the agricultural class into three groups of pure cultivators, cultivators with other professions, if any, and cultivating labourers, but the cultivating labourer has been put down in the same column with the landless labourers, a column being set apart for "others." Now, according to this statement, pure agriculturists form 57 per cent. of the population. By pure agriculturists I mean those who are solely dependent on agriculture and not merely those who have any connection with land, because the latter class, I have already said, account for a much larger percentage not less than 85 per cent. If we wish to simplify the classification still further and eliminate those in the second group, we can safely transfer 4 per cent. of them to the first group and 3 per cent. to the third group, because the condition of some of them is as good as pure cultivators and of others as bad as labourers. So we arrive at the following percentages:—

Pure cultivators 61
Labourers 33
Others 6

100

Specific investigation of cattle statistics support these percentages Meanwhile I furnish a statement compiled from the records of 180 villages in the district, showing the relative importance of the principle castes as denoted by the average size of their holdings and the percentage of the area occupied by them to the total area occupied by all castes in these villages. We need not attach too much importance to the size of the holdings, because as I shall show later on, they are considerably larger than what they here appear to be, but as they are they can throw enough light on the relative importance of particular castes from the agricultural point of view, and the percentage of the area occupied by each affords additional corroboration. It is noteworthy that the average size of the holdings of the following eight castes is the largest of all, ranging between 3.5 and 6 acres, and it is they that account for 60 per cent, of the area occupied. They are—

| Casto. | | | 1 | Population. |
|---------|-----|-------|-------|-------------|
| Goala | | ••• | *** | 183,732 |
| Rajput | ••• | • • • | | 86,440 |
| Brahman | ••• | ••• | *** | 84,493 |
| Koiri | | • • • | ••• | 108,577 |
| Babhan | ••• | 4** | | 28,496 |
| Kayasth | | ••• | *** | 27,624 |
| Kurmi | ••• | * * * | • • • | 96,145 |
| Sheikh | •• | ••• | ••• | 62,459 |
| | | | • | |

678,268, or 36.4 per cent.

Thus, though these castes account for only 36 per cent. of the total population, they cover 60 per cent. of the area.

| Serial num- | Name of the caste. | Holbis | Z AREA OF A NG UNDER I CASTE. | Percentage of the area occupied by the caste to total area | Remarks. | |
|-----------------------|--|--------|-------------------------------------|--|-----------------------------------|---|
| ber. | | | Acre. | Decimal. | under oomfilation. | |
| 1 | 2 | | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 1 2 3 4 5 | Goala Rajput Brahman Koiri Bhuinhar-Babhan | | 4 6 4 4 6 | 2 2 9 5 | 11·4 10·9 10·3 7·6 7· | |

| Ser'al num- ber. | Name o | of the caste. | | nordi | R AREA OF A NO UNDER L CASTE. | Percentage of the area occupied by the caste to total area | Remares | |
|------------------------|----------|---------------|-------|----------------------------|-------------------------------------|--|---------|--|
| per. | | | | Acre. | Decimal. | under compilation. | | |
| 1 | 3 | | | 3 | 4 | 5 | 6 | |
| 6 | Kayastha | ••• | | 5 | 9 | 5.5 | • | |
| 7 | Kurmi | ••• | | 3 | 5 | . 4. | | |
| 8 | Sekh | 414 | | 4 | 6 | • 4 | | |
| 9 | Tei | ••• | - • • | 8 | 8 7 | ំ រូវ 3 | | |
| 10 | Jolaha | ••• | • • • | 2 | 7 | 27 | | |
| ii | Kandu | •• | | 3 | 3 | 27 | | |
| 12 | Malah | , , | ••• | 8 | 8 | 25 | | |
| 13 | Dusadh | | • • • | 2 | 8 | 2 1 | | |
| 14 | Chamar . | *** | ••• | 3 3 2 2 4 | ¹ 2 | 2.4 | | |
| 15 | Kalwar | 4.7 | | 4 | 2 | 2. | | |
| 16 | Nunis | • | ••• | 2 | | 16 | | |
| 17 | Lohar | | | 3 | 1 | 1 1 | • | |
| 18 | Dhobi | • • • | •• | 3 | 1 | 11 | | |
| 19 | Turaba | • | | 2 3 2 2 3 2 | 7 | .9 | | |
| 20 | Hajam | ••• | ••• | 2 | 5 | 9 | | |
| 21 | Kumber | *** | ••• | 8 | 5 2 8 | 9 | | |
| 22 | Bind | *** | ••• | 2 | 8 | .8 | | |
| 23 | Atitha | | ••• | 4 | 7 | 8 | | |
| 24 | Dhanukh | • • | | 4 3 2 3 2 3 | 7 | 8 .7 7 7 .6 .5 | | |
| 25 | Tatwa | ••• | ••• | 2 | i | 7 | | |
| 26 | Gondha | | • • | 3 | 3 | 7 | | |
| 27 | Phunia | •• | ••• | 2 . | 5 | .6 | | |
| 28 | Barai | | ••• | 3 | 5 | .5 | | |
| 29 | Others | ••• | ••• | 3 | 3 | 93 | | |

73. I will add a few remarks on other details of importance furnished by the census. There has been little variety in the proportions in which Hindus, Muhammadans and Christians make up the population. They stand now at 85, 14 and 1 per cent., respectively. The Christians consist mainly of native converts, who reside in Bettia. They are mainly artisans, and therefore not dependent on the soil for their subsistence.

74. Another interesting and important economic feature, is the tendency for females to increase relatively to males. In 1881 the increase of males was 18 per cent., as against a total increase of 20 per cent., and in 1891 7.5 per cent., as against a total increase of 8.5 per cent. This fact is of importance as indicating more

civilised and settled social, and therefore agricultural conditions.

75. The number of foreigners in Champaran is large, but mainly supplied by three districts. Saran sent 83,000, Muzaffarpur 56,000, and Gorakhpur 40,000, but the proportion of females, who immigrated from Gorakhpur, is very much smaller than from the other two districts. Female immigrants from Muzaffarpur exceed males; no doubt whole families from this district have permanently settled down in Champaran. It is odd that, out of 34,000 Nipalese, 21,000 were women. The 1891 census statistics of infirmities for this district were said by Mr. Blyth, the Collector, to be inaccurate. Such being the case, it is useless to consider their bearing on the material condition of the poor.

The problem of Champaran. Round Bettia, the head-quarters of a powerful Raj and the southernmost thanas, the country was cleared and peopled in very old times, while the rest of this large district was little better than a vast expanse of grass and forest, unbroken save by a hermit's abode, or by an isolated patch of cultivation sufficient to show the great possibilities that lay beyond it. The congested areas in this

and the surrounding districts found an outlet to the east, in Dhaka and Adapur thanas; and the expansion was encouraged by the extraordinary fertility of the tract exploited, which now supports a density of population equal to most thanas in Tirhut. The enward movement still continues, checked only by the evil reputation that the northern portion of thanas Bagaha and Shikarpur have carned for a virulent type of malarial fever. But as the country is opened out it grows much healthier, and this deterrent ceases to act.

77. The district, then, with which we are dealing is one where rents are low; where population is sparse; where land available for cultivation is plentiful and of good quality yet this is the district in which the famine of 1896, not only was probably most severe, but also was soonest felt. Here is a fact which western methods of economic investigation entirely fail to explain. If there was one district in Bihar that should have been able to make a good fight on its own resources against famine, it was Champaran. But this was the district which was the first to succumb, and within certain restricted areas the most severely affected. Such is the problem that a consideration of census statistics has suggested. In treating the material condition of the people an attempt will be made to solve it.

CHAPTER IV.

AN HISTORICAL SKETCH OF LAND REVENUE ADMINISTRATION IN CHAMPABAN.

78. Champaran is a permanently-settled district, and its land revenue history therefore is, broadly speaking, identical with that of the permanently-settled portion of Bengal. But this report would be incomplete without an attempt to trace the development of the land revenue system in this district from its first beginnings and to review in their special application to Champaran the various stages of activity through which the Land Revenue Administration has passed since the acquisition of the *Dewani* in 1765.

First Period-The Muhammadan period.

The revenue jurisdiction of Sirkar Champaran.

The revenue jurisdiction of Administration of the past), Subah Bihar consisted of six Sirkars called Bihar, Rohtas, Hajipur, Tirhut, Saran and Champaran. Four of the six are no longer, even the names of districts, and it is only in the case of the two others, Saran and Champaran, that there exists a fairly common basis for comparative investigation. Champaran in the time of Akbar (1556—1695 A.D.), as now, consisted of the three parganas, Semraun, Mehsi and Majhawa.

Babra pargana, which in 1865 was transferred from the Champaran to the Muzaffarpur district, was thereby merely restored to the district to which it had originally belonged. In analysing then the statistics of agricultural development of the Champaran district, we have the advantage, in that the district nearly 300 years ago comprised much the same area and jurisdiction

as now, of working on an uniform basis of comparison.

The Ain-i-Akbari Todar Mall during Akbar's reign, were condensed by the Finance Minister and scholar, Abul Fazl, in the statistical account which forms a portion of the Ain-i-Akbari (the third book of Blochman's translation). From this we see that Champaran had already become of sufficient importance to be recognised as a distinct revenue unit and separate statistics for it were compiled. It had also been brought into touch with the military system of the Empire, for, according to Abul Fazl, it was responsible for the supply and maintenance of 700 horse and 30,000 infantry.

81. Although, however, this district had long before then emerged from the primitive state depicted in the first chapter, its agricultural resources were

evidently in the initial stages of development. Abul Fazl, while noticing in his general description of the Bihar Subah the many and varied aspects of the several Sirkars, describes Champaran thus:-

"In the Sirker of Champaran the seed of the mash is cast on unploughed soil, where it grows without labour or tilling. Long pepper grows wild in its forests."

This description indicates a sufficiently primitive state of agriculture, and no doubt was an accurate representation of the most characteristic feature of the district at that time. In the case of the other districts Abul Fazl lays particular stress on their high state of agriculture and wealth of mango groves, but about Champaran he is content to say that "mash is grown broadcast in unploughed lands and long pepper grows wild in its forests." That this was a correct view, is further confirmed by the comparative smallness

of its cultivated or revenue-paying area. 'At the Todar Mall's assessment, A. D. time of Todar Mall's assessment the Sarkar Cham-1582. paran contained three mahals, 85,711 bighas 5 biswas, and was assessed at a revenue of 55,13,420 dams. The details for each

pargana converted into acres and rupees are as follows: --

| | • | В. | В. | Dams. | Aores. | Rs. | R Per | ata acre | ٥. |
|---------|-----|--------|----|-----------|--------|----------|----------|-------------|----|
| Semraon | ••• | 7,209 | 2 | 500,095 | 8,352 | 12,502~ | 1 | 7 | , |
| Mehsi | *** | 56,095 | 7 | 3,518,185 | 65,070 | 87,960 | 1 | 5 | |
| Majhaua | • | 22,115 | 16 | 1,494,890 | 26,002 | 37,373 | 1 | 6 | 71 |
| | | | | | | - | - | - | |
| Total | | 85,711 | 5 | 5,513,420 | 99,424 | 1,37,835 | 1 | 6 | |
| | _ | | | - | | | | | |

The description of the system of measurement and assessment con-Champaran in Akbar's time and tained in the Am-i-Akbari suggests that it was only the cultivated land, or at most the cultivated land. and the waste in its immediate neighbourhood that were brought under assessment. Assuming that only cultivated land was so treated, the cultivated area of this district in Akbar's time was only 99,424 acres, or 148 square miles (the higha being calculated at 3,000 square ells as defined in Grant's Analysis).

84. It is more than likely that isolated stretches of cultivation in so inaccessible a region escaped assessment, but that the Bettia Raj did not, as Mr. Grant said, came under assessment until a later date, can only be partially correct, since 25 per cent. of the area then assessed by Todar Mall is contained in pargana Majhawa which has always belonged entirely to the Bettia estate. Making all allowances, however, on this account, the progress since made in reclaiming the district is sufficiently striking.

85. At the present time the revenue-paying area is over 3,200 square miles, and 2,262 square miles are under cultivation, giving therefore a fifteenfold increase since the time of Akbar. The greatest development, as might have been expected, is in the northern pargana of Majhawa. A computson of these figures with similar statistics for Saian proves how much higher was the agricultural development of Saran when Todar Mall made his assessment in 1582 A.D.

Abul Fazl put down the assessed area of Saran at the time of Akbar The agricultural condition of as 229,052 highas, against 85,711 highers in Chambaran and Champaran under Akbar paran, i.e., as nearly three the excent of the condition of paran, i.e., as nearly three the excent of the condition compared. ed area of Saran at the present time is about 2,000 square miles. In Akbar's time it was about 415 square miles tion has increased fivefold in Saran, as against fifteenfold in Champaran.

87. The most striking feature of To lar Mall's assessment is its marked The differences in productiveness uniformity. Todar Mall's assessment critibetween Champaran and the other three Sarkars of North Bihar must have been even greater than they are now, yet Champaran was assessed at only 3 annas less than Tirhut and Saran. The only conclusion to be drawn is that Todar Mall's settlement, in theory scientific enough, was in practice worked on methods that would not stand close scrutiny.

88. Another noticeable feature is that, looked at in the light of modern figures, the incidence of revenue etrikes one as very high. And this was not the outy demand against the raiyat, for the zamindar's malikana at 10 per cent.,

or its equivalent if he himself managed the estate, as well as the cost of collection, probably at 20 per cent., were charges on the balance of the produce. The incidence of land revenue at the present time is shown by the following figures:—

| Total area in acres. | Cultivated area. | Revenue. | Incidence per acre of total area. | Incidence per sore of cultivated area. |
|----------------------|------------------|----------|--------------------------------------|--|
| | | Rs. | As. P. | As. P. |
| 2,079,811 | 1 447,874 | 5,15,803 | 3 11 | 5 8 |

The incidence has decreased therefore from Rs. 1-6 to As. 3-11 per acre, or while the total cultivated area has risen from 148 square miles to 2.262 square miles (taking all the originally assessed area to be cultivated), that is, fifteenfold, the revenue has gone up from Rs. 1,37,000 to Rs. 5,15,000, or less than fourfold. The dispf operation is a sufficiently striking proof of the less that has accrued to Government from the introduction of the Permanent Settlement into this district. Fortunately there were successive enhancements of the revenue from the time of Todar Mall's settlement until the British took charge of the dwani in 1765. Those, however, were summary and arbitrary, without a basis of detailed measurement and scrutiny of assets.

89. The first alteration of the essessment after Todar Mall's settlement Aurangzib's assessment, 1685 of which we have records was made one hundred years later, or, more accurately speaking, in 1685

AD. years later, or, more accurately speaking, in 1685, by Shahjahan in the reign of Aurangzib. The standard assessment was raised from Rs. 1,37,836 to Rs. 2,10,151, but there is no record of the area then cropped, and the increase was probably not regulated with strict regard to an expansion of cultivation. The standard revenue of Champaran in rupees was thus raised by 53 per cent., the percentage for Bihar generally being nearly 60. The increase of revenue in dams was much greater, but relatively to silver, this copper coin had deteriorated in value. Mr. Grant in his analysis of the finances of Subah Bihar, estimated that at least 462 went to the rupee at this time, as against 40 a century earlier; but if, as the same authority seems to indicate, all the revenue was absorbed in jagirs and not paid into the khalsa, them owing to the practice that had sprung up for Government to exaggerate the value of its jagir grants, the figures for this district become still less trustworthy. Such, however, was probably not the case, and without placing too much reliance on actual figures, the assessment on Champaran no doubt underwent a material increase, which, however, owing partly to the increased quantity of silver in the country, but mainly to the prosperity due to the settled government introduced by Akbar, this district was well able to bear.

90. The next tightening at the fiscal screw occurred in Bihar nearly a century later in 1750 during the reign of Ahmad Shah's assessment, A.D. Shah Durrani, but in being entrusted to Aliverdi Khan, the immediate predecessor of the notorious

Surajuddaula, it appears to have been placed in sympathetic hands. In Champaran the standard revenue in dams was increased from 97\frac{3}{4} lakhs to 137\frac{1}{4} lakhs, but Mr. Grant estimates that the dam was at that time worth only re of a rupee which makes the standard assessment calculated in rupees Rs. 2,06,822, or less by Rs. 10,000 nearly. It can probably therefore be said with safety that there was no material alteration in the assessment on this district. This remark applies to North Bihar generally. In Sirkar Hajipur, indeed, there appear to have been a considerable decrease.

Aliverdi Khan's settlement was no more scientific than that of Shahjahan. There was no measurement, and the increase obtained was largely in the form of abwab.

91. I will close this brief sketch of the settlements of Champaran prior to the acquisition of the dewani in 1765 by the The distinction between khalsa East India Company with a further reference to the system of dividing the land revenue into the system of land or jagirs which, however, in the same way as khalsa lands, or therethe revenue of which was paid into the exchequer, were subjected to a similar revenue assessment, the difference being that in the one case the revenue was appropriated by the jagirdars, in the other it was paid into the imperial exchequer.

The advantage of the system was that it relieved the administration from the trouble of the double transaction of receiving money from its officers and paying it back to them again, but it of course opened the door to the greatest and most widespread abuses, and these jagirdars sacrificed public interests not only by devoting all their attention and energy to improving and developing their grants, but also by encroaching on and misappropriating khalsa lands. The Imperial Government, when strong enough, minimised these evil offects by interchanging jagir and khalsa land, but, as Sir John Shore tells us, the Maghal administration was one of discretion, and the weaker it grew, the more these abuses flourished unrestrained.

92. In order to trace the effect in this district of the land revenue administration from 1765—when the East India Company stood forth as diwan—to the present time, it will be convenient to divide its history into periods. In doing so I will give a brief sketch of the characteristic

features of each stage.

93. The Muhammadan period being regarded as the first stage, the second First period—Muhammadan. Second period—Early English. The acquisition of the diwani to the deconnial settlement. In 1768 Mahomed Raza Khan was entrusted with the revision of the land revenue of Subah Bihar, but he contined himself mainly to adjusting, without altering, the existing assessment. Annual settlements were made until 1772, when, under the control of European supervisors, a quinquennial settlement was attempted. It proved a failure, and in 1786 after annual settlements with farmers which also were largely unsuccessful, the Directors tired of these fruitless experiments, expressed a desire for a durable assessment on the basis of actual collections for a term of years.

The third period—The permanent settlement and its effects.

The third period—The permanent settlement and its effects.

The third period—The permanent settlement and its effects.

The third period deals with the immediate effects of

this settlement after its declaration as permanent.

95. It is wellknown that the immediate effects of the Regulation of 1793 are popularly recognised as having been—to bestow the status of proprietors on many who were mere rent-receivers; to provide measures for the protection of the raiyats, which, though theoretically sound, were practically abortive; and by the sudden introduction of a stringent system of sale for arrears of revenue to ruin large number of the hereditary land-owners. Mr. MacNeile, in describing in his memorandum the effects of what he terms the "first unbending fixture" with which the natives of this country were brought in contact, remarks:—

"It is scarcely too much to say that within the ten years that immediately followed the permanent settlement, a complete revolution took place in the constitution and the ownership of the estates which formed the subject of that settlement."

While I shall show hereafter that this description, in its application to North Bihar, must be considered as an over-statement of facts, still, in Bengal generally it is probable that the excessive number of defaults endangered the success of the permanent settlement, and this view led to the passing of Rogalation VII of 1799, the notorious Haftam which accorded to zamindars an unrestricted power of distraint and eviction without reference to any court; and, to complete their despotic authority, rendered any tenant unable to prove the truthfulness of a complaint made against his landlord in a court, liable to fine or imprison-The effect in reducing in Bengal the number of sales for arrows of revenue was immediate; and when it was seen that the revenue was secured, a revulsion of feeling set in which found expression in Regulation V of 1812 (the Panjan), whereby only the property and not the person of the tenant was liable to seizure for default. This Regulation proved unsatisfactory, and the opinion began to grow that efficient administration was impossible without a more active intervention. In consequence, Regulation XII of 1819 was passed for the resuscitation and reorganisation of patwaries; but what had now grown into a definite desire to safeguard the cultivator's rights was defeated by the concession to the zamindars of a joint control over the patwaries, which resulted in the latter being transformed from protector of the raiyats to subservient agents ready to further the illicit practices of the zamindars

Fourth period-Resumption of rent-free grants-Badshahi and Hukumi distinguished.

96. At the time of permanent settlement the authority to hereafter scrutinise all rent-free grants, and, if invalid, to assess them, was specially reserved. announced in the Proclamation of 1793, that "the Governor-General in Council will impose such

assessment as he may deem equitable on all lands, at present alienated and paying no public revenue, which have been or may prove to be held under illegal or invalid titles." Revenue-free lands were divided into two classes—Badshahi and Hukumi; the former being those that were granted by the Mughal Emperors direct, and the latter by Government officials. Regulation XXXVII of 1793 dealt with Badshahi grants, and Regulation XIX of the same year with the others. Badshahi grants were recognised as valid if the holder could prove his sanad and was in possession. Hukumi grants, though in their nature invalid, were accepted as valid if dated prior to 1765. grants of a subsequent date were invalid, but those given between 1765 and 1790 were to be accorded a privileged rate of assessment. By Regulation XIX all likhiraj grants made by zamindars after 1790 were invalidated, and zamindars were authorized to nullify their own grants. Moreover, the Government ruled, that for any grant of less than 100 bighas, it would forego all claims to revenue and leave to the zamindar the authority to assess it to rent. epractical steps were taken at the time these Regulations were passed, but in 1800 an attempt was made by a Regulation of that year to provide for the preparation of a parganawar register, by making local enquiries through kanungos, and also by compelling lakhiraj lars to register their interests; but this, too, proved to be inoperative, and in 1819, a further attempt at amplification of the law and its effective application resulted in Regulation II of that year, the principal provision of which transferred the power of resumption from civil to revenue courts. It was supplemented by Regulation III of 1828, which appointed an executive agency in the person of a Special Commissioner, to give practical effect to the policy of Government; and it was under his guidance that resumption proceedings were systematically undertaken between the years 1830 to 1845, which resulted in a very material increase in the revenue. Mr. MacNeile, in his memorandum, calculated the total increase, mainly on this account. for the whole of Bengal at Rs. 66,21,144, for no less than two-thirds of which To complete this sketch, I would add that Act VIII of 1869 Bihar accounted. has since transferred the resumption cases again to the civil courts, and the question has been further set at rest by the modern limitation law (Act XV of 1877), which expressly gives a limit of 12 years for all private resumption suits, the limit, however, being extended to 60 years in case of suits by the Secretary of State. The fourth period is marked by active operations for the resumption of invalid revenue-free grants, and tan be said to have extended up to 1845.

97. The fifth period is characterised by the execution of the first professional village survey in these provinces, the revenue survey of 1843-49. Act IX of 1847 was also passed providing for a survey of diara Fifth Period The first profes. lands and the assessment of accretions during this period, and it formed the basis of the diara survey of 1865.

The sixth and last period runs from 1850 down to the present time, its chief characteristic being a sustained attempt on the part of Government to undo, by practical Sixth Period. Modern times. legislation, the injury to the cultivating classes and to the administration caused by that policy of blind non-intervention which, while not directly emanating from the Permanent Settlement, had grown up round it. which had been so abused by the strong at the expense of the week, and which had been adjudged as both impracticable and deleterious 30 years before. Act XI of 1859 the Revenue Sale Law at present in operation was enacted. By Act X of the same year, and Act VIII of 1869, the first conscientious attempt

was made to define, by practical legislation, the status and rights of tenants, and the principles on which ronts might be enhanced. From 1870 onwards ensued a period of great activity in the land revenue administration. Roadof 1868. It was recognised that, with so many new duties to perform, the administration could not be effective without a complete record of estates and of proprietary interests in them. Hence the Land Registration Act VII (B.C.) of 1876 was passed. In the same year, the Partition Act, VIII of 1876, introduced with the original intention of restricting partitions and simplifying the procedure, became law. In 1872 and 1873 rent disturbances had occurred in Pabna and elsewhere in Bengal. In 1874 the great famine occurred in Bihar, which drew public attention to the depressed condition of the peasantry in that province, Both events impressed on Government the necessity for revising the rent law. The Rent Law Commission was appointed, whose labours culminated in the Bengal Tenancy Act of 1885, and the present settlement and survey operations.

Muhammadan period I have already sketched. I shall now describe how the decennial settlement was carried out in this district, and its most conspicuous immediate results when confirmed as permanent. The procedure followed in effecting the resumption of revenue-free grants, and the increase to the revenue resulting from these operations will then be traced, and the increase of temporarily-settled revenue, obtained as a consequence of the diara survey of 1865, will be roughly estimated. The results of the Land Revenue and Partition Acts, though unimportant

The results of the Land Revenue and Partition Acts, though unimportant in this district, will be lightly touched on, while of the chief effects of the most characteristic feature of the sixth period,—the rent-law legislation,—the portions of this report that deal with the present operations are an exposition, I hope sufficiently complete.

The second Period-Early English, 1765-1790 A.D.

100. An attempt has been made in the Muzaffarpur report to show that, in the case of Bihar, the general opinon as to the method on which the Permanent Settlement was conducted, and as to its results required considerable modifications, but the Champaran district is to a certain extent an exception. The history of Champaran revenue administration for that period is mainly the history of one big estate, the Bettia Raj; and, in consequence, its conditions present some parallel to those met with in the Bishanpur, Burdwan, and other big estates of Bengal.

Sirkar Champaran was the proprietary right of the Bettin Raj from the middle of the 17th century, when it was acquired by a successful military adventurer, Raja Ugra Sen Singh His direct successors ruled up to two years before the Dewani grant, but the last of them having died without male issue. was succeeded by his daughter's son, Raja Jugal Keshwar Singh, who was on the gadi in 1766. He, however, foll into arrears of revenue, and in the words of the Judges of the Dewani Adalat, he "rebelled and fought with the forces of the British Government, was defeated and fled to Bundelkhand for safety. and his Rajgi was seized upon and brought under the direct management of the Company." But the Company found its revenue grew less and less. So in May 1771, the Patna Council, by conciliatory overtures to Jugal Keshwar, Singh, persuaded him to return to the Company's territories, and the Council in the following June made a partition of the Sirkar, giving the pargamas of Majhawa and Semraon to him, and those of Mohsi and Babra to Srikishan and Abdhut Singh, the grandsons of Gaj Singh, for their support. This arrangement was sanctioned by Government, and malikana was paid to Jugal Keshwar, and after his death in 1784 to his son, Bir Keshwar Singh on the one side, and to Srikishan and Abdhut on the other until the formation of the Decennial Settle-

When this settlement was under construction, Bir Keshwar Singh and Srikishan Singh both claimed to enter into settlement for the whole of the Raj territories, but the Governor-General upheld the partition effected by the Revenue Council of Patna and sanctioned by his predecessor.

The original Bettis and Shiphar

The original Bettis and Shiphar

Majhawa and Semraon forming the Bettia Raj, and parganas Mehsi and Babra constituting the original

property of the Shiuhar Raj family. It is noticeable, as indicating the extent to which the farming system had been carried, that both these estates prior to the Decennial Settlement had been farmed out, the proprietors receiving malikana only. Innumerable petty estates, which justified the preference for farmers over proprietors in Tirhut and Saran as simplifying administration, were here totally absent.

103. To give an idea of the state of revenue in this Sirkar during the early periods of the British occupation will be of interest. The most accurate account available is contained in a letter, dated the 15th June 1771, from Mr. Golding, the then supervisor of Sirkar Champaran, in which he reported the desolate condition of the country and its falling revenue, and suggested the partial restoration of Jugal Keshwar Singh and the partition of the Sirkar between him and Srikishan Singh as the proper remedy. He observed as follows:—

"Sarkar Champaran is in a state of desolation and ruin hardly to be credited by any one who has not been a witness to it. This assertion will be partly demonstrated by the account of its collections which I now enclose for the year" (i.e., 1766).

103. The statement of revenue collections that accompanies the letter is as follows:—

Progressive account of the collections in Surkar Champaran from the year 1175 to 1177 inclusive.

| ! | | EACH CAPTURE IN III - I | | | |
|---|--|---|--|---|--|
| ì | * | 3 | 4 | 5 | 6 |
| | Rs. A. V. 4,35,005 14 C 1,67,478 3 8 21,556 18 6 33,883 0 0 3,976 1 0 | Ro A. P. 3,82,509 10 0 100,860 1 0 59,745 0 11 18,608 4 9 | Re 4. V. 3.05.064.10. 0 92,287. 7. 0 41,471. 7. 9 21,102. 5. 9 12,034. 4. 3 | Re. A. P. 2,35,930 4 A He,435 14 A 87,865 3 8 24,971 5 9 10,497 10 8 | Ba. A. P. 1,04,114 13 0 61,206 14 6 24,102 3 8 51,025 7 6 4,646 6 0 |
| | ••• | 4,33,305 14 C 1,07,475 3 8 11,556 18 6 33,835 4 0 3,956 1 0 | 4,31,305 14 C 3,82,869 1 O 1,67,475 3 8 10,859 1 0 9 1,67,475 3 8 10,859 1 0 1 0 1 1 0 1 0 1 0 1 0 1 0 1 0 1 0 | 4,31,005 14 C 3,82,869 0 0 3.95 664 10 0 1,67,475 3 8 19,869 1 0 22,287 7 0 21,595 18 6 59,748 49 21,492 5 3 32,883 0 0 18,898 4 9 21,492 5 3 32,883 1 0 18,898 4 9 21,492 5 3 12,034 4 3 | 4.35,005 14 C 3,82,608 0 0 3 05,664 10 0 2,35,930 4 0 16,7475 3 8 10,859 1 0 92,287 7 0 84,435 14 0 91,956 18 6 50,748 0 0 44,671 7 9 87,665 3 8 39,863 0 0 18,698 4 9 21,102 5 9 24,941 5 9 3,950 1 0 1 1,8698 4 9 12,034 4 3 10,487 10 8 |

The drop from 7 lakhs to 23 lakhs in four years was a genuine source of anxiety to Mr. Golding, and it must be admitted that Jugal Keshwar's passive acquiescence in the revenue administration (for it proved nothing more) was bought at a great price.

Nawab Hoshiyar Jang's RogisNawab Hoshiyar Jang's Rogister, 1773A.D.

Nawab Hoshiyar Jang's Rogisthe Collector of Saran writing in 1823 described as
"a collection of kanungoes' jama wasilbaki papers
for the Fasli year 1180 (i.e., 1773A.D.) for the parganas then included in the
district of Saran" Its value is diminished by want of systematic headings
and by omission of areas. According to this there were then in Sirkar
Champaran 7 mahals, 4 parganas including Babra, since transferred to Muzaffarpur', 35 tappas comprising 1,802 villages, of which 1,154 were ask and 648
dakhili. They included 228 revenue-free villages (158 ask and 70 dakhili),
estimated to yield a Tumari jama, or standard assessment as understood by
Todar Mall, to the amount of Rs. 33,974. The remaining villages were charged
with a revenue of Rs. 175,251, inclusive of abwabs or excluding Babra with
Rs. 1,39,389.

Demand of 1583 and 1773 compared.

106. The following table distributes the amount, pargana by pargana, and compares it with the figures of Todar Mall:—

| Pargau | ι. | | | | Reve | nue of— |
|---------|-----|-----|-------|-----|----------|----------|
| | | | | | 1582. | 1773. |
| | | | | | Ra. | Rs. |
| Majhana | | ••• | ••• | ••• | 37,373 | 80,188 |
| Mehsi | ••• | *** | ••• | | 87,960 | ð1,858 |
| Semraon | *** | *** | *** | ••• | 12,502 | 7,343 |
| | | | Total | *** | 1,37,835 | 1,39,389 |

It is indeed extraordinary and indicates how low Champaran had fallen that the revenue assessment in 1773 and two hundred years before were approximately the same, and the most striking feature is that while the standard assessment of the northern pargana Majhawa had increased by 114 per cent, that of Mehsi and Semraon had been allowed to fall off 41 per cent, though they were both fertile and accessible.

107. Again, Mehsi and Semraon, which covered only one-sixth of the total district area, bore nearly half its revenue, leaving the other half for Majhawa, which absorbed the other five-sixth of the area; but a very large part of the latter was untraversed jungle. The apportionment of the revenue over the

neveral tappas of Majhawa pargana was as follows:-

| | Tappa. | | | | Revenue. |
|--------------|-----------------------------|----------|-------|-------|----------|
| | | | • ** | | Ra • |
| 1. | Daulata | 140 | *** | • .,. | 6,546 |
| 2. | Sonewal | *** | ••• | | 1,451 |
| 8. | Olaha | *** | ••• | ••• | 1,198 |
| 4. | Jaffrabad | ••• | ••• | ••• | 1,151 |
| 5. | Sakhwa | ••• | *** | ••• | 5,220 |
| · 6. | Mando | | ••• | *** | 4,321 |
| 7. | Madhwal | ••• | •• | *** | 7,703 |
| 8. | Bahns | ••• | ••• | *** | 4,853 |
| 9. | Sugaon | *** | ••• | ••• | 10,986 |
| 1 0. | Khadda | ••• | *** | ••• | 13,500 |
| 11. | Patjirwa | *** | ••• | ••• | 1,982 |
| 12. | Sathi | *** | ••• | ••• | 3,411 |
| 13. | Chigwan Batanra | *** | ••• | ••• | 8,861 |
| 14 & 15. | Balua Gondauli | | *** | *** | 1,087 |
| 16, 17 & 18. | Chanki Deoraj and Gopala | } | ••• | | 1,929 |
| 19. | Manpur | | • • • | ••• | 1,406 |
| 20 | Harnatand | • • • • | • • • | ••• | 4,003 |
| | | | | | 80,188 |

108. Thus eight entire tappas are altogether missing from the list, all of which except Belwa (in thana Kesaria) are situated in the northern thanas as shown below:—

| | Tappa. | | | | Thana. |
|----|----------------|-----|-----|-----|--------------|
| 1. | Duho Suho) | *** | ••• | ••• | Adapur. |
| 2. | Balthar) | | | | _ |
| 8. | Bhabtha) | | | | |
| 4. | Ramgir | | ••• | | Shikarpur. |
| 5. | Jamhauli (| *** | ••• | ••• | KAMERON PARE |
| 6. | Dun | | | | |
| 7. | Rajpur Saharia | *** | | *** | Bagaha. |

Besides, tappa Bahas, which is also in Adapur, and now pays no less than Rs. 2,64,149 as revenue, was then assessed for only Rs. 4,853. It is seen from this register that the revenue had decreased by nearly a lakh of rupees since Mr. Golding wrote, so that Jugal Keshwar's restoration had not resulted in averting its downward progress.

Jugal Keshwar superseded by farmers.

109. Jugal Keshwar Singh proved a failure, and Mr. Golding thus expressed himself on the subject in his letter to the Patna Council of 17th June 1772.—

have been chiefly employed in adjusting the business of Jugal Keshwar's zamindari. The country I found in so very ruinous a condition that without timely alteration in the mode of settlement I am confidently of opinion that not half the present nominal revenue would have been collected in this year. Raja Jugal Keshwar singh, contrary to expectations which were entertained of him proves to be very unequal to the management of a zamindari, which requires so much attention."

He then continues by explaining how he divided the whole Sarkar into 15 small farms, which he rented to as many different renters for two years most of whom he considered to be men of character, who could be relied on.

110. As to the realisation of arrears from Jugal Keshwar singh, as reported:—"On examination of the accounts of the people lately employed by the Raja, which will be finished in about 20 days, should any of them be found to have embezzled any part of the rents beyond the usual and necessary charges, I will use my endeavours to recover it from them, or send them prisoners to Patna. I think it most advisiable that Jugwal Kishwar Singh himself should be ordered to reside in Patna at least until the new farmers may have restored their districts to some order, for his being at the same time in the district may very probably occasion some obstruction to the business, or draw the attention of the raiyats from their new masters."

The land revenue, 1774 A D. cno better record than the Sisala Register, which professes to give an account of the revenue collections for the 30 years preceding. Unfortunately most of the columns of the register are blank, but the figures available are summarised in the following statement ranging from 1774 A.D. to 1789:—

| | | | | YEAR | Bs. | | | |
|--|--|-----------------|-----------|---------------|---------------------------|---|--|--|
| FARIA. | 1185. | 1182. | 11-3. | 1184. | 1185. | 1184. | 1187. | 1198. |
| A. D. | 1/74. | 1775. | 1776. | 1777. | 1778. | 1779. | 1756. | 1781. |
| 1 | 3 | 3 | 4 | 6 | 0 | 7 | Ħ | 9 |
| gref y green in mediting outstanding out or a dead on the first parameters for the con- | Юч. А. Р. | Rs. A P, | Rs. A. P. | Rs. A. P. | Re. A. P. | Rs. A. P. | R«. A. P. | Bs. 4. P |
| nount of rovemue cul- acted, | | | | 1,40,943 13 8 | 93,369 7 3 | 42,639 12 0 | 2,00,881 9 9 | 43,281 10 |
| of the second of the second sec | * 18 MAY 1, 179 MAY 11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | an and a second | | YEV | Rø, | , ago, de 12,4 - 1 - 1748 - Re a Sendage e en meso ens enne | ter and every entry or and a substitute of the s | a contenta a a a a a a a a a a a a a a a a a a |
| Panti. | 1189. | 1190, | 1191. | 1109. | 1193, | 1164. | 1195 | 1196, |
| A. D. | 1782. | 1743. | 1384, | 1785. | 1796. | 1797. | 1768. | 1789. |
| nervilla de la calificación de la c | 10 | 11 | 13 | 13 | 14 | 18 | 16 | 17 |
| paint of povening col | Bs. A. P. 1,07,088 1 3 | | | | Вн. л. г. 4,18,013 5 9 | | | Rs. A. r. 4.79,790 d 0 |

The fluctuations are extraordinary, and the perplexities of a Collector who had to frame a budget estimate on such data could better be imagined than described, but there runs throughout a steady tendency for the revenues to expand, and the collections in 1789 were Rs. 4,72,790.

112. The state of things in 1107 Fash or 1790 A.D., i.e., just a year prior to the decennial, or more properly speaking nonennial settlement, as it took place in Champaran in 1791, is shown by the following figures taken from a register of that year:—

| Number of villages. | Area. | Revenue, including Babra. |
|---------------------|--------------|------------------------------|
| 1 | 2 | 3 |
| 1,491} | B. 55,353 | Rs. 3,80,119 |

The number of villages is almost the same as thet given by Hoshiyar Jang, minus the revenue-free ones, but the revenue demand had recovered

from the former depression and had more than doubled itself. As the bigha in Champaran is so variable a quantity, it is impossible to estimate in acres the area furnished, and without this no deductions in respect to it can be made.

113. Before passing on to describe the result The descential settlement, 1791. Preliminary enquiries. of the decennial settlement, I will explain the method in which that settlement was effected.

So early as the 10th August 1787 the Board called upon the Collectors to furnish a plan of settlement of the districts in their respective charges for ten years, in response to which Mr. Montgomery, then Collector of Saran, submitted in May 1788 his proposals, and made the following observations with regard to Sirkar Champaran:-

"The district, I am convinced, will bear the jama mentioned in the enclosed plan, and though it is more than was ever paid before or after the Company's Doweni, yet as It is a large district, and contains an immense quantity of waste lauds fit for cultivation, the annual amount of the increase proposed to be put upon that district may rather appear to your Board to be inadequate to what by improvement so large a district ought to pay. But I must beg leave to observe that the most part of the waste lands, from the improvements of which the increase is expected, lies on the borders of the Nipal territories, and on account of the rate of assessment in that part of the country being low, these lands must necessarily be cultivated at a much lower rate than usual in other parts of Champaran."

The only other topic of importance that this report touches is the pargana rates. They existed but in name, and instead of there being one rate for the pargana, there were in some cases no less than a dozen rates for one village. This state of things was a serious bar to the enforcement of the Regulation of 1793 for the execution of pattas. In short, with not only rent rates, but standards of measurement existing in extraordinary variety, the Regulation framed for the protection of the raivats had not the smallest chance of success. Ultimately on the 16th April 1791 he sent up his final report on the proposals for the settlement of Champaran: -

"On the 17th November last" he wrote, "I had the orders of the Governor General in Council relative to the decennial settlement of Sarkar Champaran, and I replied that it was my intention to proceed to the spot for the purpose of forming a settlement for the district conformably to those orders. I accordingly left Chapra in the beginning of Decomber, and on my arrival at Segowli, the most central part of the district, I thought proper to report the publication of those orders throughout the whole district. I remained at Segowli two months, in the course of which I received a variety of claims to different parts of the district, and numerous obstacles and difficulties were brought forward, many of which required references for the opinion of your Board and other long investigations. But in order that the collections of the revenue might not be injured by a delay in the formation of the settlement, I thought it expedient to conclude a nine-years' bandshast for the whole district, subject to the approbation of your Board, at the same time submitting at large the circum tunces above alluded to for your consideration, and I bog leave to observe that should you be pleased to cause any alteration in the arrangement now made it may be effected without undoing altogether the present conditional settlement."

When we are informed that the settlement was begun and ended in two

months, its perfunctory nature requires no further demonstration.

115. The Collector describes in the report how he prevailed upon Bir Keshwar Singh on the one hand and Srikishan and Abdhut Singh on the other to accept settlement of the two parganas each, according to the partition made by the Governor-General in Council, giving both of them distinctly to understand that it was open to them to go to Civil Court for relief. The next question which seems to have trouble thim was the claim of several persons to certain portions of the district, which they had held during the period of Jugal Keshwar's expulsion from the British territory, and in which they had They were all disposed of in one clean exercised rights of mortgage and sale. sweep, the Collector engaging for the revenue with Bir Keshwar Singh. The third point of interest was the application of one Har Kumar Dutt Sen for the recovery of 15 tappas, which had actually belonged to his ancestors, but which Lalit Singh, an ancestor of Bir Keshwar, had taken away from them by force of arms, only two tappas and-a-half, viz., Ramgir, Jamhauli, and half of Chigwan, now forming the Ramnagar Raj, remaining in their possession. The Collector settled the last-named two tappas and a half with Har Kumar Dutt Sen, but rejected his claims for the rest.

The only other matter of interest I would refer to is the settlement of tappa Duho Suho, which is now in the zamindari of the Madhuban Babu,

and has formed the subject of special difficulty on various occasions in the course of the present settlement proceedings. It was then held by Abdhut Singh, a near relation of the Bettia Raja, and the founder of the present Madhuban family, as either jagir from the Bettia Raj or more probably as a maintenance grant. Bir Keshwar Singh wanted it included in the engagement that he entered into, but the Collector resumed and settled it with Abdhut Singh on a jama of Rs. 2,000 only. To complete its history here I may add that it was again brought under resumption proceedings after 1830, and the revenue was raised to Rs. 11,473, at which it now stands.

The revenue demand of 1791 But from a subsequent report, submitted by another (decennial settlement).

Collector in 1793, to which I shall refer more fully when dealing with the second stage, it appears that the jama settled on that occasion, i.e., at the nonennial settlement, was Rs. 3,98,253-6-9, apportioned among several proprietors as follows:—

| Sorial number. | Name of the proprietor. | Name of tract. | Jama. | Remares. |
|-------------------|--|--------------------------------|--------------|----------|
| -1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| | The state of the s | | Rs. A. P. | |
| 1 | Birkeshwar Singh | Majhawa and Semraon | 2,62,050 2 9 | |
| 2 3 | Abdhut Singh | Duho Suho | 2,000 0 0 | |
| 3 | Srikishan and Abdhut Singh. | Mohsi and Babra | 1,25,350 2 0 | |
| 4 | Har Kumar Dutt Son | Ramgir, Jamhauli, and Chigwan. | 3,640 15 12 | · |
| S | Abhay Churan Mozum-dar. | Taluqua Sangrampur | 4,912 2 0 | |
| 6 | Umed Singh and Ram Bal Singh. | Mauza Harpur Rai | 800 0 0 | |
| | Dat Singh. | | 3,98,253 6 9 | |
| İ | | Exclude Babra | 46,826 8 0 | |
| ! | | Balanco | 3,51,427 8 9 | |

The settlement holders.

The settlement holder

of the four great families in the district, viz., Bettia, Madhuban, Shiuhar and Ramnagar. The 5th was the son or nephew of one Jagmohan Mukerji who seems to have played a very interesting part in the history of the Bettia Raj. He was dewan or head Native Assistant to the Collector, Mr. Montgomery, when he concluded the Nonennial Settlement at Segauli. The plaintiff in the great Bettia Raj law-suit, which was instituted in 1808, accounted for his acquisition of Sangrampur Taluka and the Nimaksayer (saltpetre) mahal thus:—

"That gentleman (Mr. Montgomery) in 1198 Fasli, proceeded accompanied by the Mukerji to Segowli, and sent thence a parwans to Raja Srikishan Singh, the father of your petitioner's client, directing him to attend at the place immediately, as it was expedient to enter into the Decennial Settlement, and the Raja having accordingly attended put in a darkhast in which he prayed that the kabuliyat of the entire milkiyat of the Champaran Sarkar might be taken from him.

taken from him.

"Jagmohan aforesaid hereupon proposed that if he would give his sous a document making Sangrampur, &c. comprising 12 villages, their milkipat with the salt mahals in the Champaran Sarkar, and a mustajer lease of 13 tappas in pargana Majhawa, at an easy assessment, he would presure the recording of the kabulayat for the whole of the Champaran Sarkar in the name of the father of your petitioner's client.

But he considering the estate to be his own rejected the corrupt overture. Asymphan being hereupon displeased with the father of your petitioner's client made a similar proposal to the defendant, Bir Keshwar, and concluded with telling him that if he would accede thereto, he (Jagmohan) would by some contrivance or management obtain the filing of Bir Keshwar's kabukyat for the Majhawa and Semraon pargana."

119. The plaint goes on to say that Bir Keshwar agreed to the proposal, and executed an instrument in favour of Jagmohan's sons and nephews on the lines desired by him. That the whole transaction was manifestly dishonest is apparent. The Collector, Mr. Sunder, reporting in 1793, records the following observation in respect of this job:—

"It is evident that Mr. Montgomery must have been deceived with respect to the assets of the parganas of Majhawa and Semraon, which are the property of Bir Keshwar Singh, and the manner in which the lands have been rented by Bir Keshwar proves in my opinion beyond dispute, that the Raja and Jagmohan Mukerji combined in causing the deception."

Yet Mr. Montgomery in his report on the Nonennial Settlement quoted above, speaks of this gift of taluka Sangrampur to the sons of Jagunohan by Bir Keshwar Singh as the only bond fide affair of the class in the whole Sirkar! No trace is now found of Jagunohan's descendants, and it is quite probable that

his small estate has since been merged into the Bettia Raj.

120. Thus ends the period immediately preceding the Permanent Settlement, and its history can be truly said to have centred round the Bettia Raj. It began with the expulsion of Raja Jugal Keshwar Singh and a steadily declining revenue; it ended with his descendants, and relatives secured in the enjoyment of the proprietary rights assigned to them, and a revenue which since 1773 had more than doubled.

(iii) The Third Period-Permanent Settlement.

121. We now enter on the third period—that dealing with the Permanent
The third period. Settlement, and its immediate effects.

• 122. It would appear from a perusal of the Nonennial Settlement report that the Collector, to do him justice, did not contemplate that this settlement would be confirmed in perpetuity without those modifications that experience would prove to be necessary. Further enquiries were made, but a great fire evertook the Chapra Collector's office on 19th May 1792, and destroyed most of the results of his labour, and it was not until the May of 1793 that the Collector was able to submit a final report on the proposal.

The Collector's principal method of enquiry was to compare the settlement of 1791 with the rentals since realised by the zamindars from their underfarmers and raiyats, as shown in the books of the village patwaries. The main result was to prove that Bir Keshwar Singh was greatly underassessed, his mufassal jama or gross rental being Rs. 3,95,704, while his revenue had been fixed at Rs. 2,62,059 only. Hence he obtained a profit of Rs. 1,33,645, or more than 30 per cent. of the assets, whereas he was entitled to only 10 per cent. Sri Kishan Singh, on the other hand, was assessed at Rs. 1,25,350 Government revenue, his rental being Rs. 1,42,117. His profit therefore was only just over 10 per cent.

The permanently-actiled demand.

The permanently-actiled demand.

The permanently-actiled demand.

I am glad to say the omission is more than supplied by a register kept in the Collector's office, purporting, as an English note annexed to it shows, to contain a copy of all the settlement slips in which the landlords recorded their engagements at the Decennial Settlement. I quote the figures giving pargana totals below, and, as they are in excess of those noted above, I think they are the ones ultimately declared permanent:—

| | | | | Ra. |
|---------|---------|-------|-----|----------|
| Pargana | Mehsi | 4.00 | | 78,532 |
| Ditto | Semraon | • • • | *** | 14,430 |
| Ditto | Majhawa | *** | ••• | 2,92,625 |
| | | Total | ••• | 3,85,587 |

The settlements of 1562, 1778 and 1793A.D. compared.

125. In the following table the assessments of 1582 (Akbar), 1773 (Hoshiyar Jang) and of the Permanent Settlement are placed in juxta-

position:-

| | 1 0 | | | REVENUE IN RUPERS. | | | |
|-----------------------------|------------|-------|-----|----------------------------|---------------------------|---------------------------------------|--|
| PARGANA. | | | | 1582. | 1773. | 1790. | |
| | | | | 2 | 8 | 4 | |
| | • | | | Rs. | Rs. | Ra. | |
| Mehsi Somraon Majhawa | ••• | *** | ••• | 87,960 12,502 37,373 | 51,858 7,843 80,188 | 78, 5 33 14,430 2,92,625 | |
| | | Total | | 1,37,835 | 1,39,389 | 3,85,587 | |

The main porition of the increase in revenue is again found to the credit of Majhawa. In Mehsi and Semraon the revenue was not doubled, whereas in Majhawa it was almost quadrupled, with the result that the great disparity between the extent of Majhawa and its revenue as compared with the rest of the district, was to a certain extent diminished.

126. The statement below shows, tappa by tappa, the difference for the

Majhawa pargana in revenue in 1773 and 1790:-

After the second of the second

| Chigwan Batara Bagaha and Shikarpur 8,861 37,000 37,000 37,000 30,000 3 | , | Percentage | |
|---|---|---|--|
| Rajpur Soharia | 1 . | of rease. | |
| Rajpur Soharia | | 5 | |
| Miscellaneous, including 50 | 5 4 1 2 9 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 | Rs. 518 478 435 1,223 140 124 541 887 112 289 47 84 122 147 2 16 872 | |
| GRAND TOTAL 80,188, 2,92 | 33 | ••• | |

i

The variation ranges within the widest possible limits. Indeed, we begin with a decrease of 34 per cent in one of the southern tappas, viz., Mando, situate on the borders of thanas Motihari and Kesaria, and end with an increase of 1,223 per cent., in the northern tappas of Deoraj, Chanki, and Gopala, in thana Shikarpur. The fact is the revenue-rolls both of 1773 and 1790, were not based on the results of any detailed measurement, or even enquiry. The procedure was little better than guess work, so the consequence noted above was inevitable. Subject to this condition it is noticeable that in 1790, some of the northern tracts omitted in 1773 were assessed, notably Rajpur Scharia, Bhabta, Balthar, Ramgir, Jamhauli, &c Again, as might have been expected, the greatest increase was obtained in the northern part of the district.

This register also furnishes details of area in bighas. The size of the bigha in Champaran may be anything from The incidence of revenue in 1582 and 1790 A.D. compared. 3 acres to 2 of an acre, and there is no specification of the bigha used in this register; but since the old revenue-rolls were based on Todar Mall's original Tumari jama or standard assessment, it is perhaps justifiable to assume that his bigha of 3,000 square olls was the one adopted. At any rate it affords a fair all-round average.

Proceeding on this assumption, I reproduce below a statement comparing the area and incidence of revenue in each pargana in 1790 with the corresponding figures of Todar Mall's assessment :-

| - | | Are | a. | Rove | nue. | Incidence | per acre. |
|-----------------------------|-----|---------------------------|------------------------------|----------------------------|------------------------------|-------------------------|-------------------------|
| Pargana. | | 1582. | 1790. | 1582. | 1790 A.D. | 1582. | 1790. |
| . 1 | | 2 | 3 | • 4 | 5 | 6 | 7 |
| | | Acres. | Acres. | Its. | Rs. | Rs. A. P. | Rs. A. P. |
| Mehai Semraon Majhawa | ••• | 65,070 8,352 26,002 | 138,317 67,795 460,412 | 87,960 12,502 87,372 | 78,532 14,430 2,47,778 | 1 5 0 1 7 0 1 6 0 | 0 9 0 0 3 6 0 9 0 |
| | | 99,424 | 666,524 | 1,37,835 | 3,40,775 | 1 6 0 | 0 8 0 |

From this statement I exclude certain miscellaneous mahals of Majhawa,

for which no area is given, though revenue is noted.

129. It is apparent that, while the revenue had trebled itself since 1582, the incidence per acre fell from Re. 1-6 to As. 8. This means a light assessment on large areas reclaimed since Akbar's time. The difference in incidence between these two periods is most noticeable in Semraon, where it decreased from Re. 1-7 to As. 3-6, but there the area increased from 8,000 to 67,000 acres, or eight-fold. In Mehsi and Majhawa the incidence fell from Re. 1-5 and Re. 1-6, respectively, to As. 9.

130. The statement below shows the incidence The incidence of revenue, tappa hy tappa, in 1790. tappa by tappa in 1790:-

| Tappa. | | | | Inc | iden | co. |
|-----------------------------------|-----|-----|-----|-----|------|-----|
| D | | | | Rs. | ۸. | r. |
| Pargana Mehai— | | | | | | |
| Pargana Mehsi— Havoli Harihara | ••• | ••• | *** | 0 | 9 | 0 |
| Serauna | | *** | *** | 0 | 12 | 0 |
| Salempur Hadiabad | ••• | | *** | 0 | 6 | 8 |
| Hadiabad | ••• | *** | ••• | | ••• | |
| Average | ••• | ••• | *** | 0 | 9 | 0 |
| Pargana Semraon— Nonaug | ••• | ••• | *** | 0 | 8 | 6 |
| 1 | | | | | | |

| Tappa. | | | i | Inciden | ice. |
|------------------|-------|-----|---------|---------|------|
| - | | | 1 | Rs. a. | P. |
| Pargana Majhawa- | | | | | |
| Rajpur Soharia | ••• | | ••• | 0 0 | 9 |
| Chigwan Batsara | ••• | ••• | ••• | 1 3 | 1 |
| Manpur Chaudand | 1 | ••• | • • • | 0 1 | 9 |
| Balua Gondauli | ••• | ••• | ••• | 0 15 | |
| Deoraj | ••• | ••• | ••• | 0 4 | 0, |
| Chanki | | ••• | ••• | 1 3 | |
| Gopala | ••• | | | 1 4 | |
| Bhabta | | ••• | ••• | 1 3 | |
| Sathi | | ••• | ••• | 1 4 | 9 |
| Balthar | | ••• | | 0 6 | 0 |
| Khadda | ••• | ••• | ••• | 0 11 | • |
| Patjirwa | *** | ••• | ••• | 0 10 | |
| Sonewal | | ••• | *** | 0 12 | 0 |
| Sugaon | ••• | ••• | ••• | 0 6 | |
| Bahas | ••• | ••• | ••• | 0 5 | |
| Madhwal | ••• | • • | ••• | 0 5 | |
| Mando | • • • | ••• | ••• | 0 6 | |
| Jaffrabad | | | | 0 8 | |
| Olaha | | | ••• | 0 12 | 9 |
| Harna Tand | ••• | ••• | | 0 11 | |
| Bakhwa | | | | 0 0 | |
| • Daulata | ••• | ••• | • • • • | 0 10 | 3 |
| Average | | | | 0 9 |) 0 |
| District average | ••• | ••• | ••• | ő | |
| TAMELIEC MAGINEO | | • | ••• | , | , , |

Excluding the Majhawa tappas, tappa Scrauna, which is the closest to Tirbut, and also very fertile, fittingly heads the list with As. 12. In Majhawa pargana the incidence is so low as 9 pie in Rajpur Soharia, the tappa in the extreme north-west of the district, and As. 1-9 in Manpur Chaudand, which is co-extensive with Dhanaha outpost of Bagaha, and is situate on the Gorakhpur But the incidence in many other tappas, notably in side of the Gandak Chanki, Deoraj, Gopala and Sathi of Shikarpur, where it is double the average and even more, appears inexplicable, unless either their area is under-estimated in the register, or was calculated according to a larger bigha. On the other hand, there will be found indications referred to in Part II of this report of Shikarpur having enjoyed high agricultural development in early times. For instance, it is difficult to explain otherwise the small size of the villages.

Aspects of the permanent set-

The settlement holders real proprictors.

I shall now refer briefly to the permanent settlement in some of its broader aspects. It will have been soen that the standard complaint made against the permanent settlement of having conferred on mere farmers the status of proprietors cannot be applied in the case

of Champaran. Here the settlement was made with Rajas or local chiefs, whose ancestors for generations had exercised sovereign authority in the tract, and had as high, if not a higher, status as the feudal barons of England.

132. I have already remarked, in the absence of fixed pargana rates, how impossible it was, with rates of rents and standards of measurement variable, for the provisions of the permanent settlement, framed for the benefit of the raiyat, to be otherwise than nugatory.

133. In spite of what, in comparison with previous methods, may be called, the care taken to ascertain assets for the permanent settlement defaults in the payment of revenue were frequent, and the provisions for the execution of pattas, while failing to afford the raivats any protection served no doubt at first, as the Collector pointed out, merely as a hindrance to the landlords in realising their rents.

134. In September 1794 the Collector addressed to the Board a letter on the subject of these defaults, from which the following extracts are

reproduced:-

"These peoples say the circumstances will not admit of their paying the balances due from them in less than four years." Again, 'I cannot prevail on this man to agree to pay up the arrears due from him at an earlier period than three years.' Later on, 'I am unable to believe the justness of their declarations, with regard to their inability to make good the arrears due from them at an earlier period than 10 years." One instance more, 'I am sorry to inform your Board that the most diligent search for this man has proved unsuccessful!" These remarks are sufficiently characteristic of the difficulties from which the Collector still suffered in administering the land revenue.

135. Of the two big estates in Champaran, the Shinhar Raj suffered very Embarrassments of the Shinhar grievously. Rajas Dushta Daman Singh and estate. Ganga Prosad Singh submitted a representation to the Board, in submitting a report regarding which, in December 1800, the Collector wrote:—

- "I have the honor to inform your Board that the settlement of the estate was concluded in 1198 Fasli for the sum of Rs. 1,25,858, but so far from the revenues being punctually discharged, my predecessors had been under the necessity, with the approbation of your Board, of selling at public sales Rs. 78,156 annas 10 gandas 19 dam 1 of this property; consequently, on my arrival in this district, they had remaining Rs. 47,20,7-7-3 of the above original settlement, at the end of which year a further sale of the estate took place under my superintendence, amounting to Rs. 20,073-8, and in the Fasli year the property was reduced to Rs. 27,127."
- 136. So the area of the estate had come down to a fourth of its original proportions in six years. But the Collector had hardened his heart. He continued:—
- "It is my intention, provided it meets your approbation, to institute a prosecution against these people in the Dewani Adalat of this zilla, as a very necessary example to other from making complaints so totally void of truth, and only calculated to occasion trouble to the Collectors, and which, if not checked, must interrupt him in the most important duties required of him."
- 137. It seems that the portions of the Shiuhar estate brought to sale must have been disposed of in small lots. It was Cause of the increase of estates in Champaran. probably recognised that in the state of disorganisation then existing, the Champaran estates, like many in Bengal, were too big for the management of a single zamindar. This opinion indeed, as has been in Champaran. shown, was definitely expressed by a former Collector with regard to Chainparan as the reason for advocating settlement with farmers. Thus the farming system was held to be justified in Champaran, because estates were too big; in Tirhut, and Saran because they were too small. Hoshiyar Jang shows Champaran as containing seven mahals in 1773 including Babra. By the settlement of 1791, Babra being excluded, Champaran was constituted into six mahals. The first mahalwar register extant after the permanent settlement is dated 1821, and according to it, Majhawa pargana was comprised in three mahals, one Aheraulia absorbing nearly all the area. In Semraon pargana there was only one estate, but Mehsi pargana contained no less than 77. The increase in the latter case was due, no doubt, to the sale of Shinhar properties in parcels for successive arrears of revenue. Thus there were in 1821-81 estates in the district, but it is difficult to trace how these multiplied to over 1,000, the number at present on the revenue-roll. Partitions have never been numerous. Resumptions no doubt were largely answerable for the increase, and with them I will deal later.
- Regulation VII of 1799. the Governor-General in Council to the Collectors on various topics connected with district administration. One of the questions enquired whether the law relating to realization of rent from raiyats was quite effective. To this the Collector replied that it was, without being oppressive to the raiyats. His opinion as to the effect of Regulation VII of 1799, on the raiyats did not do credit to his judgment. I believe it, however, to have been due more to the settled order of things that had supervened than to the Regulation that the amount of jama to be sold for arrears, during this year was Rs. 1,517 only in both the Sirkars, or less than Rs. 2 in a thousand of the whole revenue.

 139. These queries also alluded to the hope so strongly cherished by the
- The Collector's views on the character of landlords and condition of tenants.

 The Collector's views on the character of landlords and condition of tenants.

 The Collector's views on the character of landlords and condition of tenants.

 Lead to the improvement of estates, extension of cultivation and amelioration of the condition of the raiyats. On these subjects the Collector replied that the zamindars looked more to the immediate advantages derived from their property than to constructing works of permanent utility. They

were, however, in his opinion, conducting themselves with more moderation and a greater attention to the principles of good faith in their transaction with the raiyats, and the condition of the latter, the Collector adds, had decidedly improved. The new purchasers were reported to be more alive to the necessity and utility of improving their estates than the old class of zamindars. As to increase in cultivation he estimated, "where 60 bighas in 100 were in cultivation formerly, 80 or more, are now in that state," and revenue-paying lands were, he said, in a better state of cultivation than revenue-free.

140. The advisability of encouraging the redemption of land revenue was at the same time brought under discussion, but the subsequent attempt made here as elsewhere

ended in failure.

141. The Collector in reporting on the material resources of the district,

The chief crops.

Said that among the chief products were opium, tobacco, saltpetre, barley, linseed and cotton.

Opium cultivation was reported to be in a prosperous condition, but there is no mention of indigo or paddy. Indigo had probably not been introduced, but the omission of paddy is strange. No less than six descriptions of rupees were then in currency.

A change of sentiment towards
Regulation VII of 1799.

A change of sentiment towards
Regulation VII of 1799.

He wrote "that the 7th Regulation of 1799, which empowers the zamindars, talukdars, and farmers to distrain and sell the personal property of their under-raiyats for arrears of rent is greatly abused by them, cannot be doubted, but to find a remody for the relief of the raiyats that shall not virtually operate against the Regulation in question, which was framed under the necessity that then existed, of affording to the proprietors of land the means for facilitating the realization of their dues from their raiyats, and consequently the more punctual discharge on their part again of the demand of the Government, is an object more desirable than perhaps easy to be effected."

143. It was no doubt apprehension for the security of the revenue, which caused Regulation V of 1812, to be a half-hearted measure insufficient to bridle the arbitrary

powers conferred on the zamindars by the preceding Regulation.

144. Between the years 1814 and 1816, another series of questions was again addressed by Government to District The Collector's report of 1816 Officers. It appears from the Collector's report that the land revenue showed an increase of Rs. 25,000 for both the Sirkars of Saran and Champaran since 1790, due to annexations, reversions of small estates to Government by default and various other causes." The excise revenue had risen from Rs. 60,000 to Rs. 76,000. The stamp duties returned a ten-year average of Rs. 10,833 per annum. He calculated the area of rent-free lands to be 166 square miles likely to yield, at a moderate estimate, no less than four lakhs of revenue, a calculation singularly near the mark, as will be evident from what I shall say hereafter on the result of resumptions in the district. The whole report is a mine of information and will be again drawn upon.

145. This period closes with the passing of Regulation XII of 1817. The

Regulation XII of 1817. Attempted reorganisation of local agency.

truth had been already recognized that effective administration was impossible without more exact and detailed information of rural economy. A village agency was sought for. This Regulation

therefore was passed with a view to reorganize the patwaries, but it was ineffective. The patwaries were placed under dual control. Their subordination to the zamindars prevented them from affording adequate protection to the raiyat, and the zamindars did their best to evade the provisions of the law.

The Fourth Period-The Resumption Proceedings.

146. The chief interest of the fourth period centres round the resumption of revenue-free properties. In Hoshiyan Jang's register as has been stated, 228 villages with an estimated rental of Rs. 33,974 were noted as being phassessed to revenue.

No area was given. In 1202 Fasli (1795A. D.), however, kanungoes were deputed to report the extent of lakhiraj lands, after local inquiry. The following table summarizes the result then obtained:—

| | Pargana. | | | | | Aroa. |
|---|----------|-----|-----|-------|-----|-----------|
| | | | | | | B. c. |
| | Mehai | *** | ••• | *** | ••• | 17,001 8 |
| • | Majhawa | ••• | ••• | ••• | ••• | 55,745 10 |
| | | | | | | - |
| | | | | Total | ••• | 72,746 18 |
| | | | | | | |

No village names are furnished, and these enquiries were therefore probably suspected to be defective. This led to the preparation of another register in the same year in which fuller information was supplied. From it the following figures of revenue-free lands are obtained:—

| | Pargana. | | Village. | Area. |
|--------------------|----------|-----|-----------|---|
| | 1 | | 5 | 3 |
| Mohsi | | | 125 | Bigha к. |
| Mejhawa Semraon | *** | ••• | 150 18 | 28,946 5 98,369 17 6,895 8 |
| | Total | ••• | . 283 | 1,34,211 10 |

It will be clear from the above that in the latter attempt, the landed interests in Mehsi pargana were more fully investigated, and those of Semraon touched for the first time. Later on in 1207 fash, corresponding to 1800 A.D., another register was opened, the columns of which show that it was intended to record lakhiraj interests at the request of parties, according to Regulation V of that year. It was a failure. Consequently in the year following (1208 or 1801A.D.) another requisition seems to have been made on the kanungees, who filed an elaborate register, which omitted, however, the most important detail, viz., area.

147. Matters seem to have been left in this state, until the passing of Regulation II of 1819, which gave a fresh impetus to the investigations, and led to the compilation of a big book under the name of "Ketab-Lakhiraj, San 1231," but virtually containing information in various forms compiled from the years 1229 to 1233 Fasti, or 1822 to 1826 A. D. It appears from this that the revenue-free area in each pargana was as follows:—

| Pargana. | | | | A | rea | |
|----------|-------|-------|-----|--------|-----|----|
| | | | | Bighas | к, | D. |
| Majhawa | • • • | ••• | *** | 75,433 | 7 | 10 |
| Mehai | ••• | *** | ••• | 4,723 | 8 | 5 |
| Semraon | ••• | ,., | ••• | 3,654 | 10 | 0 |
| • | | | | | | |
| | | Total | | 83,811 | 5 | 15 |

Judging by former estimates, these were too low, but, however, that may be, this much is clear that the efforts to prepare a record of the rent-free or revenue-free properties had so far proceeded on wrong lines. The only agency employed in the investigation were kanungoes, corrupt and ill-paid, who overwhelmed the Collector with a hopeless mass of statements, unsystematically prepared, and inaccurate, which were incorporated into registers, with high-sounding titles.

148. But the worthlessness of such methods had come to be realized, and it was in 1822 that the Government of India initiated the policy of survey and settlement. Regulation VII of 1822 was passed, which regu-Resumption hased on detailed Survey and Settlement. lates the settlement of most temporarily-settled estates in Bengal up to the present day, and I believe of all settlements in the North-Western Provinces.

149. As early as February 1823 the Collector of Saran addressed a communication to Government, representing the difficulties in the enforcement of Regulation II of The principles of resumption. 1819, the most prominent of which was the impracticability to determine with even an approach to accuracy, whether a particular area was within or beyond a revenue-paying estate owing to the permanent settlement having been made without any specification of boundaries. The Governor-General in Council decided that in every case, where settlement had been made for big talukas without any enumeration of villages, the enquiries should be directed to find out whether the particular area in question was or was not then included within that taluka. But when the estate which had been described by a list of villages, contained any area not lying within these villages, that area must be held to be liable to assessment. The benefit of the doubt, however, was always to be given to the zamindars (vide Government order, dated 30th July 1823). This was followed on 19th October 1826, by detailed instructions as to the points to be considered in settling revenue after resumption-

(a) The determination of boundaries of the area under assessment with sufficient details about the minhai lands to be excluded.

(b) Details of area of cultivated land under each crop, the estimated produce per bigha, and the average value of the produce.

(c) Rate of rent for each class of land, and the extent of each under cultivation, with the total amount of rent paid.

(d) Area of batai or bhaoli tenures, with a note as to the nature of the produce paid.

(e) The detail of culturable lands not cultivated.

(f) Abwabs.

(g) The determination of the status of the raiyats with the privileges and obligations of each.

(h) Village servants and so forth.

Thus the Government found its way round to the approaches to a sound and scientific system of settlement.

150. About this time Regulation No. III of 1828 came into force, and special Commissioners were appointed and rules Progress and procedure. framed for their guidance, but little or no progress was made for three or four years, as we find the Collector of Saran, in his letter to the Commissioner, dated 25th August 1831, admitting that not a single resumption had taken place in his district till then. The situation was reviewed by Government in a letter, dated 17th Soptember 1833, in which the work done since the promulgation of the Regulation II of 1819 to 1831-32, was pronounced to be extremely unsatisfactory. A vigorous attempt was made to overhaul and reform the whole system. It was laid down that both the aggregate and detail survey corresponding to the present traverse and cadastral surveys would be done by one professional party, and the settlement authorities were to confine their enquiries to the cultivated area of each holding, special advantages possessed by it, as regards fertility, position, irrigation and cognate matters in assessing the Government demand. They were divested of all judicial powers, which were transferred to the civil courts, except in the cases in which the cause of action might have arisen within the year of the settlement proceedings. A special subordinate agency was created by the appointment of Deputy Collectors. Special Judges were posted to each district or revenue division.

The procedure, briefly put, seems to have been as follows:-

Special informers or goendas were encouraged by rewards and assurances to lodge information of invalid lakhiraj grants, and special officers, taking the clue from the kanungoes' returns and registers of revenue-free properties, described above, were deputed to the mufassal to pick up the assessable cases. The revenue-free holders were then given the option between accepting a summary assessment as a matter of compromise or a detailed ascertainment of assets by survey and settlement. The line of appeal against Special Deputy Collectors' orders regarding the liability of a property to assessment lay through. Special Judges in the first instance to the Special Commissioner. The Deputy Collectors, after survey, ascertained the resources of a property under assessment, and on this information a covenanted officer drew up a report containing his assessment proposals, which, with the remarks of the Khas Mahal Superintendent, went up through the Special Commissioner to the Board forconfirmation.

152. The question of resumptions at that time engrossed the attention of the Administration. The Collector of Saran, responding to a call by Government, submitted a statement on 14th August 1834, estimating that 493 mahals were liable to come under resumption in Sirkar Champaran. It was reported that 65 of these mahals were brought to notice by khawkhas or special informers, and the rest were ascertained from the old registers and kanungoes' papers. Almost simultaneously, on 16th October 1844, the Collector submitted another report, shewing the work done up to date. In about 210 mahals the operations had commenced, but he was sorry to say that till then not one of them had been brought to completion. Consequently, on his recommendation, special covenanted officers were appointed to control the operations. Mr. Ashton in subordinate charge in Champaran, another covenanted officer in Saran, and Mr. Hodgson in charge of both.

153. The operations seem to have been carried on very briskly for the next 10 years. Many and varied points of settlement interest appear to have engaged the attention of the authorities during the period, some of which, taken from the old

correspondence in the Saran Collector's record-room, are noticed below.

154. A very able and interesting report was submitted by the Khas Mahal Superintendent to the Collector on what he calls the unjust and impolitic method of making reductions in the rent demanded from the raiyats of the higher caste. The question was viewed from the various stand-points of old established custom, social economy, encouragement to cultivation, &c., and the conclusions arrived at were decidedly against tolerating it. The system has survived this condemnation. It was found in a village, by name Kotwa, of tappa Jaffrabad, a locality quite near to the place referred to in the report in question. The plea of high caste privilege was raised in defence by the raiyats of this village, when sucd for enhancement of rent under section 30 of the Bengal Tenancy Act. The issue was decided in favour of the raiyats, and the

decision confirmed on appeal.

155. The relative rights of khudkasht and pakikasht raiyats, these being the only two classes of raiyats then recognised, formed the subject of another interesting report,

dated 20th May 1840.

The terms of resumption settlement.

The settlement was made permanent, except where the waste area was noticeably
large, revenue for the first six months was invariably remitted, and by an order
passed in 1840, the revenue assessed in a large number of cases was reduced
by half, with retrospective effect from 1829. Lastly, all action was withheld in
the case of areas less than 100 bighas.

Heavy fines and strong action were necessarily required to enforce the attendance of parties and production of documents, and in the case of Champaran, the Bettia Raj was a special obstacle, for, having itself appropriated many lakhiraj grants, it was interested in using its influence to conceal

their existence and obstruct their assessment.

157. The bulk of the resumption operations seems to have been finished by the end of the year 1841, when the khas mahal office was made over to the Collector to be wound up. I have been unable to discover any final statement of the amount of revenue assessed in the course of these proceedings.

There is an old register giving the area and revenue assessed for all the lands attached and resumed under Regulation II of 1819, and from it the following statistics have been obtained:—

| PARGANA. | | Number of mahals. | Arez in bighas. | Revenue. | Incidence per bigha. |
|--|-----|------------------------|---|-----------------------------------|-------------------------------|
| 1 | | 2 | 3 | 4 | 5 |
| Mehsi Semraon Majhawa • • Total | ••• | 106 4 315 425 | 27,131 2,918 1,13,835 1,43,881 | Rs. 22,166 3,070 78,304 1,03,540 | Ri. A. P. 0 13 0 1 0 9 0 11 0 |

The revenue shown in this register to have been assessed, if added to that fixed at the permanent settlement, brings the total revenue of the district up to very close upon five lakhs. It therefore coincides approximately with the present land revenue domand, which is Rs. 5.14,375. The incidence cannot be worked out in acres, because in pargana Majhawa standards of measurement, yarying from 11½ haths to 6½ haths, appear to have been adopted during the resumption proceedings. In Mohsi and Semraon, however, where a bigha is generally slightly more than an acre, the figures are intelligible. The comparison of rent or assets to revenue I reserve for a later chapter.

The Fifth Period-Professional Survey.

The revenue survey of 1845. Scientific professional survey. The revenue survey of 1845. The revenue survey of 1845. Scientific professional survey. The revenue survey of 1843—49 was the first professional village survey undertaken on a comprehensive plan in these provinces. It originated from the need, which had grown pressing, owing to the prevalence of disputes, of mapping the boundaries of villages and estates. The procedure adopted was the same everywhere, and has been explained in the Muzaffarpur report. The following table, taken from Mr. Wyatt's Revenue Survey report, summarises the result:—

| Appeler regional delicine se delicine delicine delicine con delicine delici | | Number | An | ва — | | T- | | |
|--|-----|----------------|-----------|---------------------|----------|-----|-----------|------------|
| PARGANA. | | of estates. | In acres. | In square miles. | Revenue. | 1 | cide | nce re. |
| 1 | | 2 | 3 | 4 | 5 | | 6 | |
| | - | | | | Rs. | Rs. | A. | P. |
| Mehsi | | 369 | 225,940 | 853.03 | 1,10,240 | 0 | 7 | 9 |
| Seuraon | ••• | 117 | 123,175 | 192.46 | 19,810 | 0 | 2 | 6 |
| Majhawa | ••• | 1,492 | 1,498,449 | 2,341.32 | 3,73,137 | 0 | 4 | 0 |
| Raj Ramnagar | ••• | 474 | 442,917 | 692.05 | 5,550 | | ••• | |
| Total | ••• | 2,452 | 2,290,481 | 3,578.86 | 5,08,737 | 0 | 3 | 6 |

159. We notice Raj Ramnagar treated for the first time as a separate pargana, but it has all along been considered as a portion of Majhawa, and has also been similarly treated in our survey records. The figures for pargana Babra have been excluded. The amount of revenue is less than the present figure by only Rs. 8,000, which was perhaps added by subsequent resumptions, there being no Government or temporarily-settled estates of any importance. The number of estates, however, as given by Mr. Wyatt, appears to be wrong, as the present figure is only 1,075, or less than half what he shows. The revenue surveyors often had hazy ideas as to the distinction between a village and estate, and probably the discrepancy is due to this cause.

160. The full significance of these figures cannot be realised without comparing them with what obtained in the days Incidence of revenue, 1882, 1790, 1845 A.D. of Akbar and Lord Cornwallis:-

| And the second | | | Area in | aquare | miles. | In | oid | eno | of r | over | nue | per a | cre. | |
|--|--|-----|-----------------|-------------------|-----------------------------|-----|---------------|-----|------|-------------|---------|-------|-------------|-------------|
| | PARGANA. | | 1582. | 1790. | 1845. | 1 | 582 | 4 | 1' | 790 | • | 1 | 845 | |
| The second secon | 1 | | 2 | 8 | 4 | | ð | | | В | | | 7 | |
| William states produced in the control of the contr | The state of the s | | | | | Rs. | ۸. | P. | Rs. | ۸. | P. | -Ra- | A . | P. |
| Mehai Semraon Majhawa | ••• | ••• | 101 13 41 | 216 105 720 | 35 3 192 3,033 | 1 | . 5 7 6 | 0 0 | 0 0 | 9 3 9 | 0 6• | 000 | 7 2 4 | 9 6 0 |
| | Total | ••• | 155 | 1,041 | 3,578 | 1 | 6 | 0 | 0 | 8 | 0 | 0 | 3 | ŧ |

All the figures teach the same tale—a largely increased cultivated area, a largely decreased incidence of land revenue. Mehsi is without doubt the pargana that has been throughout most carefully assessed.

161. At the permanent settlement, the estimate of area for pargana Mehai was the nearest approach to the correct figure. It is ascribable to the fact that the village Mehai was a sadar or chief station in North Bihar, when the Company first acquired possession of the province, and being such, its immediate neighbourhood was the best known. Somraon, too, owing to its proximity to known tracts in Tirhut, was not so seriously under-estimated. But Majhawa, in all its immensity, bade defiance to the revenue assessor of 1790. Making all allowances for wrong laggis and hill and jungle, the fact remains that a very large area went unassessed in 1790 in this pargana.

The following statement compares tappa by tappa the area as res of 1790 and 1846, ascertained in 1790 and as ascertained in Assessed area of 1790 and 1845,

1845:-compared tappa by tappa.

| pus Soharia gwan Batsara npur Chaudand un Gondauli oraj | | 1700. 8 28 48 110 14 | 1846. 4 126 283 133 |
|---|--------------------------|-------------------------------------|---------------------------------|
| pus Soharia gwan Batsara npur Chaudand ua Gondauli oraj | | 28 48 110 | 283 |
| gwan Batsara npur Chaudand na Gondauli oraj | | 48 110 | 283 |
| gwan Batsara npur Chaudand na Gondauli oraj | | 110 | |
| npur Chaudand ua Gondauli oraj | | 110 | 133 |
| ua Gondauli | | | |
| oraj ··· | 1 | | 50 |
| | ••• | 6 | 29 |
| | 1 | 6 | 20 |
| nki ··· | 1 | 4 | 21 |
| nala · · | ••• ; | 3 | 11 |
| ubta ··· | ••• | 9 | 44 |
| hị ··· | *** | 9 | 50 |
| thar | *** | 68 | 294 |
| adda | ••• | 30 | 208 |
| jirwa | *** } | 29 | 87 |
| iewal | ••• | 87 | 190 |
| non | ••• | 74 | 23 |
| n.s.s · · · | ••• | 54 | 138 |
| dhwal | ••• | 10 | 20 |
| ndo ··· | ••• | 7 | 18 |
| frabad | *** | в | ī |
| tha ··· | ••• | | 19 |
| rnatand | ••• | , | 4 |
| khwa ··· | • • • | | 17 |
| ulata | *** | | A1. |
| Total | ,,, | 701 | 2,26 |
| | rnatand thwa ulata | rnatand | rnatand 8 17 chwa 74 |

The tappas appear here in their geographical order from north to south. The list omits Belwa, Duho Suho, Ramgir, Jamhauli, &c., as their areas are not

given in the register of 1790.

163. Here again we find the difference of area in the northern tappas greater than the southern, or; in other words, the major portion of the area that escaped assessment is to be found in the north. There appear to be two reasons—deliberate concealment of areas on the part of the zamindars, and incompleteness of the patwaries' jamabandis, for it is a notorious fact that these jamabandis, if they are accurate at all, are so only in respect of the area under cultivation, or in settlement with the raiyat, so that the yast areas unreclaimed or cultivated surreptitiously at that period were disregarded.

The dura survey of 1866. Carried out on a large scale in Bihar was the diara survey of 1866. It received legal authorisation from Act IX of 1847, and was carried out with the object of assessing to revenue all alluvial formations outside the area of permanently-settled estates as mapped at the time of the revenue survey. The revenue of estates that had been subjected to diluvion was similarly to be reduced. I have explained in the Muzaffarpur report that without a relaying of the traverse stations of the revenue survey, the diara survey must have been conducted on unsound principles. It was in Champaran also, as in Muzaffarpur, a financial failure, for the very simple reason that not only the banks of the river, but even the river itself had been mapped by the revenue survey, as included in some village or other.

4 165. I need not repeat that there is a large diara area in the district, owing to its being entirely flanked on one side by the big Gandak. The total area, therefore, that was then surveyed came up to 351,177 acres, or 548 square miles, against an area of 331,485 acres, as shown by the revenue survey for the same portion. There was thus an excess of 19,692 acres, or 20,000 in As the whole of the tract concerned is within pargana round number. Majhawa the property of the Bettiah Raj, the assessment of the whole increase practically was disposed of in one case. On the 27th July 1863, the Raj was asked to show cause why the revenue should not be assessed on these lands. A month later, it came out with a long reply, the long and short of which was that the permanent settlement made with the Raj covered the whole of pargana Majhawa, without any specification of boundaries and areas, so that Government had no right to ask for any increment of revenue for any land that was within the pargama. It was pointed out that a parwana, dated 11th September 1818, distinctly absolved the Raj from any liability for revenue for excess areas like taufirs that might be found within its limits, and that an attempt was made in 1849 to assess 50 diara blocks which, on a similar objection being preferred to the Board, was vetoed (vide Board's letter dated 17th June 1849). The whole question then went up to the Board, and it was ultimately held in Board's letter No. 128, dated 14th July 1868, that the Raj was not liable for further assessment for the excess in question.

166. There remained then a few petty proprietors, mostly former owners of revenue-free mahals, but subsequently brought under resumption when those operations were in hand. They were of course assessed, and the result of these large operations was a legacy of a few temporarily-settled estates of little value.

The following are the particulars of them: -

| | Name of the estate. | Tappa. | | For reve | rme | - 1 | Pre reve | | | Remarks. |
|---|---------------------|---------------------------|-----|----------|-----|-----|-------------|----|----|--|
| 1 | 2 | 3 | | | 4 | | | 5 | | 6 |
| * | | and the second control of | 1 | Re. | ٨, | P. | Rs. | Α. | P. | |
| 1 | Malkauli Patkhauli | Chengwan Be | ıt- | 67 | 7 | 0 | 47 | 0 | 0 | The present settle- ment is to last for |
| 2 | Chbarki Diara | Patjirwa | | 7 | 8 | 0 | 74 | 8 | 0 | 15 years from |
| 3 | Gopalpur Masanthan | | | 58 | 13 | 0 | 142 | 9 | 0 | 1891. |
| 4 | Khutwania | Y) | | . 301 | 14 | 6 | 431 | 8 | 8 | |
| | | Total | ••• | 430 | 10 | 6 | 695 | 2 | 9 | |

167. I may add here that the only other temporarily-settled estate in the district is Sirokahia, tappa Sugaon, settled in 1891 with the Maharaja of Bettia. The revenue is progressive and will reach Rs. 332 in the year 1901. It will then be declared permanent. There were two other villages—Puchharia, tappa Mando, and Ramnagar Panditwa, tappa Patjirwa by name—detected by the diara survey in tappa Mando and not entered in the above list. They are under the river, and not borne on the revenue-roll.

168. The only Government estate in the district is Ghermarwa, tappa
Manpur. It was made khas in 1831 under Regulation II of 1819, and is now in lease to the Maharaja Government estates. of Bettia for Rs. 155-1 a year. In all, then, there are 6 temporarily-settled estates, including the Government estate bearing a revenue of Rs. 1,178 only, or 2 per cent. of the total demand.

The Sixth Period-Mordern Era. .

The sixth and last period, that is, from 1850 up to the present day, has been, as I have said, one of great legislative 169. activity in the Department of Land Revenue. It Chief Enactments. has seen the enactment of the Revenue Sale Act, the Land Registration Act, the Bengal Tenancy Act, with the amending Act of 1898, and the two partition Acts. No good purpose would be served by an attempt to trace the rent law from the preliminary discussions that occurred in 1875-76 up to its final development into Act VIII of 1885, and of its results this report inthe chapter on statistics and elsewhere treats at length. The history of fund revenue administration in Champaran can therefore be fittingly concluded with a short account of the operation of the revenue sale, partition and land registration laws in their practical application to this district.

170. In the third period of this chapter it has been described how the estate of the Shinhar Raj came to grief. Portions of it were from time to time sold up to meet Revenue sales. the Government demand, until it was left with but one-fourth of its former area. Champaran from that time until 1866, when constituted a separate district, has no distinct history of its own. No doubt the Collector of Saran suffered from troubles similar to those found in Tirhut, which seem to have resulted from delay caused by the necessity for obtaining the Board's sanction before sale, and the great reluctance to accord that sanction. With estates so few in number as they are in Champaran, however, the number of sales has necessarily been always insignificant. In the decade 1866-67 to 1875-76 the average number of sales per annum in this district was one only, the next decade returns a similar figure. For the decade 1856-87 to 1895-96 it was

In respect of partitions, too, Champaran returns a negligible quantity, four only. as the following statement comparing the number of partitions that have occurred in all the districts of the Division for the same three decades will show :--

| Name of the | district. | Average per year of the first decade (from 1866-67 to 1875-76) | Average per year of the second deends (from 1870-77 to 1886-86). | Average per year of the third decide (from 1886-87 to 1896-98). | Average for all years. |
|---|--|--|--|---|------------------------------|
| 2 | ga danagi ada 🐗 kafidip ndan badiga ati yinda dalibirin ka | 3 | 4 | 5 | 6 |
| Patna Gaya Shahabad Saran Champaran | Muzafferpur Darbhauga | 29 22 33 27 7 134 | 150 19 86 26 6 253 63 | 98 449 84 31 1 105 67 | 27 60 28 6 204 |
| Average for all the Division. | • | 36 | 17 | O1 | 68 |

Thus it is seen that in Champaran the average annual number of partitions is only 6.

172. With so few estates little work is done again in the Land Registration.

Land registration.

tration office. The annual average number of mutations registered since 1866 is only 154. To enable the Land Registration Department to bring their registers up to date, copies of the settlement khewats were furnished and the entries, examined with those in Register D. The Collector as a result found, I believe, the defects in his registers to be few. Large proprietors naturally take care to comply with the law in this respect.

173. Thus it is seen that the duties of the Collector of this district in connection with the administration of the land revenue are very light. Champaran returns less than 2 per cent. of the total number of estates in the Division, and in spite of its size, only 6 per cent. of the land revenue demand.

PART II.-THE PRESENT OPERATIONS.

CHAPTER I.

PROCEDURE AND PROGRESS.

Report has restricted.

Report

Champaran, in December 1892, and the operations in Saran, the traverse survey of which was begun in March 1893, were also placed under his control. To Mr. Colvin the credit of initiating the work in both of these districts is due. He retained charge, with the exception of one short interval, until February 1895, when ill-health compelled him to take privilege leave, on return from which he acted as Collector of the district until the following November. Meanwhile Mr. Lyon, Settlement Officer of Muzaffarpur, was appointed to the charge of the operations in these two districts also. Mr. C. A. Bell was placed in subordinate charge of the Champaran settlement until July, when he went on leave, and was replaced by Mr. Kerr, whose connection with the operations has ceased only with their close.

176. In April 1895 the Saran operations were definitely separated from those of Champaran, and placed under the subordinate control of Mr. Gauntlett, with head-quarters at Siwan. In March 1896 Mr. Colvin, on his transfer to the Political Department, permanently severed his connection with the settlement operations. On the 9th of that month I relieved him, and have since then been in charge of this and the other North Bihar settlements. The Assistant Settlement Officer in charge of the head-quarters office, on whom a heavy load of responsibility has always lain, was Pandit Rama Ballabh Misra.

177. On the 17th November 1891 a notification was published in the Calcutta Gazette, extending Act V of 1875 to this and the other four districts of North Bihar. This was done to legalise the traverse survey which was begun at that time. Chapter X of the Bengal Tenancy Act was extended to the district piecemical, so that the provisions of section III, ousting the jurisdiction of the Civil Court in regard to questions of rent and status, while the settlement operations were proceeding, might not be brought into operation sooner than was necessary. The following is a list of notifications issued and their object:—

List of notifications notified under section 101(1), Bengal Tenancy Act, VIII of 1886.

| Number. | Tappas notified. | | |
|---|--|--|--|
| 1 | 3 | | |
| 4291L.R., dated 13th December 1892 132L.R., dated 10th January 1893 4169L.R., dated 3rd October 1893 4567L.R., dated 8th September 1894 4568L.R., dated 8th September 1894 4569L.R., dated 8th September 1894 4570L.R., dated 8th September 1894 4571L.R., dated 8th September 1894 4571L.R., dated 8th September 1894 4538L.R., dated 14th October 1895 | Tappas Khadda and Patjirwa and Sugaon. Tappas Mando, Sakhwa, Sonwal, Harnatand, Olaha, Jairabad, Madhwal, Daulata and Belwa. Pargana Mehsi. Pargana Semraon. Tappas Duho Suho and Bahas. Tappas Balthar, Bhabta, Gopala and Sathi. Tappas Balthar, Bhabta, Gopala and Sathi. Tappas Bampir. Tappas Jamhauli, Chanki, Deoraj, Gondauli, Balua, Manpur Chaudand, Rajpur Soharia, Chigwan Batsara, and Chigwan Dun. | | |

TRAVERSE SURVEY.

Annual progress. Villages, covering 363 square miles, were completed before recess. During the next season 1892-93, 1,103 square miles, contained in 697 villages, and 230 tolas were traversed before March, when the traverse party was transferred to Siwan. In the following year, 1893-94, the traverse survey was completed for an additional 1,320 square miles. In 1894-95 126 square miles were traversed, completing the district area, except some diara tracts, covering 386 square miles, which were surveyed in the following year. Thus the area brought under traverse survey, year by year, was as follows:—

| • | Year. | • e | Area in square miles | |
|---------|-------------------------|-----|----------------------|--|
| N- 1. | 1 | | 2 | |
| 1891-92 | page a consideration of | | 3 63 | |
| 1892-93 | ••• | *** | 1,103 | |
| 1893-94 | ••• | | 1,320 | |
| 1894-95 | ••• | | 126 | |
| 1895-96 | • • • | | 386 | |
| | Total area | | 3,298 | |
| | | - 1 | | |

170. The remaining area of the district is the stretch of hill and jungle along the north border of the district, which is now being surveyed topographically. Its area is approximately 250 square miles.

CADASTRAL SURVEY AND PRELIMINARY RECORD-WRITING.

Cadastral survey and khanapuri.

180. The following table shows, year by year, the actual progress made in cadastral survey and preparation of preliminary records after the work was started in October 1892 in the southern portion of Bettia thana:—

| | | ·* 3 | , | | | | | | , . | المستنسسين الماتات والنفار |
|--------------------|----|-------|---------------------|-------------------|--------------------------|----------------------|--------------------|----------------------|------------------|---|
| Т ил и. | | | | CADASTRAL SURVIV. | | | К идбареві. | | | |
| | | | No. of Village 9 | No. of plots. | Square miles, | No. of villagest, | No. of plots | bonars reiles, | Sames of thanse. | |
| | | 1 | | 2 | 8 | • | ō | 8 | 7 | A second |
| 1899-03 1898-94 | ٠. | | | 301 366 | 25-8, 411-8 401', 855 | 416 | 301 363 | 3374,4014 406,454 | 330 809 | Bettis and Gobindgen). Bettis, Gobindgenj sud Mott |
| 1894-98 | | *** | ••• | 1,079 | 1,3/13,608 | 1,162 | 1,079 | 1,345,694 | 1,176 | Motheri, Kemris, Madhuban Dinaka, Adapur and Bettis. |
| 1898-96 | | ٠. | ••• | 1,093 | 013 EM | 1,149 | 1,00% | 615,450 | 1,140 | Bagalia, Bottin and Shikar- |
| | | Total | | 2,841(0) | 2,502,500 | 3,24(0) | 2,-41 | 2,802,500 | 3,211 | , |
| | _ | | | · | · ' | | |] | - | |

(d) The discrepancy with the Survey Ofice Squres has been explained in the section on "Total area."

181. In 1802-93, out of a programme of 500 square miles, only 416 square miles were surveyed, and for only 320 square miles were records written, the reason for the deficit being the experiments in the utilization of local agency to which I shall refer later. At the beginning of the following season these arrears were cleared off, and fresh ground broken in thanas Motihari and Gobindganj; the work completed during the season being, Cadastral survey, 517 square miles, and khanapuri 599 square miles.

182. In 184-95 the programme for cadastral survey and record-writing was very heavy, comprising as it did 1,168 square miles, situated in thansa Gobindganj, Kesaria, Madbuban, Dhaka and Adapur, in the Sadar sub-division, and, in addition, the northern part of the Bettia thans. Two survey camps were employed. Furthermore, the work in the southern part of the district was more complicated than elsewhere, owing to the large number of

petty proprietors, the conditions approximating to those prevailing in the adjoining thanse of Muzaffarpur. In the northern area, the chief difficulties arose from the disputes between the Madhuban Babu and his raiyats conserning rents. The actual outturn of work was—Cadastral survey 1,162 square miles, record-writing 1,176, the excess of the latter being due to the disposal of arrears pending from the previous year. In season 1895-96, the survey and record-writing of the remaining portion of the district were completed. Two survey camps were again employed, the area being 1,185 square miles, comprising the whole of the Bagaha and Shikarpur thanas, and the portion of Bettia thana bordering on the river Gandak to the west. The plots were large, and the work extremely simple. It was completed without difficulty by the end of March.

183. I will now discuss the points of interest that arose during this stage

of the operations.

184. Although the attempt to utilize local agency for the preparation of the preliminary records has been described in the Muzaffarpur report, Champaran was the only district in which the attempt was made to rely entirely on that system unsupplemented by any other. It therefore deserves more than a passing reference here.

185. In attempting to train patwaris to survey and write the record in

their own villages, the object was three-fold---

Firstly to save the villagers from the petty exactions and annoyances almost inseparably connected with the presence of a foreigner in the village;

Secondly—To train up a local agency, which should be capable of maintaining the record of rights after it had been prepared; and

Thirdly—It was argued that the work would be better and more cheaply done by a man who knows every field and raiyat in the village than by an entire outsider.

The system of registration of patwaris in the Collectorate has always been more complete in Champaran than in the other districts of North Bihar; and much of the land being held by big zamindars, the proprietary interests in a large number of villages are vested in single proprietors, whose patwaris therefore are genuine village units. For these reasons, it was anticipated that little difficulty would be experienced in controlling the men, and setting them to

work in their own villages.

A training school was opened in Motihari for the instruction of patwaris in survey and record-writing; and 152 persons, who were all either patwaris or the relatives and assistants of patwaris, were given instructions in this kind of work before the field season of 1892-93 began. Owing, however, to the want of experience of the training staff, the training in record-writing was incomplete, and it was found that the men worked so slowly as to render the completion of the year's programme impossible, without a very considerable strengthening of the staff. In the month of January, therefore, steps were taken to obtain fresh recruits. One hundred and sixty new men were enrolled, but the supply of patwaris had been exhausted, and none of this fresh batch of men had any connection with the villages under survey, or any special qualification for their duties beyond the fact that they were natives of North Bihar. Thus, one of the chief advantages claimed for the patwari system by its advocates, viz., that the work would be done by persons intimately acquainted with the village, was lost at the outset. Even among the first batch of men it was found that very few, who were registered patwaris, actually worked in the field. They almost invariably sent their relatives to act for them, on the plea that they had urgent work to do for the landlords; and this too, in spite of the fact that they were allowed four annas a day in order to provide a substitute to do their ordinary work. The men who really did the survey and khanapuri were found to be as follows:-

187. Thus the system of local agency for record-writing was predoomed to failure from the outset, and the difficulties of the Settlement Department in

supervising this mixed and half trained staff were greatly increased by the method of payment adopted at the beginning of the work. It was arranged during the first season with the Bettia Raj, which owns nearly the entire area. then under survey, that the daily wage should be disbursed to the amins direct by the Raj, or by its tenure-holders and there was at first no check on the amount of work done each day. The supervising staff also was insufficient (Mr. Colvin, the Settlement Officer, being single-handed until February), and the amins naturally took advantage of the opportunity, to do the smallest possible amount of work. In February, however, all this was changed. A form was introduced to show each amin's daily outturn of work. A minimum outturn was fixed, failing the completion of which the amin was debarred from receiving his full daily wage; and the payment to amins was taken out of the hands of the Raj and its tepere holders, alloums being henceforth disbursed through the Survey Office. The result was a marked increase in the outturn of work done, but the change came too late in the season to enable the full programme to be completed. Instead of 500 square miles surveyed and khanapuried, the actual outturn was only-

> Surveyed Khanapuried

416 square miles.

while the system of direct payment by landlords, of the wages of amins left a legacy of confusion in accounts, which greatly retarded the recovery of costs. and has only recently been cleared up by the Settlement Department. In Champaran this experiment had everything in its favour, the co-operation of a powerful landlord (the Bettia Raj), and his tenure-holders and patwaris, who were nearly all registered, and therefore amenable to control, and who generally had entire jurisdiction over complete villages. Nevertheless, it was a failure. The law officers decided that their new duties were not such as by Regulation XII of 1817, the patwaris could be compelled to perform. They could not be induced to work themselves, but sent their relations instead. Moreover, it was at first found that all idea of making use of the patwari as a means of keeping up the record of rights, must be abandoned, owing to the fact that he was frequently found to have large landed interests in his own or adjoining villages. Then, owing to the opposition which all the zamindars and the planting community displayed towards a system of maintenance which introduced the patwari, the scheme for maintaining the record by village agency was Sir A. P. MacDonnell substituted officers of a higher status called land record-keepers, with control over several villages. But though this schome, for reasons given in the Muzaffarpur report, never received a trial, yet its introduction destroyed the last shred of argument in favour of utilizing the patwaris for cadastral survey and record-writing.

Entry of field-rates and field-rates.

Entry of field-rates and field-rates, and in the Muzaffarpur report I have given an account of their origin. The Commissioner of Patna insisted on the necessity of entering field-rates, for subsequent use in partitioning estates. Mr. Lyon argued that field rents did not exist, but favoured the entry of field-rates, because although they bere little relation to actual rents, they might prevent the whole-

sale enhancement of rents by means of partitions.

district, was strongly opposed to the entry of both. He reported on the 23rd May 1893, that nearly every raiyat could state his rate of rent, but on enquiry being pursued further, it appeared that the rate he quoted was not the rate on the particular field under khanapuri, but the rate on his whole helding. "Even so," he continued, "it is only a figurative rate agreed upon between him and his landlord, and if multiplied by the actual number of bighas which he holds, it will, very seldom, if ever, give the total rent which he actually pays." He did not omit to notice that in some cases raiyats did hold lands at different rates, raising a presumption, that the rates were regulated by the quality of the soil. But the actual facts pointed to a different conclusion. In all such cases, the double rate was due "either to the raiyat holding under two different landlords, or to his having taken up the holding of an absoonded cultivator at that cultivator's rate at the same time, preserving his own lands at his own rate."

As a general result of his enquiries, he found, ordinarily, a raiyat was given both good and had lands, and an all-round rate was fixed for his whole holding, after due consideration of his caste, the amount of salami he paid to the landlord on entry into his holding, and the like. Investigations on applications for the settlement of fair rents have corroborated his conclusions. In short, he said that all that he could record, was the average rate of a holding against each of its fields; and as this average did not apportain to that particular field, the entry to that extent was misleading.

190. As to field-rents, he was still more uncompromising. While admitting the desirability of recording them specially for Batwara purposes, he denied that field-rents did exist at all in Champaran; and if they were considered indispensable, he said they would have to be created, which would be "a gigantic

undertaking." He summed up his conclusions thus -

"In any case the least suitable place for any experiment of the kind would be, in my opinion, the Bettiah subdivision" (which was then under operations). "The conditions which are, I believe, found most favourable for the development of field rents, are thick population, with a consequent competition for land, and high cultivation and the division of the land among numerous petty proprietors. In Bettiah none of these conditions exist; there is still much waste land in the subdivision; the population is comparatively sparse, cultivators will break new ground rather than fully cultivate that which they already hold; and the land is mostly owned by one large proprietor. In course of time these things will no doubt change, the process is in fact going on rapidly at present; and it may be, that, with the change, the field-rents will also develop, especially if the subject is borne in mind, when fields change hands, by those who may be responsible for the maintenance of the records. But any attempt to create and record field-rents now, would be, if not an abortive attempt to anticipate history, at any rate an endeavour opposed to the natural order of events."

191. His recommendations were that the column for "rate of rent" in the khasra should be abolished, and a column for "rent" be substituted, with instructions to the amin that where a lump rent was paid and field-rents were unknown, the lump rent would be entered in the khasra against the first plot of the bolding, and a reference to the entry against the first field would be made in the case of subsequent fields. Of course, where field-rents existed, they were

to be entered against the field concerned.

192. The Director submitted the question to the Board in his No. 1875 T.A., dated 21st July 1893, in which he recommended that columns for "rate of rent" as stated by the tenant, and "rate of rent" as stated by the landlord be retained in the khasra, but that a further column for "rent" be added and filled up as suggested by Mr. Colvin. But it being ruled by the Government of India that rents were to be entered at attestation by the Revenue Officer, it followed that entries of this nature could not be made by amins in their khasras.

Burry of rent and status at but it gave rise to so much controversy that I offer no apology for making a further reference to it here.

It has there been described how in the field season of 1892-93, a departure was made from the rules prescribed by the Survey and Settlement Manual, and amins were ordered to record both status and rent in the khatians; how Sir A. P. Mac-Donnell directed this procedure to be abandoned in favour of that laid down by the Survey and Settlement Manual, requiring entries of rent and status to be made by the Revenue Officer at attestation; how Sir Charles Elliott, on his return from leave, reopened the question, and how, as a result of its discussion by the Calcutta Conference, it was decided that Inspectors should make rent-lists, but that amins should still continue to record the rents, as stated by landlord and raiyats, a scheme that was found unworkable, and subsequently superseded under instructions from the Government of India, directing that all entries of rent and status should be made by the some Officer at attestaall entries of rent and status should be made by the line Officer at attestation. While this discussion was in progress, the Settlement Officers were freely consulted; and Mr. Colvin, regarding the question from the conditions of how own district, was strongly of opinion that, whatever the agency, the balance of advantage "was in favour of having rents recorded at the khanapuri stage." He continued:

It undeniably reduced work at attestation, and so far as the result of last year's kinnersuri has been tested, the entry of rents was correct in a large number of cases." (Letter No. 377, dated 15th December 1893, to the Director of Land Records and Agriculture).

194. As to status, his views were largely dependent on the agency employed. He was opposed to entrusting to the patwaris the duty of making this entry, as they could not grasp the technical distinctions involved, but with the abolition of the patwaris, and the substitution of the amin, the balance of advantage was again entirely on the side of having this column also filled up at khanapuri.

He further observed that the orders prohibiting entry of rent and status "practically undermined the system of joint survey and settlement establishment at the khanapuri stage." In his opinion, it was only in supervising entries like these that the system of joint control was justifiable or called for; as more writing of boundaries and names of landlords and tenants could

perfectly well be done by a purely survey establishment.

Mr. Colvin's experience was derived from dealing with villages belonging to the Bettia Raj. He had not been brought into contact with villages where complicated proprietary interests existed, or with unscrupulous landlords ready to adopt any device fair or foul, to turn the operations to their material advantage. A wider experience would have served to modify these views.

Mr. W. C. Macpherson, the Director of Land Records, very strongly

favoured the entry of rent and status at the khanapuri stage. He wrote:-

"If the amin does not fill up the columns, "Rent according to landlord" and "Rent according to tenhut," these columns must be filled up by attestation muharrirs at the Revenue Officer's camp, to which it may not be so easy for the parties to bring their jamabandi papers, " lakhila; &c; and the entries must necessarily be made in haste, for the Revenue Officer cannot stop for more than a day or two in a village or at an attestation centre, nor can be himself make or even thoroughly supervise the making of lakhs of entries at this stage." Again, "what chance is there of the real disputes about status being thoroughly enquired into at attestation time, if the Revenue Officers' time is taken up in making the record of status in thousands of cases, in which there is no dispute, and if it be left to an attestation muharrir to record the status, is it likely that in the hurry of reading through scores of khatians, and hundreds of field numbers, the attestation muharrir will make more correct entries with regard to status than an amin well instructed and carefully supervised would make in the field?"

- I need not repeat the argument set forth in the Muzaffarpur report against the entry of rent and status by Inspectors and amins at the khanapuri stage. I am strongly of opinion that, had this system been persisted in, the result would have been, in Muzaffarpur, a far higher average rate of existing rent and in Champaran, where, owing to a sparse population, this abuse of forcing up rents is not so prevalent, fewer rent disputes. In regard to status the result would have been a large decrease in the percentage of raiyats, holding a settled or occupancy status. A corroboration of this view is afforded by the status statistics for the first year's operations in both districts. In Champaran no less than 43 per cent. of the holdings attested were returned as held by non occupancy raiyats. The Board said that, while admitting "that the tenants of Champaran are less fixed in their residence than those of most other tracts, they were not prepared to expect that 43 per cent. of the tenants in any part of these provinces have not acquired occupancy rights." Mr. Colvin had the entries re-attested, with the result that as many as 1,263 of the tenants entered as non-occupancy were found to enjoy occupancy rights. The original mistake, it was reported, "was due to the fact of tenants holding batai lands, prior to their ticca holdings, frequently not being taken into consideration, nor was sufficient enquiry made as to whother the tenant hold lands in the village other than those included in the particular khalian under attestation." The percentage of non-occupancy raivats, as a result of these enquiries, was reduced from 43 to 20 per cent., but the highest figure since reached in this district has been only 12 per cent., in spite of the operations having since then been conducted in tracts where agricultural conditions are much more unsettled than in the south of Bettia thana.
- It follows that, with a large part of the district owned by big 198. proprietors, with very few and petty revenue-free properties, and with few subordinate tenures, that the khewats in the district were extremely simple.
- 199. Mr. Colvin took a prominent part in the discussions on the principles which should be observed in the preparation of this part of the record of rights, but the question has been reviewed in the Muzaffarpur report, and as its practical application to Champaran is of limited extent, further reference to it

is unnecessary here. The tenure-holder's khewat is generally as straightforward a document as the proprietary khewat. Factories held mokarari or thikadari leases for large areas, often for whole villages. Petty native thikadars and rent-free holders are fairly numerous in the south of the district, but a subtenure-holder is a rarity.

200. It is not unusual in Champaran to come across large villages comprising over 10,000 fields, and covering an area of 10 square miles. Indeed all previous records have been beaten by a village called Semra Labedaha in than Bagaha, consisting of above 15,000 plots and measuring 42.0 square miles in area. For the completion of the survey and record-writing of a village of such magnitude in a single season, special treatment was necessarily required. The difficulty was not touched by the provisional khanapuri instructions of 1892-93. In Fobruary 1893, Mr. Colvin in his letter to the Director of Land Records, No. 63, dated 23rd of that month, suggested the following rule, which rather increased the difficulty than removed it:—

"Where one village consists of two distinct parts, if it is shown as one village in the Collectorate mauzawar register, it should be treated as one village; only one khazea being prepared for both parts; the first number in the second part being in continuation of the last number of the first part."

By the end of the season, the Settlement Officer had become convinced that separate tolas with separate rent-rolls, should be dealt with as separate

villages, a view in which the Raj concurred.

201. In the next season's rules, therefore, it was provided that wherever a revenue survey manza consisted of two or more deteched portions, or was unusually large, it was for the Settlement Officer to decide whother there should be one khasra or more than one. The rule worked very well where the distinct portions or tolas had separate jamab indis, and its practical effect was to raise very many tolas to the status of villages, as will be evident from the fact that the total number of villages now surveyed in Champaran (including those since transferred to Saran) is 2,860, as against 2,500 found by the revenue survey in 1845. It must be admitted that though the operations were based on the revenue survey village, as a primary unit, this procedure has led in some cases to a modification of the principle. But I do not regard it as a cause for regret that some of these huge unmanageable villages have been subdivided into areas more suited to the requirements of a higher degree of agricultural development.

202. But in a large number of big villages hold by a single proprietor, the rent roll was not separated tola by tola. In these cases there is often a tolawar jamabandi, but it is prepared not according to the tola in which the holdings are situate, but to that in which the tenant resides, so that the system of splitting up big villages for record writing required still further elaboration.

203. Villages of this kind were apportioned arbitrarily to two or more amins, each amin using a different serial for the sheets of the map assigned to him for record-writing. There were thus as many plots with the number one as there were amins, and portions of a single holding were usually khanapured by separate amins. These portions had to be brought into a single khalian during recess, the plot numbers being distinguished by the addition of the name of the tola. This procedure, however, never worked very satisfactorily. Confusion arose from the plot in one tola being entered in place of the plot of another tola, bearing the same number; and many mistakes and omissions were made in bringing together all the plots of a single holding. Thus, Mr. Bell, who was Assistant Settlement Officer in charge, wrote on 9th March 1895, in an inspection note:—

"I watched the bujharat and attestation in progress in Sangrampur, a large village. The Survey Office had given different khattans for different sheets of the map. The combination of all these into one khattan caused a very great loss of time. The complaint is

charauth system whereby several amins wrote the record, one serial being maintained throughout. But it was never introduced into Champaran, and belongs to a later period of history.

An important reform introduced during the year 1893-94, was the abolition of khatian writing in the field. Hitherto The compilation of the khatian the khasra and khatian had been filled up simulin the field. taneously, a special muharrir being retained to write the latter. His appointment originated from the experiment to utilize local agency. For when it was found that the patwaris were often unregistered, and, even when registered, entirely under the zamindars' control, in order that the raivats' interests might be protected, they were called on to appoint a man of their own as muharrir, to serve as a check on the patwari. Needless to say he afforded no check, being as subservient to the patwari as the patwari was to This plan was abandoned, and the muharrirs were appointed by the zamindar. the Survey Department. But it was found that the khatians prepared in the field came into our hands-hadly written and in bad condition. As all the information required for writing them up was to be had from the counterfoil parcha, and as the khatians were not required until attestation, it was decided to postpone the khatian writing until the recess. This reform had the further incidental advantage of enabling the Survey Department to employ a smaller

206. In the Muzaffarpur report I have explained how an attempt was

staff, and to keep them employed continuously throughout the year.

made in Saran to give practical effect to the plan of Extraction of argas in the field. area extraction in the field, so that those interested might at once become acquainted with the area of their fields, as recorded by •the Survey Department, and how the work was found to be so inaccurate and expensive, that it had to be abandoned. The experiment was not tried in Champaran; had it been, another practical difficulty of a very serious nature would have been brought into prominence, and one that Mr. Colvin, in reporting on this subject, did not fail to point out. To be brief the standard of measurement varies almost from village to village, and the amin would have been at an absolute loss to know by which standard to convert his areas. At the commencement of these operations, all the areas were converted according to the pargana lagge of the revenue survey, with the result that, while in one village the mights were thrown into anxious concern at finding the surveyed areas of their holdings much smaller than what they were conscious of actually possessing; in a neighbouring village, they were equally concerned to find their landlord intent on claiming increased rent on a fictitious excess. In several of such cases reconversion of areas had to be done, and from 1894 onwards, the practice was introduced of ascertaining at khanapuri, the various standards of measurement in use, and the Survey Department was instructed to convert its areas according to the one most prevalent. It is needless to enlarge on the practical difficulty which would have resulted from an attempt to extract areas

"If this course had been followed in Champaran, the result would have been to fill the minds of the tenants, not with an impression of the value of the work, nor with any sense of satisfaction, but only with absolute perplexity."

dated 23rd December 1894, wrote:-

in the field under the special conditions most marked in this district, but commonly met with throughout Bihar. Mr. Colvin in letter No. 198T.C.,

207. The difficulty of communicating these areas to those concerned in sufficient time to admit of their being able to study the areas they are called on to attest, has been surmounted by the introduction of separate area slips that are distributed well ahead of attestation. The system has been described in the Muzaffarpur report, but belongs to a period of the Bihar operations, later than the Champaran settlement.

Survey and record-writing for this point soon attracted attention, and a conference of local officers, held in December 1892, decided that detailed survey should depend on whether or not rent was paid. The Board's orders were that the houses of non-agriculturists could be surveyed in blocks, but those of agriculturists must be surveyed in detail. As, however, the houses of both classes are generally intermixed, the necessity arose of surveying all village sites in detail, and the scale of 64"=1 mile was finally adopted, as that most suitable for the purpose. The question then arose whether retrospective effect was to be given to the Board's order. Mr. Colvin pointed.

out the extent of extra labour that such a course would involve, and that as all agriculturists held their holdings rent-free in Champaran, it would suffice were a note put on each record that homestead lands in the village were not separately surveyed and recorded, but that the custom of holding them rent-free prevails in the village. Mr. Lyon, Settlement Officer of Muzaffarpur, was similarly averse to a revision of all the village site survey done in the previous season, and the Board accepted the recommendations of the local officers.

209. Then arose the question as to where a rent-free homestead was to be entered, and the Director and Mr. Colvin agreed in thinking that it should be entered in the kratian of the raiyat's holding, a note being made of the fact that it was held rent-free. The Board prescribed this procedure, but the position of the homesteads of non-agriculturists was not then considered. The practice, however, has always existed of entering them on the landlord's gair-masrua khatians without any specification of house-rent, and the Bihar khanapuri rules have provided that they should be so treated. The only case in which house-that is entered, is where an agricultural tenant pays a house-rent separate from his agricultural rent on his homestead. The amount of house-rent is then entered in the remarks column.

The provisional rules of 1892-93 provided for the entry of the mortgagee's name after that of the mortgager-tenant-in-chief in the raiyat's column, and of the amount of advance in the remarks column of khasra.

and khatian. Mr. Colvin, by way of supplementing this rule, suggested in February 1893, that the nature of the mortgage should be noted, that is, whether with or without possession; that mortgages of a part of a holding should be entered only in the khosra; and that mortgages of whole holdings even should only find a place in the khotian, where the mortgager was an occupancy raiset, or notice of the mortgage had been given to the landlord. This procedure was adopted during the first season, but was subsequently cancelled by the Board, who directed that mortgages without possession should be entirely disregarded, and that the amount of advance should be omitted, so that neither party might be prejudiced.

211. In the recess of 1892-93, the question was fully discussed, and the following rule drawn up, which still holds good:—-

"When the tenant has mortgaged his right, and the mortgagee is in cultivating possession, the name of the mortgagee will be entered after that of the tenant in-cheef; and a note of reference will be made of the date of the mortgage deed, if it be produced. No parcha or khatian will be given to the mortgagee in any case, and no record will be made of mortgages which do not carry possession with them. This applies to part mortgages us well."

The only alteration since made in this rule has been the return to the old practice of entering the amount of money advanced.

212. The provisional rules directed in the case of sales the entry of both tenant and purchaser in the raiyat's column, but gave most prominence to the entry of the purchaser's

name there.

213. In the next year, it was distinctly laid down that the name of the transferee should come after that of the transferor, and that there need be no separate khatian for the alienated portion; this, in the previous season, having apparently been prepared. In this way care is taken not to prejudice the rights of the landlord to withhold consent to a transfer by sale where custom authorizes him to do so: Indeed, in Champaran, the planting community have always shown the greatest keenness in asserting their right to veto such transfers, and cases have been taken, more than once, to the High Court to strengthen their position in the matter, and with success Either a heavy salami (admission fee) or the execution of an indigo satta is the invariable condition they attach to according to their consent.

214. The treatment of District Board roads is one that assumed importance in Champaran, Mr. W. C. Macpherson, the Director of Land Records, discussed the matter with the Manager of the Bettia Raj in December 1892, and in his Notes of

matters discussed in Bihar from the 1st to 23rd December 1892" placed the following on record:—

- "Road lands.— Mr. Gibbon agreed that in the case of roads which are on the District Board's list, the road lands to the outside of the liks where liks exist, shall be measured and recorded in the name of Government; waste lands outside the liks will be recorded as Raj lands and as being in possession of the Raj, unless actually cultivated by tenants. Trees within five yards of the outside edge of the roads (including the liks), except on the Bettia-Gobindganj and Bettia-Motihari roads, will be recorded as being in the possession of the Government. Trees on the two roads named are to be recorded as being in the possession of the Raj. Mr. Gibbon undertook to give the Collector an ekrarnama, admitting the right of Government to take earth within five yards of the edge of the like."
- 215. No action appears to have been taken to record the right of the District Board road, as contained in the last sentence of the extract, until the recess of 1893-94, when Mr. Colvin wrote to inform the District Engineer that something should be, done to protect the Board's rights, as the records surveyed in the preceding year were then being published in draft. This seems to have had no effect, and the time arrived to finally publish those records, when Mr. Colvin again pointed out (to the Collector) in a demi-official letter, dated 18th December 1894, that the matter should be speedily arranged, as nothing could be done after final publication. The District Board in a meeting accepted the terms agreed to between the Director and the Manager of the Raj; and the Chairman requested the Settlement Officer to give effect to it. It was of course out of the question to amend all the village traces. Mr. Colvin, in consultation with the Collecter, found a way out of the difficulty by causing it to be inserted—in the column for special incidents in the khatian—against all District Board lands, that "the District Board has the right to take earth for repairs up to a distance of 15 feet from the edge of the lik, provided there is no crop on the land."
- 216 The execution of a formal ekranama, however, as promised by Mr. Gibbon, appears to have dropped out of sight for sometime, and was revived only in May 1898, when Mr. Maxwell, Collector of Champaran, requested us to draft an ekranama for the approval of the Board, with a view to its being executed by the Manager, as the estate had then come under the management of the Court of Wards. A draft was accordingly submitted with our No. 150, dated 16th July 1898, and then the connection of this

department with the matter ended.

217. In January 1893 the Director referred, for the Board's orders, the Municipal survey.

question as to how municipalities should be treated, pointing out that their urban areas being non agricultural, operations under the Bengal Tenancy Act could not apply to them, and consequently a survey and record of right of such areas should be made only at the request and cost of the municipalities concerned. The Board took the same view, and directed that the Commissioner and Collectors should be consulted as to the wishes of the Municipal bodies.

218. Meanwhile the Director of Land Records had consulted the Settlement Officers regarding the proper treatment of agricultural lands situated within municipalities, and both were of opinion that they should be demarcated off from the purely urban area, and surveyed and settled in the

same way as ordinary agricultural lands Mr. Colvin wrote:-

- "There seems to me to be no sufficient reason why such landlords and tonants should be placed in a less favourable position than others as regards the recording of their rights, simply because their lands happen to be within certain limits which have been declared to be the boundaries of a municipality."
- 219. The Commissioner, in expressing concurrence with the Settlement Officer's views, wrote:—
- "I agree with the Settle nent Officers, who are acquainted with local features, that, as it is possible in North Bihar to distinguish roughly between town or bazar proper, and the agricultural area, the excluded agricultural area should be surveyed, and a record of rights made along with the general agricultural area. As regards the urban areas, I tunk they should be surveyed in order to complete the operations, but I see no object in making a record of rights in such areas, even if they come within the scope of the notification under the Tenancy Act, No. 206R, dated 17th September 1894."
- 220. The final orders on the subject are contained in Board's No. 477A, dated 4th April 1893, and follow the Commissioner's suggestions.

221. The district of Champaran contains only two municipalities—those of Motihari and Bettia. A map of the urban area of Motihari had previously been prepared for the Commissioners. It is, I believe, inaccurate, and it is therefore to be regretted, that the municipality did not seize this opportunity of enlisting the services of the Survey Department, for the preparation of one on which reliance could be placed. The extensive non-urban portion of its area was treated like ordinary agricultural land. The treatment of the Bettia Municipality requires more detailed reference.

222. Early in February 1893, the Manager of the Bettia Raj applied for the survey of that portion of the town bolonging to the Raj, at the Maharaja's expense. This requisition covered practically the whole town except a portion known as the Christian Tola, owned by the Bettia Catholic Mission, and inhabited mainly by its native Christian converts for the most part mechanics. It was arranged that the cost of surveying the Christian Tola should be met by

the Mission and the municipality, half and half.

223. The Raj portion of the urban area of the town was surveyed on the 64"=1 mile scale in 1892-93, and, on its being determined to survey and settle agricultural land inside or outside a municipality, without distinction, its contribution of cost was restricted to cover the expenditure of this survey, and of preparing a skeleten khasra of occupancy, drawn out by Mr. Colvin in consultation with the Manager. The khasra provided for the names of the proprietors, mortgagees, &c, in addition to the name of the actual occupant, and of the nature of each plot. It was therefore a little more elaborate than the skeletog khasra of occupancy used in the case of those municipal areas that have subsequently been surveyed.

224. The survey of Christian Tola, however, was considerably delayed owing to the promised funds not being forthcoming from either the Mission or the municipality. On the Commissioner being moved, he directed the municipality to bear the whole costs without waiting any longer for a contribution from the Mission, the estimate being only Rs. 140. The survey was concluded

in 1895-96, the area, 10 acres, being suveyed at a cost of Rs. 160.

225. The total results are as follows: -

The total area of the Bettia Municipality is 806 acres, of which 385 acres are urban, and were surveyed on the 64"=1 mile scale. A wall-map of the whole municipal area on the 16"=1 mile scale was also prepared. The total cost was Rs. 892-0-4, of which Rs. 732-0-4 was paid by the Raj, and Rs. 160 by the municipality.

Boundary Disputes.

226. Nine hundred and eighty-eight boundary disputes were filed in this district, thus:—

| | • | Area. | Number filed. | Number decided. | Number of villages. | Number of villages per boundary dispute |
|--|----------|--|------------------------|------------------------|------------------------------|--|
| 1 | | 2 | 8 | 4 | 5 | 6 |
| 1892-93 1893-94 1894-95 1895-96 | | 416 517 1,162 • 1,185 | 56 57 366 509 | 53 60 362 513 | 206 338 1,171 1,047 | 3·7 5 9 3·2 2 |
| | | ************************************** | 988 | 988 | | |

The increase in the number of dispute filed in the last two years is attributable to the special circumstances of the different tracts. In the first two seasons the villages surveyed belong almost entirely to the Bettia Raj. In the area taken up in 1894-95 the Bettia Raj was not so predominant, and the increase was due to the clash of rival interests. The area dealt with in the

last season is held mainly by big estates, but being in the north of the district usually contain large areas of waste on their borders, so that out of pure ignorance as to where the boundary of one village should begin and the other end. boundary disputes were filed for the determination of the point.

227. The result of the appeals against boundary dispute decisions was highly satisfactory. Appeals were filed against only 37 out of 988 decisions. In 34 cases the decisions of the Assistant Settlement Officer was upheld, in one modified and in two reversed. It may be mentioned that all the appeals were decided by the Collector of the district except two heard by me on being appointed Superintendent of Survey.

ATTESTATION.

Progress . 228. The following statement shows the number of villages, square miles, plots and holdings attested year by year:—

| Year. | Vill | uges. | Square nules. | Plots. | Holdings. | Thunas. |
|-----------|------|-------|------------------|-----------|-----------|---|
| 1 10 | | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 1892-93 | | 72 | 41 | 34,840 | 5,992 |) p. w |
| 15 (30) 4 | | 229 | 370 | 320,154 | 55,922 | } Bettia and Gobindganj. |
| 100105 | | 369 | 486 | 466,888 | 56,698 | Bettia, Gobindganj and Mothari. |
| 1895-96 | 1, | ,079 | 1,133 | 1,365,698 | 198,088 | Motihari, Kesaria, Madhu- bani, Adapur, Bettis and Dhaka. |
| 1896-97 | | 490 | 665 | 344,511 | 62,735 | Bagaba, Bettia and Shikar- |
| 1009 03 | | 605 | 549 | 270,975 | 49,535 | pur. |
| Total . | 2, | 811 | 3,214 | 2,802,566 | 428,970 | |

229. Here, as in Muzaffarpur, an attempt was made during 1892-93 to attest villages brought under survey and khana-The procedure of record-writing puri the same season, but no records were ready and attestation in the same season criticised. until the 29th March, so that only these for 72 villages were put through attestation. The experiment was then discontinued and has not been revived. In dealing with large areas, the procedure seems to be an impossible one. There is a great objection to writing up the khatians in the field. In the hurry mistakes are made, and the writing being bad and illegible, other errors, both in the field and in copying, subsequently creep in Then, even if a satisfactory method of writing up khatians in the field could be discovered, there is the area extraction to be done, and to eliminate all possibility of error, this process has even now to be thrice repeated by different agencies. Then again the areas when extracted must be entered, not only in khatians and khasras, but in duplicate area slips, which must be distributed in sufficient time before attestation to give the parties an opportunity for a proper scrutiny before they are called on by the attestation Assistant Settlement Officer to accept them as correct. In addition the independent partal of the map must be done, and all the statistical statements compiled. It is evident that after the record-writing is complete, the Survey Department has work remaining to be done, which, for an area of 500 or 600 square miles, must take five or six months. It can therefore, I think, be said definitely that in large settlements the only possible system is for attestation to follow record-writing

in another year.

230. The area of 307 square miles, attested in the field season 1893-94,
was divided amongst four camps. It was held by
The attestanon programme year the Bettia Raj, partly direct and partly through
by year.

Parsa, Laheria, Mallahia and Lal Saraya. This attestation does not appear to
have presented any difficulty. The area of 419 square miles, taken up in the

following year, was also apportioned to four attestation camps, and was entirely owned by the three biggest indigo concerns in the district—Motihari, Pipra and Tarkaulia. The only noticeable feature of the year's work was the attestation of Tarkaulia rents. All the factory lands had been privately surveyed some four or five years before these operations began, and its jamabandis had been recast in accordance with the results. The new rents were accepted and paid by a large number of the tenants, who made no objection at the attestation stage, but not a few did contest, and showed that they had never paid anhanced rents. The system of set-off, by which indigo accounts are adjusted along with rent, was a further complication. I shall revert to the subject again when describing the settlement of fair rents in this area. The rest of the work was simple and carried through without friction.

231. In the season 1895-96, the programme was very heavy, viz. 1,168 square miles, and 9 officers were employed to deal with it. The chief difficulties arose from the anomalous indigo agreements which the Hardia and Murla factories, situated in Adapur thans, held from many of their raiyats, and

the disputes about rents in the villages owned by the Madhuban Babu.

232. The majority of the raivats in certain villages held by the Murla factory had executed agreements to grow indigo for the factory on 3 kathas per bigha of their holdings, on condition that the factory abstained

from raising their rents while they continued to do so. A further provision in the agreement stated that the raiyats shall lose their occupancy rights should they cease to grow indige. This provision is clearly illegal, and the patter had all expired in 1887 and had not been renewed. Nevertheless, the raiyats have continued to hold their lands under the same conditions, and Mr. Colvin was of opinion that this system of growing indige was so different from that followed in the rest of the district that some mention of it ought to be made in the record of rights. He accordingly ordered that the fact of the growing of indige by the raiyats should be entered in the column for incidents of tenancy. But Government was not disposed to accept this view. Meanwhile, the Manager of Murla, under the advice of the Planters' Association, succeeded in introducing the satta system, under which the raiyat agrees to grow indige by a contract, quite apart from that under which he holds his lands and all entry of obligation to grow indige as a condition of tenancy was leased from the record.

233. In Hardia there were original agreements to a similar effect, but the cultivation of indigo having been suspended, mankhap, or so many maunds (usually paddy) per katha on the 3 kathas per bigha, were exacted in addition to the cash rent. At this time, Mr. Barclay of Motipur purchased the concern, and by his singular success in reviving indigo cultivation under the satta

system removed the difficulty.

234. The Madhuban Babu had been on bad terms with his raiyats for many years. The Babu claimed the fictitious rents entered in his rent-rolls; the tenants invariably disputed them. Fifteen years' litigation and spasmodic collection increased the difficulty of ascertaining what the proper rents ought to be. Taking advantage of the confusion, the zamindar claimed rents at Rs. 8 per bigha; the tenants at Rs. 3. The attestation was carefully supervised, and the rents attested were for the most part at an intermediate rate, or at that claimed by the tenants. The whole dispute was fought out again during the three stages of case work, and will be referred to later.

235. The difficulties experienced in camps E and F, which, working in thanas Dhaka and Madhubar on the borders of Tirhut, had to deal with petty estates, deserve a passing notice. From the outset, the owners of these estates made a determined attempt to break occupancy rights by setting up their relatives and servants as the actual cultivators. In one instance, a bogus middleman was recorded for over 100 bighas, and Mr. Colvin ordered that in all such cases he should be entered as a tenure-holder, the presumption of section 5 (5), Bengal Tenancy Act, prevailing. Mr. Lyon, when he subsequently took charge, directed that fictitious middlemen should be ignored altogether, and that is the practice still followed in all the North Bihar operations. The officers who attested this

area in the following year were instructed to exclude all the middlemen, proved to be fictitious, from the records, in accordance with Mr. Lyon's instructions. These officers were carefully supervised and the work was well done. At the same-time, rents were closely scrutinised; for an attempt was made to force them up, as part of the general plan; and those rents which had been actually paid for three years were recorded.

236. There was another difficulty which involved an interesting legal point, also peculiar to this area. It was found that Proprietors acquiring rayati in villages leased to factories, a malik cultivated

land himself, paying rent for it to the lease-holder. It was held by Mr. Colvin that the malik was clearly a tenant, and the only description of tenant which he could be was a raiyat. He could not, however, acquire occupancy rights, and should therefore be attested as non-occupancy.

237. The attestation programme for 1896-97 comprised an area of 1185, square miles, i.e., the remainder of the district, ex
The season 1896-97.

Progress checked by the famine. Cluding the unsurveyed hills and jungle. But as

the cold weather came on, the shadow of famine was already on the land. We started work in November, a month earlier than intended, and in those areas where conditions were most favourable, but only one camp, that located in the Gandak diara, was carried to completion. Six hundred and sixty-five square miles were attested, and 520 square miles, containing 600 villages and 21 lakhs of plots, were left over for the following season 1897-98, when, the cultivators meanwhile having reaped plentiful harvests, the grea was completed without difficulty.

238. Generally speaking, indeed, the attestation work in this district was extremely simple. In most parts the competition for land is not sufficiently keen to render disputes about rents possible, and where waste land available for cultivation is abundant, disputes about possession are necessarily few. As for proprietary interests, except in the south of the district, these are concentrated in a single property. In the south petty proprietors are met with as in Muzaffarpur, but

not to the same extent, nor with interests so minute and subdivided.

Chief difficulty—the apathy of the raigats in regard to their own interests.

265. Indeed, our difficulties here arose not from competition for land, but from the ignorance and apathetic indifference of the raiyats as to its actual and potential value.

Mr. Kerr, in an inspection note on camp B of 1896-97, situated in thana Bagaha, wrote:—

"It appears that a number of the raiyats hold so much land that they do not cultivate it all in one year—Last year, at khanapuri, many of them did not take the trouble to get the portion of their holdings, which was then uncultivated, measured in their names, and it was consequently put down as gairmazrua. Now these raiyats' holdings appear in the khatians as much smaller than the jamabands areas, and it becomes necessary to map the remainder of their lands which have been included in the gairmazrua."

239. It is, in short, usually easier to attain accuracy in framing a record where interests are minute and keenly contested, than where circumstances, such as those described by Mr. Kerr, exist. Mistakes are liable to pass undetected in villages held entirely by one influential zamindar, even where the raiyats are fairly intelligent, because the tenants have been accustomed to look to their landlord for all, and have not learnt the need of self-reliance. Where in addition, owing to the absence of competition, they are apathetic and ignorant of the value of their rights, the difficulties are increased enormously, and Assistant Settlement Officers often had great trouble in inducing them to understand a question sufficiently to give an intelligent answer. The manner in which settled raiyats allowed themselves to be recorded as non-occupancy during the first season to which I have already referred, is a case in point. It is probable that raiyats entitled to hold at fixed rates, often made no attempt to prove it.

240. The position of the Revenue Officer was a difficult and a delicate one. While he had to avoid displaying undue partiality for the tenants, it was absolutely essential that he should labour to protect them against the consequences of their own foolish ignorance. The tenantry of the Bettia Rej is under the circumstances, to be congratulated that they were subordinate to

a land-owner who tried to treat them fairly.

The attestation procedure followed in Champeren was similar to that which I have described in the Musaffarpur report. Propedure. Procedure.

I have already referred to the attempt made to write and attest the record in a single season. In the same year (1892-93) also the old plan of sending a bujharat muharrir into the village a few days before the Assistant Settlement Officer's arrival was tried in a few cases, but speedily abandoned in favour of the system whereby the preliminary explanation is done by a staff of munsarims working in the attestation camp under the eye of the Assistant Settlement Officer. In the second season an innovation was made in requiring the attestation mansarins to correct and arrange the records after attestation. This system has been largely developed since. Every year the delays in completing the records grow less, and the quality of the correction work improves. The more recent innovations, such as the employment of khanapuri kanungoes for the disposal of summary disputes at khanapari, which so greatly lightens the work of the Assistant Settlement Officer and of his munsarians who correct the record at attestation, and the introduction of triplicate percha slips and of area slips, did not receive a trial in this district, progress

242. I would now proceed to notice certain miscellaneous points of interest that arose in the course of the attestation

Points of interest. proceedings in this district.

under the old arrangements being too far advanced to admit of it.

Foremost among them is the Bettia Raj nimak sayar. As early as 17th April 1805 the Manager of the Bettia Raj The Bettis Raj saltpetre mahal. drew our attention to the fact that the owns the entire nimak sayar (right to manufacture saltpetre) of the district, both within and without the Raj estates, on payment of a certain revenue, having purchased it direct from Government. In proof of this contention a sanad was produced. The Manager of the Raj argued that in estates belonging to other zamindars the Raj should not be recorded as a tenureholder in respect of the nimak sayar. right, but as its direct owner; and that the nunivas, who make saltpetre under license from the Raj, should not be recorded as raiyats of the dih lands, nor should they got parchas, their connection with the land being obviously of a non-agricultural nature. On enquiry it was found that the procedure in recording these lands had varied in every attestation camp. Some gave a proprietary khewat to the Bettia Raj for these lands only, though lying in another zamindari; others gave a tenureholder's khewat; and there were also some who did not show the right in the thewat at all, but made a note of it in the column of the gairmarraa thatian. Nuniyas were, in some camps, entered in the raiyats' column, and in others again in the remarks column. Nor was the Raj invariably entered as possessing the right of nimak sayar in all estates outside its jurisdiction. In reply to our reference the Collector of Champaran, on the other hand, wrote in his No. 189, dated the 9th May 1895, that "the ninek sayar lands are included in the revenue-paying estates within which they are situate, and that they are not treated as a reparate estate;" but he learnt from this office that these lands, whether situate within the Raj estates or in estates belonging to others in this district, were in possession of the Raj on payment of certain rent to the other proprietors of the estates other than the Raj.

244. This was in direct conflict with what the Manager had alleged, and a further reference to the Collector was necessary. The Bettia Raj had sent us its sanad, which was but a copy, and the Collector after reading its translation, and causing every search to be made for the original in his record-rooms, but without success, pointed out that the sanad purported to be a copy of a sale-certificate of mahal Sangrampur along with all nimak sayars, and that the Raj seemed to have purchased the estate at a revenue sale held 91 years ago, in default of payment of Government revenue. It, however, passed his understanding how all the nimak sayars, borne in estates which had not defaulted, came to be put up for sale in the same lot. But the point whether Government did receive any revenue from the Raj for nimak sayars remained obscure, and the Collector was again asked to make a definite statement on the point. He then went deeply into the subject, and his inspection of the sextlement papers of Sangrampur, tauzi No. 886, disclosed that there was some nimak sayar right, described as "mahal nimak sayar Darobast Sarkar

Champaran," included in the taluka, and that the Bettis Raj did pay revenue for it. The description, as far as it went, clearly covered the nimak sayar of the whole Sirkar, but the Collector was still sceptical, and advised that "the best way of getting at all the facts and arriving at a clear decision would be a case under section 106."

245. It will be of some interest to recall here what has been written on this subject in the chapter on Revenue History. I have there shown how Sangrampur taluka, with the nimak sayar mahal of the whole Sirkar, came to be settled with one Jagmohan Mukherji, the Diwan of the Collector, who went to make the decennial settlement of Champaran. The taluka, with nimak sayar, was settled in the name of Abhaya Chand and other sons or nephews of Jagmohan, a fact also supported by the register of dauls of the decennial settlement, prepared in 1197 Fasli, and the very same names are found in the Raj sanad, which opens with the declaration that "Abhaya Chand, Gobind Chand, and Anant Chand Mukherji, maliks, defaulted in payment of heavy arrears of Government revenue for the year 1210 Fasli," and so forth.

246. The question was therefore not so obscure or complicated as it looked, but it was decided not to take any final action until further enquiries on the spot about this right had been held by the attestation camps, as the season 1895-96 had already set in. The enquiries had not come to any definite issue when I took over charge of the district, and I then decided that the Laj should not be shown in any khewat in respect of this right, but that the land on which this right was exercised should come in the gairmaxrua khatian of the estate in which it was situate, with a note in the incidence column that the nimak sayar right of the village belonged to the Bettia Raj, for the Privy Council have ruled that the ownership of land is in its "site" and the same site cannot belong to two estates unless they hold jointly. The nuniva in possession was also cut out from column 2 of the khatian, but his possession was noted in the column of remarks against the plot in question.

247. This procedure has ever since been in vogue, and also governs the nimak sayars in the villages of pargana Babra, which was formerly in

Champaran, but has since been transferred to Muzaffarpur.

The question whether embankment cess, locally known as Bandh Behri, was or was not to be entered in the re-Embankment cess. cords, was one that cropped up in the very early stages of attestation in the district. The Bettia Raj levied this cess from its raiyats, and as the attestation officers hesitated to give it a place in the khatians, the Manager moved the Settlement Officer by a special petition dated the 19th February 1894. Mr. Colvin referred the matter to the Collectors of Saran and Champaran for opinion. The former wrote that "so far as tenure-holders and raiyats holding at a fixed rent or fixed rate of rent are not concerned, the cess is an illegal one." His grounds were that, had it been otherwise, the Legislature would have clearly provided for the realization of the cess from ordinary raiyats, and that the Bengal Tenancy Act would not have furnished the landlords with means of recouping themsolves for the expenses of such work by permitting enhancements of rent. It was only the tenure-holders or raiyats holding a like status that were liable for the cess, and not the ordinary raiyat. The question was referred to the Director. The Officiating Settlement Officer, Munshi Nadji, stated that he had considered the point in 1892 in connection with the Settlement of the Hardia villages, and held that such cess was leviable as rent from the raiyats, under the Embankment Act, II of 1882 (B.C.), a view which was endorsed by the Special Judge on appeal. By this time Mr. Colvin had returned to his post, and received the opinion of the Collector of Champaran, and also of the Commissioner of the Patna Division, both of whom agreed in saying that the cess should not be entered in the khatian, but they also urged the desirability of giving one of the zamindars an opportunity of establishing the legality of the cess by a regular suit. Mr. Colvin, therefore, requested the Manager of the Raj to put in a test-case, and asked the Director to defer action until it was decided. The test-case, however, was never instituted.

249. Meanwhile the opinions of the Settlement Officer and of the Collector of Muzaffarpur were ascertained by the Director. The latter took the view of the majority, but the former opined that the cess was not an illegal one.

The Director submitted the question to the Board in his No. 3123S., dated the 7th November 1895, observing:—

"In my opinion, looking to the provisions of section 74 of the Embankment Cess Act, and to the definition of; a tenure-holder which is given under section 3 of that Act, embankment cess cannot legally be recovered from raiyets unless they hold at fixed rents."

The final orders of the Board were conveyed in their No. 1682A, dated the 16th December 1895, and they run thus:—

*As embankment coss is legally recoverable in the same way as rent only from teneres, which, as defined in section 8 of Act II (BC.) of 1882, include all interests in land held permanently at a fixed rental, or which are held rent-free, coss should be recorded in the kadisary of such tenures if payable under an order made in pursuance of section 68 of that Act. There is nothing in the Embaukment Act which authorises samindars to realise embankment coss from the raiyats, either as rent or in any other way. The cess should not, therefore, be entered in the settlement khalance of raiyats."

250. By far the most important question that had to be decided in the course of the attestation proceedings in Champaran related to the recording of rights in trees. A very animated controversy raged round this subject, in which the Manager of the Bettia Raj and the Secretary to the Planters' Association took a prominent part; and it was not set at rest until a definite order was obtained from Government. The following is a brief summary of the correspondence

that led to the passing of that order.

251. The ball was set rolling by a formal application from the Manager of the Bettia Raj, filed as early as November 1894, which gave-

prominence, among others, to the following points:-

(a) That there is a custom prevailing throughout the Bettia Raj, to the effect that the tenants have no right to cut down trees without the consent of the landlord, and that the landlord is entitled to a half share in cash or kind in trees felled or uprocted.

(b) That these rights of the landloid should be recorded in the khatians, in accordance with section 102, clause (b), of the

Bengal Tenancy Act.

(c) That this is not now being done, and that the Raj is therefore making applications for entry to be made in the hatians.

(d) That these applications are being rejected, on the ground that the matter is being recorded in the village notes.

Mr. Colvin disposed of the application in the following words.—

"It has been decided that the existence of such a custom may properly be entered in the village note prepared by the Settlement Officer and his staff, where it is found to exist, but that it is not necessary or desirable to enter the existence of the custom on every raiyat's khatian, as it cannot be regarded as a special incident of any particular tenancy, being, according to the statement of the petitioner himself, a general incident common to all the tenants."

The Manager, however, asked for a reconsideration of the order, on the ground that the village note was not a part of the record, and as such could not be of any probative value in court. He pointed out that the land lord's rights over trees standing in tenants' holdings were included in "the special conditions and incidents of the tenancy," and as such it was obligatory on the Settlement Officer to record them; but with a view to minimise the clerical labour involved, he suggested that one note of the custom in the

record of each village would be quite sufficient.

Mr. Colvin thereupon forwarded the con

Mr. Colvin thereupon forwarded the correspondence with the Manager to the Director for orders, further stating that the making of the entry in question would add very largely to, and subsequently result in a heavy increase of, the work, as the entry was not likely to pass without objection in a great number of cases. He repeated the arguments in another letter, bringing to the notice of the Director a similar request from Mr. Macnaghten of the Planters' Association, who put the landlord's view of the question more pointedly by observing that, as the custom in question conferred an undoubted right on the landlord, it ought to find place in the record of rights.

252. Mr. Macpherson, the Director of Land Records, submitted the question in his No. 9198., dated the 26th March 1895, to the address of the Board, deprecating the advisability of making such an entry, but

at the same time pointing out that Mr. Colvin was in error in holding that a general custom like this could not come under the special incidents of the tenancy. As a solution of the difficulty, he suggested that the notifications should be so amended as to enjoin the Revenue officers to record only those special incidents that the Board or Government may direct. His main argument was that we should confine ourselves to the essentials in the writing of the khatian, and the right under consideration did not come under that category. He put the point with great force in the following concluding paragraph of his letter quoted above :--

"The more that we can confine the khatian to the essentials, the more chance there is that it will live and be maintained. At present the khatians which have been written since the record-writing under the Tenancy Act began, are in danger of perishing through their own bulk and weight."

But the Board in their letter No. 444A, to Government, di with the Director, observing that it would not be expedient nor right to alter the notifications in the manner proposed, merely in order to legalise the omission of an entry which was thought to be inconvenient, but to which the landlords apparently attached much value. According to them it was desirable to allow the landlord to prove the custom in every village, and to make a statement of it, should it be proved, in the beginning of each khatian volume. noting at the same time the names of the tenants against whom the custom

wasnot proved.

253. Meanwhile, as a result of further discussion with Mr. Lyon and Mr. Macnaghton, who pointed out that the planters had to advance large sums to the Bettia Raj to take lease of this right, the omission of which would greatly projudice their interest, Mr. Macpherson addressed another letter to the Board modifying his former proposals. He now recommended that the respective rights of landlords and tenants in trees, fallen or cut, should be recorded in the khatian against the plots which contain trees, including bamboos, but he would not allow the Revenue officers to make entries in the Lhalian with regard to right to plant trees, &c., &c. (vide his No. 11988. dated the 19th April 1895).

The Board brought this letter to the notice of the Government in their No. 490A, dated the 3rd May 1895, in which they went further than the Director, and said there was no reason why the right to plant or cut trees should not be recorded also, where the parties concerned wished it, as the

general law provided for these things.

254. The whole question was summed up in the Government letter No. 181T.R., dated the 21st May 1895, conveying their orders to the Board. It was ruled, as the Director had observed in his first letter, that the general principle to be observed in deciding questions like this was that "our primary business is to confine the record of rights to essentials, and to keep out of it any extraneous matter, which may bear some relation to a tenure, but is not, properly speaking, an incident of the torure," and the right in question did not stand this test. It was then pointed out that—

"They (the trees) are not like the ordiniary crop-produce of the field, the division of which is recorded in the case of small tenants. Such trees may not have been planted by the present occupant of the field, or by the present owner, or by their predecessors in title. They can only full or be cut once, and so the question of division of the value can only occur once in the lifetime of each tree, and council by as settled or notorious as the division

It was therefore decided that, in such cases, no record should be made of the right to cut the tree or to receive a share of its value when fallen or cut.

- "In the case of fruit trees, however." continues the letter "............ annually, the division of the produce should be recorded. Similarly, in the case of groves where the trees are really the produce of the field, as it produces little or nothing else, and is given up to or rented for that object, the right to out the trees and share the value of the timber should be entered in the record of rights. In both these cases, the record should be made in the khatian by the attestation officer."
- In short the Government order drew a distinction between isolated trees, standing on borders of fields that give no annual return in produce, and groves, like mango topes, etc., that occupy the whole field, and preclude the raising of any other crop in the soil beneath. These instructions were embodied in the khanapuri and attestation rules.

The relative rights of leadlord and tenants in trees in the district. They are of a somewhat complicated character, and almost peculiar to Champaran. They fall, generally speaking, into two broad divisions, gayari and anthrop. The former belong solely to the landlord. They include those standing on malik's waste, or on holdings surrendered to the landlord, or taken possession of by him on the abandonment of the raiyat. The anthrop, literally trees whose anthi, or seed, was 'rop' (i.e., sown) by the raiyat, are those planted by a raiyat in his cash rent-paying holding.

257. The malik generally lots out the fruit-producing gayari trees on batai,

257. The malik generally lots out the fruit-producing gayari trees on batai, generally batai kankut, or on a certain stipulated money rent described as sair in the rent-roll. In resettling the abandoned holdings the landlord invariably settles the trees separately on a batai or cash rent and keeps them gayari.

258. It was in regard to anthrop trees, that the question of the right to cut and share the timber arose. It may be said that the custom which limits the raiyat's rights in these trees in the way indicated above is now a well established fact in the villages of the Bettia Raj and of the planters, though the raiyats did not originally submit without a protest, for a crop of cases was filed in the civil courts. The majority of the decisions upheld the landlord's claim. The only instances, therefore, in which we came across cases in which raiyats disputed the custom were in villages belonging to petty maliks, and even there it was noticed that the landlord generally exercised the right without serious opposition.

CASE WORK,

Settlement of fair-rents, Section 104, Bengal Tenancy Act.

259. With population sparse but growing, cultivation backward but advancing, with culturable waste still abundant, standards of measurement uncertain, rent-rates low, Extent of the work. Large excess areas. and few petty proprietors to concentrate their energies on forcing up small rent-rolls, it was but to be expected that our operations in Champaran would disclose large excess areas in the holdings of the tenants for which no rents were paid; from the first the settlement of fair rents was the branch of the operations that in this district assumed a most prominent position. It formed the subject of endless discussion, and after the main principles had been determined the large number of applications continued to pour in year by year after attestation until the last season, when the area dealt with was inhabited mainly by Tharus, a semi-nomadic tribe ready to change their habitation on the smallest sign of oppression, whom the Bettiah Raj wisely determined to let alone. Under these circumstances it is proper that a review of fair-rent settlements should be given in some detail in the Champaran report.

260. The following statement conveys an idea of the extent of the work we were called upon to do under this head:—

| Assa attretted in Tras. | Number of raiyats' holdings attested, excluding reat-free. | Number of holdings brought under settlement of fair rents. | Percentage of these holdings to holdings attested. | Former rental. | Pair rent settled. | Percent- age of increase. | Percentage of increase to the total rental of the district. | Brmarke. |
|---|---|--|--|---|--|---|---|----------|
| 1 | 3 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | b | 9 |
| 1898-94 1894-95 1896-88 1898-97 1897-88 | 62,019 45,456 160,909 58,638 42,468 | 18,388 11,496 82,441 14,390 4,058 | R& 3 35 4 81 6 24 6 14 8 | Rs. 1,26,115 1,02,648 6,42,347 1,10,160 53,632 | 1,41,600 1,12,761 6,RM,877 1,28,248 60,254 | 13·25 0·45 8·49 11·88 12·34 | | |
| GRAND TOTAL | 964,669 | 102,863 | 28-2 | 9,33,938 | 10,26,340 | 9-89 | 2.9 | |

The statement begins with 1893-94, the little work done under this head

in 1892 93 being incorporated in the figures for this season.

261. It will be remembered that our operations began in the Bettis subdivision in thana Bettia itself, extended southwards to the Sadar subdivision, where attestation occupied two years, and then returning to Bettia were spread over the northern and north-western portions of that subdivision in the succeeding two years; or in other words, we began where land available for cultivation is abundant and where opportunities for reclaiming new lands are great, we then went down to the tract where the land is more fully occupied and these opportunities are less. Finally, we went northwards to that area where the land available for cultivation is most abundant, but the demand for it is very limited. This itinerary can be traced in the variations in the percentages of increase given in the above statement. We begin with the high percentage of increase 13.2 per cent., which falls in the next season to 9.8 per cent. and in the following season to 8.4 per cent., but when we go north it again shoots up to over 12 per cent. The difference in the last two years is not found in the percentage of increase of rent in the last year which is inappreciable, but in the decrease in the proportion of the holdings brought under the settlement of fair rents. In the annual report of 1893-94 Mr. Colvin wrote:—

"The large tracts of waste land lying ready for any enterprising cultivator in the Bettiah subdivision, where the settlement work was principally confined during the past season offer irresistible inducements to encroachment, and the great discrepancy between the actual areas of holdings as found by the survey and the areas as found by previous measurement was as a general rule more than could be accounted for by any difference either in the standard or in the system of measurement. I anticipate that when the survey and settlement operations are extended to the south of the district where there is less uncultivated land and where the laggi is a less variable measure and where the conditions approach more nearly to those of the Muzaffarpur district, it will be found that the discrepancy between the present and previous measurements will be much less, and that consequently the increase in rents will diminish. On the other hand, to the north of the districts, where the opposite conditions obtain, the increase may be somewhat higher."

The reason why in the northern area this forecast was not verified was, as I have said, the weak position of the landlords owing to an absence of demand for lands.

262. Referring in more detail to the percentage of holdings brought under settlement of fair rents to holdings attested, we find variations very similar to those alluded to above. The fair rent operations affected 28 per cent- of the total number of holdings in the district and have increased the district rent-roll by 3.9 per cent. But in explanation of these figures a more detailed reference to the attitude of the Bettia Rajis required. Unlike Muzaffarpur, which is mainly

The attitude of the Betha Raj. is required. Unlike Muzaffarpur, which is mainly held by petty proprietors who force up rents by their ewn personal efforts without the assistance of the Administration, Champaran is largely owned by one land-owner, who needs therefore to base any wholesale alterations of his

rent-roll that he may contemplate on definite and fixed principles.

The Manager of the Bettia Raj recognised that his tenants had included large areas of land in their holdings without assessment, and the first decision he arrived at was to take the fullest possible advantage of the settlement operations for the detection and assessment of their lands. Raj therefore has all through taken the keenest and most active interest in this portion of our work, and the planters apart from their personal inclination have as thikadars of the Raj been compelled under instruction to follow suit. But although the ronts of nearly quarter of the holdings in the district have been increased, the average rent rates still rule very low, and personally I have found Mr. Lowis, the present Manager of the Raj, and nearly all the indigo-planters, while anxious of course to get that increase of rent to which they were entitled, invariably ready to grant concessions where the basis of comparison of past and present area was not very sure or in those special cases where the increase assessable would seem to work harshly. But I have inherited the fruits of Mr. Colvin's labour. Before working and legal principles were defined demands were less moderate. To Mr. Colvin the credit is mainly due that rents while they have been increased in a large scale

in this district have not to the best of my belief been excessively increased, that is to say, increased beyond what the raivats in fairness ought to and easily can pay.

Compromises.

Compromises.

too, circumstances were such that the demand for increased or enhanced rent if contested was almost incapable of legal proof, it necessarily followed that the fair-rent cases were decided mainly on compromise, and the chief point of difference between Mr. Colvin and Mr. Gibbon, who was at that time Manager of the Bettia Raj, concerned the power the Revenue Officer could legitimately

exercise to scrutinise, modify and reject such compromises.

265. The question of compromises came up for discussion before His Honour the Lieutenant-Governor on the occasion of his visit to Bettia in April 1893, and it was then decided that there was no objection to landloffs coming to terms with their tenants in regard to additional rent for excess area, if the terms were such as the Settlement Officer could endorse. On the strength of this decision the Manager at the Bettia Raj proceeded to put in petitions against the whole body of his tenants, and these were promptly followed in a majority of cases by an itrarnumas or agreements between the parties, the terms in every case being the same, viz., "that the tenant should be allowed a deduction of 10 per cent. (2 kathas per bigha) on the area found by the survey to be comprised in his holding, and that they should pay rent at the existing rate per bigha on the balance." Mr. Colvin on the unvarying uniformity of these conditions wrote in his Annual Report of 1892-93:—

"The past history and circumstances of every village may be absolutely diverse, and it is impossible to suppose that one and the same agreement will suit every different (set) of facts; much must depend on the previous conditions of the village and whether rents had already been generally enhanced.

"In the course of enquiry into individual cases it became necessary to reject many of the agreements filed before me. The cases were then dealt with and disposed of in the ordinary

way, time being given for the production of the evidence required by law."

266. Thus the power of a Revenue officer to test, and if necessary to reject, compromises was asserted from the first, and the nature of the test of excess area must depend in Mr. Colvin's opinion on the following considera-

tions:—

- (a) The present measurements are made by a chain on an exact system in acres, and acres are converted to bighas of so many laggis, the laggi being a certain number of haths and the halh being taken at exactly 18 inches. But the previous measurements, if any, specially those made by a native agency, have been made on a loose system by the laggi, and......" the hath itself has been a measure of varying length, and that length has been generally more than 18 inches. This is one cause why the bigha, as calculated by us, has been greater than the bigha in the zamindari papers.
- (b) In many cases there have been no measurements within the memory of man. In these cases the entries of areas in landlords' papers must have been largely guess work.
- (c) In some cases tenants have been given permission to take up waste land indefinitely on condition that they pay an enhanced rent.
- (d) There are, no doubt, cases in which collasion between the patwari and the tenant has contributed to the result."

But the difficulty was felt in the practical application of those principles. 267. Sir Charles Elliott inspected the Bihar operations and wrote in his note with reference to fair-rent case-work in Champaran:—

"I have desired the Settlement Officer to arrange that he should try each of these suits in the village concerned, and not at Bettia: at any rate during the camping season. There should then be no process fees and no service of notices. The Court would procure the attendance of the parties in their own village, and no technical difficulties need arise."

Sir Charles Elliott's opinion en 268. On the subject of compromises he compromises.

"When the raiyats agreed to a compromise and to pay a moderate enhancement, Mr. Colvin insisted on their admitting that they did occupy an increased area, and on their refusal he threw out the compromise. This seems to me to have been unnecessary. The compromise should be clear in all details and should show the nominal area, the survey area, the excess, the allowance made to cover imperfection in the old measurement, the balance of excess area, and the amount of increase which the raiyat agrees to pay in his rent on account of that balance. If the tonant clearly understands and agrees to pay this amount, I can see no reason why a decree should not be recorded against him and the rent there settled entered in the khatian."

- 269. These instructions, however, left the point untouched what a Settlement Officer should do with compromises that were unintelligible and based on wrong principles, and as they were growing numerous and their rejection wholesale was obviously inexpedient, Mr. Colvin
- wholesale was obviously mexpedient, Mr. Colvin drew up a set of instructions for his case officers, just after the Lieutenant-Governor's visit, to the effect that the case officer, before taking up the case at a particular village, should proceed to the village, hold a local enquiry about the history of rents, previous enhancements, if any, and also measurements. He was there to determine the length of the prevailing laggi, in which, it was expected, he would derive much assistance from the village note recorded by the attestation officer. He should then draw up a report, proposing the deduction or allowance, as it is more generally called, that would be fair, and on this being approved by the Settlement Officer the parties were to be asked to file sulahnamas on those lines. If they did, the case ended there, but if they did not, the latter portion of section 52(2) should be applied, or in other words, the Assistant Settlement Officer should fix rents that he considered fair.
- 270. Mr. Colvin hoped to work this procedure, which he recognised as emanating more from a sense of equity than from the provisions of the law, with the co-operation of the Manager of the Bettia Raj, but in this he was disappointed. Mr. Gibbon's uncompromising attitude is best expressed by an extract from a demi-official letter he wrote to the case officer at Bettia.
- "As a duly constituted Court I will bow to your decision, but as a medium at coming to an amicable settlement with our tenants, I beg you will leave us in peace."

Mr. Colvin in reply wrote:-

"The only object was to get these cases fairly settled out of Court and to save landlord and tenants from litigation."

He reminded Mr. Gibbon that he had made the attempt after full discussion with him and with his full consent, and had he known it would be challenged legally and officially, his procedure would have been different. He concluded thus:—

- "I was willing to run the risk of being called illegal and other such names, if I could facilitate the settlement of those cases out of court by fair compromise."
- 271. The system had consequently to be abandoned. The Lieutenant-Governor had expressed a desire during his visit to Bettia that the Settlement Officer should himself try some of these cases and give typical decisions which would serve as a guide for his subordinates. Mr. Colvin accordingly tried many cases, one of which, relating to the village Laukaria Sani, he treated and decided as a test-case. The judgment is dated 25th August 1894, and was forwarded to the Director as recording in full the views of Mr. Colvin on the whole question of compromises, powers of a Revenue officer to reject them, and on the points to be kept in view in disposing of a claim on the ground of excess area under section 104 of the Bengal Tenancy Act. This decision deserves to be referred to in some detail.
- 272. The case was instituted by the Bairia Factory against the tenants of mauxa Laukaria Sani in tappa Khadda, most of whom filed sulahnamas agreeing to pay for excess area at their existing rates less a deduction at 2 kathas per bigha on, not the new survey area, but the old nominal jamabandi area. The remaining tenants did not put in an appearance.

273. Mr. Colvin rejected the compromise as unfair, and without recording any further evidence proceeded to fix, and decree rents, calculated on an allowance at 2½ kathas on the new area, subject to the maximum limit of 33½ per cent. He pointed out that the provisions of sections 52(3) and 38 of the Bengal Tenancy Act exempted these compromises from the provisions laid down in section 375 of the Civil Procedure Code. There were, he said, obvious risks in indiscriminate acceptance of compromises. Thus the existing rent which was found to be the basis of settlement might have been incorrectly recorded and attested, then the area of the holding as found by the cadastral survey might have been wrongly extracted; and finally there was a third and the greatest danger, "the unscrupulous landlords in this construction of the law," he wrote, "may compel their tenants to agree to a settlement of rents which may approach rack-rents." He went on to observe.—

"The tenants in many parts of Champaran were most submissive and would go great lengths rather than enter into any litigation, indeed anything in the nature of a dispute with the landlords. The only point at which such a landlord in such a village need anticipate a limit on the demand for increased rent is the point at which the tenant determines that it will no longer be worth his while to retain the holding in the village."

On the grounds, therefore, both of justice and expediency he showed that the scrutiny of and interference with the compromises was fully called for.

274. He then proceeded to lay down four broad principles which were to be applied to each case; firstly, to ascertain what may fairly be regarded as the previous standard of measurement; secondly, to consider how the difference in standard affects the comparison of measurements; thirdly, to consider whether any other facts affect the case under consideration; and fourthly, to apply the previous consideration and to determine what is the fair and equitable rent so deduced and to compare it with that shown in the compromise.

275. Now the determination of the standard of measurement was a pure question of evidence, but he had recorded none in the case; he relied solely on the village notes in which the standards of measurement are recorded by the attestation officers.

This is how he attempted to justify this procedure:—

"This work was done by Revenue officers in whose presence the actual laggi of the village was measured. The measuring was done, corampopule in the presence of all parties who chose to attend when all the village was collected together for the attestation of the record. It was open to any party to say that the lagge produced was not the real village laggi, but not a single case of objection was reported to me."

He next referred to a statement showing the lengths of laggi in 150 villages of tappas, Khadda and Latjiwa recorded in that way, which showed the average length in that area to be 13 feet 7 inches, and as the laggi in the village note of Paukaria Sani was put down to be 13 feet 3 inches, he concluded that he was on safe ground in accepting this standard.

276. In reply to the argument that he could not travel beyond the records of the particular case in coming to a conclusion, he wrote:—

"The record out of which this case arises, and without which it could not have arisen, in the record of right now being prepared under notification No. 429L.R., published in the Calcuta Gazette of 13th December 1892, ordering the preparation of the record of rights in the "local area" comprising tappas Khadda and l'atjirwa. Mauza Laukaria Sani lies in the Patjirwa tappa, and all the facts which came to light in the preparation of the record of right of those two tappas may therefore be relevant in the present case."

But he did not notice that the record of rights which he had till then prepared was only a draft, and had therefore very little evidential value, and even supposing that it carried some legal weight, that the note of the lagge made at the time of attestation was no portion of that record.

277. Having determined the standard of measurement in the actual use, he gave an allowance of 1½ kathas to assimilate it with the survey standard of measurement in katha on account of the greater accuracy of the present mode of measurement in including ails, etc. He thus gave a total allowance of 2½ kathas per higha on the new area and not the old area, because, as he said, the allowance was given to reduce the new area to the denomination of the old area, so as to ensure a proper comparison.

278. In respect of a maximum of 33½ per cent. increase he argued that he could not order progressive rents under the law under section 52, whilst a sudden rise by more than 33½ per cent. fell most heavily on the defendant concerned. On the ground of equity, then, he had no option but to fix an equitable maximum.

279. The case was remanded on the strength of the High Court ruling in the case Maharani of Bettiah versus Sobha Gond and others which I will describe later. This was inevitable, as Mr. Colvin had based his decision in matters that

were not in evidence.

280. His judgment is interesting as incidentally illustrating the superiority of executive over judicial methods in dealing with the settlement of fair rents, but I lay stress on it as emphasising how Mr. Colvin worked to keep demands for

increased rents within moderate and equitable limits.

His troubles were considerably aggravated by the unreasonable attitude which Mr. Gibbon, the Manager of the Bettia Raj, at times took up. As I have referred to this, it is but right that I should explain in contrast how when settling fair rents in 1896-97 in the Gandak diara, where, owing partly to fluvial action, but mostly to the dishonesty of the village officials, the Raj rent-rolls were in hopeless disorder. Mr. Lowis, his successor, gave his most cordial co-operation in settling rents that were fair and equitable. He was willing that the amount of enhancement should be limited to 331 per cent, and fully concurred in the case officer of his own motion reducing the rents of holdings that had suffered from diluvion.

281. In the recess of 1894-95, when the arrangement for the disposal of the fair-rent cases in the area first attested came up for consideration, Mr. Lyon, who was then Settlement Officer of Champaran as well as of Muzaffarpur, made an attempt at the very beginning, and with a fair amount of success to impress our general principles on the important landlords with whom we would come into contact, and the chief of whom were the Pipra, Motihari, and Turkaulia concerns. Once these principles were thoroughly grasped, intelligible and fair compromises began to pour in throughout the villages of the last two concerns.

282. The Turkaulia concern had recently measured its villages. There was thus no dispute about the laggi, in measuring which it had adopted throughout a hath of 18½ inches. The concern gave an allowance of 2 kathas per bigha as a set-off against the greater accuracy of the present scientific measurement, and all the tenants were satisfied.

283. The Pipra concern, however, was not so fortunate, but before passing on from compromise to contested claims for makerani of Bettis versus Sobha on the subject of describe the circumstances that led up to the standard ruling on the subject of compromises passed by the High Court, in the case Maharani of Bettia versus Sobha Gond and others (I. L. R. Calc.). On the 3rd June 1893, the Raj filed an application for the settlement of increased rents against certain tenants of Barbarwa, only three of whom were actually named, and on the very same date a compromise was filed on behalf of the raiyats agreeing to the increase, on receiving an allowance of 2 kathas

por bigha.

283. Babu Raj Kishore Narain, Assistant Settlement Officer, before whom the case came, recorded an order that the tenants had appeared and agreed to the rents, and that they were to be calculated accordingly. The case eventually came to the file of Babu Promotho Nath Dutt, before whom another petition was filed on 1st December 1893, rehearing what had happened on 4th June 1893, and praying that the rents of the 40 tenants might be settled according to the decree of that date, though there was no decree at all, and that the remaining ten defendants be summoned. Babu Promotho Nath Dutt delivered judgment on 12th December 1893. He dismissed the case against the first 40 defendants on the following grounds:—

"This petition" (referring to the petition filed on 1st December 1893)

certainly was not sufficient to dispose of this case.

"The areas in the jumnbandi and the existing rates of rent did not appear in the petition of compromise, and it was necessary to determine them

before the passing of the final decision. On these points the parties might be at variance, and it was necessary to hear the defendants before the disposal of the suit as against them. The necessary process fees for issue of summonses on the first set of defendants have not been deposited, and I therefore dismiss the suit against them under section 97, Civil Procedure Code."

The other defendants contested the suit, and the Assistant Settlement Officer examined the evidence in the light of the Gouri Patra ruling, and finding it insufficient, dismissed the case against them too. The Special Judge

confirmed the decision, and the High Court was moved to upset it.

285. Mr. Colvin at once wrote to the Director to say that he would not be sorry if the case was returned for retrial on its merits, but he was anxious lest the real question at issue in this case, viz., whether a Settlement Officer is bound to accept a compromise between landlord and tenant, should be obscured in the side issue concerning process-fees. He feared that if the ligh Court restored the original order of Babu Raj Kishore Narain Sinha re "calculating rents in terms of the compromise," it would be a most unfortunate precedent for the district, which ought, if possible, to be guarded against.

286. A long correspondence ensued, which led to the Legal Remembrancer being asked to give an opinion on certain questions arising out of Mr. Colvin's Laukaria Sani test-case, to which I have already referred. The gist

The Legal Remembrancer's opinion on compromises.

of the Legal Remembrancer's opinion was that a Revenue officer could not make general enquiries as to the general fairness of a compromise, "except

to form the basis of his enquiries from the parties in order to test their knowledge, consent, etc., as to what they were contracting to do;" that he could not, of his own motion, decree lower rents than those named; that he could not reduce or enhance compromised rents so as to fix rents which "his general and special knowledge of the circumstances of the particular case (as distinguished from evidence recorded in the case) led him to believe to be fair and that he could not reject a compromise which is unfair:—

"The test is, not what the Revenue Officer considers fair, as distinguished from what the parties consider fair. A compromise or contract, being enforceable by law, must be recognised by a Revenue officer, if it fulfil all the conditions of a contract. If it do not, then he will refuse to recognise it, as a civil court would refuse to enforce it; and he would then proceed to settle the fair rent on evidence recorded in the case, starting with the presumption that the existing rent is fair.

Mr. Lyon a protest against this opinion.

Mr. Lyon a protest against this opinion.

Mr. Lyon a protest against this of his own general and special know-ledge of the particular circumstances of the case, Mr. Lyon, on being consulted, agreed with the Legal Remembrancer, but emphatically protested against the rest of his opinion. He said:—

"I do not understand the second clause of the Legal Remembrancer's answer to the first question. If he really means what he says, as to admitting any compromise which would be advisable as a contract under the Contract Act, I do not see what general enquiries in the local area can have to do with the question."

He continued:

"It seems to me that the opinion of the Legal Remembrancer is distinctly opposed to the provisions of section 29 and section 178 of the Act. If it was necessary to bar all enhancements exceeding 2 annas in the rupes, when made by contract, surely this must extend to compromises made under the circumstances described to the Legal Remembrancer, and it cannot be held to be sufficient that the raiyat apparently agrees freely to a greater subancement. And if it was necessary to lay down the stringent provisions of section 178 to bar contract nullifying the clauses concerning status, surely it is twice as necessary to prevent

raiyats decreeing rack-rents against themselves.

"I know many bad landlords in Bihar who could and would take immediate advantage of any such decision as that of the Legal Remembrancer to raise their rents in every direction, and we should be unable to discover any reason for rejecting the compromises as not being legal contracts. It seems to me that section 35 clearly compels the Revenue Officer to come to a decision in all cases in which he settles rents as to the fairness and equity of the rents he decrees. The Legal Remembrancer's remarks as to rents which the parties consider fair are wholly beside the mark. No one supposes that the parties discuss those questions on even terms, and deliberately decide on fair rents, at least in Bihar, and if we could take the line taken by the Legal Remembrancer, sections 29 and 178 would certainly have had no justification. I think that we cannot act on compromises, unless we accept them as filed, or modify them with the consent of the parties, but I think we

should, by legislation if necessary, secure to the Revenue officer the right of rejecting all compromises, on the subject of rents which do not appear to him to be fair and equitable. If the landlord is injured, he can prove his right to an enhanced rent in open court and can secure it.

"As regards the particular case before the High Court, I share Mr. Colvin's fear lest an order may be passed, on insufficient argument, which might be held to imply that Revenue officers are incompetent to reject compromises. There can be little doubt that Babu Raj Kishore Narain's order to calculate the rents did not imply an order accepting the compromise as final; and a reversion to that order as final might well be held to bar any interference with future compromises. But unless Government can be represented, it is difficult to get the case argued. The raiyats are not sufficiently interested, as the worst that can happen to them is a decree for the rents, to which they freely agreed before Babu Raj Kishore Narain; and it would be straining their case to put up their pleader to argue our point for us. However, if it is thought possible that we may prevent any restriction of our power to reject unfair compromises by proper representation in this case, I am strongly of opinion that we should be represented."

288. Mr. Macpherson summed up the situation in his letter (No. 246T.S., dated 31st May 1895) to the Board. He also deprecated the views taken by the Legal Remembrancer, but was not prepared, in face of it, to recommend that the Government should enter appearance in the High Court in the Burharwa case. He, however, added that if the Legal Remembrancer's views on this subject should turn out to be the view adopted by the Court, a case for legislation would arise, on the ground that the provisions of the Bengal Tenancy Act in the matter of settlement of rents were inappropriate and inadequate in

the case of such operations as were being conducted in North Bihar.

289. The result of the High Court's decision in the case was therefore awaited by everybody with anxiety and deep concern. As expected, the Advocate-General who argued the appeal did urge "that the only point for decision by the Settlement Officer was whether the tenants had voluntarily agreed to the terms embodied in the petition, and that enquiries should have been directed to that issue." This was the view of the Legal Remembrancer, but the High Court was not prepared to go to this length. At the same time, they regarded the manner in which the compromises had been disposed of as improper, and observed:—

"It is the duty of the Settlement Officer to enquire from each of the tenants, in turn, first whether he had agreed to the petition (i.e., of compromises) purporting to come from him. If he denied thus, and as the plaintiff offered no evidence, there would be an end of the case, as against that tenant. But if the tenant admitted having made the particular petition, the Settlement Officer should then ascertain what he understood that he had consented to. Some of the petitions, at least, are vague in regard to the foundation upon which, by comparison with the new measu ement by the Collector, the excess area is to be determined. This should form the subject of a careful enquiry, and each of the tenants should be asked what he understood and admitted to be the representation of the area of his previous holding.

Upon this data, the Settlement Officer will be in a position to determine, on the said measurement, whether such tenant is hable to additional rent on excess lands within the

terms of the petition."

290. The last paragraph makes it clear that the Revenue Officer should determine, on the data furnished by the compromise, after it is admitted by the tenants, whether he is liable to additional rent on excess lands within the terms of the petition. It naturally follows from this that, if the data be unintelligible or insufficient, or lead to anomalous results, the Revenue Officer is perfectly justified in throwing out the compromise and proceeding to call for and record evidence to decide the case on its merits.

Present procedure in exact compromised.

291. Our procedure, as based on this ruling, was thus set forth on the annual report for 1896-97:—

- "We insist on a liberal allowance being given to cover (a) the difference between the local standard of measure and the bigha into which areas have been converted by the present survey; and (b) the greater accuracy of the present survey as compared with the previous measurements; and (c) we insist that this allowance should be calculated on an intelligible basis which will be fair for all the raiyats concerned."
- 292. Passing on from cases compromised to cases contested, I will revert to those instituted by the Pipra factory. There as were serious differences in the length of the laggic claimed by it and by its raiyats, and these

differences were accentuated by the demand in the landlord's application for the enhancement of rates on the grounds of "prevailing rate" and "rise in prices" as embodied in section 30 of the Bengal Tenancy Act. The Turkaulia concern wisely omitted these grounds altogether, and the Raj and the Motihari concern invariably withdrew them when the raiyats came to terms in regard to excess area. Pipra, however, insisted on bringing them to an issue, and in consequence all its cases, with one or two exceptions, were bitterly contested.

As a result of this contest it was generally found that the luggi was 293. longer than the factory claimed, and that it was not regulated by the standard cubit but by the forearm of some villager, generally the longest in the village, and invariably longer than 18 inches-a fact often admitted by the plaintiff's own witnesses, and also corroborated by testing, the old measurement in a limited number of fields, of which they produced khasras. All the findings were upheld on appeal. Indeed, a higgi of 18 inch- haths was, up to the time of our advent in the district, practically unknown. Of this, the measurement of the whole Turkaulia dihat, with a laggi of 181 inches hath, is a sufficient illustration. When this concern came to measure its lands, it found a hath varying in nearly every village. It wished to introduce an uniform hath, and that was only possible by adopting the lowest hath generally prevalent, which The cases in which a hath of more than 18 inches is actually was 181 inches. recognised could be multiplied indefinitely, emphasising the untenability of the position which the Bettia Raj (of whose land hardly any previous measurements exist) has from time to time attempted to take up; namely, that it does not recognise a hath exceeding 18 inches.

Applications for increased rent on excess area that were contested, the guiding principles enunciated by the High Court ruling in what is known as the Gouri Patra case have been steadfastly maintained, and evidence of previous measurement or specific encroachment

was required. The Bettia Raj had very soldom measured its villages; consequently, finding itself at a very great disadvantage, it revived the whole issue in a fair-rent case heard in 1895-96. The Raj claimed that whonever lands were settled with new tenants they were measured by the landlord, and that the jamabandis were written up in accordance with the results of this measurement. It was therefore contended that the Assistant Settlement Officer should find that the custom of measurement, on resottling of the holdings, was proved for Raj villages, and that he should accept the jamabandi areas as reliable on this account.

Over 50 witnesses including the Manager of the Raj, several indigoplanters, and other big thikadars, were examined on this point. Their evidence was most interesting, as showing the great diversity which exists among different landlords and in different parts of the district in the procedure adopted when settling land with new raiyats. In the first place, it was proved that, prior to the Raj coming under European management, measurements hardly ever took place. Next it was shown that even at the present day it is not the usual practice of landlords to measure holdings when they are transferred from one raiyat to another, either by succession, sale, or resettlement. To quote the words of the Manager of the Bettia Raj:-"The reason why no measurement is made is that the new tenant accepts the entire jama of the old tenant, irrespective of what the land may be in area." The only case in which measurement generally takes place is when a part of a holding is given up by an old tenant and settled with a new one. The evidence produced therefore showed that there was no such general custom of measurement or settlement of holdings as to prove the reliability of the areas shown in the jamabandis, and the Raj claim to have the custom accepted as proved was rejected. The High Court ruling therefore could not be evaded, and it has all along operated as a wholesome influence in moderating the demands of landlords, they clearly recognising that their best interests are served by prevailing on their tenants to

The amendment to the law, introduced by Act III of 1898, has merely served to legalise the existing practice of assessing excess at the average rate of

the lump-rental, where lump-rentals are paid.

295. In connection with the Pipra cases referred to above, the question of "prevailing rate" sprang into prominence. I need ' Prevailing rate' cases. Procenot describe the various definitions of this term that have from time to time been framed. They all at least imply the existence of different rates for different classes of land, but these do not exist in Champaran. As a rule there is no fixed rate for each class of land, the rate being fixed on the whole holding irrespective of the proportion of good or bad lands which it may contain. Thus the landlord has not only to

prove the similarity of specific plots but the general similarity of holdings, a much more complicated undertaking. There is only one High Court ruling bearing on the subject, viz., Sital Mandal versus Prassana Mayi Debya and others, and it lays down definitely that an average rate is not a prevailing rate. The procedure in Champaran was mainly regulated in accordance with an opinion expressed by Sir Griffith Evans, when Advocate-General in

the case of Nazir Ahmad and others, circulated with Director's memorandum dated 13th January 1896. He says:-

"I adhere to the views expressed by me in the debate. The case in 21 Calc. 986, makes it doubtful whether the High Court will adopt that view, but it does not decide the question, as that was a special appeal, on the ground that the Judge had taken an average. This case, however, is different from those contemplated by me. Here there is not, and does not appear ever to have been, any rate per bigha for various classes of lands, but only a letting of estimated areas at a lump sum, including homestead and all sorts of lands.

"In such a village as this I do not think it could be said that there was any rate per

bigha for the letting of any class of land.

"I do not think there is any prevailing rate in such villages within the meaning of the old or the present law.'

As a result of this opinion all claims for enhancement of rents in Cham-

paran based on prevailing rates had when contested to be dismissed.

The Amendment Act of 1898, while to a large extent giving effect to Sir Griffith Evans' views, has not strengthened the position of the landlords of Champaran, because its application presupposes the existence of different rates for different classes of land

The landlords fared no better in their attempt to prove a rise in prices. In the Annual Report for 1894-95, the fol-Casus bused on "Rise in prices." lowing remarks of Mr. Kerr were quoted:-

"The landlords have signally failed to establish their claims, mainly owing to the unsatisfactory nature of the evidence produced by them. This has consisted solely of statistics compiled from the official Gazette, and of vague oral statements. No local grain-dealers' account books have been produced in any case, though these would have furnished the most This is generally attributed to the reluctance of the mahajans to prosatisfuctory evidence. duce their accounts in Court."

He might have added that the official figures, published under Act VIII of 1885, did not go far enough back for the purposes of comparison, while those previously published had not had their accuracy adequately tested, which, as the Rent Commissioner observed, seriously impaired their evidential value.

The Amendment Act, by admitting a presumption in favour of official price-lists published prior to 1885, has rendered this provision for

enhancing rents more workable.

No cases under section 30, Bengal Tenancy Act, or based on fluvial action.

300. No claims for enhancement under section 30, Bengal Tenancy Act, based on landlords' improvement or "fluvial action" were brought forward. While, however, the provisions of section 30 proved inoperative, the landlords no doubt utilised them as an induce-

ment to their more ignorant raiyats to come to a compromise in claims for This, in fact, was the only use to which increased rent on excess area. landlords succeeded in putting section 30.

301. I will now mention a few matters of interest connected with the

settlement of fair rents in this district.

Foremost were the cases of the Madhuban Babu, arising out of the rent disputes in the Madhuban Babu's estates in tappa Duho Suho, thana Adapur. The landlord claimed a rent-rate of between 8 and 9 rupees a bigha, while the raiyats asserted it to be between 3 and 6 rupees. Consequently the first issue to be framed in each fairrent case was, "what is the existing rent?" In the great majority of the cases,

this issue was decided in the favour of the raiyats, and the landlord then withdrew the fair-rent cases, expressing his intention of again raising the matter under section 106, an intention which he fully carried out. When the work under that section comes under review, I will revert to the further development.

of this quarrel.

302. The only other place where the raiyats united to assert what they believed to be their rights, was in tappa Bahas, also in thana Adapur, Here, owing to the extreme richness of the soil, the cultivators are better off and more independent than anywhere else in Champaran, and therefore more prone to litigation. Moreover, they had been on bad terms with the Murla factory for some time, and their disagreements had already come to the surface during attestation. When therefore the Manager of the factory sued for increased rents, the raiyats in a body denied that they held any excess, and as in most cases there was no evidence of previous measurement, the cases were

for the most part dismissed.

303. Mr. Colvin had observed, as I have quoted above, in the very first year of the operations, that one of the causes why our survey showed large excesses as compared with the landlords' jamabandi, was the collusion of the patwari with the raiyat, and a very striking illustration of this was furnished by some of the fair-rent cases brought by the Tetaria factory in thans Madhuban. There the raiyats filed compromises, agreeing to pay for the excess at their existing fates, less deduction of one katha per bight of the new area. There was a previous measurement which had been carried out by a Batwara Deputy Collector, and the jamabandis were based on it. There was no laggi dispute, but still the increase turned out to be enormous, over 50 per cent, in some of the holdings. Mr. Kerr thoroughly went into the matter, and he discovered that in one village a raiya, holding 4 bighas and 15 kathas was not down in the jamabandi at all, "although," to quote Mr. Kerr's own words, "he admitted that he had been paying rent to the patwari for over 12 years, and showed receipts granted by the patwari." After pushing the enquiries further, it was found that the raiyats had probably been paying for much of the excess land to the patwari, though this had not reached the landlord, and the increase was therefore more nominal than real. Tetaria factory is indebted to the survey and settlement operations for the discovery of this long continued fraud.

Zamindars' difficulty in writing they experience in writing up their jumabandis after the settlement of fair rents on the excess area by the Settlement Department. Thus:—

Suppose a raiyat's jamabandi area is 10 bighas, and his rent at the rate of Rs. 3 a bigha, is Rs. 30. The survey shows his holding to be 15 bighas, and after giving an allowance of, say, 2 kathas per bigha, we fix a fair rent for 13½ bighas in all, at the rate of Rs. 3, i.e., Rs. 40-8. There are two difficulties that arise in consequence. The landlord dare not enter a lower rate in his jamabandi, and so he is compelled to provide extra columns to show the area unassessed. Again, in presenting a plaint before the Civil Court for arrears of rent, the area, rate and rent of a holding are recorded. In this case the area is 15 bighas, the rate is Rs. 3 a bigha, but the rent is not Rs. 45 but Rs. 40-8.

Although no legal necessity exists for entering the rent-rate in a plaint, it has been customary in this district to do so, and the existing practices

of Civil Courts die hard.

Court-fees in section 104 cases.

Court-fees in section 104 cases.

The original orders were to levy a single fee of 8 annas for one village, irrespective of the number of defendants joined. The natural result was that tenants were sued for the most trifling increase of area. The Government of India, at length, by their Notification No. 5086R., dated 11th October 1894 (published in Part A of the Culcutta Gasette, dated 17th October 1894) directed that a fee of 8 annas was to be levied on account of each defendant joined in an application. Some uncertainty again cropped up owing to the High Court's decision in the case of Upadhya Thakur serses Prasoda Sinha (reported, page 723, Volume XXIII, I. L. R., Calcutta) that an 8-anna fee was sufficient for memoranda of appeal

The inference that was at once drawn by the landlords in fair-rent cases. was that the same rule would apply to original petitions as well. The Bettia Raj was particularly insistent in pressing this view. One of the points urged was, that the Raj, understanding that Upadhya Thakur's ruling was applicable to the proceedings in the original Court, had sued tenants that could only be sued at a loss, if a Court-fee of 8 annas was demanded on account of each. My reply was that if there was any tenant whose excess was so small that it was not worthwhile to pay a Court-fee of 8 annas to get it assessed, then obviously that was a tenant who ought not to be sued at all. As for the question generally it was pointed out that, under rule 25, Chapter VI, Bengal Tenancy Act Rules of 1885, it was only with the consent of the Revenue officer that the landlord could join the tenants of the same village in one suit and thus, the Revenue Officer, by withdrawing his consent, had the power to realise a separate fee for each tenant. That the landlords were permitted to put in applications, joining several tenants as defendants, was a matter of pure concession. Hence the High Court could have had no intention of finding that the original Court had only power to demand a fee of 8 annas for each defendant, where the plaintiff was given permission to join several in a single petition.

306. The settlement of fair rents was completed in this district before the Bengal Tenancy Act was amended by Act III of 1898. Thus, applications under section 104 were received in attestation camps, and forwarded

to head-quarters, whence they were distributed to case officers, to each of whom an area was assigned, through which he moved from centre to centre, fixed for the convenience of his work. Sir Charles Elliott's order that fair-rent cases should be taken up in the village concerned, no process-fees demanded and no notices issued, proved of course to be impracticable; but the case officer's programmes were so arranged as to keep them as near as possible to the villages with which they ought to be dealing at the time.

307. The recess rules show how a case officer's camp was constituted,

Procedure in camp. Fair-rent but a word is necessary here about the form of the schedule.

but a word is necessary here about the form of the fair-rent schedule, and the efforts made to eliminate mathematical and clerical errors in dealing with assessment of rents. The schedule is in the following form:—

Jamabandi or fair-rent schedule of village

| Serial number. | Khata number. | Nama | nat lo | nabandi iroa. | Survey area. | Area to be ad deducted on a of the differe the length o atandard of measurem | ecount me in of the I the | Total. | Difference in columns 4—7. | Allowance kathas per on area she hin polsum | pigha | Remainder upon which rent is to be assumed. |
|-------------------------------|------------------|-------|-----------------|------------------|-----------------|---|------------------------------------|--------|----------------------------|---|-------|--|
| 1 | 8 | 3 | | • | В | 6 | | 7 | 1 | • | | 16 |
| Rate of ront pur bight. | Bacv | -aa 1 | Pormer rout. | Tota | Ku | hancement or section \$0, if any. | Total | . 00 | Reat mpromised. | Rent sollied. | 1 | Rawanes. |
| 11 | 19 | | 13 | 14 | | 16 | 16 | | 17 | 18 | | 19 |

This is prepared by a staff of special muharrirs from the Assistant Settlement Officers' judgments, and from the khatians of the village sent from head-quarters into camp. The bench clerk then checks all the entries, and the case officer himself fills up the column for fair-rent, after satisfying himself as to the accuracy and fairness of the rents. In compromised cases, every discrepancy between the compromise and the schedule is gone into, and if the former is wrong, it is corrected after the issue of due notice. In contested cases also, before passing judgment, the case officer gets a draft schedule prepared, and if in any case he finds the resultant rent too high, or otherwise unfair, he goes into the circumstances of that holding again, and makes a special provision for it in the judgment. The parties are allowed copies of these schedules in full. The rents decreed are next entered in the khatians affected by correction muharrirs, and these entries are again

checked by the case officer's bench clerk, before being initialled by the Assistant Settlement Officer. They are again checked at head-quarters. Thus every possible precaution is taken to make the schedules as accurate as possible, and every facility is given to the parties to detect errors.

on which fair rents are settled in North Bihar have been referred to. Little further reference need be made to this subject, to which former Special Judges, in the presence of their ordinary duties, were not able to give the attention it deserved The present state of the appeal file is as follows:—

| NUMBER OF | | | | Decidi | | |
|-------------|----------|---------|-----------|--------|-----------|------------------------|
| Instituted. | Pending. | Upheld. | Modified. | Upset. | Remanded. | Otherwise disposed of. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 180 | 70 | 41 | 15 | 8 | 5 | . 41 |

The number of cases still pending is very large; and if any of them are sent back for retrial after the settlement establishment is broken up, the inconvenience caused will be great. I find this question was raised in the earliest years of our operations by a circular letter from the Director, No. 7T.A., dated 15th March 1893, in reply to which Mr. Lyon suggested that, in awarding costs in the case, the Court may be asked to levy the costs for the reinquiry from the party by whose fault it was rendered necessary. But the lower Court is often as much at fault as the parties themselves. Mr. Caspersz, the present Special Judge, has not up to this time passed any appellate decisions of importance in cases drawn from this district. The chief of those that emanated from his predecessor were reviewed in my Annual Report for 1896-97, but as their interest was transitory, I abstain from further reference to them in this report.

309. The Special Judge has in every case upheld the power which we claim to scrutinize 'compromises.' When it is said that nearly one quarter of the tenants in this fixed and recorded.

district had their rents enhanced as a consequence of these operations, there may be those who would conclude that the survey and settlement, which were undertaken to afford protection to the tenantry, have been turned against them to their harm. I have described at some length the difficulties that faced the Settlement Officer when he was called on to enforce the provisions for the settlement of fair rents in the earlier stages of the work; so that the way in which Mr. Colvin strove, in order that this work, which must necessarily be heavy, might be conducted on principles equitable and just alike to the weak as to the strong, may be fully recognised and appreciated. And the Settlement Department has since then consistently laboured, by the exercise of the closest scrutiny, to modify rents which could not be accepted as fair. That the increase of rentals in a half-reclaimed district would be great was inevitable. It may then be asked: How do the Champaran raiyats, as a body, benefit by the settlement? The ways, of course, are manifold, but to emphasise its utility in connection with rent, a single illustration will suffice.

Ghazipur, a permanent settlement district of the North-Western Provinces, was brought under survey and settlement in 1839-40. When 40 or 50 years later the record of rights was brought under revision, rents were found to have increased by 16.94 per cent. In Muzaffarpur, which was not surveyed and settled fifty years ago, rents have since increased by '34 per cent. The original settlement records of Ghazipur had not been maintained when they came under revision, so that their success in maintaining the rents originally recorded was due to no such extraneous aid. I do not omit to notice that the original rent-rates in Ghazipur were high, nor do I anticipate that the

settlement record will be able to secure such stability to the low rent-rates of a half-developed country like Champaran. It will, however, retard the advancement of rent-rates enormously, and so secure to the toilers of the soil a larger share of the unearned increment.

310. The statistical results of this work will now be examined in greater detail. In the following statement the percentage of the total number of holdings brought under suit, and the percentage of holdings in respect of which cases were decided by compromise, after contest, ex-parte or by withdrawal are furnished:—

| | | Number of | HOLDIN | ener of On Brought Re Sult, | - | | | NUMBER OF | ROLDIN | es disposi | OF 31 | - | | |
|---|--------------------------|-------------------------------------|---------|---------------------------------------|--------|---|--------|---|--------|---|--------|---|------|---|
| - | Name of Thaya, | ravati holdings in the thans. | | Percentage | - | ntest. | Com | promise. | Be | parte. | Wit | hdrawai. | Rec | luction. |
| | • | excluding rent-free. | No. | to total holdings in the thans. | No. | Percentage to total number sued, | No. | Percentage to total number nued, | No. | Percentage to total number sued. | No. | Percentage to total number sued. | No. | Percentage to total number sued. |
| | 1 | 8 | 4 | 8 | • | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 19 | 18 | . 14 | 18 |
| 1 | Baguha | 58,282 | 16,603 | 3 1 10 | 116 | 0.40 | 12,840 | 77:34 | 444 | 2.07 | 3,199 | 1977 | . • | 0102 |
| | Nhikarpur € | 40,500 | 11,201 | 92.67 | 1,020 | 9*04 | 6,760 | 89.87 | 534 | 4'73 | 2,975 | 26 84 | 2 | 0.0\$ |
| 1 | Bertia | 64,800 | 26,009 | 41:46 | 2,581 | 8.82 | 18,202 | 67'64 | 2,071 | 7.70 | 4,236 | 15.74 | 19 | 0.07 |
| | Bubdivisional figure | 167,951 | 54,803 | 32:63 | 8,517 | 6:42 | 37,802 | 69.68 | 8,049 | 5'56 | 10,410 | 19'0 | 86 | 0.04 |
| 1 | Adapur | 25,447 | 12,135 | 47.69 | 7,420 | 61.19 | 3,374 | 87:80 | 194 | 1-60 | 1,134 | 924 | 93 | 0.15 |
| - | Dhake | 44,184 | 17,358 | 89-97 | 1,810 | 10.43 | 18,118 | 75'50 | 910 | 5'34 | 1,476 | 8-63 | 45 | 97'0 |
| | Motihari | 20,207 | 10,691 | 36:60 | 4,358 | 40-76 | 4,758 | 44'51 | 806 | \$188 | 1,257 | 1176 | 10 | 0.00 |
| Ì | Gobindganj | 86,627 | 0,959 | 97-19 | 260 | 8:71 | 8,889 | 85:80 | 656 | 6:61 | 478 | 4:81 | 1 | 0.41 |
| | Kemria | 88,080 | 10,474 | 27-52 | 1,790 | 16.40 | 7,404 | 70'68 | 630 | 601 | 563 | 5-87 | ,162 | 1.48 |
| | Madhuban | 98,194 | 8,025 | 13.06 | 43 | 1:42 | 2,879 | 85:26 | 138 | 4:36 | \$42 | 6.0 | 30 | . 0196 |
| - | Sadar Divisional figures | 196,708 | 63,610 | 38'84 | 15,698 | 24'57 | 39,758 | 63.26 | 8,839 | 4:45 | 8,140 | 8.8 | 960 | 6-40 |
| | District figures | 364.659 | 118,413 | 22'47 | 19,143 | 18:17 | 77.857 | 06.49 | 5,678 | 4-97 | 15,500 | 13:13 | 266 | 0.3 |

311. To make the statement complete, a separate column has been assigned to the 285 holdings the rents of which were reduced without any specification of their treatment. Out of a total of 364,659 raiyati holdings (excluding rent-free), no less than 118,413, or 32.4 per cent., were brought under suit, and excluding cases withdrawn, fair rents were settled for 102,863, or 28 per cent. The figures are almost the same for both the subdivisions as far as numbers under suit go, but as more cases were withdrawn in the Bettia subdivision, the ultimate proportion of the holdings for which rents were settled comes out somewhat higher in the Sadar.

312. The reason why the Bettia subdivision does not in this respect far outstrip the Sadar is because, while the supply of land is great, the demand for it is small. In fact, in the northern area the Bettia Raj did not file a single application to enhance rents, being apprehensive that this might lead to general descrition. Of the holdings brought under suit, in respect to 65'4 per cent. there were compromises and 16'1 per cent. contests, while against 13'1 per cent. cases were withdrawn and against 49 per cent. decided ex-parts. The proportion of compromises is of course overwhelmingly large, and is 2 per cent. higher in the Bettia than in the Sadar subdivision.

313. Coming to individual thanas, we find the largest number of institutions in Adapur, viz., 47.6 per cent., and fittingly so, as both the Madhuban Babu and the European factories there sued all tenants possible. Thana Bettia comes next with a percentage of 41.4, but it was mostly dealt with at the time when a single 8-anna stamp was required on an application, irrespective of the number of tenants joined in it. The smallest percentage is of course returned

by Madhuban thana.

314. In connection with the methods of disposal, compromises return the largest percentage, vis., 85.8 per cent. in Gobindganj, where the Turkaulia concern finds itself in a very strong position by reason of its previous measure. ments. The large percentage of compromises in Madhuban is ascribable to the small number of holdings sued, only 12 per cent., and that, too, principally by the Tikari and Shiuhar Court of Wards. The next thanas where we had a large percentage of compromises were Bagaha and Dhaka, the landlord in one case being the Bettia Raj and in the other the Motihari concern. The fewest compromises were in Motihari thana, 44.5 per cent. and in Adapur only 27.8. Both contained a portion of the Madhuban Babu's villages, and while the former was within easy reach of legal advice at Motihari, the latter is peopled by a peasantry both prosperous and independent. Of course, the contests were matic to compromises. They were

Bettia as well. The slightly larger percentage in Shikarpur is due to the uncompromising attitude of the Muhammadan raiyats of tappa Deoraj towards the claims of the Bettia Raj, and also to the fact that much land is held by land-owners of less influence. It is striking that contests occurred in 6.4 per cent. only of holdings in Bottia, as against 24.5 in the Sadar. Ex-parte cases were everywhere small, and smallest in Adapur. The largest percentage was in Gobindganj (6.6).

The reason why more cases against tenants were withdrawn in the Bettia than in the Sadar subdivision was partly because less pressure could be brought to bear, and partly because the jamabandi areas and other papers were The Bettia Raj had to drop many cases in tappa Deoraj when less accurate. the tenants resisted. The Ramnagar Raj, partly through its want of influence,

partly through ill kept records, had to do likewise.

316. The results of the cases brought under Statistics of results of cases insuit will new be considered :-

| 1 | | j | | | T | | | PO REST | No REV | CELTTES 1 | |
|---|--|---------------------------|---------|--|---------|--|---------|--|---------|--|--------|
| | | Number of boldings | Bun | ANCHD. | Ret | QCBD. | SETILE | AN PAIR. | | HAWE). | ROMANE |
| - | Name of than a. | brought under suit, | Number. | Percentage to total number of holdings. | Number. | Percentage to total number of holdings. | Number. | Percentage to total number of holdings, | Number. | Percentage to total number of holdings. | |
| - | The state of the s | 3 | ٠ | • | 6 | 1 | | | 10 | LI LI | 16 |
| - | Rembe | 16,603 | 11,879 | 71.81 | | 0'02 | 1,628 | - 9:30 | 8,199 | 19:27 | |
| 1 | the state of the s | 13.001 | 6.468 | \$7:18 | | -0% | 1,546 | 16.80 | 8,176 | 96186 | • |
| | Shikarpur | | 15,176 | 11177 | 19 | 6 107 | 7,378 | 97'06 | 4,2/4 | 15 76 | |
| | Sabdivisional Total . | 54,818 | \$3,610 | 61'88 | 36 | 0:04 | 10,799 | 19'62 | 10,410 | 1,490 | |
| | A da nerv | 11,185 | 6,711 | 47106 | 23 | 0.10 | 5,377 | 49.40 | 1,114 | 94.6 | |
| | | 17 848 | 18,367 | 77-98 | 45 | Ng:0 | 3,465 | 14:30 | 1.476 | 9.01 | |
| | | 10,001 | 8.570 | 1013 | 10 | 0.00 | 4,064 | 21.68 | 1,267 | 11 '76 | 1 |
| | | 9,808 | 7,753 | 7776 | 1 | 001 | 3,783 | 17:44 | 478 | 6'81 | 1 |
| | - | 10,00 | 7,550 | 65-199 | 108 | 3:45 | 3,843 | \$4.34 | 5/12 | 8198 | 1 |
| | | 3,096 | 1,405 | 41.40 | *** | \$.0E | 94 | 9-68 | 24% | • | |
| | Sadar Total | 63,610 | 41,850 | 66:79 | 900 | 9.41 | 16,260 | • 16-73 | 5,140 | 8 64 | |
| | Grand Todal of the Dispri | 118,413 | 75,460 | 6574 | 986 | 0 84 | 97,119 | M 70 | 15,560 | • 18:18 | |

317. The rents were increased in 75,466, or 63.7 per cent. of the holdings, and reduced in 285, or 2 per cent. only. The existing rents were confirmed in 27,112, or 229 per cent., and no rent settled in 15,550, or 13 1 per cent. There is very little difference in the subdivisional percentages, except the large number of withdrawals in Bettia, on which I have already commented.

Strange to say, Madhuban shows the largest proportion of rents increased, viz., 81.4 per cent., but it must be borne in mind that the cases were few, mainly brought by the Court of Wards, and careful discrimination was exercised in selecting holdings liable to enhancement of rent. Besides they included those of the Tetaria concern, in the villages under which, as I have described, the patwari himself used to receive rent for many fields not accounted for in the jamabandi. As expected, Gobindganj has the next largest percentage of rents increased, viz., 77.7, followed by Dhaka. In Bagaha, too, the percentage is large, viz., 71.5. The lowest percentages are recorded against Motihari and Adapur, 52.2 and 47.0, respectively, the Madhuban cases being the cause. Indeed, it is in these two thanas that the existing rents were settled as fair in a very large number of cases, (43.4 and 37.9, respectively) against the district average of 22.9. Instances of rents being reduced were everywhere insignificants except in Kesaria, where it is more than 1 per cent. In some of the villages of the Pipra concern, the raivats agreed to sulahnamas on condition that, where the terms agreed upon led to reductions, the factory should consent to them as well.

The fair rents settled considered.

318. From holdings brought under suit we come to fair rents settled.

| | | | • | | PAII | DEFECT NO | W SHTTL | ND. | | | Incan | ARB. | | Dacas | ME. 850- | Tora | L IN- | |
|------------|---|--|--|--|--|--|--|---|--|---|--------------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|---|-----------------------------|---|--------------------------------------|---|
| | | | | Conte | ted. | Compre | mised, | Es- | arte. | Secti | on 82. | Sect | ion 80. | | f 59 6. | CIA | | |
| | Name of Thaga. | For int | Pair rent. | | 100 | | 3 | | 3 | | total | | 2 | | 1 2 | | Top 1 | |
| | MARGOS IDAMA. | holdings affected. | PAIT PRINT. | | 2 | | 8 | | 3 | | 3 ; | | 84 | | 34 | | 3 ; | İ |
| Sorial No. | | | | Amount | Percentage fair rent. | Amount | Part of the last | Amount. | Percentage fair rent. | Amount. | Percentage existing ren | Amount. | Percentage existing ren | Amenut. | Percentage existing re | Amonat. | Percentage existing rea | |
| 1 | 3 | 8 | • | В | 6 | 7 | | 0 | 10 | 11 | 19 | 13 | 14 | 15 | 10 | . 17 | 18 | - |
| B0 440 | THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO | Ra. | Rø, | Ro. | | Ro, | | Ma, | | Ra. | | Re. | | Ba. A. P | | B4. | - | Ī |
| 1 2 2 | Bagaha Shikarpur Bettia | 1,03,891 89,849 1,56,176 | 1,10,560 91,879 1,75,088 | 953 9,838 12,935 | 10:78 10:78 7:38 | 1,19,679 78,018 1,48,417 | 96'68 53'97 84'77 | 3,938 8,428 13,786 | 8'81 5'95 7'85 | 19,751 8,424 19,445 | 19 :24 10:17 11:83 | Nil. 17 461 | N 11, 0-03 0-39 | 5 8 6 7 0 6 34 0 6 | 0.608 | 19,746 8,485 18,912 | 19-97 10-18 19-10 | I |
| - | Bululi vialonal | 8,48,840 | 8,81,989 | \$3,723 | 6.18 | 8,87,118 | 88104 | 22,000 | 8.78 | 80,660 | 11'87 | 478 | 0-18 | 46 0 0 | 0.61 | 40,092 | 11/69 | |
| 4 5 6 7 k | Total. Adapur Uhaka Moilhadi Gobinigan Kesaria Kadhuban | 1,14,529 1,64,249 88,930 77,381 85,219 80 900 | 1,81,087 2,13,084 94,498 83,985 92,988 84,181 | 82,940 81,781 40,804 1,681 17,169 535 | 68:20 14:68 42:89 1:44 18:67 1:87 | 36,371 1,70,530 53,400 76,918 69,044 78,958 | 29'90 79'88 88'28 90'43 74'38 94'37 | 9,307 11,314 4,355 6,496 6,646 1,380 | 1'90 4'30 4'44 7'69 7'15 4'08 | 7,241 19,333 6,461 6,523 7,710 8,280 | 6:33 0:98 7:38 8:43 9:08 | 155 156 1,160 01 145 | 0°13 0°08 1°32 0°07 0°17 | 95 0 0 107 0 9 62 0 9 0 4 0 192 0 0 | 0106 0107 010 0121 | 7,889 19,586 7,868 6,868 7,663 8,190 | 6°38 9°38 8°51 8°50 8°99 | |
| | Sadar Total | 5,91,098 | 0,42,787 | 1,74,804 | 27 20 | 4,36,577 | 07.76 | 33,406 | 5114 | 50,548 | N.92 | 1,715 | 0 29 | 678 6 0 | 0.00 | 61,688 | 8.75 | 1 |
| | GRAND TOWAL OF | 9,33,939 | 10,95,720 | 1,98,626 | 19:35 | 7,71,640 | 78:33 | 84,508 | 2.33 | 90,909 | 9*05 | 2,198 | 0:23 | 621 0 0 | 0 06 | 91,751 | 1.63 | |

319. The existing rental, amounting to Rs. 9,33,939, was raised to Rs. 10,25,720, or by 9 8 per cent. The increase is highest in Bettia, viz., 11.6 per cent., against 8.7 in Sadar. Practically the whole of the increase in both tracts was obtained under section 52 for increased cultivation, the amount added by section 30 due to enhancement of rent-rates being infinitesimal. 75:3 per cent. of the fair rents were settled by compromise, the figure being 88.0 for Bettis, against 67.7 in Sadar. 19.3 per cent, only was obtained by contest, but the relative litigiousness of the two subdivisions is strikingly demonstrated by the fact that, while Bettia returns only 6.1 per cent. of the fair rents decreed after contest, the Sadar shows no less than 27:2. The largest increase, viz., 12:2 per cent., is shown by Bagaha, where 96.6 per cent. of the fair rents were decreed after compromise, and the smallest in Adapur, viz., 6.3 only, where 68.2 per cent. of the fair rents were settled after contest. Indeed we notice that the percentage of compromises and increase almost go hand in hand. The only exception is Gobindganj, where compromise, though numerous, did not result in proportionately large increase because, as I have said above, the landlord had already assessed the excess before our operations began. It must further be remembered that the seemingly large increase in Madhubau, viz., 10.2 per cent., was obtained on a very small part of the total area.

Case-work under section 105 of the Bengal Tenancy Act of 1885.

Our work in Champaran under this section has been as light and simple as that under section 104 was heavy and Objections uning Sringt in difficult. While the latter affected over 25 per cent. Champaran. of the holdings, the former barely touched 3. The main cause of both is the predominance of the Bettin Raj. In Musaffarpur, where the landlords are less powerful and tenants more intelligent, and careful of their rights than in Champaran, the position was reversed, the case-work under section 104 affecting only 2.43 per cent. of the holdings, while that under section 105 affected 3.33 per cent.

321. At the beginning of the operations, Mr. Colvin expressed a doubt, whether, in view of the fact that the word "omis-Technical difficulties. sion" did not occur in section 105, while finding a place in section 106 of the Act, an omission from the record could form the subject of a summary objection. The Director decided that it could. This

error in drafting has been rectified in the Amendment Act of 1898.

322. One other point deserves notice. Mr. Colvin in his desire to make the procedure for the hearing of summary objections and disputes as workable as possible, argued that sections 105 (2) and section 106 should be read together; that all applications for the correction of the record should be filed in the same way, and subject to the limit of time imposed by section 105(2);

satisfied with a summary decision. That an income occurrence the operations would still have been very far from completion.

The advantages of course were that a period would be fixed within which disputes might be filed, and no dispute would be heard twice, once as a summary objection, and again as a formal suit. These are of no consideration by the side of the disadvantage named above.
323. The total number of objections summarily decided was 12,432,

distributed as follows:-The number of objections.

| | YEAR. | | Number of objections decided. |
|--|-------|-----|-------------------------------|
| ************************************** | 1 | | 2 |
| 1892-93 | | | 48 |
| 1893-94 | ••• | | 2,226 |
| 1894-95 | ••• | | 1,097 |
| 1895-96 | ••• | ••• | 3,971 |
| 1896-97 | ••• | | 4,050 |
| 1897-98 | ••• | ••• | 1,022 |
| 18 98 -9 9 | • 1 • | | 18 |
| | Total | | 12,482 |

It is evident that this work was heaviest in 1895-96 and 1896-97, when the operations were confined for the most part to the southern half of the district. The number of objections again fell off when we went north to the Bagaha and Shikarpur thanas.

323. In the following statement these objections are classified than by thans, under various heads, according to the nature of the objection, viz., possession, rent, status, &c., &c.:

| | | | irat P ous Kabit, | | | Poss | W88 103 | r. | | 1 | Possas | non v | ER CIV. | mt. | | R | aut. | | 2 | rvy a | rd et | ere. |
|--|--|----------------------------------|--|---|--|---|---|--|---|---------------------------|---|---|--|--|--|--|--|--|------------------------|---------------------------------------|---|-------------------|
| Approximation of the second se | NAME OF THATA, | Nomber. | Perwatter to the total of distinct. | Landlord errsus | Landlord eersas reigata | Raiyats ocress | Raigats errous raigata | Total. | Percentage to the district total. | Landlord cereme | Rayats cerests | Raiyats cersus raiyata. | Total. | Percentage to the district total. | Landlord correct redysta. | Rairade serves | Total | Persontiage in the district total, | Landlerd correso | Malysta sevens | Total | Percentage to the |
| 1 | 2 | 5 | 4 | 0 | 6 | 7 | . 8 | 9 | 18 | 11 | 13 | 18 | 16 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 41 | 23 | |
| | Ragaha Bhikarpur Bettis Adupur Dhaka Motihuri Gobindganj Keuaria Madhuban J | # 47 41 9 4 50 13 | 1:37 83:09 9:08 6:17 1:74 20:55 8:90 | 4 11 6 10 8 40 17 18 | 24 9 184 96 845 132 234 249 85 | 28 4 17 27 80 40 94 11 15 | 17 21 72 66 148 51 111 (9) 48 | 77 28 29 183 535 237 425 346 150 | 8°49 1 27 10°14 8 26 24°13 10°75 19°24 15 60 7°05 | 1 1 0 1 76 10 32 47 6 170 | 18 1 5 23 16 7 18 6 1 | 3 1 4 4 80 6 89 10 35 | 22 8 16 97 11× 23 97 63 61 | 8:80 0:79 3:96 7:18 31:14 6:07 17:88 10:13 10:13 | 144 10 825 878 364 1·8 304 171 115 | 48 7 58 760 90 78 43 8. 69 | 186 17 580 1,089 463 961 311 908 188 | 5:58 6:51 17:40 51:79 14:50 7:64 10:54 6:36 5:49 | 7 %6 11 17 %6 8 1 1 %6 | 8 65 196 42 97 8 86 | 7 11 98 216 68 100 18 | 10 |

| | | DUCE- | , | 814 | rva. | | TR | RES. | A | BEA. | Miscrli | Laybous, | · To | TAL. | |
|--|--|---|--|---|---|--|---|---|--|---|---|--|---|--|----------|
| Nаме ор тиана, | Number. | Perrentage to 10e distract fotal | Landlerd cersus | Berrata cerens landiord, | Total. | Percentage to the district total. | Namber. | Percentage to the district potal. | Number. | Percentage to the district total. | Namber. | Percentage to the | Number. | Percentage to the district total. | Remarks, |
| | 94 | 25 | 70 | 727 | 28 | 20 | 80 | 81 | 33 | 33 | 84 | 35 | 86 | 87 | \$8 |
| Bagha Shikarpur Bettia Adapur Dhaka Motihari Gobindganj Kesaria Madhubani District figures | 95 916 951 363 679 491 961 84 | 9:00 0:14 9:78 10:58 10:17 20:11 29:08 11:96 1:10 | 1 76 34 67 56 140 186 7 | 18 8 61 16 93 10 7 82 1 | 19 1 137 40 110 70 147 207 8 | 8:58 0:54 18:46 5:39 14:43 0:43 19:81 27:50 1:08 | 1,082 50 123 129 118 301 26 | 0°11 56'02 3 14 6'55 10'60 6'18 16'02 1'38 | 11 1 30 20 61 20 61 31 8 | 4'n3 0'89 10'36 10'24 84'03 7'87 34'01 18'60 1'15 | 11 7 17 127 108 261 100 60 16 | 1'56 0'49 2'40 17'96 14'45 36'98 14'16 9'84 8'80 | 380 63 2,905 1,905 1,903 2,140 1,703 1,661 1,680 489 | 3'46 0'50 18'45 15'42 17'81 13'76 14'67 12'58 4'50 | , |

324. The percentage of objections filed in each thank and the percentage to the number of holdings in each thank are as follows:—

| | | • | 1 | GE OF CASE |
|---------------|--------------------|-----------|------------------------|---|
| Serial No. | NAME OF THAN | A. | To the district total. | To the number of holdings in the thana. |
| 1 | 2 | | 8 | 4 |
| 1 | Bagaha | 44, | 3.06 | -60 |
| 1 2 3 | Shikarpur | ••• | .50 | -11 |
| 3 | Bettia | | 18.46 | 3.28 |
| 4 | Adapur | | 15.22 | 6.91 |
| 5 | Dhaka | | 17.21 | 4.86 |
| 6 | Motihari | | 13.70 | 5.38 |
| 7 | Gobindganj | | 14.97 | 4.19 |
| 8 | Kesaria | | 12.38 | 3-68 |
| 9 | Madhuban | ••• | 4.20 | 2.13 |
| | Total for district | | 100- | 8-10 |

objections, but it is explained away by two facts—(1) that over 50 per cent. of its cases relate only to trees, and to these I shall revert later on; (2) that the operations were commenced in this than when the orders about court-feeswere less stringent than those subsequently issued. Discounting this, it is Dhaka than with its contingent of petty landlords and intelligent raivats that heads the list. Then comes Adapur with a prosperous tenantry to a large extent on had terms with the chief landlords, the Madhuban Babu and the Muria Factory, particularly the former, and Gobindganj with its petty rentfree holders and diars raivats is a close third. Madhuban thana covers a very small area, but its percentage of objections to holdings is also small, smaller indeed than I should have expected in view of its proximity to Tirhut. Bagaha and Shikarpur come of course at the end of the list. From the percentages of objections to holdings Adapur would appear to be the most litigious thana, with Motihari a close second. Dhaka and Gobindganj came next, followed by Madhuban and Bettia. Bagaha and Shikarpur are of course very far behind. The district average, as has been said, is three objections to every hundred holdings.

327. The following percentages are interesting, as indicating the relative numerical importance of the different kinds of objections:—

| Serial No. | Nature. | | Percentage. |
|---------------|------------------|---|-------------|
| 1 | 2 | | 8 |
| 1 | Zirat or bakasht | | 1.17 |
| 2 | Possession | | 17.77 |
| 2 3 | Ditto and rent | | 3.05 |
| 4 | Rent | | 26.80 |
| 4 5 | Do. and status | | 4.85 |
| 6 | Produce rent | 1 | 17.56 |
| 7 | Status | | 5.97 |
| 8 | Trees | | 15.10 |
| 9 | Area | | 2.04 |
| 10 | Miscellaneous | | 5.69 |
| • | Total | | 100.00 |

By far the most Amportant are those affecting rent. Indeed, including produce-rent and the cases in which question of possession or status was combined with rent, more than half the total number of objections are accounted for. But it must not be inferred that there was anything like wide-spread rent disputing, such as was met with in Muzaffarpur. It can only be said that more than half of the insignificant amount of litigation of this class in this district referred to rents, but even so less than 2 per cent. of the holdings were affected. As might be expected, Adapur thana is responsible for no less than 3 per cent. of the total number of purely money-rent objection cases, Bettia returns 17 per cent., Dhaka with its petty proprietors scores 14, and Gobindganj comes out with 10 per cent., the rent disputes with the Turkaulia concern referred to in the section on attestation being the cause. Motihari returns only 7 per cent. and the rest 6 and under. Turning to produce rents, we find the largest percentages, 26 and 22, filed in Motihari and Gobindganj respectively. cases were mainly uncontested, the errors can only be attributed to careless attestation in 1894-95. It will be shown in the chapter on statistics that the area held on produce rents is very small.

Objections regarding possession come next in importance, accounting for over 17 per cent. of the total number. Dhaka returns the largest number, 24 per cent., for this is the thana where petty proprietors abound. Then comes Gobindganj with 19 per cent. to whose petty rent-free holders, most numerous in tappas Sakhwa and Sonewal, I have already referred. In Kesaria, where

substantial and intelligent tenants are many, and in the neighbourhood of Keseria, Dharampur and Dhaka, the percentage is 15. In Adapur it is remarkably small, viz., eight only, showing that the disputes there were not about land, but only about its rent. In Motihari and Bettia the percentage is

It is noteworthy that out of 2,209 cases affecting possession, 572, or 25

per cent., were between raiyat and raiyat.

Third in numerical importance come the cases relating to trees. I have already described the controversy that centred round the entry of trees at the commencement of operations. Final principles were not determined until after the attestation of the main portion of the Bettia thans. Hence 56 per cent. of the objections of this class were filed in the Bettia thana, a circumstance which impairs the value of the statistics as a whole. When the other thanas came under aftertation the main principles to be followed in entering trees had been determined. Hence fewer objections were subsequently brought, but they were fairly numerous in thanas Motihari and Kesaria, where indigo planters, who are very jealous of this right, predominate.

The remaining classes of objections can be dismissed in a few words. Only 6 per cent. were with regard to status. About half were filed by tenants elaiming to be raiyats at fixed rates, but few of them succeeded in making good the claim. Only one per cent. of the objections was brought for the entry of land as sirát (proprietor's private land). The question is of no importance in

this district, where a land-owner's main object is to get his land available for cultivation, but lying waste, settled with raiyats.

328. Although the disposal of summary objections constituted a minor branch of the operations in Champaran, I have analysed their nature at some length, because a side light is thus thrown on the quality of the work of attestation officers and on its effect on the relation of tenants to their landlords and to each other. The procedure adopted in dealing with objections has been described in the Muzaffarpur report, and being of a summary nature, does not require to be repeated here.

Case-work under section 106 of the Bengal Tenancy Act.

329. The progress made year by year in dealing with disputes under section 106 was asfollows;-The amount of work.

| Ne | Number of disputes. | | |
|-------------------|---------------------|-------|-------|
| . 170 - 170 - 100 | 1 | | 2 |
| 1892-93 | ••• | • • • | 27 |
| 1893-94 | • • • | ••• | 203 |
| 1894-95 | *** | | 328 |
| 1895-96 | *** | ••• | 322 |
| 1896-97 | ••• | ••• | 914 |
| 1897-98 | *** | ••• | 1,886 |
| 1898-99 | ••• | | 71 |
| | Total | ••• | 3,251 |

These cases did not affect even one khatian in a hundred, and barely excoved one per village. Their number was heaviest in 1896-97 and 1897-98, when the very heavy and important attestation area of 1895-96, which included the major portion of the Sadar subdivision, was brought under final publication. On the other hand, although we published finally over 500 villages in 1898-99, the number of cases disposed of in that year was only 71, once more emphasising how simple the work was in the northern parts of the district. The figures are analysed in the following table classifying the cases, thank by thank, according to the nature of the main issues involved:—

| | le . | | | P | | tow. | | Mo | HET-M | est. | | | PLATE | L. | | | 7 | |
|---------|--|----|-------------------------------------|----------------------------------|--|---------------------------------------|--|--|-------------------------------------|---|--|--|--------|---|-----|-----|------------------------------|---|
| | Mysis so severy | 1 | - | 1 | - | 1 | | 1 | Sec. Land | | 4 | 1 | 1 | | • | | ı | |
| Fundam. | | 11 | 1 | Part of the last | Landlord Myret | h | Total. | Lendland ridget, | Light Land | 1 | Produce no | Indion. | To be | 7 | - 1 | i i | Historian | į |
| 1 | • | | • | 1 | • | 7 | 8 | 0 | 14 | 11 | 18 | 13 | 14 | 18 | 16 | 17 | 18 | 10 |
| | Rembe Editarpur Betta Adapur Dhekn Mothari Govindgani Kasaris Madhuban | 5 | 1 35 21 9 17 74 8 | 18 11 10 11 11 11 | 10 50 56 56 56 50 19 | # # # # # # # # # # # # # # # # # # # | 18 100 80 61 160 88 58 | 10 04 430 90 401 48 51 61 | 1 11 84 9 95 14 6 | 4 11 75 486 98 484 56 07 | 1 19 68 189 190 188 69 48 | 108 88 86 96 93 106 97 | 11 3 6 | 7 107 83 36 26 98 104 | 14 | |) 18 18 18 18 27 | 15 401 97: 98: (401 48: 841 |

330. The following statement shows the percentages of the cases relating to each thana, and the percentage to the number of holdings in each thana:—

| | Percentage— | | | | | | | | |
|--|-------------------------------|---|---|--|--|--|--|--|--|
| NAME OF THANA | . | To the district total of cases. | To total hold- ings in the thans. | | | | | | |
| 1 * | lage o g en filoso | 2 | 8 | | | | | | |
| 1. Bagaha 2. Shi k a pu 3. Bettia 4. Adapur 5. Dhaka 6. Motihari 7. Gobindganj 8 Kesaria 9. Madhuban Total | | 1.69 12.42 27.00 10.12 20.36 18.50 7.59 6.86 | -02 -10 -58 3-21 -67 2-60 -98 -58 -87 | | | | | | |

The largest number of cases comes from Adapur, the unfortunate arena of the struggles of the tappa Duho Subo raivats with their landlord, the Madhuban Babu. Motihari with its mahajans and also with a portion of the Babu's dishet within it towards the north, comes next with a percentage of 20. It is in these two thanss also that the percentage of cases to khatians is the highest, viz., 8 and 2 respectively, or taking one case to affect one khatian, 3 khatians in every hundred in Adapur and 2 in Motihari were affected by these disputes, as against the district average of only 81 Gobindganj, Bettia and Dhaka come

next, each accounting for between 10 and 18 per cent. of the cases. The Bettia percentage was raised by a large number of cases brought by the Raj against petty rent-free holders. For the other thanas the figures are so insignificant that they do not require special mention.

The nature of disputes.

331. The following table compares the numerical importance of each class of case:—

| • | | | | Percentage to the total number of cases. |
|---------------|-----|-------|-----|---|
| Zirait | ••• | ••• | ••• | 28 |
| Possession | ••• | ••• | *** | 17.43 |
| Money-rent | ••• | ••• | ••• | 39.68 |
| Produce-rent | ••• | | ••• | 24.36 |
| Status | ••• | ••• | ••• | 13.54 |
| Trees | ••• | ••• | ••• | 1.45 |
| Area | ••• | ••• | ••• | .12 |
| Miscellaneous | ••• | ••• | ••• | 8.14 |
| | | Total | ••• | 100.00 |

332. Again the rent cases are the most numerous, as expected. Adapur and Motihari head the list with the very high percentages already enumerated. For the rest, the percentages fall to 7 and under. There is also another noticeable feature in the Adapur rent cases, while the number brought by the landlord was 430, only 58 were brought by the raiyats. This indicates the attempt made by the Madhuban Babu to wear down his raiyats into admitting as existing, rents that they had never paid.

333. It has been explained how rent disputes had been going on between the Madhuban Babu and his raiyats for over 15 years, and that it resolved itself into the Babu claiming Rs. 8 or 9 per bigha, while the tenants admitted only Rs. 3 per bigha. The Babu sued several of them under section 104 for the settlement of fair rents, but when he came to realise that the first issue that must be raised is "what is the existing rent," and that its decision would, under the Full Bonch ruling in the case of Dengu Kazi versus Nabin Kissori Chowdhrani (Indian Law Reports, XXIV, Calcutta, 462), operate as res judicata to bar the subsequent trial of the question, under sections 105 and 108, he withdrew most still pending, and after draft publication filed disputes under section 106 against all of the raiyats indiscriminately. In April or May 1897, when the famine was at its height, about 130 of these tenants came into head-quarters and admitted the Babu's claim. Obviously they were not acting as free agents, and I determined to postpone the cases until September, when a good bhadoi harvest would have put fresh heart into them. When September came most of the tenants withdrew these compromises, some asserting that they had not been filed by them, but by paid creatures of the Babu, who personated them. Some, on the other hand, filed ordinary petitions saying that they did not wish to contest the Babu's claim, and the rent demanded could be entered as existing. They did not admit, however, that they had ever paid these rents, so that the Assistant Settlement Officer, Maulvi Syed Ahmed Ali Khan refused to accept the petitions as compromises. Thus the raiyats have been given every opportunity demanded by justice and fairness to stand by their rights, but I believe many compromises have again been filed in the Court of the Special Judge at Chapra. It must be recognised that when tenants are called on to attest compromises, so far from their homes, the risk of false personation is very formidable, and although

it is largely minimised by the careful precentions that Mr. Caspersz adopts, it probably cannot be removed entirely. I have mentioned that the issue of existing rents was in some cases decided under section 104. When cases against the same tenants were brought under section 106, the Assistant Settlement Officer of course dismissed them, the issue being res judicata. In one of these carried on appeal before the former Special Judge, a compromise was put in, which he accepted, though the grounds why the suit could not lie, were clearly set forth in the original judgment. The matter was referred to Mr. Pennell, when officiating as Special Judge. He admitted that his predecessor's order was wrong, but said that he possessed no power to review it.

334. The produce rent cases, with a percentage of 24, come next. There also the list is headed by Adapur, which is responsible for no less than 259 out of a total of 792 cases. But this time it was not the Madhuban Babu, but the Bettia Raj that figured as plaintiff. It had recently acquired a big estate, called Bhopatpur estate, or more popularly speaking, mahal Narkatia in tappa Bahas of thana Adapur. Here the practice is for almost every tenant to hold a portion of his holding on what is called the system of hunda rent, whereby he stipulates to pay a certain amount of paddy, usually 10 to 20 maunds per bigha, to his landlord, on a specified portion of his holding. Many of the hunda claims were contested, and as the papers of the old proprietor's time were in confusion, the Raj found itself at a disadvantage. The Manager fried his best to settle these disputes even after they had come to Court, and achieved a fair amount of success.

335. Next in numerical order stand the cases involving questions of possession. They are 467 in number, of which 155, Disputes about possession. or over 33 per cent., are between landlords and Of course the big landlords of the district very seldom fight landlords. with each other. But it is the numerous birtdars (rent-free holders), or more properly speaking, the purchasers of birt rights, that have largely figured as litigants in our Courts. The old Maharajas of Bettia so far regarded it a meritorious act to make gifts of land to Brahmans, that there is hardly a village belonging to the Raj in which some birts are not to be found. Many of these rent-free tenures have since been alienated, and are now in other hands than those of Brahmans. Indeed, some have been sold twice over by the same man, the result being endless litigation. A very remarkable case of the kind cropped up in thans Gobindganj. The keenness of the contest was evidenced by the fact that over 80 witnesses were examined and several fictitious documents filed. The case was dismissed by Pandit Rama Ballabh Missra, but is still on appeal. Then, again, land is given for the support of a temple or math. There are rival claimants for the endowment, and a dispute is filed. No cases are more keenly contested or difficult to decide. Then the diara birts gave a good deal of trouble, some of them had diluviated long ago, but at the time of survey extensive plots on the side of the Gandak, still covered with sand, were claimed as birts, and the old ant-eaten sanads, and in some cases even maps, were put in in support. The Bettia Raj always opposed them, and in many cases with The title-deeds, though apparently genuine, always omitted the most important detail, viz., the boundaries, and the question of identity of the land in suit with that in the sanad was always a very hard nut for the birtdare to crack.

386. There were also a limited number of cases in which the Raj had to sue its old mukarraridars, who were thikadars also in the same villages, for having had their thika lands surveyed within their mnkarrari. In than Motihari a case of this kind cropped up, in which over 100 witnesses had to be examined. The point that the Raj mainly relied upon was that the present area of the mukarri was larger than the admittedly original area. But this was not enough, there being no evidence of the specific plots encroached on. The defendant completely met the claim by proving that the original settlement was made by certain boundaries which he had not overstopped. Last, though not the least, come boundary disputes which it was often sought to revive under this section. But it was invariably found that the party aggrieved had not previously appealed to the Collector against the decision passed under the largey Act, and consequently section 63 of the Act barred his suit. In a

few cases, however, where it was apparent that the boundary dispute had been

wrongly decided, I ordered a re-enquiry and revision.

337. The most intricate disputes filed were those between landlord and landlord, and they would probably have been more numerous, but for the ruling, Pundit Sardar versus Meajan Mirdha (Indian Law Reports, Volume XXI for 1894, Calcutta Series), which found that the decision of the Revenue Officer did not oust the jurisdiction of the Civil Court. Indeed, on the strength of this ruling Mr. Colvin struck off many pending disputes, but under superior orders they were restored to the file. The Amendment Act has now removed all ambiguity.

338. The only other class of dispute that needs detailed reference is that connected with status, accounting for over 18 Disputes about status. per cent. of the total number. Some of the cases of course arose out of the claims of tenants to hold at fixed rents, but the question arose whether, when a landlord sued for the cancelment of this status entered in the record, the onus was on him, or on the tenant. Mr. Colvin held the former view and dismissed a suit, the landlord having failed to discharge the onus. But the High Court on appeal held that, having regard to the special provisions of section 50 of the Bengal Tenancy Act, the onus should, in the first instance, have been thrown on the defendant, i.e. the raiyat, who ought to have been asked to prove the antiquity of his holding and continuity of the same rate for 20 years to establish the statutory presumption in his favour. The plaintiff should then, and not till then, have been called on to rebut it. The bare fact of an entry in the record made after a summary enquiry did not absolve, in their opinion, the raiyat from this responsibility. Presumably, under the Amendment Act the onus has been shifted on to the indlord by final publication taking place prior to the filing of disputes. Another difficulty arose in the trial of section 104 cases in 1894-95. The Motihari concern was fighting some of its tenants for enhancement of rate under section 30, but they had been attested as holding at fixed rates (sharamoyan). Mr. Lyon's instructions to the case officers were to frame a preliminary issue on this subject, and to call on the raivats to establish their right to the presumption before the landlords were asked to meet it. In short, the general principle was that every raiyat must be presumed to be a settled raiyat. If a higher standard is claimed, the onus is on the raiyat. If a lower standard is claimed, it is on the landlord to prove it. But now a superior presumption will lie in favour of a finally published entry, and the onus must lie on him who would challenge it. But the greatest number of status suits are traceable to other origins. Sometime ago the Bettia Raj made a systematic attempt to resume and assess what it called invalid birts. The birtdars were called on to execute kabuligats for rents purposely pitched low. Some birtdars, however, refused to execute kabuliyats, while others who executed them would pay no rent. In such cases the claims of the Raj failed, but there were also many cases in which genuine kabulinats had been registered, were produced, and regular payments proved. These birts were therefore recorded as "bandobasti" (or assessed) birts, and the owners, when they had no raiyats under them, as "birt bandobasti kaemi," or, in other words, they were classed as settled raiyats, but the word "birt bandobusti" was added to differentiate them.

339. Again there were several other cases in which the Raj sued its tikadars for having fraudulently got occupancy holdings recorded fictitiously in the name of their relations or servants, the holdings being really in their own possession as thikadars and not as raiyats. It was contended that the rights had not been acquired before the thikadars' leases were taken. As the leases had been running admittedly from time immemorial, this was a contention not easily rebutted, but the thikadars often succeeded in producing road case jamabandis bearing the Manager's signature, with the holdings in disputes actually entered as recorded in our papers, and the plaintiff in the face of them usually failed to make good his claim. These cases, unlike those relating to "birt bandobasti" were generally brought forward at the dispute stage for the fist time, without a preliminary enquiry under section 105.

340. The number of native thikadars and birtdars is very considerable in thanas Bettia, Gobindganj and Kesaria, birtdars being most prevalent in the first two thanas, and thikadars in the first and the last. Consequently it

was in these three thanks that the cases of this class were largely instituted, the percentages being—

| Bettie | 400 | *** | ••• | 24 |
|-----------------------|-----|--------|-----|----|
| Kesaria Gobindganj | ••• | *** | *** | 23 |
| Gomnagani | *** | *** | *** | 21 |
| | | In all | *** | 68 |

The cases of other classes require no comment, but it will be noticed and understood that disputes about trees account for only 145 per cent. of those filed.

In the first two years of our operations, when no Court-fee was levied for 105 section cases, only one fee of 8 annas was prescribed for those under section 106. In 1894-95 the Government of India passed orders that ad valors. Court-fees should be levied on disputes. But the difficulty was what value to assign to our decrees; especially as no specific relief was granted. Acting on the advice of the Special Judge of Muzaffarpur, Mr. Lyon, the then Settlement Officer, classed them all as declaratory decrees, so that the amount of Court-fee leviable was Rs. 10 for each plaint under schedule II, clause 17, section 3 of the Court-fees Act. The Board, however, expressed a doubt of the necessity for imposing so high a fee, and ultimately it was decided that, as those carried the consequential relief of amending the entries where necessary, in the record of rights, there was nothing to prohibit the fee being levied, according to the market value of each claim at the prescribed rate. Since then this practice has continued, having once only been slightly threatened by the "Upadhya Thakur" ruling referred to in the section dealing with the settlement of fair rents. In all cases, the plaintiff gives a valuation, which, if challenged by the defendant, is made the subject of a separate issue, and determined after taking evidence. The Court also sometimes revises the valuation where it is too low. Instances, however, arise that do not admit of a proper valuation in money, as, for instance, disputes in regard to status. There a fee of Rs. 10 is demanded. From a description that I have given above of the status cases, it will be readily conceded that so large a fee cannot be taken to operate generally as a hardship.

342. I will conclude with statistics of appeals—

| No. or A | LPPEALS— | | er ingeliger († 1862) 1860 - Angel Sander, der († 1862) 1861 - Angel Sander, der († 1862) | DECIDED. | 'e malant de formant de la contract | PERSONAL CONTRACTOR | | |
|-------------|----------|---------|---|----------|-------------------------------------|--------------------------|--|--|
| Instituted. | Pending. | Upheld. | Modified. | Upset. | Pemanded. | Otherwise disposed of | | |
| 1 | -2 | 8 | 4 5 | | | 7 | | |
| 648 | | | 2 | O | 1 | 137 | | |

Appeals.

As far as this statement goes, the result is not unsatisfactory, but a very large number of appeals have yet to be disposed of, their decision, after the Settlement Department has been disbanded, will not, I hope, cause any practical difficulty.

343. The most important disputes in Champaran were without doubt the Madhuban Babu's cases, and their history justifies, in my opinion, the reflection that, where agricultural conditions are very backward and the tenantry depressed, a formal judicial procedure carries with it many inherent drawbacks and dangers. The Amendment Act of 1898 has confirmed and strengthened this procedure, perhaps rightly so, because it was framed for the whole of a province, in most of which the tenantry is in an advanced state of enlightenment and independence. In such conditions a judicial procedure is robbed of most of its dangers, and probably gives more general satisfaction. Where, however, development is backward, as in Champaran and several other parts of

Bihar, the position of an ignorant tenantry, if threatened by a powerful and grasping landlord, is precarious, and their main security lies in the trial of the disputes by the Department that has framed the record of rights. Where, however, their heart fails them, their condition is desperate.

DRAFT PUBLICATION.

344. The following statement shows the progress of the work under this Progress. head in Champaran year by year:—

| Year. | | No. of villages. | RRHABRS. |
|---------|-----|------------------|----------|
| . 1 | , | 2 | 3 |
| 1892-93 | | 71 | |
| 1893-94 | | 224 | |
| 1894-95 | | 311 | Ì |
| 1895-96 | | 632 | 1 |
| 1896-97 | | 714 | |
| 1897-98 | | 889 | 1 |
| 1898 99 | ••• | Nil | |
| Total | | 2,841 | |

The staff.

The records. On the 16th December 1893, Mr. Macpherson, Director of Land Records, sent round a circular (No. 3297S.) enquiring how the rule had worked in practice, what class of men had been generally appointed to the work, and whether there was any necessity of prescribing any minimum pay for them. The class of officer employed in this work was found to differ considerably in different settlements. In Champaran the kanungos were recruited from peshkars and men of that status. This was in accord with the rule framed by Mr. Finucane as Director of Land Records in 1889, which has since been generally followed in Bihar. Under the attestation rules, kanungos receive Rs. 25 per month and are allowed two peons to call the villagers together. Their programmes are drawn out providing for the publication of about 1,200 plots a day.

346. According to the old Government rules under the Tenancy Act the draft publication was to come off after the settlement of fair rents, and the records after publication

were to be left in the "village landlord's cutcherry" for a month.

Sir Charles Elliott condemned the rules in his letter, dated 26th February 1894. He observed that the draft publication "should be done as soon as possible after the attestation, while the hearing of it is fresh in the minds of the persons concerned." He added: "It cannot be thought of that valuable original records should be deposited in such sheds as are often called the land-lord's cutcherry without any security against white-ants, damp, fire, theft, and fraud, and I cannot understand how such a rule can have been framed.

Sir Charles Elliott's view was that the landlords should get foils of the parchas with the areas of each field filled up free of cost, and that a period of three months should elapse in every case between draft and final publication, the record in the interval remaining open for inspection in the settlement office or that of the Assistant Settlement Officer in charge of the circle.

347. While these amendments were under consideration, Mr. Colvin had to decide what course to adopt in regard to the villages that had been or were being attested in the season 1893-94. He drew up a set of rules, which he forwarded to the Director with his letter No. 203, dated 18th March 1894, the principal features of which were that the draft publication was to be done before settlement of fair rents, the kanungo was to receive petitions under section 105.

but not under section 106, and that instead of having the record in the landlord's cutcherry, a fair copy of the terijes of the khatians was to be delivered over to the landlord's agent for the preparation of petitions of objection or dispute. The arrangement about the terijes was come to, just after the Lieutenant-Governor's visit to Bettia, at the special request of Mr. Gibbon. After these rules had worked for some time, the Manager preferred an appeal to the Board, pointing out that all that was done to publish the draft was to read out the contents before a few tenants, that it was done before the

of fair-rent cases, and also that the records were not deposited in his cutcherry. His complaint was that the whole procedure was contrary to the

rules and worked to the injury of the estate.

348. Mr. Colvin, with justifiable indignation pointed out that Mr. Gibbon had himself declined to be responsible for the records, had himself suggested the preparation of terijes and the procedure had been adopted with his acquiescence, and that the Revenue officer was bound to defer publication only where section 104 cases were filed within the prescribed time. The Director, while pointing out certain technical irregularities, generally endorsed Mr. Colvin's views, but the matter was not set at rest until the Government of India ruled that draft publication was to be done after the settlement of fair rents. Then Mr. Gibbon (some of his barfed fair-rent cases being accepted) withdraw his appeal to the Board.

349. All the draft publication in the district was thereafter done in accordance with the Government of India's instructions, and as fair-rent cases were filed in most villages, very few were draft published direct by the attestation officer. Kanungoes were sent out from head-quarters for this purpose, and their work was necessarily subjected to the slenderest supervision. It is a matter for satisfaction that the Amendment Act of 1898 and the rules framed under it authorising draft publication to be done immediately after attestation, has provided a partial remedy, for the kanungo attached to each camp is always liable to surprise visits, from the Assistant Settlement Officer,

who is carefully enjoined to make them at irregular intervals.

FINAL PUBLICATION.

350. The agency employed for both kinds of publication was similar, but for final publication the kanungoes were more carefully selected, and were allowed three instead of two poons, the work generally being more scattered. The outturn of final publication year by year is as follows:—

| | | | Total | 2 | 0 4 1 |
|---------|-------|---------|-------|-------|-------|
| • | | | | - | |
| 1898-99 | • • • | • • • • | | | B07 |
| 1897-98 | | *** | | | 773 |
| 1896-97 | ••• | ••• | ••• | • • • | 891 |
| 1895-96 | • • | ••• | | | 370 |
| 1894-95 | | • • | ••• | • • • | 300 |

Thus final publication was not begun until the second year after draft publication, but some delay at the commencement of entirely original work when principles and procedure were still undecided, was inevitable. Final publication, except as complying with a legal formality, was before the Tenancy Act was amended a mere waste of money. The service of a notice by a peon would have been a sufficient substitute. The fair copies of the record of rights are never distributed to parties at final publication, but when costs are recovered, the acquisition of these being the object that induce them to pay the costs so readily, and if any clerical errors have cropt in, the parties detect them not by final publication, but by the scrutiny of their fair copies subsequently received.

351. Although not much practical utility accrued from final publication, yet the procedure involved considerable practical difficulty. Disputes under section 106 could be instituted at any time before final publication, and no limit of time was fixed within which they had to be filed. The original idea was that final publication should be deferred until all disputes were decided, and in consequence it not unfrequently happened that a day or two prior to that fixed for final publication a landlord put in one unimportant case, so

· as to get leisure for preparing others, and so on ad infinitum. Progress was terribly hampered and I introduced the system of piece-meal final publication.

Pieco-moal publication. the Legal Remembrancer, who was consulted, having ruled that this was legal. Under this plan only the khatians or khewat entries affected by pending disputes were exempted from final publication on the day fixed. This remedy, however, was not without its drawbacks, for it meant the expense of deputing a kanungo two or even more times to a village before the final publication was completed, for under the law of 1885 the record of rights had to be read out locally.

The final publication of uncompleted records ultra vires.

The final publication of uncompleted records were finally published while some objection cases were still undecided.

Doubts were entertained as to whether the Settlement Officer could cancel the final publication. The Legal Remembrancer was consulted by the Director, and his reply was in the affirmative. He pointed out that final publication under the circumstances was ultravires and therefore revocable (Director's letter No. 25S. of 1897).

OFFICE WORK.

352. This report would be incomplete without a reference to the mass of unostentations work done in the office at head-quarters. A list of the departments and the number of the staff employed when the operations were in full swing is given below:—

| Serial number. | Name of Department | Name of Department | | | | | Name of Department Largest number of hends employed when work was in tull swing. | | | |
|----------------|--|--------------------|----------|---------------------------|--|--|--|--|--|--|
| 1 | 2 | | 3 | 4 | | | | | | |
| 1 | English office | | 5 | at anything 19 2 2 and of | | | | | | |
| 3 | Record-room | | N N | | | | | | | |
| 8 | Head Peshkar's office | | 10 | | | | | | | |
| 4 | (a) Sarishtadar's office | *** | 22 | | | | | | | |
| | (b) Janch department | ••• | 91 | | | | | | | |
| | (c) Safai department | ** | \$10 | | | | | | | |
| | (d) Moaina department | | 48 56 | | | | | | | |
| 6 | Computation of settlement costs | | 18 | | | | | | | |
| 6 | Recovery of Cost and Certificate D | | 10 | | | | | | | |
| 7 | Publication Kanungoes | *** | | | | | | | | |
| 8 | English and Vernacular copyists Miscellaneous, peons, &c | | } 160 | | | | | | | |
| | Total | ••• | 728 | | | | | | | |

Summary of office work.

| | | 180 | 2.03, | 15 | u3 94 | 15 | 9448. | 14 | 6-1H. | 18 | 100-97. | 14 | 07-98. | 19 | O#-90. | 7 | Total. | |
|----------------|---|-----------|-----------|-------------------|--|--|---------------------|--------------------------------------|---|---|--------------------|--|---|---------------------------------|--|---|---|---------|
| Serial nember. | Nature of work done. | Number of | Murber of | Number of | Number of plots | Namier of | Number of Posts. | Number of | Number | Number of | Number of plots | Number of | Namber of pluta | Number of | Number of plots. | Number of | Number of plote. | RESARTS |
| 1 | W | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | R | 9 | 10 | 11 | 14 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 19 | 19 |
| 1 3 4 6 | Draft publication Jameh 188km or postikar's check Sarshindar's check Sarshindar's check Sarshindar's check Sarshindar's check Sarshindar's check Guine, s.c. final check and comparing (mokable). Final publication Computation | | 75,935 | 984 295 295 | 270,500 340,483 310,133 546,453 | 311 311 311 311 300 300 | | 878 940 97 98 870 870 | 796,700 804,866 844,160 84,909 76,374 | 716 947 969 960 979 891 667 | | 942 942 870 805 775 1,001 | 497,649 531,102 172,633 630,003 620,445 | 176 176 128 185 185 | 55,513 116,694 177,715 856,106 811,775 | 2,441 2,441 72,546 2,441 8,441 8,641 | 2,902,566 3,902,680 2,464,173 3,902,568 92,802,568 2,802,568 | |

^{*} Dwo hundred and ninety-five villages were not checked by varishtaday in 1888.94, as the system was not then introduced † There was only mekabite in 1894.94, 1894.95. Morris mekabite was introduced in 1894.96.

From these statements an idea of the magnitude and variety of the work is obtained.

354. In the Muzassarpur report a full account has been given of the English office, the department for issuing copies to the public, and the system of accounts.

Record-room.

Record-room.

Care of the Record-keeper, who enters them in the proper registers. The registers and the system under which they are kept have also been fully explained in the Muzaffarpur report. The programmes of attestation were drawn up at head-quarters, and then the record went through the various stages of attestation, section 104 work, draft publication, and section 105 work, all of which have already been discussed at length. In Champaran the section 104 cases were so numerous that draft publication had ordinarily to be done from head-quarters, whereas in Muzaffarpur, where the cases were few in number, it was done directly from the attestation camps. The disposal of case work after the completion of attestation took as a rule quite six months. After that the records were placed in the Sarishtadar's hands to be checked.

So Cases under all three sections of the Act (104, 105 and 106) went straight to the Head Peshkar's department, where the stamps were punched. They were then forwarded to the record room for an office report as to whether they had been filed within the prescribed period, &c. When they came back to the Head Peshkar with this report, orders as to their registration were passed. The Head Peshkar entered them in the general register and their numbers only in the mauzawar registers, keeping them in mauzawar bundles as long as they were not referred to any officer for disposal. After disposal, they were returned by the case officers concerned direct to the record-room. The principal and most important improvement on the original system in this office was the introduction of mauzawar registers in 1895-96, which greatly facilitated the disposal of all cases connected with one village at the same time and rendered their oversight impossible.

357. The work of the Sarishtadar's department calls for a more detailed explanation. In this department the record now goes through three stages,—(i) janch (check and true writing), (ii) safai (copying), (iii) mokabi'a (comparison) and maaina (final check).

(i) janch and trij writing is the initial stage, where the record is subjected to a thorough overhauling.

All the corrections made in accordance with the orders passed by the attestation efficer are checked, and orders of amendment not already complied with are carried out. The entries in the columns for fair rent are compared with the fair rout schedules and the record further corrected, if so required by the orders passed under section 105. The area and plots of every tenant or holding are next totalled up, and the entries are then abstracted into a form called the telij. The first portion of the work is done by muharrirs who worked as mansarims in attestation camps, and the second by a separate staff paid at contract rates. I may add that the latter also prepare a further abstract of the terij in a form called the goshware, the village abstract, which I shall discuss in a later chapter. The record with its tery and goshware is again subjected to a check by the junch perhkar, the head of a janch squad which usually consist of 4 munsarius, 1 peshi muharrir and 3 terij muharrirs besides the peshkar, and has records of certain attestation camps allotted to it for examination. The next stage is the sarishtedar's check done by hun with the aid of his assistants, generally one or two in number, after which the record is passed on to the Copying department.

(ii) The Safai department is another very large section of the vernacular office for copying. This department is manual by one Head

Supervisor and his *peshi* muharrir, with two or three supervisors under him according to the amount of the work to be done, and a set of safai muharrirs grouped into squads one under each supervisor, making up a total of 40 to 50 men.

(iii) The third process is meaina where a meaina munsarim after summarily checking the khewat and khatian undertakes the work of comparison. He is assisted by three muharrirs, one in charge of the original, and the other two of the maliki and raiyati copies respectively. The munsarim himself takes charge of the Collectorate copy, which eventually becomes the record-of-right,

as it is this copy which is sent out for final publication.

358. By these three processes all inaccuracies are, as far as possible, brought to light. When any inaccuracy or apparent discrepancy is found, it is at once entered in a prescribed form. These notes known as badars (literally mistakes), are put up before the Assistant Settlement Officer in charge of the office daily for orders. The work expanded with the expansion of the field of our It was heaviost in 1895-96 and 1896-97, particularly in the latter year, when the records of the major portion of the Sadar subdivision, embracing the more important parts of the district which had been attested in 1895-96 were taken in hand. It is noteworthy that in the first year of the office work there was no check except janch or the initial stage. Mr. Colvin devised a rule according to which the junch munsarim used to get paid an anna per mistake detected at janch, over and above his pay. This was meant to guard against the munsarim shirking his work and carelessly passing over any bad error. But the system presupposed too few errors and had in consequence to be abandoned. replaced by provisions for closer check. The first step towards this was taken in 1894-95 when the Sarishtadar was made to check the records again after janch with the aid of his assistants. The next and final step was the introduction of moning in 1895-96, when the copied records instead of being entrusted to ordinary comparers were placed in charge of an experienced munsarim, who did the comparison along with the comparers in the way described above. So the whole system grew as our experience of the work increased. The regular and detailed system of registers for every department is also a result of gradual but steady attempts at improving all the branches of the work.

359. The khewats in Champaran were simple and so one of the principal sources of mistakes in the records was absent. But, Badars (mistakes). on the other hand, the villages were very large-a fruitful source of error and endless trouble in terij writing. The large size of the villages was especially troublesome when the terij area totals did not at once tally with the khasra. For a discrepancy of '01 the muharrir had to retotal many thousands of plots and numerous khatians to find out the error, whereas had the number of plots been small, little difficulty would have been experienced. In khewats sometimes the shares of several joint-proprietors or tenure-holders were found to have been improperly worked out, as they did not total up to 16 Then the column for the terms of leases was often found blank and had to be filled up, as the information was specially required in computing costs. This entailed summoning the lease-holder. In khatians sometimes the arrangement of records was not found to have been made strictly according to the order of the khewat, and not infrequently a raivat of a britdar was put together with those of the proprietor or the principal tenure-holder of the village. errors all took time to detect and rectify. Then, again raiyats with the same name seem to be more common in Champaran villages than elsewhere, a sure cause of confusion. Similarly, people are often found to have holdings in two villages on only one rent, and the rent was sometimes entered by mistake in both and without any reference to the other holding. All this had to be put right at janch. Partition of the interest of joint raiyats in annas was also a source of error as in the case of landlords. In the case of non-occupancy raiyats, the term for which the holding has been in existence was sometimes found omitted. Then, tukras or subdivision of plots also led to error. Sometimes even the name of a village was not found to be the same in all the papers, and blooms may and blooms had to be brought into account. and khasra map and khatian had to be brought into agreement. In preparing teries a plot or two would be discovered not extracted from the khasra into the

khatian at all. I do not think it will serve any purpose to multiply these instances of error. They diminished as our system of attestation, and the attestation peshkar's check, improved. Indeed, latterly it was very rare to come across an order of the attestation officer improperly carried out or not carried out at all. Badars became fewer and fewer as a record progressed through check and moaina, and very few errors were found during computation. Most of the important changes in office procedure were introduced after the field season of 1895 96. They came opportunely, as much of the attestation of that year was difficult and complicated.

The next stage was final publication. I have already discussed its difficulties in a preceding paragraph with special reference to the cases filed under section 106. The only point here noticeable is the inconvenience experienced in correcting records, after fair copy, in accordance with decrees passed under this section. The Sarishtadar was specially in charge of this portion of the work with a muharrir under him. These corrections necessitated scoring through existing entries in the records and as refairing was in many cases neither possible nor permissible, the alterations have been allowed to remain in the record duly

attested, of course, by the Sarishtadar.

Computation and recovery of costs.

Computation and recovery of costs.

department, where costs to be recovered from maliks and raiyats were computed. As the assessment of maliki costs was rather complicated, it was done by a staff of muharrirs drawing fixed pay, the raiyati portion being done by muharrirs at contract costs. Both were checked by a checker who looked after the work of three maliki and three raiyati muharrirs. The record thus for the last time passed through a detailed check eliminating any inaccuracies which had escaped the vigilance of the Sarishtadar's department. A branch of this department paid by contract filled up the printed forms of receipts and counterfoils for the use of the recovery camp, besides preparing a schedule of assessees to accompany the notice served on each village announcing the arrival of the recovery camp and fixing the centre and date of collection from the village concerned.

The malki and raigati copies of the record were then made over to the Collection department to be distributed among the paying assesses, and the original, with the Collectorate copy, sent back to the record-room. The importance of the working copy becomes vested in the Collectorate copy from the time of final publication, and the original being of no further use, is destroyed,

while the latter is bound and deposited in the Collector's record-room.

The broad outlines of this phase of our work have been given above as far as the space at my disposal permits. I have made no attempt to describe the various registers each department keeps. They were the same as those used in Muzaffarpur, and in the report of that district specimens have been furnished. An examination of them will show that the Assistant Settlement Officer at head-quarters had enough to look after, and the case work that he had to do in addition kept his hands very full.

The settlement records deposited to the Collector's record-room.

361. I shall conclude this sketch by a brief description of the records made over to the Collector. They are:—

(a) The record-of-rights, including the khewat, khatian and terij and the record-of-right certificate all bound together, village by village, the map being placed in a packet attached to the cover.

(b) The khasras.

- (c) The records of cases and of boundary disputes, those for each village in a bundle by itself. The volumes and bundles are arranged in mausawar order.
- (d) The statistical records in which are brought together, than by than the milan khasra, jinswar statement, agricultural statistics, the lerij goshwara and transfer statistics for each village in the than according to its serial number.

(e) The village notes, too, as far as available, have been made over to

the Collector in thanawar order,

(f) The principal registers of cases, accounts and recovery.

The arrangement was exactly similar to that followed in Muzaffarour, and is described at length in the report of that district.

This perhaps is the most appropriate place for a short reference to what has been done in the way of maintaining Maintenance of records. the records in the district, though the history of the question generally has been reviewed at length in that dealing with the Muzasfarpur operations. The Land Record Maintenance Act III (B.C.) of 1895] has so far been introduced in thana Bettia only. 1894-95, mutation registers were prepared for all the villages finally published, till then, in the thana, and made over to the Collector in July 1895. On the 5th of August 1895, a mutation office was opened at Bettia in charge of the Sub-Registrar. While submitting my annual report for that year in the following October, I observed that it was too early yet to judge of the success the Act was likely to gain here, especially as the landlords had not as yet paid up their dues and consequently had not their copy of the records with them, but I also added "that owing to the predominance of the Raj and indigo factories in the Bettia thana, the circumstances of that area are so peculiar as to render any success which may be met with there in working the Act inapplicable as a criterion for the greater part of the rest of North Bihar." The actual situation, however, began to be realised after the Act had worked for a year. It was found that up to 30th September 1897, 1,916 cases were filed, of which 888 were instituted under section 8 of the Act by transferees, who obtained possession by mortgage, sale or gift, 74 under section 9 by persons claiming by succession, and 1,054 were under section 22 of the Act, where the Sub-Registrar himself took cognizance. The villages for which mutation registers had been prepared, contained 52,036 tenants. The number of applications filed therefore was only 3.8 per cent. of the total number of holdings. Of this, 1.7 per cent. was covered by sales, mortgages or gifts, only 0.1 by succession, while those in which the Sub-Registrar took the initiative came to 2 per cent. I therefore remarked in the annual report of that year, "that the main use to which the Act has been put so far, is to afford additional facilities to money-lenders, or persons of that class, to oust raiyats from their holdings without the landlords' knowledge, and that heirs succeeding to a holding on the death of the former owner do not take the trouble to get their names recorded in the mutation register."

Detailed enquiries were made in the succeeding year as to the number of transfers which had actually occurred that were registered, and a special report, in my letter No. 121B., dated 20th May 1898, was submitted on the subject. Thirteen villages, containing 2,778 holdings and 14,425 plots, were selected for enquiry, and in them 874 separate transfers affecting 770 holdings were found to have taken place since the final publication. Of the original area of 4,090 acres, 2,455 acres, or 22 per cent., had been transferred. Of the 2,778 holdings, 230, or 8 per cent., were transferred by succession. Of the total transfers, 26 per cent. were due to this cause, 5 per cent. to sale and mortgage each, 4 per cent. to permanent exchange, and 55 per cent. to abandonment, of which 27 was without resettlement and 28 with resettlement. The enquiries were made just after the last famine, which accounts for the large number of abandonments. Now on comparison of these results with those obtained by the Bettia Mutation office, it was found that out of the 874 alterations, only 75, or 85 per cent., had been registered, and of these 75, 70 were by sale and mortgage. Not a single case of resettlement, exchange, or new settlement had been registered, and only one case of abandonment without resettlement, out of 248, had been taken notice of. In succession only 3 cases of 230 were so noted.

364. Turning to the returns of the Mutation office; these enquiries served to confirm the conclusions already arrived at. Applications were filed in 2,362 cases, of which 907 were by mortgage, sale, or gift, 76 by succession, and 1,379, which were taken cognizance of by the Sub-Registrar himself, under section 22. The figures for succession were exceptionally bad. The kanungo found 8 per cent. of successions in the villages under enquiry, and by applying the percentage to the whole area under the Mutation office, that was finally published at the same time with those villages, the total number of transfers under this head should have been 4,160, of which 76 only had found their way into the mutation registers.

365. In view of these results, Mr. Kerr and I concurred in thinking the Act to be not only a total failure here, but worse, for it solely operated to benefit the mahajans, the very last class to require such encouragement.

The following extract from the report fully sets forth my conclusions, on

the point:-

"In Champaran the population is sparse, and the available land plenty; the land-lords are big and all-powerful, their tenants ignorant, apathetic and improvident, who have not been compelled by circumstances to learn the value of tenant right, and who, when they get into difficulties, throw up their land and go elsewhere. Now all cases of abandonment the present system does not touch, because the Act does not lay the landlord under any obligation to register transfer, and agricultural conditions being so unsettled, as I have described, it is obvious that parties can have no very strong inducement to register successions. The only transfers the Act can be said to have dealt with in any way effectively are sales, and in the case of Champanan, I think there is much force in the objection taken by Mr. Kerr that their registration strengthens the hands of the very men whose influence we should seek to diminish, namely, the professional money. lenders. In this respect the positions of Muzaffarpur and Champaran are very different. The money-lender in Muzaffarpur is usually a well-to-do raight, resident in the village. The people are very thrifty and fairly intelligent, and set a very high value on their occupany rights. The landlords are, for the most part, petty, and, although they usually claim that their sanction to transfer by sale is necessary, they advance the claim merely in the hope of getting salami. In Champaran, on the other hand, the money-lenders are as a rule non-resident and non-agriculturists. The people, as I have said, are ignorant and thrift-less, while the landlords, being big and powerful, have always excreised the right of refusing to acknowledge such transfers, and the Civil Courts have accepted this right as existing. Where land is plentiful and cultivators scarce, it is quite just and proper that landlords should exercise this right, for the cultivators, if impoverished, do not hesitate to leave their estates and go elsewhere to start afiesh. In Muzaffarpur I can see no objection to verting in raiyats the absolute power to transfer their lands by sale. They would obtain a much better price than they do at present, and they can be trusted not to part permanently with their lands if they can possibly avoid doing so, but in Champaran encumetances are very different; there the raivat requires protection against himself, and the landlord is personally interested in protecting him. In these circumstances, I beg to recommend that the Bettin mutation office be abolished. The selection of Bettin thann as a locality in which to try an experiment of this sort was ill-advised. Subsequently, if the system gain success elsewhere, offices might be opened in the south of the district where agricultural conditions approximate to those prevalent in Tirhut, but Champaran is the last of the North Bihar districts that should be brought within the scope of the present Act."

The Board has accepted the conclusions that the influences of the Bettia Registration Office are nothing but harmful, and that it should be closed. The following statement that embodies the figures of the Sub-Registrar's returns up to 31st March 1899, shows no improvement in the situation:—

| | YKAR. | |] | Number of mutations by— | | | | | | | |
|---------|--------|-----|-------------|-------------------------|-------|--------|--|--|--|--|--|
| | 1 KAR, | | Succession. | Sales. | Gift. | Total. | | | | | |
| to | 1 | | 2 | 3 | 4 | 6 | | | | | |
| 1698-99 | , | ••• | 5 | 2*1 | • () | 295 | | | | | |

In Muzaffarpur on the other hand, where conditions are different, the Act has met with a fair amount of success, and in the report of that district, my views on the scheme in its general application have been recorded.

CHAPTER II.

BTATISTICS,

367. I shall now proceed to discuss the information supplied by the several statistical statements compiled in the The prescribed statistical statecourse of these operations in greater detail. They mente. are six in number, as follows:-

(1) Milan kharra or abstract of agricultural plots.

(2) Jinswar or crop statement.

(3) Fard-hawala or agricultural stock statement.

(4) Terij goshwara or abstract of agricultural holdings.
(5) Transfer of occupancy rights.

(6) Transfer of proprietary rights.

The first three were compiled by the Survey Department, and the last two by Assistant Settlement Officers at the time of attestation, whilst the fourth was abstracted from the terijes prepared in the Settlement office during the recess. The milan khasra shows the extent of cultivation and the room, if any, for its further expansion, distributes the cultivated area over the three principal harvests of the country, viz., autumn, winter, and spring, and furnishes particulars of the sources of irrigation and the crops irrigated. The crop statement furnishes the details of area under each crop, whilst the fard-hauala is a statement of carts and ploughs, bullocks and buffaloes, and other live-stock in possession of the agriculturist. The goshwara apportions the district area among the several classes of tenancies, giving the particulars of holdings and rents, both produce and cash. The transfer statements convey an idea of the extent to which land is being alienated, the price paid for it, if sold, or the sum advanced if mortgaged, and what classes are becoming possessed of it. In these statements therefore are condensed statistics of all the main ingredients, comprising what is comprehensively called rural economy.

368. The total area of the district returned by the revenue survey was 3,575 square miles; but as compiled from the Total area of district. Boundary Commissioner's list, it comes to only 3,531 square miles, or 44 square miles less; for administrative purposes it is the latter figure that has hitherto been accepted. Captain Crichton, however, in his survey report for the year 1895-96, points out that the revenue survey area is the closest approximation to the truth. He observes that in addition to the 3,280 square miles returned as surveyed by the Survey Department, there was a small ared of six square miles surveyed by the Settlement Department in 1892-93, which brings the total to 3,286 square miles, and if to this is added 200 square miles as the approximate unsurveyed jungle area, the grand total reaches 3,576 square miles, or only a square mile in excess of the revenue survey figure. The only other estimate of the district area which need be referred to here, was what Mr. (now Sir A. P.) MacDonnell adopted as the basis of his calculations in his "Food grain-supply and Faminerelief in Bihar and Bengal" in 1875. It was based on an estimate prepared by the Collector from enquiries made in 12 tappas, and by applying the result of these enquiries to the rest of the district. According to this estimate, the district contained 2,119,325 acres, or 3,312 square miles. Probably the deficiency is due to exclusion of the uninhabited hill and jungle area in the north-west. It will be seen that the district area naturally falls under the three following heads:—

(a) that surveyed in 1892-93;

(b) the area dealt with by the present operations;

(c) the hills and jungle excluded from cadastral survey, but now under topographical survey.

To these may also be added the small urban area of the Motihari Municipality, which, as I have stated above, was excluded from survey during the current operations.

The area surveyed in traverse in the course of these operations was 3,298 square miles, of which 3,280 square miles were cadastrally surveyed and khanapuried, the difference being accounted for by off-sets from the traverse lines. This report, however, deals with only 3,250 square miles. The discrepancy is due (1) to 11 square miles of diara villages in Saran being wrongly surveyed within the limits of Champaran in 1894-95; (2) to the transfer of about 20 square miles lying on the west side of the Gerdal to Saran Area surveyed. about 30 square miles lying on the west side of the Gandak to Saran, in which district it had already been included for the purposes of criminal and general magisterial administration; and (3) to the inclusion of the 6 square miles in thana Adapur, settled at the request of the Hardia Factory in 1892-93. There was also some unavoidable discrepancy due to our total

having deen arrived at by adding up the figures for every village with the result that the insignificant fractional errors in the areas of individual villages became cumulative. The final report of the Hardia villages was written by Mr. Colvin, and all the several statements have been compiled from their records just in the same way as for the current operations. For these reasons, I have thought it convenient to incorporate their figures also in the statistics of the Adapur thana to which they belong.

870: For the statistical purposes of this report, therefore, the area. of the district may be taken to be 3,250 square miles. The correct total, inclusive of jungles and hills, cannot be ascertained until the topographical survey referred to above is concluded. Till then, however, the present figure

(3,531) that is officially accepted, need not be revised.

In trying to fix with absolute accuracy the area of this district we are confronted by the same difficulties as in The fluctuating element in Muzaffarpur and Saran, though indeed to a less district area. degree; namely, fluctuation in the course of the river, the deep stream of which has been constituted the district boundary. The Gandak is the natural boundary between this district, on the one hand, and Saran and Gorakhpur on the other. But it is extremely uncertain and Indeed, at present, there is one whole outpost,

capricious in its course. Dhanaha, on the Gorakhpur side of the Gandak, but appertaining to thana This is how Mr. Wyatt, who conducted the revenue survey in 1845, expressed himself on the point:

"From Kesaria upwards, up to the Bootwal Raj, the course of the river is very arbitrary" and of such an unsettled character that large portions of land are annually transferred on either side by their being cut away during the rains, when the river suddenly becomes swollen and carries everything before it, destroying boundaries of villages and frequently the sites of those near its banks; hence numerous disputes arose between the landed proprietors ending constantly in civil actions.'

Indeed, some of the most complicated boundary disputes that we have been called upon to decide in Champaran were those between the Hathwa Raj and the Bettia Raj in the Gandak diara. But a remedy for this state of things had been provided before the revenue survey was began. I again quote Mr. Wyatt's report :-

"With a view to putting a stop to such manifest inconvenience, the rule of Dhar-dhoora (or division by main stream) has been superseded by the laying down of specific boundary marks by the Oivil Superintendent, so that even in the event of these being destroyed, their original sites can be easily ascertained by a reference to the professional survey maps."

Although, in my opinion, this is the real remedy for the administrative difficulties that arise from a diara being apportioned to two districts, according to an ever-shifting main stream, practical effect was not given to it. The boundary of the Champaran district, according to notification, is the deep stream, and hence the Survey and Settlement Departments are compelled to follow it.

Champaran is the largest district in North Bihar and second only in the whole Division to Gaya and Shahabad, the dis-The large area of the district. tricts which, like Champaran, comprise a vast area . of hill and jungle. It is bigger than an average district in the Patna Division by over 300 square miles, and than one in Bengal by 200 square miles. It very much exceeds in area an average British county, or, for the matter of that, any county in England or Ireland. I have said elsewhere that Champaran was formerly but a sirkar and a portion of zilla Saran, consisting of four parganas, one of which, Babra, was transferred to Muzaffarpur in 1865. The rost of the sirker was raised to the status of an independent district in 1806. The Bettia subdivision dates from 1852.

373. The areas of the Bettia and Sadar sub-The area of the two subdivisions. divisions are as follows:-

| X-1 22 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 | | Square miles. |
|--|-----|----------------|
| Bottia Sadar | ••• | 1,720 1,530 |
| Total | ••• | 3,250 |
| Or an average to each subdivision of | *** | . 1,625 |

The Bettis subdivision, even without the hill and jungle that fall entirely within it, is the larger of the two. There being only two subdivisions, they are necessarily very large, and exceed the size of an average Bengal subdivision by 50 per cent.

469. The district is divided into nine thanas, three forming the Bettia subdivision and six the Sadar. Their areas are

| pun ot | | given below: | | | |
|--------|------------|---------------------|-------|-------|------------------|
| | THANA. | | | | Square miles. |
| 1. | Bagaha | ••• | | | 619 |
| 2. | Shikarpur | ••• | ••• | | 554 |
| 3. | Bettia | ••• | • • • | | 547 |
| | To | tal Bettia subdivis | sion | ••• | 1,720 |
| `4. | Adapur. | ••• | | ••• | 224 |
| 5. | Dhaka | *** | ••• | ••• | 335 |
| 6. | Motihari | ••• | | ••• | 290 |
| 7. | Gobindganj | *** | ••• | • • • | 286 |
| 8. | Kosaria | ••• | | | 273 |
| 9. | Madhuban | ••• | *** | ••• | 122 |
| | Total 8 | Badar subdivision | | ••• | 1,530 |
| | | TOTAL DIST | RICT | ••• | 3,250 |
| | | | | | |

€1

It will be noticed that Bagaha and Shikarpur, even without their jungle belts, are the largest in area. An average than a in the Bettia subdivision is more than double that in the Sadar, and more than double the provincial average, and half of an average English county. The Sadar average, however, is only 25 square miles larger than the provincial average, though the district average exceeds it by 125 square miles.

The area of villages.

The area of villages.

The area of villages.

The sis only a little less than double that of Muzaffarpur. The thana averages range between 1.43 of a square mile in Bagaha and 58 in Madhuban, but strange to say, in Shikarpur an average village is only 82 of a square mile. In all other thanas it is more than a square mile. Indeed, as I have said elsewhere, the large size of the villages is a feature of the district. The following table gives the number of villages measuring 10,000 acres and above, 5,000 and above, 3,000 and above, and 2,000 and above, as also the names of the biggest and the smallest villages in each thana. Bagaha beats all records by presenting us with a village over 40 square miles m area. The next largest village is in Gobindganj, and the third in Motihari:—

| | | | in what is | | | - w | *** | | | TITLE L. VALTERY | THE PERSON NAMED IN | The American | |
|---------------|---|-----|---------------------------------|---------------------------------|--------------------------------|--------------------------------|---|--|-----------------------------------|-------------------------------------|--|---------------------------------|----------|
| | North on Trees | | of villages | of Villagera | of villages | Number of villages | LARGEST VILL | | rich | SMALLEST VILT | AGB IN 1 | THE | |
| | NAME OF THANA. | - 1 | of 10,000 mores and above | of 5,000 acros apil above | of 3 con acres and abuve | of 2,000 neres una nbove | Namo | Thana num- ber | Area in seres | Name. | Thans num- lev. | Area in acres | REMARES. |
| | 2 | | 3 | | | 6 | 7 | 1 | 1) | 10 | 1) | 12 | 18 |
| 1 2 3 4 5 6 7 | Bagaha Shiharpur , Rettia Adapur Dhaka Motthur Gobindgan; | | ≠ · | 9 9 9 9 4 | 91 13 4 7 17 11 | 38 38 10 17 17 | Semralabedaha Marhia Patjir wa khas Patri Khaitari Dhekula Chatia | 72 340 107 73 120 214 28 | 2,1461 7,343 4,348 5,464 | Chitchi Scawal in Ahirau- lm. | 361 342 234 47 6 83 37 | 58 31 11 32 7 20 | |
| 1 | Madhuhan | | | <u></u> | ****** | 1 | Kothin Hari Ram | 196 | 2,463 | Tolamethanpura | 167 | 16 6 | |
| | Talal . | | 1 | 30 | 71 | 140 | | , | | | | | |

Bettia and Bagaha count the largest number of big villages, Gobindganj following next, Motihari, Dhaka, Kesaria and Adapur coming after in very close order. But there appears to be an exceptional paucity of them in Shikarpur and Madhuban. Indeed, while Shikarpur accounts for 16 per cent. of the district area, it furnishes no less than 24 per cent. of its villages; but the fact that these villages are so small violates one's pre-conceived theories of the course of agricultural development—theories, the accuracy of which is actually verified

by the large villages in the adjacent and equally backward thanas of this backward district. I should be inclined to attribute this phenomenon partly to the arbitrary action of the Revenue Surveyor in treating tolas as revenue survey villages, and partly to the supposition that this area enjoyed in a time long past, a period of isolated material prosperity of which history has hitherto furnished no record. In Madhuban, where conditions approximate to those of Muznifarpur, villages are naturally small.

376. The average size of a holding in the district is 5.19 acres, or more than double that in Muzaffarpur. In Bettia sub-

The size of holdings. division the average is 6:11, but in Sadar only 4.44. The biggest holdings are to be met with in the sparsely populated thanas of Bagaha and Shikarpur; average holdings in the central thanas of Bettia, Adapur and Motihari; while holdings below the average are found in the eastern and southern thanas of Dhaka, Kesaria, Gobindganj and Madhuban. Indeed, we find the biggest holding in Bagaha, the north-western thana, and the smallest in Madhuban, the south-eastern,—clearly emphasising the diversity of agricultural conditions obtaining in the two tracts of which these thanas are typical.

377. Similarly, an average plot in Champaran is 74 of an acre, or about double that of Muzaffarpur. In Bettia it is one acre, but in the Sadar subdivision only a little more than half an acre (57). The biggest plot is again found in Bagaha, and

the smallest in Madhuban.
Statistical statement of agricultural land units, thana by

thats.

378. Below is a statement giving the areas, and number of villages, holdings and plots, with averages of each, than by than a:—

| - 1 | | | | | | | | S EDARET | 122. | | 1 |
|--------|--|--|--|--|--|---|-------------------------------|--|--|--|--------|
| • | Нами от тиана. | Total number of villages. | Number of holdness. | Total number of plots. | Total area in acres. | Sub- division in square rolles. | Thaus in square indica, | Villago in aquaro miles. | Pcace In Hoppings | Plot in acres. | Runare |
| 1 | 9 | 3 | • | 6 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 18 |
| | The state of the s | | | 1 | | | | | A D. | Δυ. | 1 |
| 1 93 5 | Bagaha Shikarpur Hettia | 433 672 807 | 65,68) 54,587 69,964 | 994,267 344,1441 446,291 | 800,272 351,558 351,159 | | | 1 4 0 % 1 ' 3 | 7.12 6.26 2.00 | 1 88 1 102 0 75 | |
| | Subdivisional figures | 1,50% | 160,182 | 1,002,557 | 1,300,969 | *** | 57.4:33 | 1 2 | 6.11 | 1 00 | 1 |
| | Adapur Dinaku Mothari Gobindgan Kesaria Madhoten | 200 240 722 546 258 211 | 27,346 40,146 81,669 43,448 42,156 25,458 | 2 %, 367 Run 260 27 %, 600 332, 228 334, 444 164, 614 | 161 401 21 3,528 185,180 183,089 174,842 78,986 | • | | 1-1 1-4 1-3 1-4 1-1 0-6 | 5 %4 4:37 5:55 4 11 4 18 8:07 | 0°68 0°64 0°67 0°66 0°53 0°44 | |
| * | Hadar subdivisional | 1,316 | 280,410 | 1 715,419 | 97+,645 | | E# 432 | 11 | 4 44 | 0 67 | - |
| | District figures | 2 hall | 400,592 | 2,507,078 | \$ 00.9(4) 2 | 1,695 | 301.11 | 1.1 | 6.10 | 0.74 | |

379. Whatever we may fix upon for the purposes of comparison, a plot or a holding, a village or a thana, a subdivision or the large dimensions of the land the district itself, everything here is on a larger maits.

Scale than that found to prevail in the adjacent and Saran. The same remark applies as is

sister districts of Muzaffarpur and Saran. The same remark applies, as is shown elsewhere, to the standard of measurement. There is, then, a very clear and strong indication of the fact that the development of the resources of the district has set in from comparatively recent times, and that, except perhaps in a small tract in the south, there is an entire absence of that agricultural pressure which leads to a diminution in the size of all land units from the than a down to the standard of measurement.

CULTIVATED AREA.

District area cultivated and of the district. Out of the total of 2,079,815 acres, 1,447,668, or 70 per cent., is cultivated, and 632,147, and or 30 per cent., uncultivated. But this takes no account of the excluded hills and jungles, nearly all of which would be classed as uncultivated, thereby considerably increasing the latter area. The hitherto accepted estimate of the cultivated area in the district, as given in the Blue

Book.—"The Agricultural Statistics of British India," is considerably lower than what our figures disclose. In the year 1896-97, the figure noted against Champaran was 1,300,200 acres, or 144,000 acres below ours. It is curious to see that the estimate of 1892-93 (1,422,000) was nearer to the truth.

The cultivated and uncultivated areas of Champaran and neighbouring districts compared.

381. The comparative figures furnished in the following statement will convey an idea of the position of Champaran by the side of neighbouring

districts in the above respects:-

| | | | | | Unculti | VATED. | Culti | VATED. | | |
|-----------------|---|-------------|--|---|--|--|--|--------------------------------|---|---|
| Seriel samber | Намя ощтя | B DIVISION. | | Total area. | Area, | Percentage to the total, | åres. | Percentage to the total. | Density of population per square mile, | Revares. |
| 1 | | ~ | | C | 4 | 5 | • | 7 | • | • |
| | | | | Астев | Acres. | | Acres. | 1 | | |
| 1 2 3 4 5 6 7 7 | Patna Gaya Shahabad Darbhanga Musaffarpur Sarah Champaran | Total | | 1,882,480 3,015,690 2,705,690 3,184,409 1,941,254 1,608,981 2,079,815 | 334,980 026,240 1,174,420 376,740 386,963 314,431 032,147 4,098,011 | 25 31 40 18 30 10 30 27 | 98,500 2,080,400 1,671 100 1,747,700 1,555 201 1,382,500 1,447,064 | | 862 454 473 840 908 930 527 | From "Agricultural Statistics of British India." By cadastral survey. From "Agricultural Statistics of British India." By cadastral survey. |

382. Thus Champaran both in density of population and in the extent of cultivated land takes the fifth place among the seven districts of the Patna Division, Gaya and Shahabad alone being inferior to it, while Patna and the other three North Bihar districts are very much superior. Champaran, Gaya and Shahabad in each respect full below the divisional average. Although Gaya and Shahabad occupy a less advantageous position than Champaran, I believe there to be more room for agricultural development in the Champaran district. Much of the waste in Gaya and Shahabad is unculturable hill and jungle, much also is occupied by the irrigation system, the very life-blood of their agricultural existence. In Champaran, on the other hand, it is land lying unoccupied, at present poor perhaps but cultivable. Here, too, the subdivisional percentages vary considerably from the district one. In Bettia the cultivated area is only 62-30 per cent., and would be very much less if the jungle tract were taken into account, but in the Sadar it goes up so high as 77-74 per cent., or very nearly to the Muzaffarpur figure. It is in the northern tract that the great field for the extension of cultivation lies.

Degree of cultivation and density of population compared thank by thans.

383. The details of cultivation and density of population, for the thanas of Champaran are furnished in the following statement:—

| | | | | ARI | EA- | | sdame | |
|----------------------|------------|-------------------------------------|----------------------|----------------|----------------------------|----------------|------------------|------|
| NAME OF THAN | A . | Total area. | Син | YATED. | UNCULT | IVATED. | 1 | -40. |
| | | | Acres. | Per cent. | Acres. | Per cent. | Density mile. | Rawa |
| T. | | 2 | 3 | • | 6 | 6 | 7 | 8 |
| Bagaha | } | 396,272 | 198,823 | 60 17 | 197,449 | 49.83 | 804 | Ì |
| Bhikarpur Bettia | | 3 64,5 58 35 0,139 | 2,44,781 2,43,189 | 69 04 69 44 | 109,777 107, 000 | 80 96 80 66 | 974 623 | į |
| Total Bettia Subdivi | non | 1,100,969 | 686,743 | 62:38 | 414,926 | 37:62 | 377 | |
| Adapar | | 148,401 | 122,198 | 86.31 | 21,208 | 14.79 | 747 | |
| Dhaka | ••• } | 214,528 | 177,846 | 83.90 | 36,6x2 | 17:10 | 803 | } |
| Motihari | ••• | 186,180 | 181,337 | 70.73 | 63.843 | 29 08 | 660 | 1 |
| Gobindganj | ••• | 182,689 | 127,063 | 70:04 | 64,726 | 29.96 | 658 | i |
| Keantin | ••• | 174,843 78,206 | 188,468 | 79-20 | 36,374 | 20.80 | 683 | |
| Madhuban | ••• | 18,200 | 63,118 | 80.70 | 15,088 | 17 80 | 849 | į |
| Total | | 2,079,815 | 1,447,668 | 69.61 | 63,247 | 30 39 | 627 | |
| Sa far subdivision | | 978,846 | 760,925 | 77:74 | 217,921 | 23.26 | 724 | i |

It is a matter of common belief that Adapur, noted as it is for the richest soil in the district, is in the highest state of Thans percentages of cultivation cultivation, and our figures confirm it: 85 per cent. compared. of its area is under tillage. Dhaka and Madhuban, . where agricultural conditions approximate to Tirhut, very fittingly follow with percentages of 83 and 81, respectively. Then comes Kesaria, with 79 per cent. But cultivation is found to gradually diminish in extent as we journey north. In the central thanas of Gobindganj and Motihari, the percentage is 70 and 71, respectively, or slightly above the district average, but in Bettia, which is the next, the percentage comes down to 69 or a little below it. The apparently high percentage of 69 in Shikarpur is, for reasons I need not repeat here, to a considerable extent fictitious, and in Bugaha we reach a point where the area waiting for the plough equals that under it. Mr. Wyatt, the Revenue Surveyor, wrote that in tappas Chingwan Batsara and Manpur Chaudard situated in this thana he found one-third of the land waste and unproductive and in Rajpur Soharia and in Bagaha only one-fourth was under tillage. It is to the credit of this tract that the cultivated area has apparently advanced from one fourth and one-third to half of the total, if reliance can be placed in Mr. Wyatt's estimate, and I think it should, since his tendency was decidedly to over-

estimate the extent of cultivation.

385. The relation between the extent of cultivation and density of population is very strikingly illustrated by the figures of this district. In Adapur, Dhaka and Madhuban, where the cultivated area is over 80 per cent., the density of population is the highest, about 800 souls per square mile. It is somewhat lower in Kesaria, but considerably so in Motihari, Gobindganj and Bettia, and we have seen that the figures of cultivation follow the same course. In Shikarpur, excluding the jungle area, the density will go up, perfectly justifying what our figures show, whilst Bagaha, where the density is admittedly very low, the cultivation has only kept pace with it.

Advance of cultivation in Chamber ation of this district may not be without interest.

Even detailed statistics when derived from any other source than a cadastral survey must be regarded with caution. But in Champaran progress has been so vast that even the opinion of an officer with local knowledge affords a sufficient indication of its extent. When Hinduism was supreme, Champaran, as I have shown, was a forest primeval, unbroken save for the hermitages of those who had laid aside the world. It has been told how in the time of Akbar not even one-twentieth of the district came under the assessment of Todar Mall, clearly indicating that its boundless wastes were still largely unreclaimed. Thereafter there was progress that even the decadence of the Moghal Empire could not stay, and on the 22nd July 1794 the Collector wrote to the Board:—

"Siroar Champaran is not above one-fourth cultivated. This sircar has very extensive forests containing every species of trees common in this district" (i.e., zilla Saran), "it abounds with saul, sissu, toons, and I believe it would be utterly impossible to proceed to clear away with any effect to promote advantage or improvement."

387. The cultivated area is now 70 per cent., and I think it can be said without fear of exaggeration, that during the British era the extent of cultivation in the district has certainly doubled and perhaps trebled itself. Mr. Wyatt the Revenue Surveyor, observed 50 years later:—

"The pargana of Majhaua" (which covers the major portion of the district) "at the time of the perpetual asttlement was chiefly waste; the northern parts were covered with forest which are now inhabited and under beautiful cultivation."

The era of development presumably set in very soon after the Permanent Settlement, for the Collector, only seven years later, on 29th December 1801, reported that "where 60 bighas in 100 were in cultivation formerly, 80 or more are now in that state." This remark had reference to both the sirkars of Champaran and Saran, but as Saran was already highly cultivated and Champaran was not, it can be taken as a measure of progress in the latter district without risk of error. But from the time of the permanent settlement up to the revenue survey of 1845, the progress of agricultural development

was undoubtedly very rapid. In parganas Mehm and Semraon, thanas Dhaka, Madhuban and a portion of Kesaria, four-fifths of the area, or 80 per cent., had, according to the Revenue Surveyor, been already brought under cultivation, their present percentages being 83, 81 and 80, respectively. Of pargana Majhaua, as a whole, which he justly describes as immense, he does not hazard any such opinion, but taking it piecemeal and adding the figures for the other parganas, he arrives at a total of 1,716,345 acres under cultivation in the whole district. At least, so it is said in Sir A. P. MacDonnell's "Food-grain Supply," but I have been unable to find the figures in Mr Wyatt's report. any case, it was obviously an overestimate, as the cadastral survey shows the net cropped area to be 1,447,668 acres only. Possibly Mr. Wyatt's figures include babra pargana, and according to Sir A. P. MacDonnell he treated as cultivated all lands not physically uncultivable, such as roads, rivers tanks, village sites and the like, though, as I have shown in the Muzaffarpur report, this does not appear to have been the case in that district. Again, his estimate was not based on sufficient data, for it was not based on a detailed survey, but whatever the cause may be the fact remains that his estimate must be wrong, for no one in his senses would assert that the cultivation in Majhaua has done otherwise than increase within the last 50 years. The reports furnished by patwaris, at the thakbast survey of the area of uncultivated land are probably more reliable, but unfortunately the totals have not been struck.

* 388. The following statement reproduces the information derived from a study of the thakbast records of a few villages

record. only:

Statement showing uncultivated area from Thakbast Register and present survey.

| | | | % ₽ | | | | UNCC | LAIVATE | D ARBA | | | |
|------------------|---|------------------------------------|--|---|---|---|--|---|---|---|--|----------|
| | | retned. | cchama | At th | nkhuat. | • | | M present | surve, r. | | | • |
| | NAME OF THAMA. | Ta ea | Tilleger IE | | 1 | Cultu | ralde | | liable for vation. | betay | unculti- area of a 7 and 9. | |
| X. | | 4 | j. | | 3 | i | 2 | | 2 | | 2 | |
| Ser.al now ther. | | Number of v | Total are of | dra is sen | Percentage and. | Srea | Percentage kotan area. | Arra | Percentage tetal area | Arm. | Percentage total area | RBMARES. |
| 1 | 2 | 8 | , | ۸ | (1 | 7 | h | 9 | 10 | 11 | 19 | 1 |
| - | 1 | | Acres | 1 | | Acres. | | Acres. | | Arres. | | ` |
| 1284667 | Hagaha Shikar pur Hettis Adapur Dinka Votihuri Golundganj | 1 15 13 2 1 5 14 | 350 7,005 9,030 552 448 2,250 10 550 | 111 2,334 1,751 19 76 116 2,156 | 39 57 30 08 17 62 21 77 16 96 21 66 20 85 | 1.717 1.717 1.719 40 45 400 1,703 | 14°20 22°75 17°80 4.54 10°05 20° 16'47 | 9 471 649 74 20 106 095 | 2 57 6 15 8 46 5 30 40 40 5 14 8 08 | 59 9,215 2,411 114 65 506 2,326 | 16'48 98'98 94'98 12'93 14'50 24'66 | |
| | Total | 51 | 31,936 | 7,050 | E7 51 | 5,514 | 18 21 | 1,975 | 6.19 | 7,750 | 24.40 | |

389. The figures were abstracted from the thakbast records of 51 villages spread over the district, but none were found for thanas Kesaria and Madhuban. Now, either the villages selected are not typical or the system of classification is different, for, according to this statement, thanas Motihari, Gobindganj and Bettia have a larger area uncultivated now than they had in 1845, which is obviously absurd. If the revenue survey included culturable uncultivated land, then it can be said that cultivation has expended very considerably in the last 50 years. But I quote these figures merely because they appear at least to indicate that extension of cultivation proceeded at a much slower pace after the revenue survey than before it. The figures quoted in Sir A. P. MacDounell's "Food-grain Supply" afford further confirmation to this statement. Of the total area estimated by him, or rather by the Collector, Mr. Hewitt, 1,437,332 acres, or 67 per cent., was cultivated, and 681,993 acres, or 33 per cent., uncultivated. The present proportions are 70 and 30. Hence the increase of cultivation during the last 30 years would not appear

to be very marked. Mr. Kerr makes the following observations on this point:

"The Adapur thems was, it is believed, brought under cultivation shout the middle of the century, and since then the only extension has been towards the north-west of the Bettis subdivision, an area notoriously unpopular on account of its unleasthiness. Rents in Champaran are still exceedingly low, as compared with the rest of North Bihar, and the pressure of the population on the soil even in the southern part of the district is not yet such as to force the people northwards in search of fresh lands, and at the same time there is practically no immigration from outside the district."

390. In order to elucidate the matter still further, the settlement reports.

The evidence of the old Raj jamabandis and the records of resumed makals. of resumed mahals and old jamabandis in the possession of the Bettia Raj have been examined. The statistics afforded by the former were based on actual measurement. The old jamabandis,

though not so trustworthy, provide data sufficiently accurate as a basis of broad conclusions. To take up the jamabandis first. I have divided them into four groups, according to the different periods they fall into. The first group consists of the only three village jamabandis for the year 1793 which could be found; the second of 21 during the period 1815 and 1820; the third of 34, up to the year 1850, and the fourth of only seven, up to the year 1870. Of course, they do not differentiate cultivated from uncultivated land, but a comparison of the area held by raiyats at those periods with what they had now will afford a sufficient indication as to how and when cultivation has expanded in the district:—

| , | | | Number | Total area | RAIYATI AREA | | Percen- | بو |
|-----------------------------|--------|-----|--------------------|------------------------------------|--------------------------------|----------------------------------|------------------------|--------|
| | Perior |), | of villages. | according to survey. | Raj jama- bandi | Sur v ey. | increase. | REMARK |
| | 1 | • | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 1st pe 2nd 3rd 4th | riod | *** | 3 21 84 0 | 1,011 22,683 28,348 8,240 | 80 6,371 11,188 4,739 | 549 16,260 19,798 6,158 | 586 155 77 30 | |

Now, as far as these figures go, the raiyati area has risen by 586 per cent. since 1793; by 155 since 1820, but by only 77 since from 1820 to 1850, which is further reduced to 30 during the years 1850 to 1870. These results are amply corroborated by the figures compiled from the resumption registers. I have taken 38 villages, scattered all over the district, portions of which were resumed in 1839-40. The registers furnish details of cultivated, cultivable and uncultivable area of the portion resumed (except rent-free lands excluded), and I have compared their percentages with those of the whole village as at present found, neglecting, of course, the rent-free portions which, occupying as they do less than one per cent. of the total area, can well be ignored.

| 1212 7702 77 | 1 | ACCOL | AREA CRES EDING | i CU | A VITA | TED AN | ika' | | | ĽN | et Lit. | IVA FR | D AR | F & A | (COB1 | oing. | TO- | | | BRN: | - P 数 B 形 - P 数 B 形 - R M M V (C) - A (T) M - O) - W (c) | k U |
|--------------|------------------------|-------------|-----------------------|---------|------------------|---------|------------------|-------|----------------|--------|---------------|---------------------------------------|--------------|--|---|---------------|---------------|--------|---------------|------|---|---------|
| | ; | | | Ran | LMP- | RURY | XT. | | | Ruera | (r'10) | • | | 1 | 7.4 - Walls | 5 (B) ■ |) ¥ | | • | | -16(4- 0 4) -18(4-04) | ٠. |
| Period. | NUMBER OF | | 1 1 | | 7 | | 7 | Citi | umble | (co)tu | n. mhle. | T ₀ | in] | Calts | in bie | - t - m)ta | tı Polisia | To | tel | 1 | 1 | |
| Period. | Number of Villager. | Besumption. | Survey. | A ress. | Perientage to tr | Arra | Percentage to to | Arra | Penyintage for | Ira. | Percentage 10 | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | Percentage : | The state of the s | 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - | In. | Personal de | Area | Permanent (g. | | Personage 'e k | Kan end |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 8 | 7 | \$. | 9 | 14 | ! 11 | 12 | 13 | 114 | 3% | 1. | 17 | 34 | 19 | 20 | 21 | 73 | . ' |
| P-40 | | 12,653 | 34,798 | 6,241 | 447 | \$4,314 | 69 . 9 | 6,124 | 37°H | 2 024 | 14.6 | 6,307 | 42.3 | 7,270 | I1/2 | 3,171 |) q/H | 10,451 | 20-107 | 97 | 77 | |

391. In 1839-40 the cultivated area, including current fallow, was 49.7 per cent. of the total, and now it is 69.9, a rise of 20 per cent. only. The whole of tappa Duhosuho, to which I have referred more than once as the zamindari of the Madhuban Babu, was resumed in the same year, and the same details are available for the 63 villages that it consists of. They are summarised in the following statement:—

| A STATE OF STATE OF | t | TOTAL IN ACCOR | BING | OUL | NVAT OBDI | EI) ARI NG TO | 4 | | | UNC | ULTI | VATED | ARU | ACC | DRDI | KG T | £ | | | REPY. | byles B IP4 To | |
|---------------------|---------------------------|-------------------|--------|--------|-----------------|------------------|-----------------|--------|--------------|---------------|-----------------------|--------|--------------|--------|--------------|-------|-----------------------|-------|--------------|-------|----------------------|-------|
| | • | | | Rosump | tion. | Burve | 7. | | 1 | Les on | PTION. | | | | | BUR | Ŋī. | | | PROPE | Prion. | |
| Feriod, | Number Of Villages. | | | | torai. | | total. | Cultur | able, | onlin | uble. | Tot | al. | Cultur | able. | culta | n- rable. | Tot | al, | | | |
| | | esumpton. | errey. | ę | errentage to to | ŧ | ercentage to to | į | erventage to | 786- | errentage to otal. | į. | ercentage to | ree. | ercentage to | ą. | ercentage to otal. | į. | ercentege to | į. | eronatings to t | ***** |
| | | M | - | 4 | 4 | | Δ. | 4 | 4- | 4 | | 4 | A | 4 | A | 4 | B. T | • | - | 4 | <u> </u> | Ţ |
| 1 | 3 | • | • | | | 1 | | , | 10 | 11 | 19 | 13 | 16 | 16 | 16 | 17 | 18 | 19 | 80 | 21 | | - |
| 1980-40 | Tappa Duho | 86,159 | 86,818 | 10,127 | 52'0 | 30,336 | 82'8 | 14,076 | 36.9 | 5,767 | 7:7 | 16,843 | 46 6 | 3,633 | 9% | 3,856 | 7-7 | 6,480 | 17 % | 163 | 1.4 | |

We find that the cultivated area has gone up from 52.9 to 82.3 per cent., and the culturable but uncultivated area has come down from 38.9 to 9.8, the unculturable area remaining practically the same, 7.7 per cent. The rise in cultivation therefore is measurable by 30 per cent. since that year, and considering that this tappa is very fertile and close to the borders of Tirhut, it can be safely inferred that, taking the district as a whole, the progress in reclamation of land, in the latter half of this contury, must be indicated by a still lower percentage, perhaps not more than 20 to 25. Thus in Champaran, as in other districts of North Bihar, it was in the first half of the century that agricultural development advanced with extraordinary rapidity. During the latter half it has necessarily proceeded more slowly, but progress none the less has been very considerable.

UNCULTIVATED AREA.

392. The examination of the uncultivated area in Champaran is perhaps more interesting and also more important than that of the cultivated area. The problem for the future in North Bihar, as I have said elsewhere, is how to relieve the great pressure of the population on the soil, and it is to Champaran that one's eyes naturally turn. Here the area not yet brought under cultivation is, as I have said, 632,147 acres, or 20.9 per cent. of the total. In the Sadar it is 22, but in Bettia subdivision, even excluding the uninhabited jungle, it comes to 38. Of this, the area available for cultivation is 123,900, or excluding current fallow, 115,511, that is, 18.5 per cent. I have excluded current fallow, because it is more a part of the cultivated than of the uncultivated area.

393. Adding current fallow to the cultivated area, and working out the percentage on the sum, we find 3 per cent. of the cultivated area is given rest in this district, against a little over 1 per cent. in Muzaffarpur. In the Sadar subdivision the percentage is 2, but in Bettia it is 4, suggesting that some land is left fallow more because the cultivators have a surplusage than because it requires rest.

394. The area available for cultivation is, as I have said above, 18 per cent. on the whole. In the Bettia subdivision it is much larger, viz., 24 per cent., but in the Sadar it is only 12, that is, just slightly above Muzaffarpur (10 per cent.), but though in the south of the district there may not be much room for extending cultivation, there is, I think, scope for impreving the quality of that which exists, and for rendering it more remunerative.

* 395. I have already suggested that Champaran affords a better field for the expansion of agriculture than the south Gangetic districts of Gaya and Shahabad. Though the uncultivated area in Gaya is 31 per cent., as against 30 per cent. in Champaran, yet

the cultivable area in Champaran is 18 per cent., as against 5 per cent in Gaya. Champaran is thus far superior in natural advantages except, indeed, climate.

396. Allowing for the relative unfertility of the cultivable area, I should say there is still room for the district to augment its population by 13-per cent. or, say, 2 lakhs of souls, without causing the least inconvenience to its present inhabitants, but to attract the surplus population to North Champaran, the northern part of which is liable to famine owing to a precarious rainfall and is still very unhealthy, requires special measures on the part of the administration, measures which, I believe, are on a fair road to fulfilment. The Tribeni Canal, if constructed, will place a very large area in the northern tract in a position secure from calamities of season. The country requires opening out, and the contemplated railways from Bettia to Bagaha, and from Bairagnia to the same place, via Rammagar, if constructed, are sure to give agricultural development a most marked impetus. Finally the Bettia and Rammagar estates should adopt liberal rules for the settlement of waste.

397. Passing on to the thana statistics, we find Bagaha, heading the list with a percentage of 33 for culturable area, and 14 Thena statistics. unfit for cultivation. The current fallow is also very considerable, viz., 3 per cent. As expected, Shikarpur comes next with 21, 8 and 2 per cent. respectively, with Bettin following close behind. The percentage for cultivable area, however, is below the district average in Bellia, though it is higher than in any of the remaining thanas, bringing out into clear relief that it is Bagaha and Shikarpur where the large mass of land available for cultivation is to be found. Among the Sadar thanas, the two closest to the Bettia subdivision, and also central, viz., Motihari and Gobindganj, show the largest percentages in the subdivision, both under the heads of cultivable and uncultivable areas. The high percentage of current fallow in Motihari is, perhaps, partly accounted for by the lightness of soil in its upland. The cultivable area, however, narrows as we travel southwards and also eastwards. In Kesaria it is only 10.3 against 8.4 per cent, not fit for the plough; in Dhaka it goes still lower to 9 per cent., dwindling down to 87 in Madhuban. It is noticeable that the current fallow in these two thanas contracts to the Muzaffarpur average of a little over 1 per cent. of the cultivated area. But it is in Adapur that the narrowest limits of all have been reached. All the richest soil here has been brought under cultivation, leaving only a small cultivable area of 7.2 per cent., against 6.9 not fit for cultivation, and there appears to be little room here for expansion. Only 7 per cent. of the area is current fallow, but the soil is so rich that it requires no rest. The thana figures discussed above are subjoined in a tabular form below:—

STATEMENT I.

| | | TOTAL | ABBL. | ARRA CUI | LTIVATRD. | | KCCLTI- KD, | | Petat | TA OF UNC | I ETIVATEI |) ARR4. | | |
|--------------|---|--|--|---|--|--|--|---|--------------------------------|--|------------------------------------|--|----------------------------------|----------|
| 主 | Мами от Тиана. | | | | io tota | g. 15 | to total | Current | fallow, | ther th | able area an current low, | | avallable | Remares, |
| Bertal notab | | Arten. | Square miles | A-Tres. | F-rrentage | Acres. | Percentage area. | Acres. | Principles 10 Ectal | A. C. C. | Pervetage to total | A. Tree | No. total | |
| 1 | 1 | 8 | 6 | 8 | 6 | 7 | M . | 9 | 10 | li . | 18 | 13 | 14 | 10 |
| 1 2 3 | Market. | 396,772 334,686 856,189 | 619 814 847 | 374,423 244,781 848,139 | 50.3 60.4 | 187,440 1 M,777 167,096 | 20.0 21 ii | 11,000 6,592 18,666 | 3 6 1.0 | 131,359 74,397 80 528 | 881 3110 1713 | 56,681 58,516 38,694 | 13'8 # 1 # 4 | |
| , i | Sabdivisional figures . | 1,100,900 | 1,730 | 648,743 | 6.4 | 414,236 | 37.6 | 211,1948 | 11 | 3/16,344 | 24'1 | 117,843 | 11:0 | • |
| ***** | Adapus Dhaka Molitari Goldindganj Essayia Madhulan | 714,139 185,180 183,669 174,848 | 224 236 200 25n 273 128 | 1/2,105 177,846 131,367 187,943 126,469 68,118 | 95°2 82°9 70°9 70°9 70°9 70°3 | E1,204 30,642 81,443 64,729 20,374 15,664 | 15 K 37 i 20-1 30-6 30-8 10-3 | 1,132 2,78 6,213 3,566 3,613 1,039 | 07 178 3 6 2 6 2 1 | 10, 2544 14, 457 84, 942 80, 746 18, 498 6, 784 | 7 ½ 9:0 16:7 16:5 16:3 | 9,878 15, 47 16,749 90,846 14,756 7,806 | 6'9 6 8 9'0 1''5 8'6 | |
| 1. | Subdivisional Squares | 978,545 | 2,590 | 160,936 | 7777 | 217,921 | 1173 | 20, (60) | 19 | 114,011 | 11.4 | 14,021 | 1.4 | |
| | District Aguses | 2,670,635 | 3,200 | 1,447,005 | 44 | 97,167 | 36-4 | 49,17,4 | 2.4 | 301,750 | 198 | 301,314 | 9-7 | ! |

898. I now proceed to examine in detail the nature of the area available for cultivation, and begin by bringing the figures for each than together in the following statement:—

| | 1 | | • | | | · | CULIIV | ADDE 1 | MBA (| THER ! | I MAN | CHAR | VT PAL | DOW. | |
|-----------------|------------|-----------|-------|----------|------------|---------|------------------------------|--------|------------------------------|--------|---------------------------|--------|------------------------------|----------------|-------------|
| | Naum | D# | Teas. | ٨. | Total area | OLD FAI | LLOW. | MA | ₩Ġ0 ₩Ġ0 | | ard. Andra | OTHER | TIPDS. | Tor | AL |
| | , | | | - | in scree, | Acres. | Percentage to total area. | Acres. | Percentage to total area. | Acres. | Percentage to total area. | . La | Percentage to total acre. | Agree | Present of |
| 1 | | 3 | | | 8 | • | 8 | • | 7 | • | 9 | 10 | 11 | 19 | 18 |
| 1 | Bagaha | ••• | | , | 396,973 | 79,819 | 90.1 | 4,857 | 11 | 2,609 | 0.7 | 44,484 | 11'3 | 181,889 | 85 . |
| | Shikarpur | p= | | *** | 85 5,858 | 54,431 | 15.4 | 6,171 | 17 | 11,849 | 8:3 | 1,616 | 0-5 | 74,907 | 30 |
| 3 | Bettia | | | | 350,180 | 26,746 | 10.2 | 9,858 | 2.9 | 9,134 | 3.6 | 4,564 | 1'4 | 60,683 | 17 |
| ė. ₁ | Adapur | ••• | ••• | ••• | 143,401 | 6,975 | 6.3 | 3,156 | 3.3 | 879 | 0.4 | 589 | 0.4 | 10,296 | 7 |
| 5 | Dhaka | | *** | ••• | 214,529 | 10,362 | 4'8 | 7,348 | 3.4 | 711 | 0 8 | 1,001 | 0.2 | 19,557 | • |
| • | Motihari | ••• | | ••• | 185,190 | 28,690 | 3.8.8 | 5,074 | 27 | 1,819 | 0-7 | 905 | 9-8 | 90,68 8 | 10 |
| , | Gobindganj | | ••• | ••• | 152,649 | 20,481 | 11.5 | 0,400 | 3 6 | 877 | 0.3 | 2,621 | 1.4 | 80,145 | 16 |
| • | Kounria | * ** | *** | | 174,842 | 10,760 | 0.3 | 5,028 | 2.0 | 369 | 0.3 | 1,845 | 1.0 | 18,005 | 10 |
| • | Madhuban | 141 | ••• | ••• | 78,206 | 8,964 | 419 | 2,157 | 5.8 | 314 | 0.4 | 489 | 0.6 | 6,534 | *8 |
| 1 | | | Total | ,. | 2,079,815 | 246,264 | 11.8 | 49,669 | 9'4 | 27,451 | 1.8 | 58,435 | 2.0 | 361,759 | 18 |

399. It will be noticed that old fallow covers 12 per cent. Much of it is utilised as grazing ground for cattle. It has been said in the chapter on population that the most numerous of all castes in the district is the goala, and there is plenty of land for the pasturage of cattle, of which they keep large numbers. The old fallow area is largest in Bagaba and Shikarpur, viz., 20 and 15 respectively, and to this tract goalas migrate in large numbers with their cattle every winter. Among the Sadar thanas, Motihari and Gobindganj show the highest percentages, viz., 13 and 11 respectively, but in Dhaka, Madhuban and Adapur, it falls to between 4 and 5 per cent. Kesaria, as was to be expected from its intermediate position, intervenes with a percentage of 6.

Mango groves. The district percentage is 2.4, against 3.7 of Muzaffarpur. The mango topes are of course not so numerous as in Muzaffarpur, but their number is very considerable in the Sadar thanas. In Bagaha and Shikarpur the percentage is little more than half the district average. Thana Bettia occupies an exceptional position, as it returns a greater percentage (2.8) than the district average. The Maharajas of Bettia have always evinced a keen interest in the planting of mango trees, which, according to the Hindu creed, is an act of religious merit, and their example has been freely followed by their servants and tenantry. Among the thanas in the Motihari subdivision, Adapur, the northernmost, has a percentage of mango groves lower than the average, but in all the rest it is higher, remarkably so in Dhaka and Gobindganj. Indeed, it is the abundance of these mango groves in Gobindganj which explains the keenness of the Turkaulia concern for

the record of its rights in trees. This concern had to pay a very handsome sum

to the Bai for the purchase of those rights.

The other kinds of the cultivable area need no comment beyond this, that diars lands are probably responsible for the high percentage in thank. Bagaba.

AREA UNFIT FOR CULTIVATION.

401. I now come to the details of the area not fit for cultivation. In a district with a long riparian border, and with a not-Water. work of streams, rivulets and lakes spread all over its surface, water is bound to account for the largest area of this class, and in Champaran, which completely answers to this description, the area under water in 4.6 per cent. of the total area, or 50 per cent. of that not available for tillage. The two thanas of Bagaha and Gobindganj are skirted for the entire length of one side by the Gandak, and it is but right that they should come out with the heaviest percentages under water, viz., 7 and 5.5 respectively. The Little Gandak, on the other hand, mainly traverses the thanas Shikarpur, Bettia, Motihari and Madhuban, increasing in width as it flows southwards. Consequently in Madhuban, where it is the widest, the water area is 5 per cont., and in Motihari and Bettia the percentage is a little less, viz., 4.7 and 4.8 respectively, the small portion of the Big Gandak in these thanas being supplemented by the area covered with lakes and rivulets. In Shikarpur, which is intersected by innumerable streamlets, running from the hills, the percentage is 4.5. Dhaka and Adapur, unaffected by any big river, return an area under water considerably below the average, whilst Kesaria owesfits intermediate position to the fact that the Big Gandak runs along a portion of its western boundary.

The only other noticeable item of this class is house-sites. The area returned under this head is 19,934 acres, Village sites. and dividing it by the total number of houses furnished by the census, the average size of a house in the district comes to only .066 of an acre, that is, 319 square yards, or, say, 18 linear yards each way, as against 061 of an acre, or 295 square yards, in Muzaffarpur. In the Bettia subdivision the average is still higher, '072, but in the Sadar it is '062, or about the Muzaffarpur figure. There are 15 houses and 93 persons per acre of village site in the district, against 16 and 97 respectively of Muzaffarpur, the figures for Bettia subdivision being 13 and 79 respectively. The smellest and most crowded houses are found in Madhuban, Dhaka, Adapur and Kesaria. All of these thanas are in the south and east of the Sadar subdivision, close to Muzaffarpur, except Adapur, which, for reasons given above, is as advanced, both in point of cultivation and population, as a Tirhut thana. The Motihari figure is liable to medification, owing to the houses in the urban area, which though excluded from the operations, are included in these figures. The biggest houses with the smallest number of occupants are to be met with in all the thanas of the Bettia subdivision. But the fact that the houses in the north are bigger than in the south does not argue a superior degree of prosperity. The houses in the north, though they cover a large area, are as a rule less substantially built, and more squalid than those in the south. But taking the district as a whole, that the houses are the worst in Bihar, cannot be gainsaid. Pandit Ramaballabh Misra remarks:-

"It is a matter of common notoriety that people in Bihar devote the first available surplus that they can afford, after meeting the expenses of marriage and other ceremonies, to the improvement of their houses, and nothing is considered to be a better index of a man's prosperity than the kind of accommodation he contents himself with. Indeed a Bihar raiyat, in selecting a bridegroom for his daughter, permits himself to be influenced in his choice, to not an ordinary extent, by the appearance the house of the latter presents."

This no doubt is true of Champaran as of the rest of Bihar. No people in this province are more badly housed than the Champaran people, and that their standard of comfort and prosperity is low, would from this fact alone be a just inference.

403. The details of the area unfit for cultivation, than by than, will be summary found in the following statement:—

| | | 1 | | ARBA | NOT AV | ALLAB | LR FOR | ULTIV | ATION. | | | 5 | | | | |
|---|--|---|--|----------------------------------|--|-----------------------------|--|--|--|----------------------------------|--|---|--|---------------------------------------|----------------------------------|---|
| | | | House | 917 HS. | WAT | ER. | OIRER | KIRDS, | To1 | ML. | | 9 | bouse | E | ğ | - |
| | W. and an Sec. of | ų. | • | tota | | 1 | | tota | | 3 | Poor | Pode. | * | 1 | 1 | |
| | NAME OF THAMA. | 1 0 | | 2 | | 2 | | 9 | | g. | 8 | 6 | persons | persons | T T T | |
| | | Total area in | Acre. | Percentage a.r.e. | Acres. | Priventage area. | Acces | Perventage area. | Acres. | Perrage go | Total number of | A versge size yarda. | Number of p | Number of p | Number of h | |
| 1 | • | (1) | • | . 6 | • | 7 | • | 9 | 10 | n | 1\$ | 13 | 16 | 15 | 16 | |
| | | | , | A. D. | | A. D. | | ≜ . D, | | Å. D. | | | Å. D. | | | |
| | Bazaha Shikarpur Bottja | 8149,272 854,658 350,130 | 2,710 2,007 4,260 | 0.7 0.7 1.2 | 25,008 15,468 16,672 | 6'3 4 8 4'8 | 27,863 10,043 12,708 | 7·0 2 8 3·6 | 85,081 94,518 83,094 | 14'0 8'0 9'5 | 38,088 37,429 56,506 | 344 884 864 | 5 % 5 % 5 9 | 78 81 78 | 14 14 13 | |
| | Subdivisional Agures, | 1,100,909 | 9,577 | ยา | 67,518 | 5.8 | 80,168 | 4.6 | 117,203 | 10.7 | 131,943 | 146 | 87 | 19 | 18 | |
| | Adapur Dhaha Mothari Gobindganj Kesaria Martuban | 148,401 914,528 185,180 182,080 174,948 78,206 | 1,589 2,363 1,872 1,891 1,808 814 | 11 11 10 10 10 10 | 4,113 6,523 8,743 9,023 4,711 3,839 | 29 3·2 47 40 97 | 4.176 5,371 0,134 9,678 8,837 2,528 | 2 9 8 5 3 3 5 5 4 7 8 2 | 9,878 14,647 16,740 20,886 14,766 7,205 | 6'9 6'5 9'0 11'4 8'5 | 96,049 36,784 24,449 26,795 29,857 16,820 | 2(4) 306 345 379 290 342 | 0.7 7.8 6.4 6.7 6.1 6.8 | 111 115 101 96 101 180 | 18 15 18 14 16 20 | |
| | Sadar Subd' isional | 076,846 | 10,357 | 1'1 | 37,246 | 2.8 | 30,419 | 3.7 | 84,021 | 9.6 | 165,736 | 380 | 8.9 | 106 | 16 | |
| | District figures | 2,070,815 | 19,934 | 10 | 84,794 | 46 | FG,586 | 41 | 201,314 | 97 | 207,669 | 319 | 6.3 | 98 | 18 | |

THE HARVESTS.

404. The harvests in Champaran, as elsewhere in Bihar, are three, viz., bhadai (autumn), aghani (winter), and rabi (spring). The chief crops of each harvest are as follows:—

| Harvest. | | | Crops. |
|----------|-------|-----|---|
| Bhadai | *** | ••• | Rico, makai, marua, sama, kodo, janera (masuria), |
| | | | urid, china, indigo, hemp, flax, &o., &o. |
| Aghani | • • • | | Rice, alua, janera (aghanwa), and sugarcane. |
| Rabi | *** | | Wheat, barley, oats, arhar, khesari, gram, peas, |
| | | | potutoes, masuri, jaokerao, linseed, cotton, |
| | | | mustard, poppy, tobacco, &c., &c. |

The extent and percentage of net cropped area appropriated to each harvest, the area twice cropped, the total net cropped area, and the percentage of it that is irrigated are as follows:—

| Manager and and an and an an an an an an an an an an an an an | L Xinnan | | ar u ur j | | | in a se señese serve | <u> </u> | | === |
|---|--|-------------------|--|-------------------|--|----------------------|---------------------------------|---------------------|-----------------------|
| Вил | DAI. | Aon | IANI, | RA | bf. | TWICE | ROPPEJ. | paddo | ā |
| ≜res. | Percentage of net cropped area, | Area. | Pere ninge of net eropped area. | Area. | Percentage of net cropped area. | Area. | Parcentage of net oropped area. | Net G | Irrigated centage. |
| 1 | 1 | 8 | • | 8 | • | 7 | • | , | 10 |
| Acres. 664,487 | 46 | Acres. 536,879 | 38 | Ac cs. 790,422 | 35 | Acres. 873,670 | 20 | Amres. 1,447,668 | |
| | | | | | | | 1 | | } |

The relative importance of the three harvests. Champaran compared with neighbouring districts

These percentages, at first sight, might encourage the supposition that Champaran is a great rabi-producing area like the south part of Tirhut bordering on the Ganges. But this is far from the truth. Much of the rabi area is covered with gram, khesari and other cheap crops, such as only

the poorest will eat. It will therefore be necessary to examine the figures in further detail in order to arrive at a just idea of the district's agricultural

vith those returned by some neighbouring districts may not be without interest:—

| | | | PRI GEG | | 844 | DAI. | Aou | ANI. | RA | | Tw | ICR . | CLERI I | • | |
|----------------|--|---|---|----------------------|---------------------------------------|------------------------------------|--|----------------------|---|------------------------------------|---------------------------------------|-------------------|-----------------------------|---------------|----------|
| Beriel number. | NAME OF DISTRICT. | Total area in scree for which statis- tics were pro- pared. | Ares to sores. | Perrentage of total | Arres in serves. | Percertage of not cropped area. | Arre to acree. | Perrentage of net | ires in series. | Percentage of per crapped area. | Ares in scree. | ercentace of ner. | me is seen. | cropped area. | LIEARIA. |
| -1 | 1 h | | 4 | 8 | 6 | 7 | В | 9 | 10 | 11 | 12 | •13 | 14 | 18 | 10 |
| 1 2 2 | Champaran Mrasharper Gaya Worth Monghyr | 1,079,815 1,941,954 872,546 80,360 | 1,647,698 1,638,391 366,786 84,410 | 70 84 66 80 | 464,457 874,664 15,248 8,938 | 46 81 6 87 | 886,279 747,634 134,252 8,031 | 3A 4H 64 33 | 7.49,633 930,033 180,32 18,328 | 63 60 61 61 | 872,470 723,048 63,120 4,912 | 46 | 87,820 34,838 187,034 | 1 | |

406. Gaya is largely a one-cropped district, and for its one crop depends mainly on artificial irrigation. The conditions of North Monghyr and Muzaffarpur are probably more similar than these figures would show. The North Monghyr statistics are for the Narhan estate only. The bhadai area in Champaran is very much greater than in Muzaffarpur, while the aghani area is smaller. Yet a local observer would say, without hesitation, that Champaran is more distinctively a rice-growing district than Muzaffarpur. The explanation is that Champaran, being much exposed to inundation, grows much of its paddy as an autumn crop, and this accounts for the large area devoted to this harvest. The area under rabi and twice cropped is considerably less in Champaran than in Muzaffarpur, and at the same time it is less remunerative.

407. For the Champaran district taken alone the statistics of the relative The relative importance of the importance of the different harvests and of irrigation are, thank of Chemparan.

| CHARLE. | | | NET CRO | | Вил | DAI. | Agu | NI. | RA | rangeri (e) 147. | 1 | | I BRIGATI TAOLNAL | | |
|-----------------|---|---|---|----------------------------------|--|----------------------------|--|----------------------------------|---|----------------------------------|---|--|-------------------------------|-------------------|---------|
| Ber is! number. | Name of Traba. | Total area in arra | Астев. | Perrentage to fotal | Arra | Percentage to net | Arm | Penentian to net | 4 rea. | Premies to act | 4.4 | Percentage to ner | Loren. | Percentage to net | brazes. |
| i | 1 | 3 | • | 6 | • | 7 | 8 | y | 10 | u | 15 | 18 | 14 | 16 | 16 |
| 1 9 | Begalia Shikarpur Settia | \$76,272 \$54,554 \$50,139 | 198,423 244,741 243,130 | \$0 09 60 | 86,010 84,461 120,621 | 48 46 60 | 76,102 121,665 95,072 | 88 50 34 | 106 893 181,494 186,744 | 84 84 81 | UB (H18 14,711 UB, F12 | 3.5 319 781 | 7,002 11,946 602 | .: | |
| | Total Bettis Subdivision | 1,160,940 | (195.743) | 61 | 201,102 | 4: | tire, bg i | 43 | 802,776 | | 839,VA) | 3N | in, Nen | 3 | |
| | Adapur Dhaita Golfadgaqi Ecsaria Madhuban | 148,401 314,529 185,140 152,683 174,843 78,296 | 127,193 177,644 181,787 127,968 186,468 63,118 | 85 83 71 70 79 81 | (8,367 90,369 82,716 67,156 66,410 86,427 | 5% 48 48 62 48 | 41,428 94,178 83,817 45,671 40,453 23,298 | 40 26 26 34 34 37 | 78,626 115,420 63,640 68,646 60,813 37,044 | 64 64 63 50 46 60 | 70,841 85,915 47,892 48,124 31,909 28,5 by | 87 48 86 86 85 28 87 | 6,916 2,942 1,946 37 | 1 | |
| | Tetal Sadar Subdivision | 978,846 | 760,925 | 78 | 875,346 | 41 | 303,422 | 36 | 436,947 | 107 | 3 2,6HB | 41 | 9,001 | 1 | |
| 1 | Grand Total | \$,079,A15 | 1,417,760 | 79 | 604,437 | 46 | 850,879 | 34 | 71/0,629 | 68 | 678,676 | 40 | 97,820 | 3 | |

The two subdivisions compared.

able. Bettia has 42 per cent. under bhadai, the Sadar 49 per cent. Under winter crops, Bettia has 43 per cent., while the Sadar has only 35 per cent.; but under rabi, on the other hand, the Sadar has 57 per cent., against Bettia's 53 per cent., and the twice-cropped area in the Sadar is consequently greater than in Bettia. The irrigated area in Bettia subdivision is nearly 3 per cent, as against only 1 per cent in the Sadar. The aghani harvest consists mainly, of course, of winter rice. It follows, then, that winter rice is a more predominating crop in the Bettia than in the Sadar subdivision. A similar distinction has been noticed between the northern half and the southern half of Muzaffarpur; but there is this difference, that while, in South Muzaffarpur, the large bhadai area

is occupied largely by maize, &c., valuable crops themselves, which form the first crops to the better class of rabi crops, in South Champaran the predominating bhadai area is largely covered with autumn rice, the second exepto which is often of an inferior class. Thus, to gain a clear idea of their respective resourcefulness in the face of adverse seasons, it will be necessary to compare the relative rice areas of the two districts irrespective of harvests.

409. A glance at the detailed than statement will show that Adapur, with 54 per cent., and Gobindgan, with 52 per cent. of net cropped area under bhadai, show a very marked predominance of autumn crops.

pur's chief autumn crop is early rice. Gobindgan has considerable upland, at the same time land subject to invedetion centry in the sense. Retting

Adapur's chief autumn crop is early rice. Gobindganj has considerable upland, and at the same time land subject to inundation early in the season. Bettia, which also contains considerable upland, comes next. Then Dhaka, with 49 per cent, under bhadai, consisting mainly of early rice on the portion of it bordering on Adapur. It is noticeable that the bhadai area is only 40 per cent, of the net cropped area in Madhuban, whereas it is 43 per cent, in Bagaha. Madhuban, bordering on Tirhut, has little land exposed to early inundation, while the southern portion of Bagaha contains much diara where bhadai crops are grown. In the northern half of Bagaha, there are practically no autumn crops, and its conditions approximate to those of Shikarpur, which returns only 35 per cent, under this head.

Turning to the proportion of net cropped area under aghani, we find the above position largely reversed. Shikarpur Winter harvest. heads the list with 50 per cent., and that Adapur does not end it, shows how remarkably fertile that thana is. contrary we find Adapur, in spite of its large bhadui area follows Shikarpur with 40 per cent., or 2 per cent. above the district average, under aghani. reference to the contrast between the agricultural conditions in Shikarpur and Adapur, Mr. Kerr writes: -" The importance of this contrast lies in the fact that it is well known that Shikarpur is the area in the district most liable to famine, while Adapur is always the least affected. Shikarpur, with its dependence on the aghani harvest, feels at once the least failure of rainfall, and has no rabi crops of any value to look forward to to help it to tide through the year following a short aghani harvest; whereas, in Adapur, the rich bhadai crop is reaped at the beginning of September, so that, even if the hathiya rains fail, it is no great matter while there is always the prospect of a good rabi crop on the high bhadai land later on. In the recent famine, Shikarpur was the thana first and most severely affected, and relief had to be continued there long after it had been closed in other parts. Adapur, on the other hand, was only comparatively slightly affected, so far as the cultivators were concerned, and in many parts of it very little relief had to be given." After Adapur, Bettia and Bagaha return the largest percentage. The Bettia subdivision is considerably larger than the Sadar subdivision, and its three thanas, if we ignore Adapur, contain the highest percentage under aghani, indicating the extent to which the northern half of this district is dependent on its rice crop. Adapur, too, belongs to the same physical division. In Dhaka, Kesaria and Madhuban the proportion of area under aghani is much the same, viz., about 36 per cent., and Gobindganj, with 2 per cent. less, has the smallest area but one. under aghani, having been shown to have the largest area but one under bhadai. Motihari thana, with only 25 per cent. of its net cropped area covered by aghani crops, closes the list. Gobindganj has a large area under winter rice in the chaurs near Arcraj. Motihari is almost entirely upland.

Spring harvest. a kind is usually grown on winter rice land, but it is of a very poor kind. No man in his senses would grow wheat in a field from which he has cropped paddy. In short, it is the quality of the rabi grown, not its quantity, that has to be considered. Nevertheless the Sadar subdivision, in which alone are valuable rabi crops cultivated to any extent, returns a larger percentage of area under them than the Bettia subdivision. Needless to say, Adapur, with so large a percentage of area under bhadai and aghani, heads the list with 64 per cent. of its area under rabi, and so much as 57 per cent. of

its area twice cropped. This extraordinarily fertile tract has been reclaimed quite within modern times. Dhaka and Motihari come next with 1 per cent. less under rabi, and Madhuhan fourth, with 60 per cent. of its net cropped area so occupied. That the three thanas of the Bettia subdivision should return a larger-srea under rabi than Gobindganj and Kesaria, confirms what I have said that mere quantity is little index of the wealth derivable from this harvest, and the same remark necessarily applies to the proportion of net cropped area which is returned as twice cropped.

412. On the subject of irrigation a few remarks are required. It is so little practised that it is unimportant. No area at Irrigation. all was returned for Kesaria as under irrigation. Since the field survey is done in the cold weather, there is always a danger of the irrigated area, except in tracts that are essentially rati-growing, being There is no doubt some irrigated area in Kesaria, and probably more in Madhuban and Gobindganj than has been stated, but it can be taken as cortain that the area is in reality very trifling. Over 41 per cent. is returned as irrigated in Shikarpur, and over 31 per cent. in Bagaha. Both these thanas are irrigated by damming the numerous hill-streams that intersect them, and I expect much more could be done in this respect were the people more self reliant and intelligent, and the landowners more alive to their common interests. In Shikarpur there is a small canal, constructed from the Pandei river by the Sathi factory, but mainly for its own use. Adapur returns 4 per cent. under irrigation. Here, again, there are not only hill-streams, but also the only Government canal in the district—the Tiar canal—yet a thorough system of irrigation is lacking. Babu Hem Chander Chatterjee, Assistant Settlement Officer, who worked in the thana observed :-

"With numerous rivers in the tract, the fields could have been, with little expense irrigated, but the people are very apathetic towards irrigation. They do not take the least care in irrigating fields other than those reserved for poppy cultivation."

THE CROPS.

413. Food crops.—The crops are of two main classes—food crops and nonfood crops. So much as 24 per cent. of the net cropped area bears non-food crops. Sir A. P. MacDonnell, in his food-grain supply, estimated the proportion at 8 per cent only. Among the food crops, rice of course occupies the most prominent position. It is grown on 782,661 Rice. acres, or 54 per cent. of the area under cultivation. The way in which it is used as food is too well known to need repetition. boiled bhat, fried murhi and parched chura it is taken here as everywhere else, and for the worship of the gods, rice, as akshala, is indispensable. The Tharus, however, still use it largely for barter also. Rice is almost the only crop they grow, and, as they are without currency, it is customary in Tharu-hat to see rice given in exchange for fish and vegetables; and through ignorance of its money value, the value given is generally very excessive. Slowly, however, they are learning to appreciate the advantages of cash. The Tharus also use rice for making an intoxicating liquor, which is largely drunk on the occasion of marriages and other joyous ceremonies. The number of varieties of paddy grown here, as in the rest of North Bihar, is legion.
414. The next largest percentage is returned by food grains of minor im-

Other food-grains, including portance, clubbed together in one column as "Other food-grains, including portance, clubbed together in one column as "Other food-grains, including pulses," but excluding rice, wheat, barley, marua, makai and gram. Most noticeable among them is the khesari, often grown as second crop to rice. Kodo comes next in the group, accounting alone for no less than 7 per cent. of the net cropped area. It is eaten here, as in Gaya, as boiled bhat; but in Champaran it is also often ground to flour and made into bread. Arhar, which is also used as dal, is another important crop in this group. How important, only those who saw it during the famine year of 1897, a flourishing crop, when all others were parched and dying, can fully appreciate. It does not require irrigation, but is benefited by showers of rain in the cold weather.

China is another variety which attracted a good deal of attention the late famine, owing to its being the crop, above all others, which can raised in the shortest time, namely, six weeks. Its grain is fried and then eaten, under the name of marha. It is much used both by the rich and the paor. In marriage and sradh ceremonies especially, marha, mixed with curds, is served out to the servants, palki-bearers and other followers.

Sawan also deserves a passing notice. It is cleaned, boiled and eaten as rice. Sometimes it is boiled in milk, and a little sugar being added, forms one of the daintiest dishes of the poor. When so prepared it is called khir. The other minor crops of this group, viz., peas, oats, masuri, keoni, kurthi, are mainly grown along with other crops for the subsistence of the poor. They are grown

to a small extent only.

415. The single crop most extensively grown after rice is barley. It covers nearly 15 per cent. of the net cropped area. It is very generally consumed, and is taken either as fried bhanja, or broad, or as flour (satu), mixed with water and a little salt. Barley satu is much appreciated even by those natives of Bihar who can afford

more expensive food. After barley comes makes (maize or Indian-corn), covering 8-28 per cent. of the area under cultivation. It is very extensively grown in the south, as I shall show hereafter, but its rareness in the north has kept down the district average. Makai is in the south of the district one of the chief staple food-crops of the poor, and even those who can afford three meals usually take it in some form or other. It is used fried for breakfast, boiled as bhat for dinner, and as bread for supper. It keeps the raiyat going usually for at least four months in the year. When still only half ripe, it is rubbed with oil and lemon, sprinkled with salt and pepper, and after being slightly fried, is eaten by the well-to-do with much relish.

Wheat, gram, marua, &c. of all rabi food-crops. So highly is it esteemed, that it is called "Devanna," or the food of the gods. The poor agriculturist, however, grows it only for sale, as he cannot afford to consume it. Gram covers $2\frac{1}{2}$ per cent. only of the cultivated area. It is used as satu, and also as fodder (dana) for horses. It is often eaten when still unripe, and its leaves are used as a sag. As dâl it is prominent on ceremonial occasions, and as flour (besan) it is largely used in Indian cookery. The area under marua in this district (1.20 per cent.) is small; so, too, is that under yams and potatoes (1.67 per cent.) Alua and suthni are grown mainly on the banks of the Sikrahua river in the south of the district, and are eaten chiefly by the poor.

417. Non-food crops.—Coming now to non-food crops, indigo accounts for 6:63 per cent. of the area under cultivation. It will be discussed in a separate chapter. It is closely followed by oil-seeds (6:49), a chief source of income to the agriculturists of the district, and of a brisk export trade. The other single non food crop of great importance and value is opium, occupying 3:7 per cent.

Opum. of the net cropped area. Wheat among food crops, and opium among non-food, are the two great rivals of indigo, and I shall discuss, in speaking of indigo, their relative advantages and disadvantages from the raivats' point of view.

418. Miscellaneous non-food crops—All other non-food crops for which separate returns have been prepared are each below 1 per cent., but among them sugar is the most prominent, with a percentage of 77. It is largely grown in only one thana, Bigaha, where its cultivation has been found to be a profitable undertaking. Fibres, garden produce and tobacco are all of small importance in this district.

Of the miscellaneous non-food crops that account for 6:12 per cent. of the Thatching grass area under cultivation, kharaul, or thatching grass, is of course by far the most important, particularly in the northern thanas, for it grows naturally on land left continuously fallow for some years, and in those thanas much of the land has not hitherto even been reclaimed. In point of fact, too, thatching grass is more valuable to the cultivator than inferior crops requiring more trouble to raise.

Tabulated scale of percentages of fued said non-food crops in this district are here brought together for convenience of reference:—

Food crops.

| • | Non-food orops. Non-food orops. Non-food orops. Total Total 24 Grand Total 135 Deduct twice cropped 36 | | | |
|---|--|--|----------------|---------------------------------------|
| Name of crop. | | | 1 | Percentage to net eropped area. |
| Rice | ••• | *** | ••• | 54.06 |
| Barley | *** | *** | ••• | 14.79 |
| M aise | ••• | • | | 8.28 |
| Kodo | *** | ••• | • | 7.75 |
| Wheat | *** | ••• | ••• | 7 27 |
| Gram | *** | ••• | ••• | 2.57 |
| Root crops | *** | ••• | ••• | 1.67 |
| Marua | Non-food crops. | | | |
| Others | ••• | Total 6-63 6-49 6-69 6- | 17:07 | |
| Barley Maise Kodo Wheat Gram Root crops Marua Others Total Non-food crops Indigo Oil-seeds Kharaul Opium Sugar Fibres Tobacco Others, including other dyes Total | Total | ••• | 114.66 | |
| Indian | · | | | ผสต |
| 4- | | | | |
| Rice | | | | |
| | | | | |
| _ | Non-food crops. S-68 Non-food crops. S-68 Non-food crops. S-68 Non-food crops. S-68 Non-food crops. S-68 S-77 S | | | |
| - | | | | |
| Tobacco | | 0.17 | | |
| Others, includi | ng other dyes | • • | net cropy area | |
| | | Total | | 24.90 |
| | GRAND T | COLAL | | 139.56 |
| De | educt twice or | pped | | 39-56 |
| | | Total | | 100. |

The stops in 1847.

The stops in 1847.

The Revenue Surveyor writing in the middle of the century gave the following enumeration:—

[&]quot;The harvests are bhadai, kharif (aghani) and rabi, and the principal crops are paddy of various qualities, wheat, barley, poppy, indigo, arhar, maarh, maize, vetches and pease, oil-seeds and a variety of edible crops. The staples are, however, rice, poppy and indigo."

Relative importance of the chief food crops in the districts of Champaran, Musaffarfood crops in Champaran and neighbouring districts compared.

Honghyr, as compiled from cadastral records:

Food crops.

| | | | Ric | n . | Wur | AT. | Barl | MY. • | MART | 7 A. | Mar | ч. | GEA | K. |
|----------------------------|--|---|--|--|--|---|--|---|--|--|---|--|--|--|
| Ni mber. | Name of District. | Total area. | Are. | Percentage to net cropped area. | Area. | Perventage to net cropped area. | Arra | Percentage to net cropped area. | Area. | Percentuge to not cropped area. | Ara | Percentage to net erosped area. | Are. | Permettings to and propped area. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 8 | 0 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 19 | 13 | 34 | 16 |
| 1 2 3 4 5 7 | Champaran Bluzaffarpur Gorskhpur Azingarii Ballia Gorsky North Monghyr | 1,941,254 2,931,951 1,376,288 788,802 972,408 | Acres. 782,661 767,709 978,043 332,481 124,000 120,852 6,130 | 54 1 49 4 49 2 41 1 23 8 44 9 25 1 | Acres. 105,265 69,720 211,211 35,467 23,213 20,157 629 | 7'3 45 106 4'1 45 8'2 2'6 | Acres. #14,000 206,690 256,907 165,397 88,681 11,207 E,470 | 15'8 19'1 12'0 20'8 17'0 4'5 10'8 | Acres. 17,385 82,450 46,903 81,188 9,944 4,842 2,680 | 1 2 5 8 8 8 8 6 1 0 2 0 | Acres. 119,848 163,759 104,071 21,086 49,504 3,679 1,540 | 8:3 10:5 5:2 2:7 8:6 1:5 6:8 | Asres. 87,141 45,848 145,778 45,004 65,329 50,848),966 | 9.6 7.4 5.4 19.1 19.4 5.9 |

| ,, | \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ | OTHER P ORAINS, INC PUINE | LUDING | MINCRELA FOOD, 8 p AND POL | EP AT | Total Croi | | TOTAL TOOL C | | | Twick C | op ynd. | NET CE | |
|-----------------------|---------------------------------------|---|---|---|----------------|---|--|--|---|---|--|--|--|--|
| Sumber | NAME OF DISTRICT. | Area. | Percentage to net crofted area. | APP. | Perionaget net | Area. | Penentage to total | J778. | Percentage to total | Total cropped area. | Area. | Percentage to net oropped area. | Årea. | Percentage to total arra of district. |
| - | | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 20 | 23 | 24 | 28 | 98 | 27 | 28 |
| 1 2 3 4 5 | Champeran | Acres. 059,598 614,493 687,089 953,492 240,303 80,793 7,100 | 24 8 -8 1 -20 5 -81 3 -46 7 -80 7 -20 0 | Acres. 94,102 77,768 7,517 640 882 460 1,682 | 5.0 | Acres, 1,050,850 9,010,317 2,3 47,500 482,205 506,312 272,248 23,304 | H2'2 HH 5 HK 6 K7 6 H1'4 H0'H 70 7 | %cres. 380, 479 261, 986 301, 936 123, 323 5) 362 27, 013 5, 929 | 17'8 11'5 11'4 12'4 12'4 9'2 20'2 | Acres, 2,020,334 9,278,313 2,638,486 1,007,529 052,37,4 203,561 29,328 | Acrea. 572,070 723,022 550,861 199,195 133,019 53,127 4,913 | 89°0 40°6 87°4 24°0 23°6 21°8 20°1 | Acres. 1,447,008 1,585,271 1,988,516 808,338 619 E55 240,744 84,410 | 69:6 60:1 67:8 59:7 63:8 66:5 80:4 |

422. The most noticeable feature of this statement is that Champaran shows much the smallest proportion of its area under food crops. Monghyr is an exception, but the Monghyr figures are for a very limited area in which there is much indigo. When the whole area of Monghyr north of the Ganges is surveyed, it will probably furnish results very similar to those of Muzaffarpur. Among food crops, again, the enermous area in Champaran under rice is most noticeable. With 54 per cent, under this crop, its percentage is nearly 5 above that of the next districts, Muzaffarpur, Gorakhpur and Gaya. It is 13 per cent, greater than the rice area in Azimgarh and nearly $2\frac{1}{4}$ times that of Ballia.

423. With so large an area under rice, the areas under other crops must necessarily suffer a reduction. Thus the proportion of cultivated area under "Other food-grains, including pulses," under marua and under gram are smaller in Champaran than elsewhere, but in respect of barley, makai and wheat this district will hold its own. In the extent of its area under barley it is inferior to Azimgarh, Muzaffarpur and Ballia, but ahead of the other five districts. In wheat it comes third after Gorakhpur and Gaya, and in makai it beats all the districts except Muzaffarpur only, where the maize area is 2 per cent. greater.

424. But the most prominent feature of these statistics still remains the vast rice area in Champaran. Wast extent of the Champaran rice area. Mr. D. J. Macpherson, in his famine report, 1897, wrote as follows:—

"In this connection I may remark that the area under rice in the Champaran district alone is nearly one tenth of the total rice area of the 49 districts forming the North-Western

Provinces and Oudh. Even in districts nearest Bihar, where rice is most important, that crop comples only 36 per cent of the food-crop area, and in the rest of the North-Western Provinces and Oudh only 19 per cent. The gravity of a failure of the rice crop in Champaran is sufficiently apparent from these remarks."

Extent of non-food crops in Champaran and neighbouring districts compared. 425. Comparative statistics in respect of the area under non-food crops are furnished below:—

Non-food orops.

| 1 | | | and Carlotte — | | | i | | | | DYT | 8. | ~ ·· |
|---|--|--|--|-----------------------------------|---|---------------------------------------|--|--|---|------------------------------------|-----------------------------|-----------------|
| | | 100 | NBT GROV | TED | OIL-SRI | EDS. | 800 | AR. | txuia | 10. | Оти | IBU. |
| | NAME OF DISTRICT. | Total area of the district. | Arra. | Percentage to dis- trict area. | Sree. | Perception to not crupped area. | Area. | Persentian to net empodures. | ŧ | Percentage to Bet cropped area. | 1 | Pricepast ares. |
| | 3 | 3 | • | 6 | 8 | 7 | 8 | 0 | 10 | 11 | 19 | 18 |
| | Champeran Husaffarpur Gorakhpur Azingarh Ballia Gaya North Monghyr | 2,079,815 1,941,854 9,931,951 137,088 784,902 572,404 50,359 | 1,447,469 1,550,201 1,009,18 68,233 510,255 244,734 24,410 | 70 84 89 80 80 70 | 98,958 64,841 187,843 1,847 15,640 473 | 676 779 04 076 076 078 | 11,15h H.76h 70,492 71,417 30,171 5,031 | 0°8 0 6 8°8 9 5 7 5 2'0 | 95,070 67,256 16,125 38,231 47,6 1 | 0'8 0'8 4'0 4'0 0'1 | 1.796 950 7,678 25 | |

| | • | OFIT | w. | Товы | ocu, | Pini | R ∰. ∰. | GARDE DUK ORCH. ORUB. MAR ORON | AND ARDM THAN OO | Oini | KBS. | Tota | , Lo |
|---|--|---|------------------------------------|--|-------------------------------------|---|---|---|---|---|--|---|----------------------------|
| | NAME OF DISTRICT. | Area. | Percentage to ner en-oped area. | 172. | Percentage to net cropped area. | .s.r.s. | Purentyge to net errpped area. | 1.1 | Permitter to net | Ars. | Percentage to net | New-find empress | Percentage to net |
| ! | B | . 14 | 15 | 10 | 17 |) N | 19 | ŽU. | 21 - | 22 | 23 | 24 | 91 |
| | Champaran Musaffarpur Gorakhpur Asingaph Ballia Musa North Mongbyr | 55,594 11,179 18,555 6,440 4,866 6,003 | 87 68 08 06 09 26 | 2 458 17,488 295 420 819 1 536 | 0 17 1/12 /01 0/05 0 08 | 6,687 5,982 1 641 696 1,367 213 134 | 0 64 44 493 164 127 104 158 | 8. 987 8.398 40 973 3.776 7.601 679 121 | 0'4 0 5 0 7 0 6 1 5 0'4 0'5 | 85 084 65 065 10 147 1,367 630 36 2,254 | 6 1 478 6 6 073 073 074 | 260 170 251 266 201 256 122 328 53,998 27,713 5,920 | 2 1 1 1 1 1 |

under non-food crops must be considered, especially as it indicates what we know to be a fact, viz., that the pressure of population on the soil is light. With 6.6 per cent. of its cropped area under indigo, Champaran is one per cent. ahead of even Muzaffarpur. With respect to oil seeds, again, Champaran takes a foremost place, being second only to Gorakhpur, and with a percentage nearly double that of Muzaffarpur. Indeed, there is a very brisk export trade in oil-seeds from Champaran. In opium Champaran is head of the list with 3.7 per cent., being one per cent. greater even than Gaya; Muzaffarpur, Gorakhpur, Ballia, and Azamgarh all have less than one per cent. under this crop. Champaran, on the other hand, is the country where the opium crop is cultivated with the least care, and consequently gives a small outturn. There is little tobacco here, though more than in the North-Western Provinces districts, but in respect of sugarcane it is far behind them. Indeed, the extent of sugarcane in Muzaffarpur and Champaran is very insignificant.

Thana statistics of food-crops.

Thana statistics of food-crops thana by thana and subdivision by subdivision.

A statement of the areas and percentages of the important food crops thana by thana is subjoined:—

| | • | | | Ric | ` I. | | | WED | LT. | Bari | gy. | MARC | ۵. | MAISE | . |
|-------------------------------|--|---|-------------------------------|--|------------------------------------|---|------------------------------------|--|-----------------------------|---|----------------------------------|--|-----------------------------|---|----------|
| | | Bhud | lai. | Agba | ni. | Tole | ı. ¦ | | ž | | Ē | | 1 | | 1 |
| NAME OF THANA | Total area in acres. | Area. | Percentage to net | 4.78 | Percentage to net cropped area. | Jre. | Percentage to net cropped area. | Area | Perrentage to tropped area. | Arre | Perrentage to cropped area. | Area | Percentage to eropped area. | • | e Hill |
| , 2 | 8 | • | 5 | 0 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 13 | 13 | 34 | 15 | 16 | i |
| Bagaha Bhikarpur Bettia | 396,372 364,558 360,130 | 41,003 73,181 20,677 | 15 20 81 | 70,528 121,550 82,030 | 35 50 36 | 111,526 194,710 11×,007 | 58 140 40 | 10,776 19,865 23,734 | 8 8 10 | 24,801 14,169 30,036 | 19 6 12 | 1, 409 1,667 4,887 | 6-7 6-3 1-9 | 97,968 \$ 3,168 \$2,887 | |
| Subdivisional figur | 1,100,009 | 148,711 | 21 | 251,123 | 41 | 421,833 | 8: | 54,079 | 8 | 69,900 | 10 | 7,049 | 17 | 41,445 | - |
| 4 | 1 43,401 211,678 186,140 187,689 174,842 78,266 | 54,790 30,051 36,114 5,844 1,079 2,085 | 45 21 12 3 1 3 | 48,349 63,383 31,105 41,503 43,121 15,218 | 40 35 24 37 81 29 | 103,130 to 153 46,216 45,311 41,100 20,363 | 55 55 35 35 31 32 | 6,407 8,648 0,063 10,169 12,162 8,654 | 8 7 D 9 | 24,1499 37,972 32,867 20,166 18,687 11,719 | 20 21 28 28 16 13 | 2,374 4,465 627 863 1,017 216 | 3.5 6.5 0.7 0.7 | 1,420 9,599 19,566 18,765 20,477 5,608 | |
| Badar Bubdivision | 078,846 | 112,000 | 15 | 284,464 | 32 | 367 R2H | 47 | 61,148 | 7 | 145,106 | 19 | 9,598 | 13 | 71,498 | |
| 50,000 | 2,079,615 | 286,671 | 18 | 525,990 | 31 | 782,161 | 84 1 | 1: 5,265 | 7 | 214,090 | 11 | 17,3% | 1.5 | 719,86s | |

| | | Сівд | AM. | Kobo | ο, | OLURN ORALS CICDI TCL31 | ON. | MINCE OF M S AND AND AND | RMAY RMAY | TOTAL PO | | Tore Rossec | 147 D | | Twic |) kd. * | NET CHO | | |
|------------|--|--|----------------------------------|---|----------------------|--|----------------------------|---|----------------------------|--|----------------------------|---|--|--|---|---|--|-------------------|--------|
| L' romber. | Name of there. | | reportante to net | ę | Free spieces for met | ŧ | Trient'sage to net | 177 | .obt.gr (0 met | | rentage to total | | rentage to total | al cropped area. | | Percentage to net oropped area. | | tries total aren. | EARIN. |
| T. O | | 18 | 19 | S Area | *1 : | | 2.1 | 21 | 25 | 26 | 97 | 28 | A Pro- | 20 T | 31 | 31 | 23 | ₹2 84 | ** |
| 1 2 3 | Ragaha Shikarpur Bhikarpur Bettiu | 9,874 13,871 1,413 | 1.8 0.0 | 15,017 3 0°7 17,301 | 5 | 12 444 34.654 44,648 | 11 | 974 974 3,080 | | 991,009 04, 719 270,022 | 84 84 08 | 44,735 33,793 64,419 | 16.1 | 948 731 339,559 339,541 | 67,968 94 771 95,365 | 36 30 39 | 109,883 544,781 943,180 | era | |
| | Buhdivisional figures | 80,401 | 30 | 85,044 | 5 | 111 titur | 16 | 5 404 | 0.8 | 7,7,714 | h# | 168,950 | 18.0 | 146,725 | 259,981 | 339 | 694,748 | 41 | |
| | Adapur Dhaka Uhaka (iobindganj Kearia Madhuban | 8 684 7,858 8,164 120 380 120 | 47 44 10 61 03 03 | 15,313 14,754 20,524 19,036 6,911 | 11 16 16 18 | 24 7 99 85 1943 22 047 16,899 18 057 16 928 | 26 10 17 13 13 | 293 1 63a 2 330 2, 192 6,740 3,193 | 0% 1% 17 49 97 | 170,214 290,192 142,63 130,510 140,914 71,850 | 55 83 80 79 83 | 2.; 210 43, 5.40 36, 648 39, 969 34, 762 14, 707 | 12'0 17'0 20'0 22'0 21'0 17'0 | 102, 634 203, 761 178, 994 174 687 177, 478 68, 687 | (h), 341 85, 915 47, 068 46, 194 89, 208 23, 830 | 17 46 36 36 36 37 37 37 37 37 37 37 37 37 37 37 37 37 | 121,198 177,946 381,337 127,963 128,448 \$3,118 | SERVE | , |
| | Sadar Subdivisional | 10,297 | 3.1 | 76,914 | 10 | (35,865 | 18 | 18,343 | 24 | 892,088 | KB. | 191,529 | 150 | 1.078,614 | 518,000 | 41 | 700,925 | 78 | |
| | District total | 97,161 | 5.0 | 112,803 | 8 | 347,025 | 17 | 74,162 | 17 | 1,180,850 | 89 | 360,479 | 18.0 | 2,020,386 | 579,678 | 40 | 1,647,669 | 10 | |

The rice area. food crops in the two subdivisions. Indigo and opium, the most prominent non-food crops, are grown mainly in the Sadar subdivision, but it will be seen later that this is counteracted by the larger proportion of area in the north under oil-seeds and thatching grass. But among the food-crops, with which we are now concerned, the percentage of area under rice in Bettia subdivision is found to be 62 per cent., while in the Sadar it is only 49 per cent., though among thanas it is Adapur that takes the lead with the magnificent return of 84 per cent. of its net cropped area under rice. Physically this thana, as has been said, is on the north side of the Sikrahna, and assimilates in character to the thanas of the Bettia subdivision. After Adapur comes Shikarpur with nearly 80 per cent. under rice,

then Bagaha with 56 per cent., and next Dhaka, which is similar in some

respects to Adapur, with one per cent. less.

429. It is undoubtedly a defect in the present form of crop statement, from the point of view of practical administration, that columns are not provided for the separate entry of autumn and winter rice. In Champaran, when the statistics were compiled, the two kinds were amalgamated, but an attempt has been made to divide them. The aghani area is mainly winter rice. Deducting the area of the other aghani crops as far as is known (for some of the more unimportant fall under miscellaneous heads) from the total aghani area, we are left with the area of winter rice, which, on being deducted from the total area under rice, gives the area under autumn rice. This process gives results that are fairly accurate and of great interest.

430. Adapur returns 45 per cent. of its cultivated area as bhadai. rice and 40 per cent. only as aghani. Shikarpur returns the next largest percentage under bhadai, viz., 30 per cent., but its aghani area is 50 per cent. Dhaka and Bagaha return about 20 per cent. under bhadai each and 35 per cent. under aghani. In Bettia, the percentages are 12 and 36. In the southern thanas, the percentage under bhadai rice is inconsiderable. Thus, in the first five thanas corresponding with what is the essentially rice-growing tract in this district, over one-third of the rice is autumn rice, an important fact which, I venture to think, is often not fully realised. As we go from west to east in this tract,

we find aghani rice less and less in favour.

Barley.

This might have been expected; also that Motihari with so small an area under rice would be the individual thana with the largest area under barley (25 per cent.). Dhaka and Adapur with their large bhadai areas come second and third on the list, with 21 and 20 per cent., respectively, then follow Madhuban, Gobindganj, and Kesaria. The last-named returns 13 per cent. only but even so, a higher percentage than any of the three Bettia thanas. Shikarpur has less than 8 per cent. under barley.

Maize.

Sadar subdivision, and here Kesaria heads the list with 14.8 per cent., followed by Gobindganj (14.7 per cent.) and Madhuban (13.6 per cent.). In Shikarpur and Adapur, the thansa with so large an area under autumn rice, the area under maize is quite insignificant. It is higher in Dhaka (5.4 per cent). Motihari, with less than 10 per cent., returns a remarkably small area under this crop, but it grows a good amount of kodo. Bagaha returns, for it, a large area under maize (11 per

cent.). It is grown in the villages bordering on the diara.

A33. Kodo follows makai with a percentage of 8. The proportion in the Sadar subdivision, as in the case of barley, is nearly double that in the Bettia subdivision, and it is found mainly in the thanas where maize also predominates. Gobindganj comes first with 16 per cent., then Kesaria with nearly 14 per cent., and Motihari third with 11 per cent. Madhuban and Dhaka return about the same proportion (8 per cent.), and then come Bagaha and Bettia, one per cent. lower. In Adapur and Shikarpur the area under this crop also is insignificant.

Wheat. Wheat is usually grown on lands in the vicinity of rivers or from which the paddy has been washed away by flood. This may account for the unexpectedly large proportion of it, nearly 8 per cent., in Shikarpur. Wheat requires special land and good cultivation, and is grown for sale and hence not very wide variations in its extent in the different thanas are apparent. Bettia heads the list with nearly 10 per cent.

435. Gram is not a crop of much importance, and its growth is mainly confined to the three thanas Adapur, Dhaka, and Shikarpur, where it is sown broadcast as a second

436. Under the hotch-potch heading "Other food-grains including pulses," all kinds of minor crops are entered, irrespective of the harvest, and the only remark I have to make

is that considering how largely khesari which is included in this group, in usually grown as a second crop to paddy, the percentage is low, but it has to be remembered that one third of the rice area bears autumn and not winter rice.

Thana statistics of non-food crops.

437. The following is a statement of the area and percentage of the cultivated area under non-food crops than by than a:—

| | | OILan | PDE | 80 6 a | | | DYR | 18. | | Oran | w. |
|-----------------------|--|--|--|--|------------------------------------|--|---|-------------------------------------|--|--|-------------------|
| | | 01542 | | | - | Indio | ю. | Отва | rns. | | _ |
| | Name of Thana. | Area | Percentage to net cropped area. | Area. | Percentare to net cropped area. | Are. | Percentage to net cropped area. | Arm. | Percentage to nest cropped area. | Are. | Percentage to not |
| | 9 | 8 | • | 6 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| ! 9 8 | Bugalia | 18,331 25,809 18,200 | 0.5 10.6 2.4 | 5,484 1,801 2,: 80 | 2.7 0.7 1.0 | 2,403 1,845 16,964 | 1'3 0 8 0'6 | 30 74 1,199 | 0.0 0.0 8.0 | 2,863 2,956 8,005 | 1. |
| 4 | Subdivisional figures | 57,432 | H- 6 | 810,0 | 1.4 | 30,412 | 20 | 1,303 | 0.3 | 13,817 | 3. |
| 4 5 6 7 8 | Adapur Uhaka Mothari Gobindgenj Kesarin Mudhuban | 7,442 7,055 6,874 6,764 5,105 3,250 | 6:1 4:0 5:3 5:3 5:7 5:3 | 848 841 848 848 868 868 | 0.0 0.1 0.1 0.4 0.4 | 3,257 17,702 13,751 18,107 19,381 6,470 | 2.7 10:0 10:5 11:0 14:0 10:8 | 33 147 66 106 127 14 | 0.0 0.1 0.1 0.1 0.1 0.1 | 7,785 10,9 0 0 0,752 8,511 4,890 1,040 | 6'6'5' 6'1 |
| | Sadar subdivisional figures | 86,520 | 4'8 | 1,540 | 6.8 | 75,738 | 10.0 | 402 | 01 | 80 577 | 6- |
| | District figures | 93,962 | 6.2 | 11,155 | 0.8 | 85,970 | 66 | 1,795 | 0.1 | 63,594 | 3. |

| | | Това | ıccu, | Fibi | K 26. | Кна | 24 FI, | Оти | ers. | To: non- | PAL POOD. | |
|-----------------------|---|----------------------------|--|--|--|--|----------------------|--|------------------------------------|--|------------------------------------|-----------|
| Series states ber. | NAME OF THAMA. | 17ta. | Percentage to net cropped area. | Area. | Perrentare to net cropped area. | 11.0 | Percentage to net | Area | Percentage to net cropped area. | Area. | Percentage to net cropped area. | RHMARK |
| | | 10 | 14 | 15 | 16 | 17 | 19 | 19 | 90 | 21 | 28 | 18 |
| 1 2 3 | Raguha Shikaspur Rettu | 906 1,644 | 0°03 0°13 8+0 | 1,147 350 3,048 | 0.8 0.1 | 15, 653 16,010 10,519 | 7/8 0'0 4 b | 2,019 3,005 11,587 | 1°3 1°5 4°8 | | 81 23 24 | |
| | Subdivisional figures | 2 020 | 0.30 | 4,505 | 0.7 | 13,183 | 6.1 | 17,414 | 8.4 | 168 950 | 28 | , |
| 5 6 7 8 9 | Adapur Dhaka Motibari Gobundgau Kesanis Madhuban | 6 79 115 65 85 | 0.00 0.04 0.04 0.04 0.04 0.04 | 109 307 473 910 108 172 | 6-1 6-2 6-4 0-7 0-8 6-8 | 2,598 5,653 5,027 4,749 4,560 9,584 | 21 32 37 87 | 1,014 1,503 2,930 1,656 1,420 984 | 0°8 9°8 2°9 1°8 1 6 | 22,816 43,500 20,006 34,669 36,763 14,707 | 16 25 27 280 27 280 | |
| | Sadar subdivisional | +45 | 0.08 | ٧, ١٨ | 0.3 | 25,247 | 2.3 | 9,208 | 1-2 | 141,829 | 26 | |
| | District figures | 2,465 | 0.17 | 6,057 | 0.5 | 67, 929 | 67 | 37,139 | 1.9 | 300,479 | 28 | |

and returns the very high figure of 10 per cent., or more in all the Sadar thanas except Adapur. So much as 14 per cent. of the cultivated area in Kesaria thana is occupied with indigo. Here the Rajpur and Pipra concerns are situated. In Gobindganj, where the Turkaulia concern is dominant, 12 per cent. is under indigo. For the large area under indigo in Motihari and Dhaka, 10½ and 10 per cent. respectively, the Motihari factory is responsible, while in Madhuban, which also returns over 10 per cent., the Bara, Tetaria and Motipur concerns predominate. Bettia returns 6.5 per cent. under indigo, and contains several minor concerns,

e.g., Laheria, Parsa, Lal Saraya, Kuria and Mallahia. In Adapur and Shikar-

pur there are also indigo concerns, but they deal largely in paddy.

439. I have explained above why oilseeds are grown more extensively in Bettin subdivision. Thus, in Shikarpur the highestpercentage is reached (10.5 per cent). Indeed, the Revenue Surveyor, in enumerating the crops of Raj Ramnagar which is included in this thana, prominently mentions the oilseeds, though he omits it while speaking of the other portion of pargana Majhaua. Bagaha, with 9 per cent., and Adapur, with 6 per cent., as might be expected, come next. The extent is lowest in Kesaria. I here is nothing noticeable in the figures for other thanas.

The area under kharaul or thatching grass is 4.7 per cent. of the cultivated area for the whole district. Its largest Thatching grass. extent is of course in Bagaha and Shikarpur; in the former it is slightly over, and in the latter slightly under, 7 per cent. In the other thanas it varies from 2 to 4 per cent. Even in the most highly cultivated thanas cultivators contrive to keep some land in kharaul to provide thatching grass for their own use. That grown in the north of the district is largely exported to Bettia.

Opium comes next. The district percentage is 3:7, but it is largely 441. exceeded in Adapur, Dhaka, Gobindganj and Motihari, where the crop is artificially irrigated from Bettia and Kesaria only reach the district average, while in Bagaha, Shikarpur and Madhuban it is much below it. The percentage of area under, opium is two and-a-half times greater in the Sadar than in the Bettia subdivision.

All the remaining non-food crops return percentages below 1 except 442. sugar, which in Bagaha covers 2.73 per cent. of the Sugarcane. cultivated area. The Revenue Surveyor wrote in

respect of its growth in this area:-

"The central portion of these two tappes" (Manpur Chaudand and Chengwan Bat-sars), "however, is under a high state of cultivation and is densely populated. In these parts sugarcane is grown in great abundance, and may be considered the staple production of this part of the country."

Sugar-refining appears to be still a presperous industry in the Bettia subdivision. The Collector, in his Administration Report of 1884-85, made the following observation The sugar industry in Chamon the subject :-

"The manufacture of sugar is confined to certain localities in the Bettia subdivision The sugar industry is in a flourishing condition in the district. The area under sugarcane increases every year, and the crop is becoming more and more of importance.

His ideas as to its importance were, however, somewhat exaggerated, for he estimated that the area under sugarcane was 17,500 to 20,000 acros, which would yield 65,000 maunds of sugar, valued at 6, lakhs of rupees. The actual area in this subdivision under sugarcane is only 9,615 acres, or half his estimate, the quantity in the Sadar subdivision being insignificant. That this was an exaggerated estimate was no doubt realised, and five years later we find the Collector had gone to the other extreme. In the Administration Report for - 1891-92 he estimated the outturn at 2,500 maunds only. So, taking three maunds per acre as the lowest possible outturn, the area under sugarcane would have been less than 900 acres, or one-tenth of the real extent. Mr. D. J. Macpherson, in his Administration Report for 1895-96, drew attention to this under-estimate, and put the outturn down as at least 15,000 maunds. This, however, was not more than half the real figure.

Tobacco returns the largest percentage (68) in Bettia thana. It 444. is grown here, as elsewhere in the district, for local Tobacco. consumption, and is not exported.

AGRICULTURAL STOCK.

From the agricultural stock statement the supply of milch-kine, 445. draught-cattle, horses, donkeys, ploughs and carts can be ascertained, but the figures in themselves afford little index of agricultural prosperity. The Amount of live-stock largely dependent on available grazing. whole position depends mainly on the extent of grazing. Ploughs being very

cheap, if a cultivator has a sufficient number of bullocks, he will indulge in the luxury of an extra plough, and the number of his bullocks will vary largely with the amount of available grazing, though of course the consistency of the soil is another important consideration. Conversely, too, where grazing is abundant, communications are usually poor, and there draught-cattle and carts are greatly in requisition, and there also it is found profitable to breed livestock for sale. Live-stock is most abundant when the conditions prevalent are still pastoral.

Agricultural stock, thana by thana.

446. The number of live-stock, ploughs and carts are given than by than in the following statement:—

| Serm' number | NAME OF THANA | Total area in quare niles | • | Bult and but. | Ma e buffa'oes. | Cow-huffakers | Herses and pones. | Caires, including buffs localies. | Shezp | Goats. | Mules and don- keys. | focal number of | Plought. | Corte | BENTER |
|------------------|--|--|---|--|---|---|--|--|---|---|--|--|--|--|--------|
| 1 | | 8 | | 5 | 6 | 7 | н | 9 | 10 | n | 13 | 18 | 16 | 15 | 36 |
| 2 | Bugain Blikarpusti Bertla (Bubdivisanal Total | 554 | 70,6 6 77 15h 50 185 2 7,881 | 44),1(7) \$4,93) 69 (88) | 3,6%2 4,742 11,860 | 10,470 14 139 18, 315 | 2 613 3,732 0 324 | 20,156 2 ,636 5 103 50,898 | 4 151 8,503 7,158 | 11,85 3 18,818 33,665 65,866 | 1,417 1,290 1,088 3,824 | 171,776 248,416 102,778 | 16,500 21,994 23,742 62,586 | 8,931 4,115 1,100 8,286 | |
| 4 7 H 9 | Adapur Dhalea McGhuri Gobindgani Kesaria Mudhuban - | 934 3.50 2.00 2.40 3.3 1.22 | 10 505 1× 4472 2,7 × 10,307 15 7054 8 661 | 20 370 27,301 16 411 16 471 2 470 0 168 | 1 (6 k 1,92) 819 1,036 431 473 | H,A33 D + 7 S 321 F 222 7 S1 L 3 tak | 1 504 2 (9)4 1, 914 • 1, 374 1,714 7.27 | 5,506 6,561 811 2,660 5 (05 3,156 | 941 1 772 2 061 8,159 2 6 1 | 47,539 24,460 11,564 14,605 17,826 8,204 | 710 987 803 421 718 216 | 79,089 94,719 51,864 62,058 73 059 36 574 | 10,815 10,084 4,924 5,358 6,642 5,418 | 1,808 2,169 436 4,366 *1,911 | |
| | Badar Divisional Total | 1,*%, | IN WH | 1 4 2 6 2 | 1,042 | 40 113 | 9,247 | 25,961 | 11,502 | 194,274 | 9,387 | 39 6,166 | 40,8 26 | 11,003 | |
| | District Potal | 12 0 | Sud ma | ga · st . | 17 792 | N9 757 | 14 471 | 7A 120 | 96,174 | , 158,144 | 7 211 | 984,138 | 103,412 | 19,264 | - |

Live stock at the satisfactory result that there are more than three head of cattle per family, or more than one per two persons, against 1:75 and 1 head to three persons respectively of Muzaffarpur, and, as might be expected from what has been said, it is found that there are six lakhs of cattle in Bettia, against four lakhs in the Sadar. Cows, numerically speaking, head the list with 295,672, immediately followed by bulls and bullocks, 282,336 in number, cow-buffaloes and calves coming next, though at a distance, with 83,757 and 76,279, respectively. There is a large number of goats, viz., 158,144. They are used mainly for food. There are comparatively few male buffaloes. The soil on the whole being light, their extra strength is not required to draw the plough. There are no mules in the district, and donkeys are kept only by dhobis. Thus their number is inconsiderable

Ploughs and carts. their cost is inconsiderable. Bullock carts are numerous, 19.268 in all, or nearly four times the number for Muzaffaipur. The most obvious reason is that the Bettis subdivision contains only about 15 miles of the Tirhut State Railway. There is a large export trade both from Nipil and locally, and there is a large import trade into Nipil, all of which has to be carried on by bullock carts. The large number of carts in the Sadar subdivision is due to a considerable extent to the indigo industry. For the carriage of indigo the raiyats are bound by a pecunar kind of contract which will be described in the appropriate chapter.

Live-stock to population com-

449. In the following statement the number of cattle per 100 head of the population is worked out than by than:—

| | | eraurus fr | | 1 | | , marian | ಜರ್ಷ ಌ. ಇ. | 7X - 7L . | | LTL WAR | רור (גריינור יי), ביייבעי או | VERTRASPANTAL CONTRACTOR | THE PERSON NAMED IN |
|-----------------|----------------------------|-----------------------|----------|--------------|-------|-----------------|------------|-----------|----------------|-------------------|---|--|---------------------|
| į | | | POPULAT | rion. | N | 'ABER | OF CA | TTLE | PER 16 | ANH O | rygog yo a | ATTON. | 1 |
| Berfal gum ber, | Name orgenera. | Area in square miles. | Total | Namber mile. | Comp. | Carw-buffaloes. | Sheep. | (souta. | Bills and bul- | Heres and posses. | Cattle of all morts or judice maje terfalore mules, and doners, | Norther of calves perion constant con-buffalors. | REMARES. |
| 1 | , | 3 | • | • | • | 7 | | y | 10 | 11 | 111 | 13 | • 16 |
| 1 | liagaha | 6 19 | 214,054 | 340 | ×3 | Б | 179 | 5 | 81 | 1:3 | #Q | 23 . | • |
| 2 | Sikarpur | 854 | 300,784 | भग्नह | 37 | 7 | 17 | v | 21 | 1.3 | 94 | BN | |
| , | Bettin | 847 | 334,047 | 611 | 16 | | 12 | 10 | 14 | 1.1 | 54 | 7 | |
| | nknus Bapqızision ej | 1,720 | 750,965 | 462 | 20 | 6 | 1.0 | | 13 | 12 | 78 | 20 | |
| • | Adapur | 924 | 107,41H | 747 | 10 | ñ | 6 | 10 | 16 | 1.1 | 47 | 23 | |
| 3 | Dhaka | 3.7.5 | 269,710 | พูกธ | 7 | 3 | 7 | 9 | 1 11 | N | 35 | רצ | • |
| 6 | Motibart . | 200 | 110,307 | 651 | 7 | 3 | 1.1 | G | 14 | -7 | \$7 | • | |
| 7 | Gobindgan | 246 | 170 040 | 620 | 9 | 3 | 1.8 | , 5 | ; " | ٠, | 35 | 17 | |
| 8 | Komria | 273 | 1-3,679 | 673 | 9 | 4 | 1 + | 10 | 11 | 1.0 | •• | 21 | * · |
| . 3 | Madhuban | 122 | 109,642 | NIN | ĸ | 3 | 70 | 8 | , 8 | '7 | 34 | 26 | |
| | Sader Divisional Ogures | 1,130 | 1,:99,60 | 710 | N | • | 1.1 | 7 | 11 | .* | 3/1 | 7,0 | |
| | , District figures | 3,250 | 1 859,4% | 572 | 101 | ti | 1 1 5 | P | , 15 | 10 | 6.2 | 20 | |

450. The proportion of milch-kine (cows and cow-buffaloes) per 100 souls is only 11 in the Sadar against 33 in the Bettia subdivision. In the Bettia thana the number is lowest for the northern subdivision, but even so is nearly double that for any thana in the southern subdivision. Milch-kine are particularly numerous in bagaha and Shikarpur, where grazing has to be provided not only for local cattle But also for large herds driven over from Gorakhpur and Saran. In the Sadar thanas there are 12 milch-kine per 100 persons, that is to say, more than one to supply milk and ghee to ten persons. This is a little better than in Muzaffarpur. But if the Bettia subdivision is included, then there is one cow-or cow-buffalo to every five persons.

451. Sheep, too, are more numerous in the north, while goats, on the other hand, are very fairly distributed over the whole district, the only kind of live-stock of numerical

452. Passing on to draught-cattle, here against 10½ head per 100 persons in the Sadar, 21½ head, i.e., about double is returned for Bettia. The cause, as, I have said, is the plentiful grazing and large cart traffic in the north. Bettia is the thana returning the lowest number of the three northern thanas, viz, 18; but the only Sadar thana approaching this is Adapur with 16. Adapur is the most cultivated thana in the district, and this high figure, therefore, is in this instance an undoubted indication of agricultural prosperity. Dhaka, also another rich area, returns nearly 11 draught-cattle per 100 persons. Motihari and Madhuban come last with 9.

Stock, purely agricultural, of Champaran and other districts compared.

Stock, purely agricultural, of Champaran and other districts bullocks, ploughs and carts returned by Muzaffar-pur, Gorakhpur and Gaya are compared with the Champaran figures:—

| | | ٠, | Λπ | ITA IN BQ | t'Ant una't | i Ra. | | Brits Brits | | Prot | JG RS. | CAR | TS. | LIVE-ST | | |
|------------------|---|---------------------------------|-------|-------------------------------|--------------------------|----------------------------------|-------------------------------------|--|--|--|---|------------------------------------|--|--------------------------------|---------------------|---------------|
| forth but the | NAME OF DISTRICE. | Total. | | Pentablace of the trial area. | Torel in Sunt | Proventage of | Population. | To at number. | Number per square nule of cuttivated area. | Total number. | Number per square in le of cultivated area. | Total number. | Number per square mine of cultivated area. | Total. | Number per 166 per- | REMARES. |
| ì | , y | 3 | • . | <i>b</i> | 1, | 7 | N | 9 | 10 | 11 | 13 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 1 2 3 4 | t Champetan Muzaturpur Gerakhpur Gesya | 3,250 3,03, 4,001 3,49 | 1.100 | 59.11 | 967 695 674 118 | 30 37 19 51 32 15 30 31 | 1 450 404 2,717,857 2,904 057 | 2 42, 536 2 (2, 10 5) 5, 40, 40 \$ \$0, 40 \$ | 191 | 363,412 25 147 270 375 12,969 | 3 i 87 | 19,268 5 043 24 3.00 6.01 | 9 7 | (605,106 910,950 171,804 | | • Figures not |

154. The figures of Champaran and Gorakhpur are approximate. The number of cattle of all sorts per 100 persons is 52 in Champaran, against 56 in Gorakhpur, Muzaffarpur coming a bad third with only 30. The same conditions are noticeable in respect of draught-cattle; Champaran has 125 per cultivated square milo and Gorakhpur 118, against 90 only in Muzaffarpur, but here Gaya heads the list with 149. In the matter of carts per square mile Gorakhpur and Champaran are again very similarly circumstanced, but with four times the number found in Muzaffarpur, where the average is only 2. In the number of ploughs per square mile while Muzaffarpur returns 35 and Champaran 46, Gorakhpur returns so high a figure, viz., 87, that I doubt, its accuracy. Gaya returns 48 only, and both in this district and Champaran draught-cattle are more numerous than in Gorakhpur. Gaya has the largest number of bullocks per plough, viz., three. Then comes Muzaffarpur with 2.8, closely followed by Champaran with 2.7; Gorakhpur returns only 2.1 per plough, an exceedingly low and abnormal number.

The them statistics for stock parely agricultural.

455. Contining our attention to the Chrimparely agricultural.

| | | A 1 | RA IN C | įt t Ri | un Re. | | Berr | | P 1016 | лι, | Car | (4 | No warea | or Rifts L'ocks, | d acres | . , |
|------------------|---|--|--|----------------------|----------------------------|---|---|--|--|-----------------------------------|---|--------------------|--|--|----------------------------------|--|
| sera aurober. | NAME OF THANA. | in the second se | (Initily | niel de la company | t mult | Percentage of an array of the salarray. | 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | log ag age 1 'c of | Fotal. | Per square most column column and | Total, | fer square no e of | Per piough. | fer hath carts and plough. | Number of cultivate- | 20 開展 第二次 20 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 元 |
| ı | 3 | 3 | | 8 | et [| 7 | 8 | 1 " | 10 | 11 | 12 | 11 | 15 | 15 | 16 | 17 |
| 1 9 3 | Hagaha Shikai pur Iottia | 613 554 47 | 111 194 1966 | 51 · 63 64 | 2004 179 164 | 50 3. 31 | 46 107 78 9 71 37 058 | 110 110 100 | 51 143 51 104 14 420 | 5.6 59 69 | \$,451 4 125 1,100 | 10 11 3 | 2.7 | 2'3 2-3 2-4 | 12 11 10 | |
| | Subdivisional figures ! | 1741 | 1.029 | 61 | 147 - | 44 | 164-014 | 151 , | 62,790 | 54 | 8,200 | | 2.6 | 23 | 11 | |
| 4 6 7 8 | Adapur Diaka Matihati Galundganj Kontin | 9 4 9 4 9 6 9 6 123 | 194 274 276 276 276 276 | 53 71 70 78 | 63 64 67 13 | 15 17 20 30 21 | 10 (23) 20 (04) 10 (44) 10 (74) 20 (77) | 1.14 107 108 108 118 118 118 | 10,515 10 (5) 4 974 8,374 6,762 3,613 | 7 1 24 27 30 34 | 1,505 2 162 4,53 4,556 1,911 430 | 3,00 | 2.5 2.7 3.3 3.1 3.1 2.4 | 2 % 2 4 3 1 1 7 2 4 2 4 | 19 14 37 24 21 18 | |
| | Sadar subdivisional figures | 1,510 | 1,100 | 78 | 340 | 24 | 114.015 | 6) | ₩ ×26 | 34 | 31602 | 9 | 5.0 | 23 | 18/86 | |
| | District figures | 3,250 | 2,243 | 78 | 257 | ;11 | 349,345 | 126 | 10, 342 | 45 | 18,600 | 9 | 17 | 2.3 | 14.00 | |
| | | · | | | _ 1 | | | | | - | | | | | | |

We find the largest number of draught-cattle per cultivated square mile in all the thanas of the Bettia subdivision, but it is curious to note that Bettia equals Shikarpur, and Bagaha stands third. But, without doubt, both the Bagaha and Shikarpur figures would have been very much higher had the statistics for agriculturists living in the hills outside the surveyed area been

included. Among the Sadar thanas, Adapur has the largest number of bullocks, viz., 138 per square mile of cultivation, followed by Dhaka with 105; next come the two adjacent thanas of Kesaria and Madhuban, with 96 and 94, respectively; and last of all are Motihari and Gobindgani, the former with 80 head and the latter with only two more. The same order is remarkably preserved, too, in the statistics for ploughs. But Bettia heads the list alone with 62 ploughs, or 10 acres per plough. In Bagaha and Shikarpur the area per plough is over 11 acres. Adapur, with 55 ploughs per square mile, is one better than Bagaha. The next thana is Dhaka, with 36 only. In Motihari there is the extraordinarily large area of 26 acres of cultivated land per plough, and in Gobindganj there are nearly 24 acres. These two than is would appear to be understocked, though, owing to the soil being light, it is probably ploughed with ease and rapidity.

456. The district average is 14 acres per plough, and this seems to be about normal. As the thana statistics of carts do not appear to be accurate, I refrain from commenting on them.

STATUS.

457. Statistics of status are contained in the terij goshwara or abstract of the terij, the terij in its turn being an abstract of the khatjans.

458. Lands held by public bodies, such as the District Board and the Raiser-i-Hindor Crown land. Railway, cover only 9,578 acros, or 46 per cent. of the total area. This low figure indicates The meagreness of the district means of communication.

Unoccupied (gair mazrus) possession of the zamindar, but practically not in anyone's occupation. The homesteads of non-agriculturists are also recorded in them. These khalians absorb 492,602 acres, or so much as 23.6 per cent, of the total area. They are 9,533 in number, giving the enormous average area per khalian of 51.6 acres. This is in striking contrast to Muzaffarpur, where the average size is only 6 acres.

* 460. Excluding these two items, the occupied area is found to be 1,578,225

acres, or 75.8 per cent. of the total, and the following statement shows how it is apportioned amongst the different classes of tenancies:—

| | | TENA | NCIP4 | Ann | A | ři. | 1 |
|----------------------------|--|--|--|---|---|-------------------------------|---------|
| Serial number. | • STATUB | Total number. | Percentago o sumber of heldings (all places executive, (gane marka and Kaisare Hind | Total area to acres. | Perentage of the area and every figure and and Every figure are an and East teding. | Average size of a holding | REMARK. |
| 1 | 2 | 3 | 1 | σ | 6 | 7 | я |
| 1 2 3 4 5 6 | Proprietor's zirait (private lands) Held by proprietor, but not zirait In cultivating possession of tenure holders. Raiyats at fixed rents or rates Settled or occupancy raiyats. Non-occupancy raiyats, including diara raiyats. Rent-free holders Total occupied area | 4/19 1,952 9,809 3,214 836,149 26,296 14,149 | 2 60 2 60 | 4,881 31,331 117,668 (26,863 1,314,465 49,462 54,227 1,578,235 | 2 63 8 10 2 10 100 100 100 100 100 100 100 100 | 12 14 12 8 4 2 | |
| 8 | Unoccupied Crown land Landford's gair masrua or waste land. | P,53 3 | | 9,578 492,012 | | 51 | |
| | Total unoccupied | | | 501,(80 | ••• | | |
| | Total | 400,092 | | 2,079.815 | | | ! |
| 10 | Under-raiyats | 29,003 | 7 | 83,027 | 2 | J | |

Proprietor's private land, section private land, section are only 409 such khatians with an area of 4,881 acres. Thus they cover only 3 per cent. of the total occupied area. The

average area per tenancy is 12 acres.

In direct cultivation of proprietors but not true zirait.

In direct cultivation of proprietors but not true zirait.

In direct cultivation of proprietors or 2 per cent. only. The average area per tenancy is larger than for zirait, viz.,

16 acres.

In a still greater degree than in Muzaffarpur the indigo planters swell Indirect sultivation of tenure. the figures for land held in the direct occupation of tenure-holders. There are 9,899 tenancies under this head, or 2.5 per cent. of the whole, but they account for 7.5 per cent. of the occupied area, the average size being 12 acres. In discussing indigo these figures will be reconsidered.

Raiyats at fixed rates (sharamoyan).

Religious at fixed rates (sharaclass, and they account for only 2 per cent. of the
occupied area. The average size of a holding,

however, is large, viz., 8 acres.

465. The great mass of the raiyats are of course settled. They appropriate just under 86 per cent. of the total number of holdings and 83 per cent. of the cultivated area. The average size of a holding is slightly under 4 acres, or about 21 times bigger than in Muzaffarpur. The extent to which security of title has been confirmed to cultivators by these operations is fairly illustrated by these figures. In contrast to them I quote what Dr. Hunter wrote on the subject in his Statistical Account of Champaran in 1876:—

Act X of 1809. The principal cause of this is the almost universal custom of letting villages in farm for short terms. Very few landlords let their lands to the raiyats direct, but farm them out to thikadars (lease-holders) for five or seven years. When the term expires, the landlord, as a rule, demands an enhanced rental from the lease-holder; and the increase falls ultimately on the raiyats, either in the shape of a higher rent per acre or by the addition of waste lands to their cultivation, for which rent is charged; or where there is no waste, by exacting rent for some fictitious land, commonly known as kaghasi zamin, i.e., paper land. It thus happens that few raiyats are able to hold their lands uninterruptedly for 12 years at the same rates. Only raiyats of a superior class receive pattus, which, when given, are generally the pretext for exacting salames. There are other reasons, however, to account for this unusual state of things. Champaran raiyats for the most part are extremely careless and ignorant of their legal rights. The zamindar is looked up to with unusual deference, and his demands are raiely disputed. Most of the district belongs to one or two proprietors, whose influence among their tenants is enormous and who can eject and dispossess at pleasure."

466. Non-occupancy raiyats are necessarily very few. They occupy 6

Non-occupancy raiyats.

per cent. of the holdings, but only 3·1 per cent. of
the area. The average holding is only 2 acres
in extent. This is small, as it is generally diara land in which the non-occupancy right is found.

Rent-free holders are the class of least importance in this district. A rent-free grant of any magnitude is invariably largely sublet and therefore falls within the category of a tenure. The rent-free holdings are very small, the average size being 2.4 acres only. They account for 4 per cent. of the area.

468. Another unimportant class is the under-raises. They occupy

2 per cent. of the area only, but 7 per cent. of the number of holdings. They are therefore very petty, a little over one acre only being the normal size.

Occupancy the most important is that of settled and occupancy raiyats and the next that of tenure-holders in direct possession.

470. I will now compare the proportion in which land is held by the landlord and tenant classes in Champaran with those found in neighbouring districts. The statistics are furnished in the following statement:

| | • | | par La | ares in | | 3 | A THANK! | RW4. | | | Tot tena a ee | R T | |
|---|-------------------|----------------------|--|---------------------|------------------|---|---|--------------------------------------|------------------------------------|--|---------------------|--------------------------|---------|
| | NAME OF DISTRICT. | Total occupied area. | Ossupied by proprietors tenure-holders. | terrentage to total | Occupant trains. | Percentage to total arts m country 5 | Fired rates ex-proprie- tary and u.g., &c. | Pervenage to total area in relume 3. | Tenenteatent (or non- ormenog), | Percentage to total area area area area area | €1. | Percentage to total area | Renable |
| | | 3 | • | 5 | 6 | 7 | * | p | 10 | 11 | 19 | 18 | 10 |
| 1 | Benares | 437,512 | M),317 | 20 | 188,815 | 4.5 | 192,168 | ΣB | 87,219 | 9 | 844,195 | 80 | |
| 3 | Mirsapur | EAG,882 | 83,648 | 18 | 76,027 | :8 | 101,846 | 843 | 54,812 | 18 | 285,255 | 83 | ~, |
| 3 | Ghazipur | 688,100 | 200,841 | 31 | 272,763 | 42 | 77,043 | 12 | 1H,462 | 18 | 444,254 | 69 | • |
| • | Jaunpur | 623,424 | 112,660 | 18 | 183,751 | 25 | 801,008 | 49 | 088,68 | 8 | 510,794 | 88 | r |
| | Ballia | 340,250 | 70,227 | 23 | 126,613 | 34, | 107,291 | 31 | 36,169 | 10 | 270, (£3 | 77 | |
| 6 | Musaffarpur | 1,60%,096 | 326,125 | 12 | 1,270 474 | 70 | 76,474 | • | 20,423 | 9 | 1,371,370 | 81 | |
| , | Champaran | 1,578,235 | 163,278 | 10 | 1,314,468 | 83 | 61,030 | | 40,4G± | 3 | 1,494,057 | 60 | |

None of the districts can compare with Champaran in the extent to which its cultivated land has been secured in the occupation of the cultivating class. Only 10 per cent. in Champaran is occupied by landlords, in spite of its large body of planters. The next lowest figure is 18 per cent., returned by Mirzapur and Jaunpur. Muzaffarpur is next with 19 per cent. In Ghazipur the vast amount of 31 per cent. is so held. The area held by non-occupancy raiyats in Champaran is only 3 per cent. of the total cultivated area. This is not more than one-third of the area held in any district of the North-West Provinces by tenants-at-will, a lower status. In Muzaffarpur the area held by non-occupancy raiyats is still smaller.

471. There is only one respect in which the North Bihar statistics compare unfavourably with those of the North-West Provinces. That is in the area held by raiyats at fixed rates. But the districts of the North-West Provinces had a previous settlement, whereas Bihar had none. If the figures for raiyats at fixed rates and those with occupancy rights, that is to say, those who have a security of tenant right, are considered in combination, it will be seen that they occupy a much larger proportion of the occupied area in Champaran than in any other district, the percentage being 87. Muzaffarpur comes next with 79 per cent., while the districts of the North-West Provinces return the following proportions:—

| Benares | | *** | 74 |
|----------|-----|-----|----|
| Mirzapur | ••• | ••• | 64 |
| Ghazipur | *** | *** | 54 |
| Jaunpur | ••• | ••• | 71 |
| Ballis | *** | *** | 67 |

472. Returning once more to the statistics of the Champaran district, I subjoin the following statement, so that status may be considered in connection with locality:—

| _ | | ****** | | | | | | | | | | • | |
|----------------|---|---------------------------------------|--------------------|-----------------|--|--------------|---------------------------------------|---------------|-----------------|---|----------|---------------------------------------|----------------|
| | | holdings | g g | - | Prop | вівтов'я | ZIRAIT, | | HRU | D BY PROP | RIETOR B | UI NOT SE | BAN, |
| Surial aumber. | NAME OF SUB- DIVISION. | Total number of he in occupations. | Total occupied ar | Number of bold- | Percentage to total number of hold-ings in column 3. | 4774 | Percentage to total area in column 4. | Avirage size, | Rumber of hold- | Percentage to round number of heldings in column 3. | Arre. | Percentage to total area to column 4. | A verage sine. |
| 1 | 8 | 8 | 4 | 5 | 6 | 7 | 5 | Đ | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 1 2 | Bettia subdivisional figures, Sudar subdivisional figures, | 170,714 214,345 | 745,258 832,950 | 58 351 | 0 03 | 564 3,917 | 0.18 | 16·6 11·2 | 1,507 | 0°25 0°70 | 15,414 | 3185 1185 | 35 7 10 9 |
| | District figures | 301,059 | 1,574,235 | 4 79 | 0 10 | 4,441 | 0 31 | 11.9 | 1,961 | 0 60 | 31,381 | 1 99 | 16-0 |

| # .3 | • | In | Celtival Runa | [46 Pos | | 1 | | | Tof≱t, | | | |
|---------------|---|-------------------------|---|----------------------------|--|----------------|--------------------------|-------------------------------------|-------------------------------|----------------------|---------------|----------|
| Sera! number, | DIA1910 ^M T LYWR OLUGB- | Number of hold. | Percentage to total number of bolds. Ingsto column 3. | Area. | Percentage (2 total area and 2 duning 4. | Av. 19ge 8120. | Nonther of hold- | Percentage to total number of hear- | Vivia. | Porcentives to notal | Average size. | Benarse. |
| | | 15 | 10 | 17 | 18 - | 19 | 20 | 91 | 22 | 23 | 24 | 63 |
| 1 | Bottin subdivisional figures. Badar subdivisional figures. District figures | 3,567 6,039 0,500 | 2 14 2 81 2 53 | 71,202 45,774 17,666 | 0 57 5°00 | 15 ¢ | 4,370 7,500 18,260 | 2 17 3 65 8 13 | 65,173 65,105, 1,53,275 | - (| 8.1 | * * |

473. It will be seen that the proportion of proprietors' private land is nearly four times as great in the Sadar as in the Bettia subdivision, though oven in the former it is under 5 per cent. It is largest in Madhuban and Kosaria. In Gobindganj there is none. Under land held in proprietor's occupation but not private land, Bettia subdivision returns 2.1 per cent., as against 1.8 per cent. in the Sadar. Madhuban with 5.2 per cent. is the highest, and Bagaha with 8.47 per cent. the lowest, but the reason is in either case very different. In the former the land is retained in direct possession, this being found to be remunerative. In Bagaha it is so retained in the absence of a demand for settlement. The latter reason probably accounts for the percentage of the Bettia subdivision being higher than that for the Sadar. In the area held by tenure-holders Bettia subdivision takes the lead with 9:57 per cent. The absence of demand for land again is partly the reason. In Shikarpur, too, there are some small villages in the possession of tenure-holders, mostly native mukarraridars, which are held almost entirely in khas possession. The percentage of that than a is accordingly the highest, viz., 12.8 per cent. The proportion of area so held for the Sadar subdivision is 5½ per cent. Gobindganj than records the highest, 9 per cent., then comes Motihari, 6 per cent. and Kesaria, 51 per cent., the reason of their position being the large expanses of indigo lands in direct occupation of indigo concerns. The area held by landlords as a whole in Bettia subdivision is 11.8 per cent. and in Sadar 7.8 per cent. In Bettia the highest figures are found in Shikarpur and Bagaha (14 and 11.6 per cent.) and in the Salar in Gobindganj and Madhuban (10:2 and 9:5 per cent. respectively). The causes, as I have said, are diverse. In Shikarpur and Madhuban there are numerous petty proprietors and tenure-holders respectively. In Bagaha the demand for land is greater than the supply. In Gobindganj there is a large indigo concern that absorbs much of the cultivated area. relative sizes of average holdings require no detailed comment. The figures for

thikadars are vitiated by the number of petty britdars (rent-free tenure-holders) in some, thanas. Thus Motihari returns 20.9 as the average size of a tenure-holder's tenancy, while in Gobindganj it is 4.6 acres only.

The raigati area.

| | | Total number of hold- ins in occupied area, | Total occupied area. | | Pix | KI- RATE | k, | | | Nos | r-ocau | 10 17 18 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 | | | | | | |
|----------------|--------------------------------|---|----------------------|-----------------|----------------------------|----------|---------------|----------------|-----------------|---------------|-----------|---|---------------|----------------------------|----------------------------|--------|-----|---------------|
| Seriel number. | Name of Trays | | | Number of hold. | Percenture to column 3. | Arra. | Percentage to | A terage size. | Namber of hold- | Percentage to | Area | Percentages to | Average size. | Nursiber of held- ings. | Percentage to o tenna L | årea. | | Average size. |
| 1 | • | , | • | | • | 7 | A | D | 10 | 11 | 13 | 13 | 14 | la. | 18 | 17 | 18 | 10 |
| 1 | Beguha | 64 767 | 214,990 | 96 | 0.1 | 1,029 | 0.4 | 10 | 47,874 | 67 | 174,870 | 88 | 3 | 8,840 | 11 | 11 816 | 8 | 1 |
| 3 | Shikarpur | 55,1%0 | 257,688 | 107 | 0.3 | 1,439 | 1 | 7 | 16,103 | 91 | 260,272 | 81 | | 1,440 | 8 | 4,121 | 9 | |
| 1 | Bettia | 68,707 | 273,279 | 454 | 1 | 4,661 | 2 | 10 | 51,356 | 74 | 215,571 | 79 | • | 11,029 | 16 | 30,440 | * | 1 |
| , | Rubdivisional Total | 176,714 | 748,2*5 | 719 | 0 4 | 7,930 | 1 | ŋ | 145,023 | h4 | 599,678 | 80 | • | 15,279 | 10 | 36,797 | A | |
| 4 | Adapur | 26,690 | 124,820 | 81 ¹ | 03 | 1,1:2 | ı | 13 | 28,088 | 93 | 116,978 | 91 | . • | 408 | 2 3 | (303) | , | 1 |
| ь | Dhaka | 44,223 | 191,700 | 510 | 3 | 4,939 | 3 | 6 | 42,803 | Ħ | . 66,074 | 87 | 8 | 871 | 1 | 1,00% | 1 | 1 |
| 6 | Motiliari | 31,140 | 149,113 | 143 | 0-6 | 2,230 | 1 | 15 | 27,050 | 87 | 121,551 | > 7 | 4 | u,ms | r 11 | 8,589 | 2 | 1 |
| 7 | Gobindganj . | 42 129 | 144,113 | 309 | 1 | 2,789 | 2 | Ð | 31,958 | 6) | 118,084 | 12 | • | 2,020 | ħ | 8,708 | 8 | |
| 8 | Kenris | 41,123 | 157,290 | 898 | 2 | 7,503 | 3 | 7 | 30 ,4 53 | PG | 125,511 | F2 | * | 1,6308 | 4 | 8,014 | 1 | ı |
| 9 | Madhuban | 24,700 | 67,115 | 124 | 1 | M21 | 1 | t | 27 683 | 0.5 | th,(ctt) | PG | 2 | 3515 | P. | eis | 1 | ı |
| | Sadar Subdivisiyast Total | 214,545 | K32,750 | 2,405 | 1 | 19,001 | y y | 7 | 187,226 | 67 | 714,792 | 846 | 8 | 7,017 | 3 | 12,003 | 2 | l |
| | GRAND TOTAL OF THE DISTRICT | 201,0,0 | 1,07% 935 | 3,211 | 7 | 26,873 | ? | 4 | 856,140 | M | 1,314,405 | 4 4 | 8 | 25,294 | c | 40,402 | 3 1 | |

| | | · . | n | | | • | , | | | | | i | Corne | (-R411 A7 | , , | | 1 |
|----------------|---------------------------------|-----------------|--------------------------|----------|-------------------------|---------------|-----------------------|-----------|----------------|----------|---------------|----------------|---|-----------|-------------------------|--------------|---------|
| | | ., | REAL-1 | THER HOL | D K B 4. | ì |) . - d | I \$ | Total | 2 2 | ! | + | | -RAITAT | | 1 | |
| Serial number. | NAME OF THANA. | Number of hold- | Perroritage celumn 3. | Arra. | Percentare column 4. | Averace site. | Number of holds | Parentage | | Promiser | Irenser star. | Nomiter of his | Pervetter 5: 17. 11s. nonther of 2: sint 18 thinks | J.m. | Percentage f. the total | frence size. | Rnusana |
| | | 20 | 21 | 56 | 23 . | 84 | 25 | 25 | 27 | 24 | 20 | 30 | 51 | 32 | 33 | 34 | 85 |
| 1 | Bagaba | 604 | 1 | 2,5158 | 1 | 8 | 23,980 | 00 | 189,903 | ķŔ | 3 | 2,461 | 8 | a, kop | 2 | | 1 |
| | Shikarpur | 1,458 | 3 | 6,1949 | 2 | 2 | 51,455 | 107 | 21.3,481 | +5 | 4 | 2,713 | 3 | 5,392 | 2 | 1 | |
| 3 | Bettis• | 2,040 | 3 | 6,310 | 2 | 3 | ess,thou | 57 | 247,638 | 91 | 8 | €,363 | 10 | 7, :/-3 | 3 | 111 | |
| | Buhdivisional Total | 4,303 | 1 | 15,308 | 2 | 3 | 172,344 | (1/2 | 657,112 | ## | 3 | 11,425 | 7 | 14,501 | 2 | , | |
| 4 | Adapur | 537 | 2 | 1,908 | * | 3 | 20,064 | ¥7 | 120,785 | 5/4 | | 2,543 | 10 | 3,377 | 3 | , | |
| • | Dhets | 2,604 | 6 | 6,126 | 3 | 2 | 461,478 | 107 | 17+,234 | 93 | 8 | 2,670 | e | Z, 1970 | ž | 1 | |
| 6 | Motibari | 1, 48 G | 6 | 9,776 | 2 | 1 | 30,018 | £#4 | 1/94,447 | 93 | 4 | 3,4/04 | 9 | 3,4(14 | 7 |) | |
| 7. | Gobindgani | 2,297 | 5 | 4,158 | 8 | 1 | 34,224 | 1/2 | 129,360 | 96 | 8 | 4,154 | 11 | 4,314 | | 1 | |
| | Kemaria | 2,061 | 5 | 4,857 | 3 | 2 | 40,310 | 97 | 140,735 | 112 | 8 | 8,171 | | 2,548 | 2 | 0.6 | • |
| • | Madhuhau | 742 | 3 | 1,840 | 2 | 1 | 23,926 | 97 | 0 0,026 | 960 | * | 1,037 | 9 | 1,781 | 3 | 0.4 | |
| | Sedar Subdivisions! Total | 9,747 | • | 20,286 | 8 | 1 | 296, 458 | 964 | 787,546 | V8 | 3 | 17,679 | , | 14,464 | : | , | |
| | Grand Toyal of the District. | 14,140 | 4 | 34,227 | 1 | 1 | 87,980 | 97 | 1,484,457 | 30 | 3 | 30,903 | ā | 33,077 | 1 | 1 | |

Turning now to the areas held by raiyats of different classes we see that the proportion of land in the occupation of Raiyats at fixed rates and settled raiyats is in the Bettia subdivision 88 per cent., as against 92 per cent. in the Sadar. Raiyats at fixed

rates account for a very much larger area in the sadar than in the Bettia subdivision, the figures being 2.3 per cent. for the Sadar and just under 1 per cent. for Bettia. In Bagaha these holdings are most insignificant in size and number. The largest area is so held in Kesaria, nearly 5 per cent. Dhaka comes next with half that proportion. It is clear then that the reclamation of these two thanas is not of recent date. Madhuban is also no doubt a thana that has been cultivated from very early times, still it only returns a little over 1 per cent. of its area as held by raiyats at fixed rates. But then it is largely owned by petty proprietors, the greatest foes to stability of tenant rights and rents. The statistics of the average size of these holdings are not very instructive. The largest are in Motihari and the smallest in Dhaka. is generally true that the fewer they are in number, the larger is their average size. Coming to occupancy raivats, we find the same difference between the Bettia and Sadar subdivisions as in the case of raiyats at fixed rates. Bettia, the occupancy raisats own 80.4 per cent. of the occupied area, and account for 84.2 per cent. of the holdings, whereas in the Sadar they hold 85.8 of the area, 87.5 per cent. of the holdings. In the Bettia subdivision, or for the matter of that, in the whole district, than Bettia has the least proportion of occupancy raisets occupying the smallest area, the figures being 77.03 and 78.88, respectively. I have already described how a very large number of raivats came to be attested as non occupancy in the first year of attestation which, though subsequently reduced on re-attestation, still stood at a high figure. To these must be added the raiyats of the Patjirwa diara attested in 1896-97, hence the large nor occupancy area in Bo tia thana. In the other two thanas of this subdivision the percentage of area occupied by this class is the same (81.3), but in Shikarpur the proportion of holdings is greater, being 90.5 per cent., against 86 5 in Bagaha.

475. All the Sadar thanas exceed the highest area percentage of any thana in Bettia, Adapur heading the list with 91 per cent. of its area held by occupancy raivats and 93 per cent. of its holdings. It is, on the other hand, surprising to see Kesaria stand last but one in the sadar group, the percentage to the number of holdings being 85.7 covering 82.4 per cent. of the area. The situation, however, is fully redcemed by this thana returning the largest area, as we have seen above, under raiyats at fixed rates, and the largest but one, as we shall see hereafter, under rent-free holders. Besides this, there is a considerable diara area in Kesaria. Indeed, the very last thana in the Sadar in the list is Gobindganj, which is completely skirted on one side by the big Gandak. In Gobindganj there is another minor reason in the careful management of the Turkaulia concern resulting in the detection of new holdings that are created. In the remaining three thanas, Motihari, Dhaka and

Madhuban, the percentage is the same, viz., over 86 per cent.

476. In examining the average size of holdings the smallness of the difference in the two subdivisions strikes us with surprise. In the Sadar subdivision the average size is 41 acres only; in the Bettia subdivision it is 3.8 ucres. But it is still more remarkable to see that while in Shikarpur it is 4.3 acres, in Begaha it is so low as 3.6 acres. There is, however, a good explanation. The Bagaha thana consists of 433 villages. In the first 140 of them, that is to say, in those geographically situated in the northwest and north of the thana there are 6,911 holdings covering an area of 48,578 acres and averaging therefore 7 acres each. In the remaining 293, although the area is 119,921 acres, the number of khatians at the same time rises to 40,463 and thus the average size of a holding goes down to 296 acres. The expianation lies in the different conditions obtaining in the two portions of the thans. There is abundance of land in both, though of course it is somewhat more plentiful in the northern portion covered by the 140 villages. But in the southern portion, villages are unusually large in size. Indeed, it is there that the largest village in the district, Semra Sabedaha, covering 40 square miles, is situated. The Bettia Raj has parcelled these villages out under several thikedars, and a terant almost invariably holds under more than one thikadar, and thus his land may be split up into several holdings. In fact, the same circumstances operate as where proprietors are petty. In the village noted above, the average size of a holding works out to be 3.9 acres, but there are half-adozen thikadars, and it was not uncommon for the same tenant to be called up two or three times over to attest or accept the fair-rent compromises for his several holdings. The aggregate of these several holdings would probably average 7 acres, or perhaps 10 acres. In Shikarpur also a similar cause operates. In a previous paragraph I have shown how numerous and small the villages here are, a fact quite inconsistent with its primitive and still undeveloped conditions, and I suggested that it was due to the confounding of villages with tolar at the time of the revenue survey. Pandit Rama Ballabh Missra, Assistant Settlement Officer, reports that—

"Most of those tolas have since been deserted and small ones converted into hig husti as so that at present at least one out of these villages is untenanted, or what they locally call Bechiragi, i.e., where no chirag or lamp is lighted. The raights of the neighbouring villages cultivate their lands, perhaps unconscious even of the fact that they are situate in a village separate from the one in which they reside. At the lowest calculation therefore the area held by an average tenant in the thana is in no case less than 7 acres and might be more."

It must also be remembered that had hill and jungle been surveyed, the average size of holdings in both thanas would have been increased. In Bettia thana also the subdivision of villages into thikadari tolas similarly operates, but on a small scale. For the whole subdivision therefore an average area of 6 acres per cultivator will not be wide of the mark. In the Sadar, on the other hand, though population is more congested, villages are large, and mostly in possession of one landlord. The average size of holding, as returned by the statistics, is probably an approximate representation of actual facts. In Adapur, Motihari and Gobindganj, which are all dominated by big landlords, the holdings average between 4.6 and 4.8 only. In Dhaka, where population presses more severely on the soil, and where there is also a sprinkling of petty maliks, it goes down to 3.9, which is further reduced to 3.5 in the southernmost thana of Kesaria. But the lowest limit, viz., 2.6 acres, is of course reached in Madhuban, where the conditions are similar to those of Tirhut. In the lastnamed thanas no doubt the average area of land held by a single cultivator is larger than the average size of a settled holding.

477. All things considered, the average area held by a cultivating family

in each thana can be taken to be as follows:-

| Bagaha | | 7 |
|--------------------|-----|----------|
| Shikarpur | ••• | 7 |
| Bettia | *** | 5 |
| Bettis Subdivision | 1 | |
| Adapur | | |
| Dhaka . | | 4:5 |
| Motihari | | 5 |
| Gobindganj | | 5 |
| Kesaria | | 4 |
| Madhuban | | 3.2 |
| | | - |
| Sadar subdivision | | 4 acres. |

Non-occupancy raiyats.

Bettia and a greater number of the holdings in Bettia subdivision than in the Sadar. In Bottia nearly 5 per cent. of the area is so held, as against 1½ per cent. in the Sadar. In thana Bettia no less than 16 per cent. of the holdings belong to this class, and they occupy 7.6 per cent. of the area. I have already explained the reason. Bagaha comes next with 5½ per cent. of its area so held. It has a very large area. Shikarpur would probably have returned more than 1.6 of its cultivated area as held by non-occupancy raiyats had the management of the Ramnagar Rajbeen more effective. In the Sadar subdivision Motibari, Gobindganj and Kesaria are the only thanas that return any but an insignificant area as held by non-occupancy raiyats, and for them the figures are 2.3, 2.5 and 1.9 per cent. only, respectively.

479. The average size of a non-occupancy holding is everywhere very small, 2 acres in the Bettia subdivision and 1.8 in Sadar. It is largest in than

Shikarpur, measuring 2.8, and smallest in Madhuban, only 1.6. The smallness of the holdings was also noticeable in the case of Muzaffarpur. It is evident that non-occupancy holdings are held for the most part by agricultural labourers who take settlement for a little land as a supplementary source of incomes

the bigger birtdars who have raiyats under them have been treated as rent-free tenure-holders and find no place in these figures, which relate solely to petty rent-free helders such as goraits. These occupy a larger area in the Sadar than in the Bettia subdivision. They are most noticeable in Dhaka and Keseria, and least so in Bagaira, Adapur and Shikarpur. Their average size of holding is greater in the Bettia subdivision than in the Sadar, but even so is very small. The largest average is in Adapur, 3.6 acres. It is above 3 acres also in Bagaha and Shikarpur. Motihari returns the smallest, 1.3 acres.

Under-raiyats are, as would be expected, slightly more numerous, and in occupation of a slightly larger area in the Sadar than in the Bettia subdivision, but they are so unimportant that the figures do not call for detailed discussion. The average size of an under-raiyat's holding is only 1 acre, and this would indicate that when lands are taken on sub-lease it is mainly with the mere object of obtain-

The elements of the raiyati of Muzaffarpur there is practically no land in a raiyat's holding that is not remunerative. There are fow holdings which include private grazing land and the area shown as uncultivated is generally mango grove or homestead. In Champaran, however, where land is more plentiful and less highly developed, the point calls for a closer scrutiny. The percentage of the total area classified as cultivated and uncultivated is as follows for each class of raiyat:—

| RAIYA | OR R | FIX | ED RE | NTB | BETTL | LED OR RAIY | | UPANC | Y | NON-C | OCCUPA | NCY | BAIY. | ATS. | us | NKB | -RAIY | ATS. | | |
|-------------|--------|-------------|-------|------------|-------------|-----------------|-------------|---------|-------------|--------|--------------|-------------|-------|--------|-----|--------|-------|-------|-------------|----------|
| Ī | CUIT | | VATRI | | | CULTI- VALED | | Uncut | | | CULT VATE | | Uncu | | | CUL | | UNCUI | | |
| Total area. | Area. | Perrentage. | Arra | Perrentage | Total area. | Arra. | Percentage. | Area. | Percentage. | Tota | | | | | | Area. | | Area. | Percentage. | Ren ane. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | p | 10 | | 12 | 13 | 14 | 15 1 | 6 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 20, m)\$ | 23,346 | 87 | 3,457 | 15 | 1,255,967 | 1.140,639 | 92 | 106,398 | 8 | 34,624 | 34,504 | 59 į | 4,120 | n j n, | 430 | 10,780 | 94 | 661 | | |

483. It is thus seen that nearly 6 per cent. of the area held by underraiyats is returned as uncultivated, and this demonstrates that there is a large amount of the land classified as uncultivated that is remunerative. For no underraiyat being liable to ejectment at will would take settlement of and pay rent for unremunerative land. Over 101 per cent. of the non-occupancy area and about 84 per cent. of the occupancy area are classified as uncultivated. It is odd that the proportion for raivats at fixed rates should exceed both of these. There is probably a combination of reasons. The raiyats at fixed rates being the carliest settlers in the village have homesteads above the average size. since they hold at a low rate of rent, they can afford to have more land under mango groves or to reserve some for private grazing. Finally, inherent lethargy is a very important factor. They do not require to cultivate all their lands for their subsistence, so they leave part fullow to save themselves trouble. circumstances of a district where rents are too low from the point of view of social and agricultural development are almost as bad as those of a district where rents are too high. For the native cultivator does not work without a strong incentive. As for occupancy raivats, both these figures and personal observation lead one to believe that the amount of unremunerative land in their holdings is infinitesimal in this district as in Muzaffarpur. Consequently rent-rates will be worked out on the total area.

PENTS.

Beautiful of course well known that the average rent-rates in Champaran are very low, and the causes have been sufficiently explained in these pages. They can be summed up in one sentence. The agricultural resources of the country are only half developed. There are no recognised rent-rates in different classes of soil, but lump rentals are paid on the whole holding; yet there is one thing that a Champaran raiyat, his general apathy and ignorance notwithstanding, will not submit to, and that is, an enhancement of his rent-rate. He willingly gives a large salami or an increased rent on excess area, but if his landlord tries to enhance his rent-rate, he will fight or abandon his holding and go elsewhere, and there being available land elsewhere, he is largely master of the situation.

The district rates.

485. The district average rent-rates for each class of raiyat are shown below:—

| Serial num- ber. | CLASS OF BAITATS. | Area in acres, | Rent in rupees. | Rate per acre. |
|------------------------|--|-------------------------------|-------------------------------|----------------------------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | . 6 |
| | | | Rs. | Rs. A. P. |
| 1 2 3 | Raiyats at fixed rates Settled and occupancy raiyats Non-occupancy | 26,803 1,255,967 38,624 | 30,632 23,63,256 69,538 | 1 2 8 1 14 1 1 12 10 |
| | Total | 1,321,394 | 24,63,426 | 1 13 9 |

It is noticeable that 24 out of 25 lakhs of the total rental is payable by settled and occupancy raiyats, only a lakh being realisable from raiyats at fixed rates and non-occupancy raiyats, the latter paying twice the amount paid by the former. The district rental for all classes is Re. 1-13-9, and in no case does it come up to Rs. 2 per acre. Raiyats at fixed rates pay at, of course, the lowest rate, viz., Re. 1-2-3 an acre. But settled and occupancy raiyats who hold 85 per cent. of the area pay an average of only Re. 1-14-1. This is the highest rent-rate, non-occupancy raiyats paying Re. 1-12-10 per acre, or nearly 2 annas less. That this should be so is eloquent testimony of the general absence of demand for land. Those who are willing to reclaim are allowed settlements at privileged rates.

486. To convey an idea of the lowness of the Champaran rates, they are Comparison with neighbouring in the following statement compared with those of districts:—

| In Der. | ų | Ez- | PROPRE | TAST. | | FIRRO BAT | 76. | Осот | PANCY RAI | 1741A. | Non 00 | CUPANCY | | 77.12 18 25 27 | Total. | 1 |
|---------|---|--------|-------------------|-----------|--|---|---|-----------|---|---|---|---|--|-----------------------------------|---|-------------------------------------|
| | Name of District. | Area | Rent. | Rate. | Ares. | Rent, | Rais. | Arra, | Rent. | Hate, | Ārm. | Bent, | Rate. | At en. | Rent. | Rute. |
| | 1 | 3 | 4 | 5 | | , | • | • | 10 | 11 | 13 | 13 | 16 | 16 | 14 | 17 |
| | Champeres Muzafiscpur Ghazipur Bouares Gaya | Acres. | ika. 4,500 | Ra, A. P. | A cres. 26 hos 24,841 27,105 3,379 | Re. 30,678 1,61,670 8,16,798 14,238 | Re. A. P. 1 S S S 11 22 S 13 10 S 10 1 4 S S | 1,255,967 | Ra. 23,08,266 40,74,466 7,64,656 4,42,285 | Ra, 4. P. 1 14 7 3 12 3 4 0 11 4 8 0 4 1 1 | Acres. 38,724 21,577 57,884 31,746 6,609 | R4. 99,859 99,944 1,74,858 15,085 | Ma, A. P. 1 13 10 4 9 0 5 0 6 5 8 8 8 4 4 | 1,811,344 1,806 #72 634,725 | 14.63,498 67,76,479 12,61,961 4,74,564 | 1 13 9 3 13 6 3 15 6 4 8 4 |

Taking all classes of raiyats together the rent-rate of Champaran is Re. 1-13-9 per acre, or lower than that of Muzaffarpur and Ghazipur, Benares and Gaya by 100 per cent. or over.

487. If the rent-rates be considered class by class they disclose a similar disparity. Every raiyat at fixed rates in Champaran pays rents about three

times lower than elsewhere. Occupancy raiyats pay half the Muzaffarpur rates and about one-third of those prevalent in the other districts. Non-occupancy raiyats are of course in a still more favourable position, there being no other districts, except Gaya, where the non-occupancy is lower than the occupancy rate. That the average rent-rates are very low is of course not altogether incompatible with the existence in special areas of excessive rentals, and to throw light on

Variations in occupancy area and rates.

this point of view statistics of the occupancy rent-rate have been compiled from a number of villages in certain selected estates. They are

condensed in the following statement:-

| • | | | Total | ARVA H | | Average rate of rent per acre for | |
|---------------------------|---------------------------|------------------|----------------------------------|--------|-----------------------|---|----------|
| Name of Estate. | Number of Villages. | Area of estates. | number of settled raiyats. | Arca. | Percentage to totals. | whole holding, excluding produce rents. | REMARKS. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| | | Acres. | | Acres. | | Rs. 4. P. | |
| I.—Bettia Raj | 10 | 8,737 | 1,408 | 6,914 | 79 | 1 14 0 | 1 |
| Shuhar and Tikari | 10 | 5,618 | 1,467 | 4,103 | 74 | 2 1 0 | l |
| Raj Ramnegar | 10 | 7,861 | 673 | 3,927 | 60 | 1 4 0 | 1 |
| '- Madhuban Babu | 10 | 8,467 | 1,452 | 6,378 | 75 | 8 7 0 | 1 |
| Petty proprietors | 9 | 7,697 | 1,810 | 4,971 | 66 | 1 12 0 | |
| Total | 49 | 3 8,115 | 6,807 | 26,293 | 61 | 1 15 8 | |
| II.—Factory mukarraridars | 9 | 4,861 | 1,841 | 3,172 | 65 | 200 | |
| Factory thikadars | 9 | 4,125 | 763 | 3,185 | 76 | 2 2 0 | |
| Native ditto | 9 | 3,439 | 472 | 2,409 | 60 | 1 6 0 | |
| Total | 27 | 12,425 | 2,566 | 8,716 | 70 | 1 13 8 | |
| III.—Revenue-free pro- | 23 | 11,981 | 2,331 | 8,775 | 73 | 1 12 0 | |
| GRAND TOTAL | 99 | 62,521 | 11,704 | 43,784 | 70 | 1 14 8 | |

488. It will be first noticed from column 6 that the largest percentage of the estate area held by occupancy raisets is under the Bettia Raj, viz., 79 per cent., and the lowest under petty proprietors, viz., 66 per cent. This excludes the Raj Ramnagar, which contains so much waste that its percentage of 50 gives no fair basis of comparison. For revenue-free properties, the Tikari Shiuhar and Madhuban estates, the percentages vary between 73 and 75. It is remarkable that so much as 76 per cent. of the area under factory thikadars is held by occupancy raisets, but for factory mukarraris it descends to 65 per cent., and for native thikadars still lower to 60 per cent.

and Ro. 1-4 per acre, except in the case of the Madhuban Babu, in whose villages it is as high as Rs. 3-7 per acre. The reason for this high rent-rate in this estate has been explained in the previous chapter. The lowest rate is in the Ramnagar Raj, which is located for the most part in Shikarpur. The low rent of Re. 1-12 returned for estates held by petty proprietors is, I foar, not typical. They abound in Madhuban thana, and I shall show hereafter that rent-rates there are the highest. Even for those selected villages, too, it will be subsequently seen that a larger percentage of the raiyats of petty proprietors pay at more excessive rates of rent than the others. The rates of Rs. 2 paid by occupancy raiyats to factory mukarraridars, and of Rs. 2-2 paid by them to Factory thikadars are, I believe, characteristic. Their raiyats pay a little higher than those holding under the Raj direct. The rate of Re. 1-5 for native thikadars is suspiciously low, and, if typical, is certainly due to the fact that native

thikaders take the remainder of their assets in absab so as to show a small rentroll and thus get a renewal of settlement on favourable terms.

Comparison of the rates of rent of different estates.

490. The percentage of relyats under these classes of landlords who pay at different rates are examined in the following statement:—

| | 1 | | | Nunn | ER OF ST | ITTLED I | BAITATO | BOLDIB | | ACCUM STANLEY | W. 1 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 | |
|--|---|--------------------------------|-------------------------------|---------------------------------|--------------------------------------|--------------------------------|--------------------------------|------------------------------|------------------------------------|-----------------------|--|----------|
| • | 8 | Rupen | | Rupec | a 3 and ler. | Eupre und | 4 and | Lupard | s and er. | Over | Re. 8. | |
| NAME OF LANDLORD. | Total mumber raiyata. | Number. | Percentage to total | funber. | Perrentage to total. | Number. | Percentage to total | Kumber. | Percentage to color | Number. | Percentage to | RDEARES. |
| | å. | × | 72 | A | 42 | Þ. | A.S | × | | ž. | ~~~~ | |
| 1 | 3 | 8 | 4 | 6 | 6 | 7 | • | • | 10 | 11 | 15 | 18 |
| CLASS I. | | | | | | | | | | | | |
| Bettia Raj Bhiuhar and Tikari Raj Ramnagar Madhuban Babu Petty proprietors | 1,405 1,467 673 1,458 1,910 | 834 454 465 48 617 | \$8.0 89.1 89.1 34.1 | 819 888 178 293 391 | 36°9 34'4 25'7 15'4 31'6 | 363 294 22 854 138 | 187 200 33 56 2 76 | 62 167 3 947 619 | 4*4 11*4 0*4 17*0 84*8 | 97 194 10 83 | 1'9 13'2 1 0 87 | |
| Total | 4,607 | 2,115 | 81.1 | 1,064 | 34.9 | 1,671 | 85.1 | 1,098 | 161 | 359 | 6,3 | |
| CLASS II. | | | | | | | | | | | | |
| Factory mukarraridars Do. thitadars Mative ditto | 1,841 758 478 | 210 242 241 | 36'4 37'8 81'1 | 200 347 118 | 25.0 40.1 21.6 | #18 101 #0 | 80°0 18'4 18'9 | 18 18 18 | 0°4 1 7 2 8 | 13 10 15 | 3.9 7.3 0.0 | |
| Total | 3,566 | 741 | 58.8 | 766 | 29 4 | 1,00% | 30.1 | 83 | 13 | 34 | 1.3 | |
| CLASS III. | | | | | | | | | | |) | |
| Revenue-free proprietors | 2,331 | 1,505 | 67.1 | 390 | 15.7 | 262 | 31.4 | 80 | 3.4 | 104 | 4'8 | |
| GRAND TOTAL . | 11,704 | 4,422 | 87.8 | 3.730 | 23.4 | 368,2 | N4 K | 1,711 | 10 6 | 417 | 4:3 | |

From the total it will be seen that 37.8 per cent. of the settled raiyats hold at Rs. 2 per acre, 23.4 at Rs. 3, and 24.2 at Rs. 4 and under, and only 10.4 at Rs. 5 and under, and a very small percentage of 4.3 over Rs. 5. Under proprietors they fare slightly better than under tenure-holders, as under the former 31 per cent. are assessed at or below Rs. 2, against 28.9 under the latter and 24.4 at or below Rs. 3, against 29.4 and 23 per cent. at or below Rs. 4, against 39 per cent. But rates higher than Rs. 4 and Rs. 5 appear more prevalent among proprietors than among tenure-holders, though it is in the Madhuban estate and in those of petty proprietors that the high rent-rates are mainly found. They are also noticeable in the Shiuhai Tikari villages. In the Bettia Raj, however, which occupies so large a part of the district, only 4.4 per cent. of the raiyats pay over Rs. 4, and just under 2 per cent. over Rs. 5. In villages held by factory mukarraridars and tenure-holders the proportion is very much less, being in those of the former under 1½ per cent. The Rampager Rai has so merce as 60 nor many factors. The Ramnagar Raj has so many as 69 per cent. of its raiyats paying at Rs. 2 and under, a very insignificant number holding at rents above Rs. 3 per acre. In striking contrast are the estates of the Madhuban Babu and of petty proprietors. In the Madhuban estate only 3 per cent. of the raiyats hold at Rs. 2 and under, and 15.3 per cent. at Rs. 3 and under, 59 per cent. pay between Rs. 3 and Rs. 4, and 17 per cent. between Rs. 4 and Rs. 5. I will not lay too much stress on the low rents for petty proprietors, as I fear they are not typical. I do not believe that in ordinary villages 34 per cent. of the raiyats pay under Rs. 2, and 22 per cent. under Rs. 3. At the other end of the scale 34 per cent. are shown to pay between Rs. 4 and Rs. 5, and this is, I think, characteristic. The revenue-free proprietors, though mainly petty, do not appear to pay much attention to enhancing rates. They have no revenue to pay for one thing, and then, being largely Brahmans, are indifferent to zamindari affairs. So many as 67 per cent. of their raiyats are returned as holding st or below Rs. 2 only per acre. From the statistics that have been put forward then it is evident that the most considerate landlords are the Bettia Raj and its European tenure-holders. I omit the Ramnagar Raj as it is lenient out of pure necessity, for its area is still very largely unreclaimed.

492. The indigo factories when they take tenses of villages do not look to profits from rents; indeed, there are cases where Indigo factories as lessors. they pay higher rents to the Raj than they realise from their raiyats, and during the current operations there were some who applied for enhancement of rents because they were so instructed by the Bettia Raj, not out of their free will. In short, they want indigo and good indigo, and the means of getting it is to keep the tenants happy and contented. On the other hand, there is no indication that the realisation of adequate rents is neglected. They vary mainly between Rs. 2 and Rs. 4, and Rs. 2 is a very fair average for the district. In respect both of assessment and of realisation the Bettia villages in lease to factories are better managed than those held direct. 'Factory management, if regarded from the point of view of rents alone, is in the Bettia Raj greatly to the advantage of the proprietor, and, I believe, almost equally to the benefit of the raiyats. There are of course other points of view, but these will be dealt with in the chapter on indigo.

In view of the high rents in the Madhuban Babu's estates the 493. Director of Land Records in letter No. 804S., dated Question of granting to Revenue 23rd March 1896, enquired "whether it appears officers special power to settle or reduce rents. desirable that Revenue officers conducting operations under Chapter X of the Act should be vested with powers additional to those which they at present possess (a) to settle rents, (b) to reduce rents." "Even if," I replied, "an 8-rupeo rate of rent per bigha is decreed, although high for Champaran, it does not seem to me to be, on the whole, oppressive, for the bigha is 2 acres and the land produces 30 to 35 maunds of paddy per acre as well as either bhadai or rabi crops, and the rent represents about one-fourth to one-fifth of the produce, after paying all the expenses of raising it. "It is only in case of flood that the rents cause hardship, but ordinarily the rents, although high, can be paid, and I do not think extra powers are required by the Settlement Officers to cope with the difficulty. There are no indications of bitter disputes or insupportable oppression as would alone justify a recourse to the provisions of section 112, Bengal Tenancy Act. In my opinion it is only the most extreme circumstances which should be allowed to compel us to incur the odium of proceedings under this section" (my letter to Director, No. 143, dated 3rd June 1896). As it eventually turned out, we were able to frustrate the attempt, and the rents entered in the record-of-rights are for the most part Rs. 3 lower than those the Madhuban Babu claimed. They are to the same extent higher than those the raiyats admitted.

The rent-roll has mainly developed in the direction of new assessment on extended cultivation, but in spite of the low rent rates still prevailing, there has been some enhancement of rent as well as much increase. I shall try to convey an idea of the extent of both from the information contained in old jamabandis and Collectorate registers.

I have referred in Chapter IV, Part I to a register found in the Collector's record-room containing particulars of the permanent settlement. It contains a column for rent as well as for revenue. It is unfortunately blank for pargana Mohsi, but the proper entries have been ascertained by applying to its revenue the proportion found to exist between the revenue and rent of the The result is that in 1790 the other two parganas of Semraon and Majhaua. total rental of the whole district was Rs. 5,55,615. In 1876, when the rental was again ascertained for the purposes of determining the road-cess, it was estimated at Rs. 26,20,942, which was further raised to Rs. 30,73,556, at the next revaluation in 1893. Our records, on the other hand, work it out to be Rs. 24,63,426. About 10 per cent. has to be allowed for the rent of land in direct cultivation of landlords, which will bring the total to 27 lukhs. held rent-free is small, and I do not think any amount of coaxing will get the district rent-roll up to 30 lakhs after making due allowance for sairat. Thus there appears little chance of a revaluation being conducted with any success. I refrain from drawing any conclusions as to rent rate based on the areas entered in the register of 1790, as they are not sufficiently trustworthy, and pass on to discuss specific information obtained from the Bettia Raj jamabandis and the resumption registers.

The increase of cultivation and rent-mic during the British period.

The increase of cultivation and rent-mic during the British period.

The increase of cultivation and rent-mic during the British period.

I have divided them into four groups, the first consisting of the jamabandis of the year of the permanent settlement (none being available of prior date), the second of subsequent years up to 1820 (most of which fall between 1815 and 1820, the third up to 1850, and the fourth up to 1870. For each group, the area and rent as then recorded are compared with the present figures in the following state ment:—

| | | 4 | | VATI AR RDING I | | | BIF | T ACCOR | DENG TO | - | | | BATH | 7404 | R PI | ¥• 1 | 0- | | |
|------------------------|---------------------|----------------------|----------------|--------------------|---------------------|--------|----------|---------|---------|-----------------|------------------|----------------|------------|------|-------------|---------|-----------------|-----------------|---------|
| | | g to survey. | | | 3 | Raj | jumahari | di. | Survey, | Perce of inc | ritage regue. | Raj j | ane ben | di. | • | | Perce of Inc | Mingo Tunas, | |
| Ривіор. | Number of villages. | Total area arcording | Raj jamsbandi. | Burrey. | Percentage of incre | Bent | Abwab. | Total | Rest. | Without sbwab. | With abwab. | Without abwah. | 1 | | | Surrey. | Wabout abwah. | With about. | Remare, |
| l | 2 | | • | 0 | • | 7 | | • | 10 | n | 18 | 18 | | 14 | | 18 | 16 | 17 | 18 |
| | | Acres. | Acres. | Acres. | , | Re, | Re. | Rø. | Rs. | Re. | Ra, | Hs. s. | r. Rs. | A. P | Ha. | A, 1 | | | • |
| st Period (1793) | 5 | 1,011 | 80 | 819 | 883 | 91 | 11 | 102 | R54 | 83A | 757 | 1.1 | 3 1 | 4 5 | 1 | . 11 | 81 | 23 | |
| nd Period (1794 –1820) | 21 | 22,683 | 6,371 | 16,260 | 155 | 8,980 | 2,367 | 11,347 | 30,469 | 130 | 188 | 1 6 | 1 1 1 | 8 6 | 1 | 18 11 | 83 | | |
| d Period (1830 1870) | 34 | 24,348 | 11,158 | 19,798 | 77 | 12,917 | 5,049 | 17,948 | 84,547 | 165 | 90 | 1.1 | B 1 | 9 A | 1 | 11 • | 60 | 7 | |
| h Period since 1870 | 9 | 8,240 | 4,730 | 6,158 | 30 | 7,313 | 2,415 | 9,728 | 14,102 | 93 | 46 | 1.4 | . 2 | 0 10 | 1 | 4 9 | 40 | 19 | |

497. In the three villages of thana Bettia for which the jamabandis of the year 1793 are available, the raiyati area has risen from 80 to 549 acres, or more than sixfold, and the rent from Rs. 102 to Rs. 854, or eightfold. But the rate has risen from Re. 1-4-5 to Re. 1-8-11, or by 22 per cent. only. It will be noticed that 10 per cent. of the rent realised was made up of various abwab. For the second period the number of jamabandis is fairly large. The area here has increased by 155 per cent. and rent by 168, including abwab. The increase in rate is 5 per cent. only. Coming to the third period, for which we have 34 villages, the rise in area is further reduced to 77 per cent. and rent to 90 per cent. There is a slight increase in rate, viz., by 7 per cent. In the fourth period the increase in area comes down to 30 per cent. and in rent to 46, but the rent rate rises to 12 per cent., a good deal higher therefore than in either of the previous periods. It will also have been noticed that, while the abwab formed 10 per cent. of the rent in 1793, it went up to close upon 20 in 1820 and to above 40 per cent. in 1850. But it decreased a little in the fourth period. Leaving all possible margin, it is, I think, clear that the first half of the century was characterised by an enormous increase in area. In the latter part of the century there has necessarily been a slower expansion of cultivation, but there has also been a tendency for the rent rate to increase.

498. A remarkable corroboration of the results furnished by these interesting figures is supplied by the following statement compiled for 19 villages which were resumed in 1839-40:—

| | ź | | PDING VERT | TOTAL | PAYILS ORI | 4884 40 70 | Cord- | REFT IN O | CCORD. | BATE AC | | 3 | Marie Mandall Marie Mandall as |
|----------|------------|-----------------|------------------|-----------------|-------------------------|-----------------|-----------|--------------|---------------|---------------------|---------|-------------|--------------------------------|
| Tata | of village | g | | Resun | ption, | Aur | rej. | , gi | | | | er of inc | Long bee. |
| | Number o | Bestampt : | Berred | 1 | Percentage to sotal. | Arm. | Percesta. | Natura pire | Surray. | Berum ptio | Burrey. | Peer ceateg | |
| 1 | 3 | • | ٠ | | • | 7 | N | , | 10 | n | 19 | 13 | 14 |
| 1.800-40 | . 19. | Acres. 9,187 | Acers. 12/144 | Acres. 2,255 | 40 | Agree. 1,061 | 61' | Ra. 3,465 | Re. 14,983 | Rs. A. P. 1 1 13 | 1 19 5 | 10 | la . |

499. These villages do not appear to have been wholly resumed, so their raigati areas have been compared, and we find that 40 per cent. of the area was raigats' in 1839-40 and that 61 per cent. is now. The corresponding figures furnished by the jamabandi statistics of the third period are 39 and 69 respectively. These two sources, therefore, furnish information in agreement to a remarkable degree. So, too, in rent rates. The increase of present rents is 50 per cent. in excess of those recorded in the jamabandis without abwab and 58 per cent. in excess of those shown in the resumption register. Abwabs are discarded, because, during the resumption proceedings, they were probably given no recognition. But this increase, without the inclusion of abwab, is of course nominal. The actual increase was only 7 per cent.

500. Thus the enhancement was on the whole very moderate, but the estates of the Madhuban Babu in tappa Duho Suho, the Madhuban Babu. resumed and settled in 1839, afford an exception,

| | | • | | |
|------------------|-------------------------|---------|-------------|--------|
| 4 last variables | 44 27 27 173 (2 | hocoman | 90 | rara |
| the more | LIGHT TO THE PARTY OF A | Docaubo | D () | TOI O. |

| | r fe | TOTAL R ARBA(AO TO | COMPING | DCTESSO. | REST ACT | | araking | RATE ACC | соврияе | DCT0866. | |
|---------------------------------|-----------------|--------------------------|------------------|-----------------|---------------|---------------|---------------|---------------------|--------------------|-----------------|---------|
| Ривіод. | Number of villa | Lesumption. | Present sur- | Perceptage of 1 | Resumption. | Surrey. | Percentage of | Regnandon. | Surrey. | Percentage of f | Reverse |
| 1 | 3 | 3 | • | 5 | 6 | 7 | н | P | 10 | 11 | 15 |
| 1839-40 (Tappa Dulio Sulio). | 63 | Acres, 18,605 | Acres. 26,800 | 43 | Rs. 17,711 | Ra. 70,968 | 352 | Hs. A. P. 0 15 B | Rs. A. P. 8 0 6 | 220 | |

The raigati area has risen from 18,000 to 26,000 acres, or by 41 per cent. the jamabandi figures, which extend over a period of 30 years, from 1820 to 1850, showing 77 per cent. But when we come to rent, the rise is phenomenal, viz., from Rs. 17,711 to Rs. 79.968, or by 351 per cent., against only 90, elsewhere for that period, as shown by the jamabandis. The rate has shot up from annas 15-2 to Rs. 3-0-6, or by 220 per cent., against only 7 or 50 without abwab elsewhere. Of course a rent-rate of under Re. 1, such as formerly existed, would in the case of tappa Duho Suho be ridiculous at the present day, but that does not justify the Babu in taking advantage of the extreme fertility of the area to screw up the rents too high now.

Enhancements obtained by means therefore the influence of these two factors, which have played so important a part in facilitating enhancement of rent-rate in Mazaffarpur, have not operated in Champaran, and before the passing of the Bengal Tenancy Act, it was by means of abwab that enhancement was, it appears, mainly obtained.

602. A variety of abuah find a place in the old jamahandis of the Bettie
Raj, and to give an idea of their extent, I will

Abuah mentioned in old jamabandis of Buttia Raj.

describe some of them. Foremost, batalat sahi, or

the discount on the old sicca rupees at the rate of Then we always meet with hisabana and kagazati at one anna or so per rupee. the respective rates of one to two annas and three to six pies, the former being the fee of the patwari for making up the accounts and the latter to meet the cost of paper. Then came raesi and chakla at the rate of 3 to 6 pies each to make up the pay of the reis and the chakladar, who was appointed for each tappa, or a similar area, by the Raj, to settle the boundary or internal disputes in his jurisdiction. Thana kharach, as the name denotes, was the contribution from each tenant towards the expenses incurred on the occasion of a visit by the police, and nasarana and bhojns were paid to big Raj officials; the former in cash as a present, and the latter in kind for food subsequently converted into money, if unpaid, when they happened to go to the village. Chumawan was realised when there was any marriage in the Raj family, and madati and chanda were subscriptions raised for the benefit of any village or Raj official. Hatia was the fee of the weigher for the whole village and amini of the amin deputed

to appraise crops in bhack fields or sent on similar errands. There were no fixed rates for imposts like thana kharach and the others described thereafter. In addition to these were sudi, adhania, ania, dedhania and finania, denoting the several rates of interests or compensation which the raiyat had to pay on . default in a particular kist. Finally come a number of sairat (not about in the strict sense of the term). They were (1) jalkar, (2) falkar, (3) jangal or bankar, (4) ghal, (5) bazaar, (6) nimaksair, (7) bandh behri, (8) motaharfa and (9) chaukidari. These are too well known to require detailed explanation. It will be noticed that most of the abwab (not sairat) were for the benefit of the underlings of the Raj and not of the Raj itself. After the passing of the Bengal Tenancy Act, abwab were all consolidated with the rent, and having been paid for so many years, they are now part and parcel of it impossible to disentangle. One attempt was made by raiyats, sued for cuhancement of ronts under section 30 to disentangle them, but it did not succeed. The only cess of the kind that is now realised with regularity all over the district is pharkawan, similar to the old hisabana being the patwari's fee for writing out receipts and pharkhatics. It is generally levied at the rate of one anna per rupee of rent and in some cases, notably in tappa Duho Suho, at the rate of four annas per bigha. In the villages of the Turkaulia concern, it is realised direct by the landlord along with rent, and the patwari gets a fixed salary from the factory. But the general rule is that it goes to the patwari direct just as it is realised. The dawat puja is also a cess for the patwari, but is not by custom obligatory. The well to-do give him four annas to Re. 1 purely as a matter of favour. On the occasion of the dawat puja festival the patwari worships his dawat or inkpot on the 17th of Kurtik, the 2nd month of the Fasli year, and he is forbidden to touch pen and ink on that day. The prohibition extends to men of Kayasth caste only. Embankment cess and dak cess are often realised from the raivats at 1 anna per rupee, but these, I think, close the list of the illegal cesses now imposed in this district.

Rate of incidence of zevenue and rent per acre.

503. In the following statement the relative incidence of revenue and rout, pargana by pargana, is compared:—

| NAME OF PAROANA | Potal area til actes, | Revenue. | Bate por acre. | Total ratyati ares (excluding rent irec). | Kent. | Buto per acre, | Вимания, |
|-----------------|--|--|-----------------------------|--|---|---------------------------------|----------|
| 1 | 3 | 3 | • | 6 | 6 | 7 | 8 |
| Majhana | 1,781,747 221,377 122,661 2,979,515 | Acres. 386,462 109,686 19,407 | Ra. A. P. 0 3 8 0 7 9 0 3 8 | 1,068,679 | Bat. A. P. 18,80,907 0 6 8,85,358 0 9 24,63,426 0 0 | Ra. A. P. 1 11 7 3 8 0 2 5 7 | |

I have not split up the figures than by than a because in dealing with such large estates as exist in this district a thanawar apportionment of the revenue would be very arbitrary and perhaps misleading. The revenue has been compared with the total area of the parganas (excluding the unsurveyed portion of Majhaua) and the rent with the raiyati area only. It is striking that revenue instead of being nine-tenths of rent as was the proportion sanctioned by the permanent settlement, as about one-fiftieth. But the difference between the rates per acre is not so great. The rate of rent is only seven times that of revenue, the figures being Re. 1-13-9 and four annas respectively. Both the rates are the highest in Mehsi, and if the jungle tract were included, the revenue rate like the rent-rate would be lowest in Majhaua. The difference in rate of revenue between Mehsi and Semraon, two adjacent parganas, where, too, rent-rates are approximately the same, is most marked. It is without doubt due to the fact that north Dhaka, which comprises pargana Semraon was, like Adapur, mainly reclaimed at a later date.

Variation of existing rent-rates in the different thanas for different classes of raiyats.

504. I shall conclude this section with a few remarks on the variation in existing rent-rates than by thana, which are set forth in the following statement:—

| | | | y | IXED BAT | en. | Occu | PANCY RAIT | A78. | Nox-oc | CUPANCY | PATTAR |
|--|---|---|--|--|---|---|--|--|--|--|---|
| The second secon | Name of thana, | | Area. | Rent. | Rate. | Ares. | Rent. | Rate, | 'Area. | Ment. | Rate. |
| | 2 | | 3 | • | 5 | e | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| | • | | Acres. | Rs. | Rs. A. P. | Acres. | Re. | Rs. A. P. | A cres, | Be. | Re A. I |
| 1 2 3 | Bazaha Shikaspur Setta | | 1,039 1,444 4,881 | 1,074 1,214 4,535 | 1 9 6 0 13 6 0 16 1 | 165,409 200,777 207,400 | 2,68,221 3,50,446 3,45,756 | 1 9 8 1 10 4 1 10 8 | 8,823 3,015 16,578 | 14,233 5,742 \$1,915 | 1 9 1 |
| | Bettis subdivision | .: | 7,330 | 6,583 | 0 15 0 | 876,676 | 9,44,423 | 1 10 2 | 29,011 | 48,190 | 1 10 |
| 4 8 7 8 | Adapur Dhaku Moithari Gobandganj Kesaris Mudhuban | • | 1,122 4,935 2,230 2,789 7,563 821 | 941 7,631 8,030 2,043 9,373 1,702 | 0 18 5 1 4 9 0 14 8 0 11 10 1 8 10 2 1 2 | 109,315 160,813 120,751 111,229 121,028 60,180 | 2,27,002 4,02,550 8,00,493 2,09,258 2,31,260 1,52,281 | 9 1 2 9 H 1 1 11 4 1 14 8 1 13 8 9 11 3 | 891 877 2,410 2,693 2,409 543 | 906 2,368 4,545 5,094 5,306 1,841 | # 1 1 8 11 1 14 1 1 14 2 8 8 6 |
| | Badar subdivision | | 19,464 | 28,740 | 1 4 4 | 67'', 201 | 14,18,438 | 3 1 5 | 9,613 | 20,648 | 8 8 |
| | District Total | | 26,863 | 30,633 | 1 2 3 | 1.255,007 | 23,63,956 | 1 14 1 | 35,024 | 69.538 | 1 13 |

| *1 | | | TOTAL | | tin | DER HAIY | A.19. | E. le. | |
|----|--------------------|--------------------|----------------------|-----------|--------------|----------------|-----------|---------------------|------------------------------------|
| *1 | NAME OF THANA. | Aics. | Rent. | Rate. | Arca. | Rent. | Rate. | Density square 1 | Benaux . |
| | - + | 12 | 18 | 16 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| | | Acres. | Re. | Re. A. P. | Дстеч. | Ra. | Rs. A. P. | 1 | We go to a party of the controlled |
| | | 178,361 | 2,83,529 | 1 9 6 | 1,784 836 | 6,758 1,503 | 2 10 8 | 804 274 | |
| | Shikarpui | 205,831 225,934 | 8,37,402 | 1 10 6 | 3,430 | 6,228 | 1 12 11 | 023 | |
| | Bettis subdivision | ., 613 096 | 10,00, 03 | 1 to 1 | 6,050 | 19 499 | 2 0 10 | 377 | |
| | | 110, 18 | 2,28,749 | 2 0 1 | 244 | 653 | 1 16 8 | 747 | |
| | | 166 639 | 4, 12, 517 | | 470 | 1,229 | 2 9 7 | 840 | |
| | | 125,371 | 8,13,160 2,17,008 | 1 11 6 | 1,102 | 1,214 | 2 1 10 | 658 | |
| | Gobindgan) | 130,995 | 2,35 9 19 | 1 12 9 | 1,119 | 2 (0) | 2 1 9 | (h.i | |
| | March and American | 07,644 | 1 85,834 | 2 11 4 | 417 | 1, 109 | 3 6 8 | 840 | |
| | Badar subdivision | 708,365 | 14 (3,250 | 1 1 0 | 5,301 | 11,007 | 2 0 8 | 754 | |
| | District Total | 13,21,394 | 25,6.,420 | 1 13 9 | 11,400 | 23, 600 | 2 8 10 | 607 | |

Resignate at fixed rates.

This holds good in the case of all classes of raiyats a state of things perfectly in accord with known facts. Among thanas, Madhuban, on the Tirbut border, heads the list with. Rs. 2-1 2 per acre, followed though at a distance by another thana similarly situated, viz., Dhaka, which has Re. 1-8-9 per acre. Kesaria, the southernmost, comes next with Re. 1-3-10. In all other cases, the rate is below Re. 1, except in Bagaha, where it is 6 pies higher, the area held by this class of raiyats being, however, very small there. I need hardly add that Shikarpur closes the list with the lowest rate, at annas 13-6 only.

506. The next class in the ascending scale of numerical importance is that of non-occupancy raiyats. The lead is taken by Madhuban, with a rate at Rs. 3-6-3 per acre, Dhaka and Kesaria coming next in order, with Rs. 2-11-2 and Rs. 2-3-3, respectively. Adapur is a near fourth, with Rs. 2-1-10 per acre. The central thanas of Bettia, Motihari and Gobindganj average between Re. 1-11-11 and Re. 1-14-10 per acre. Bagaha follows them all, with Re. 1-9-10 per acre, Shikarpur again bringing up the rear, with Re. 1-9-5 only.

507. So far, we have touched on only the fringe of the Champaran peasantry, the mass of whom are settled or occupancy raiyats.

The Bettia subdivision returns a rent-rate of Re. 1-10-2, as against Rs. 2-1-5 in the Sadar. Thank Madhuban,

the home of petty proprietors of Champaran, once more returns the highest rate of Rs. 2-11-3 per acre, and is once more followed by its sister thana of Dhaka with a rate of Rs. 2-8-1 per acre. Adapur, which has the largest area of the Madhuban Babu within its borders, stands third, having a rate of Rs. 2-1-2 only.

508. Adapur is by far the most uniformly fertile thana in the district. It is clear then that rates do not in this district to the same extent as in those more advanced vary with the class of soil, and density of population affords hardly se safer guide, for then Kesaria should be the next than an . order, whereas it follows Gobindganj, and with a low rate of Re. 1-13 per acre. The reason for the low rate in Kosaria is that it is largely inhabited by the higher castes—Babhans and Rajputs—who hold at privileged rates, and the Bettia Raj being without any previous measurements, lost several of their applications for increase of rent which were contested. Consequently, those compromised were compromised on terms very favourable to the raivats. In Gobindganj, on the other hand, which is within the carefully managed dehat of Turkaulia, there have been two general measurements, followed by assessment of excess lands, within the last decade - one by the factory itself, and the other during the cadastral survey. The Gobindganj raiyat, therefore, has practically no excess land unassessed. The consequence is that Gobindganj comes out with a slightly higher rate than Kesaria, viz., Re. 1-14-3 per acre. From here northwards the rate follows the geographical order: it is Re. 1-11-4 in Motihari coming down to Re. 1-10-8 in Bettia, Re. 1-10-4 in Shikarfur, and Re. 1-9-2 in Bagaha. According to preconceived ideas the rent-rates, low as they are, are higher than might have been expected in the two northern thanas. But we must not lose sight of those portions of them which we have excluded from survey, and where rents are at the lowest level imaginable. In thana Bagaha, the surveyed portion of which runs with the Gandak from north-west to south-east, the low rates of the north in tappa Rajpur Schoria are more than met by the much higher rates in the south, specially round Bagaha itself, where sugarcane fields are assessed very highly. In Shikarpur, on the other hand, the excluded area forms the much larger proportion than in Its soil, where cultivated, is extremely fertile and yields a large quantity of paddy. But without doubt in both these thanas the thikadars who are for the most part rent speculators have forced the rates higher than they would otherwise have been.

509. The statistics of rent-rates for under-raiyats require little comment, because the under-raiyats are few in number and two-thirds of their area do not pay cash rents at all.

The highest rate, Rs. 3-5-8, is returned by Madhuban, where agricultural conditions are most congested,

510. In the following statement the percentage of area held by each The proportion of produce to class of raiyat on cash and produce rents is given than by than :-

| | hg1 | TERD OR C | CL CPAN | (5 841) | ATH | | Provide (| PANCY | 811111 | 14 | | Unti | #1'-KA1 | YAIr. | | - |
|---------------------------------|---|---|----------------------------|---|------------------|---|--|----------------------------|---|-----------------------------------|--|--|---------------------------|--|--|------------------|
| | | Cash-p | aying. | Pro | luon- | | Cash- | miline. | | Stree ring | | Cush- | proving | Produce | Nortad . | |
| NAME OF TRANS. | Total arres | Ana | Persontage to | 'Arm. | Person tage to | Total stes. | Ares. | Prince of the St. | 1.4 | Percentage | Tertal | 7.49. | र स्टब्स्स्य स्ट | 42. | Page Andread | Бешом у н |
| 3 | 8 | • | 5 | A | 7 | } + | 9 | 1" | 11 | 12 | 11 | 10 | 12 | 16 | 17 | 14 |
| Bagaha Shikarpur Bettin | 174,970 90-,281 215,571 | 189,499 200,777 207,499 | 90 146 963 | 6 171 4,463 6,171 | 4 6 | 11 *12 4,130 20,891 | 8,51; 36.6 36.673 | 76 hs 79 | 2, 879 106 4,277 | 74 13 21 | 1 9/0 3 7/2 7,3/2 | 1,7% FOR 3 4.99 | 1 10 10 67 | 1 200 | 58 75 63 | |
| Bubdirmion | 690,673 | 678,676 | 946 | 22 997 | 4 | 86,79 | 201 | 7., | 7 744 | 21 | 11 " | F,1/20 | 4: | 8,504 | 54 | |
| Dhain Motihari Gobledonal | 116,978 186,974 129,871 118,689 126,611 59,699 | 100,518 190,513 120,781 111,229 181,023 86,140 | 93 93 94 96 97 | 7,6(13 5,951 9,690 7,479 4,445 1,440 | 7 8 7 8 | 608 1450 8 8 - 2 3,763 3,191 615 | 2 410 2 2,373 1 2,373 1 2,373 1 | 6A R1 R1 R1 R9 | 272 X:1 1,132 710 6:5 72 | 65 97 23 1 - 70 12 | 3, 177 2 '6, 1 1, 4-4 4,314 2,845 1,721 | 268 470 1,002 1,663 1,148 447 | 9 16 82 45 45 | \$ 0+6 2,54-6 2,4-7 2,172 1,445 1,274 | () (() () () () () () () () () () () () () (| |
| Sedar Division | 716,792 | 679,991 | 95 | 36,591 | 6 | 12,00 | 1 413 ' | 74 | 3, 153 | 27 | 4,454 | 6,391 | 374 | 3.978 | 71 | |
| DESTRICT TOTAL | 1,114,465 | 1,256,967 | 94 | 86,478 | | 40,47 | 34,621 | 79 | 10 1/21 | 7.2 | 81,027 | 11,400 | 35 | 21,577 | 65 | - |

It will be seen that less than $4\frac{1}{2}$ per cent. of the area held by settled and occupancy raiyats, who absorb more than this of the Varieties of produce-rents. cultivated land, pays rents in kind. Produce-rents therefore are of little importance in the district, and a detailed description of their varieties is uncalled for. The ordinary system is actual division of the crop half and half. If this is made on the threshing floor it is called aghor If it is made in the field it is called bujh latai, the actual bojhas or bundles being divided. There is a further variety characteristic of this district, called batai tikuli, wherein the crop is divided in the proportion of 2 to the raiyat and I to the landlord. This arrangement is usually resorted to where land has to be roclaimed, and sometimes when it is unfertile and therefore unremunerative on other terms. Division by appraisement is called batai kankut. Though more advantageous to the landlord as affording less opening for pilfering, it is not common. To the manhunda or mankhap system I have already referred. It consists in a rent fixed at so many maunds of grain on either specified plots or a certain proportion of the holding. I have explained in the Muzaffarpur report that the system is rigid, oppressive, and very unpo-The traders and mahajans of Motihari attempt to acquire lands so them out on these terms. The system is met with mainly in and lease them out on these terms. Adapur, where it is found to be more profitable than indigo cultivation. There is nothing good to be said for it, and had the law authorised me to take the initiative, I should have commuted all such rents into cash.

511. But it is very noticeable how small the total area held on produce rents is for a backward district like Champaran. This remark does not apply to non-occupancy and under-raiyats, for 22 per cent. of the area under the former class and 65 per cent. of that under the latter pay rents in kind. The proportion of the cultivated area held by these two classes is, however, very incensiderable. Of the occupancy area, less than $4\frac{1}{2}$ per cent. is held on produce rents. There are two main reasons: most of the district is held by big zamindars: any system of produce rent requires constant supervision, and this entails the employment of an expensive mufassal staff. In extensive properties the system is costly and never works satisfactorily. The second reason is the influence of indigo planters. They are the landlords of a considerable area in the district, and of course favour a stable and enlightened rent system. Still it is noticeable that the proportion of occupancy area under produce ronts is nearly 5 per cent. in the Sadar subdivision, while it is only 4 per cent. in the Bettia subdivision. No doubt there is a tendency for produce rents to be more prevalent where proprietors are petty. Thus the percentage under produce rents is larger in Muzaffarpur than Champaran. Again, where the population is more congested, cultivators will settle on produce rents for lands the crops of which are precarious. But in the case of Champaran there are also some special forces in operation. The Sadar percentage is high, owing to the high percentage in thanas Adapur, Motihari and Gobindganj. The two latter are largely owned by the Motihari and Turkaulia factories, and they stood out firmly for the 'entry as batai of little plots in the neighbourhood of village sites, which more liberal zamindars allow to go in as part of the homestead. They went to the length of bringing objections and disputes for such lands. The cultivators, of course, compromised. The reason for the large produce rent area in Adapur I have partially explained in describing the Hunda system. It merely remains to add that the mahajans and traders of Motihari, when they attempt to get land to sublet on the Hunda system, seek it in Adapur thana, because its soil produces the kind of rice, of which they are particularly fond. It will be seen that in the proportion of non-occupancy and under-raivat's area held on produce rents, Adapur again heads the list, and it is the same reason that operates. It is found too, though in a minor degree, in Dhaka, where the percentages also are high. Were the percentages of the total cultivated area held by these two classes are large, the matter would be serious. Fortunately it is very small.

THE TRANSFER OF OCCUPANCY RIGHTS.

512. Statistics of the transfer by sale of proprietary rights and of the transfers by sale and mortgage of occupancy rights were compiled by the Assistant Settlement Officers during attestation, and are furnished in Appendix VIII. Those relating to

occupancy rights will be first considered. Here, as in Musaffarpur, the work was unfortunately not undertaken from the commencement of the operations. Consequently it was confined to only 17 per cent. of the raigati area of the three thanas, Bettia, Motihari and Gobindganj. For the remaining thanas it was complete. The percentages for incomplete thanas have been worked out in the area for which enquiries were made not for the whole area, and can be assumed to be roughly applicable to the whole.

513. In all, 4,393 sales covering 10,608 acres and 14,497 mortgages of.

25,235 acres were recorded. Of the total area transferred, viz. 35,843 acres, 10,013 acres covered whole holdings and 25,830 part holdings. Of the former, 4,991 acres were sold and 5,022 mortgaged: similarly, for the latter, the figures are 5,617 acres by sale and 20,213 by mortgage. Thus it is seen that the area sold is less than half the area mortgaged, and part transfers cover more than double the area of entire ones.

514. Of the transferees, 654, or 3.4 per cent. were landlords, 70, or 3, lawyers, 7,713, or 40.8, money-lenders, and the rest 10,453, or 55.3 raiyats. The very large percentage of money-lenders is noticeable.

515. Coming to price paid on sale and sum advanced on mortgage, we find an amount of Rs. 3,59,279 paid in sales, giving a rate per acre of Rs. 33-13-10, and Rs. 10,70,712 advanced on mortgage, or Rs. 42-12-7 per acre. The rate for both kinds of transfer is therefore Rs. 40-2-4. It is seen, then, that not only are mortgages twice as numerous as sales, but that the sums advanced on them are higher than the prices realised on sales.

Reasons for the greater popularity of mortgages.

516. The reasons were given in the Annual Report for 1896-97, and I reproduce what was then said:—

"The raiyat, who has mortgaged his holding or part of it, can always cherish the hope of being able some day to redeem it; and the money-lender also, as a rule, much prefers a mortgage with possession to a sale. In the first place, it keeps the raiyat in his power. The money-lender does not want to ruin the raiyat outright and drive him away from the village but to keep him there as long as possible, and make as much out of him as he can. In the second place, the transferse, who acquires a holding by sale, usually has considerable trouble before he can get himself recognised by the landlord. He either has to pay a heavy salami, or, if the landlord is an indigo planter, he may be called on to execute an agreement to grow indigo on the best land of the holding for a considerable term of years. Perhaps the landlord will not allow a person whom he considers to be a professional money-lender to acquire any occupancy rights in his villages, and in that case the transferce has to bring a suit sin the Civil Court for possession."

In a recent case of this kind brought by a money-lender living in Motihari who had purchased the occupancy rights of a raiyat in a village belonging to Rajpur factory, the High Court held that the factory had the right to refuse to let the transferee cultivate the land and pay rent for it, and that in the villages belonging to the factory, occupancy rights were not transferable without the landlord's consent. This is the position which the Civil Courts have generally adopted, and it has been strengthened by a more recent decision of the High Court, reported on page 355, Indian Law Reports, exxiv, 1897, in which it was held that, in the absence of any custom to the contrary, occupancy rights are not saleable without the consent of the landlord at the instance of any creditor of the raiyat, except the landlord himself suing for arrears of rent. The transferee by sale is thus entirely in the hands of the landlord who can either refuse to recognise him altogether or can exact any terms he pleases from him as a condition of recognition. To continue from the annual report:—

"On the other hand, the transferce, who gets a mortgage with possession, has none of these difficulties to contend with. The rent is still nominally paid by the old tenant, and the landlord, in the majority of cases, knows nothing about the transaction. Even if he gets to hear of it, it is very difficult for him to do anything, as the raivat and the mahajan, acting in collusion, can easily outwit him. Meanwhile the creditor retains his hold on the debtor, he can either cultivate the land himself or, as is more usual, he lets it out to the former raivat, at an exorbitant produce rent."

Comparison between Champaran and Muzaffarpur. the holdings, has changed hands in the district during the last decade, and the full significance of these figures cannot be realised until we compare them with similar figures for Muzaffarpur:—

| | | raiyats in in which | oldirgs in in which | Numb | NOTE. | andpers. | AREA | TRANSPI | BRED. | TRA | umber Neyno Iubdr Oldin | ED . | Pa | COUNT OF ARI | 460 | _ |
|---------------|----------------------------|---|------------------------------|-----------------------|----------------------------|----------------------------|---------------------------|----------------------------|----------------------------|----------|----------------------------------|-------|-------------------|-----------------|--------|----------|
| Serial number | NAME OF DISTRICT. | drea held hy the villages enquiries wen | Number of ho | By sale, | By merigage. | Total. | By su le. | By mortenge. | Total. | By sale. | By mortgage. | Total | Ry male. | By nortenge. | Total. | REWARES. |
| 1 | , | 1,8 | 4 , | 5 | ű | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 13 | 18 | 14 | 18 | 16 | 17 |
| 1 3 | Champaran Muzaffarpue . | Aores. 900,777 861,365 | Acres. 264,345 417,387 | Acres. 4,803 3,235 | Acres, 14,407 11,405 | Acres. 18,890 14,630 | Acres, 10,008 3,672 | Acres. 25,235 10,877 | Acres, 35,843 14,510 | .7 | 10 8 | 14 | 1' 0' 6 | 8 | • | |

It is thus seen that in Muzaffarpur there is less than 1 sale ('7 only) and only 3.2 mortgages per 100 holdings, against 4 and 9.5, respectively, in Champaran; the total percentage being only 3.2 in Muzaffarpur, against 13.5 in Champaran, a fourfold difference. In area, again, we find 1.4 per cent, sold in Champaran, against only 4 in Muzaffarpur and 2.5 mortgaged in the former, against only 1.2 in the latter. In other words, the Champaran area sold is nearly three times and that mortgaged more than double that of Muzaffarpur. An examination of classes to which the land is passing affords no extenuation to the gravity of these results, as the following statement will shew:--

| | | 1Sters. | | • | Num | BRL OF | RANAVE | ME TII- | | | 1 | ARRA TRANSPE | erso- |
|----------------|--------------------------|------------------|----------------------|----------------------|-----------|-------------------------|----------------|--------------|------------------|---------------|----------------|----------------------|----------------------------------|
| | | Ē | Land | lorde. | Law | yers. | Money | -lendors | Rai | vuta. | | By sale. | - marin strengtaneonistis |
| Berta! number. | NAMB OF DISTRICT. | Total number of | Number. | Percentage to total. | Number. | Permentage to totale | Number. | Prevalage to | Number. | Percentage to | 4 rea. | Price paid. | Mate per acre. |
| 1 | 3 | 8 | ٠ | 8 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 18 | 13 | 14 |
| 1 9 | Champaran Muzaffarpur | 34,800 16,640 | 67 s 1,120 | 3 8 | 70 201 | .a .7 | 7,713 1,903 | 41 13 | 10,453 11,51a | 7.5 7.0 | 10,609 8,67 | 8,67,979 8,05,082 | Rs. A. P. 33 18 10 85 14 1 |

| •- | | | | Prick | PA ID- | | | | ST BATE | LOW RAT | | Ī |
|---------------|------------------------------|----------------------------|-----------------------|--------------------------------|--------|-----------------------|-------------------|------------------------------------|--------------|----------|-----------------------|----------|
| | | | By mortg | ARO. | By bo | h sale and r | oo rimige. | | | | | |
| Serial number | NAME OF DISTRICT. | Arma. | Price peld. | Bate per sere. | Arm. | Prive paid, | Rate per sere. | By sale. | By mortgage, | By sale. | By mort gag a. | CDEARES, |
| | | 16 | 16 | 17 | 15 | 19 | 20 | 21 | 12 | 23 | 24 | 26 |
| 1 8 | Champaran . Musallarpur . | Acres. 82,835 10 977 | 10,79,713 4,82,785 | Re. A. P. 42 12 7 44 6 2 | 35,419 | 14,38,782 6,87,867 | Ra. 40 47 | Rs. A. P. 21,429 2 6 257 8 6 | 1,5 10 0 0 | | | |

In both districts, landlords and lawyers are in the minority in this respect, though they account for double the area in Muzaffarpur that they do in Champaran, the percentages being 3.4 to landlords and .3 to lawyers in Champaran, against 7.6 and .7, respectively, in Muzaffarpur. But it is in the proportion of raiyats and money-lenders that the two districts very widely diverge. In Muzaffarpur raiyats account for no less than 78.6 per cent. of the transfers, against only 55.3 in Champaran, while the money-lenders absorb only 12.9 per cent in Muzaffarpur, as against the very high proportion of 40.2 per cent in

Champaran. There is not much difference between the two districts in price, an gare fetching Rs. 47 in the former, against Rs. 40 in the latter. But in Muzaffarpur, where proprietors are petty and the usage of free transfer by sale is yearly growing more common, the anomaly of sales fetching a lower price than the sum advanced in mortgages is not met with. The sale rate is Rs. 55 per acre, the mortgage rate only Rs. 44.

The thans statistics.

518. To localise the exact state of affairs with accuracy the thans statistics will now be considered:—

| 1 | • | retratil | ratysta. | | | | | WHER O | | ٠ | TOTAL | ARBA TI | A NETH | man, | - |
|---|--------------------------|----------------------------|--------------------|----------|--------------|--------|----------|--------------|-------|--------|----------------------|---------|-------------------------|--------|----------------------|
| 1 | | 8 | E E | Numma | OF TRAI | | PER | LUND | BHD | Ву и | ale. | By mar | igaro, | Tota | L. |
| | NAME OF THANA. | Total number kitalians. | Total area held by | By sale. | By mortgree. | Total | By sair. | By mortgage. | Total | Area. | Perrentage to total. | dra. | Perrentage to total. | Arre | Percentage to total. |
| | • | 3 | • | 6 | 6 | 7 | • | 9 | 10 | 11 | 12 | 18 | 14 | 16 | 10 |
| | | | Acres. | | | | | | | Acres. | | Acres. | | Aores. | |
| | Bagaha | 53,980 | 189,998 | 811 | 741 | 880 | .3 | 1 | 8 | 1,754 | 1 | 1,669 | 1. | 5,2173 | • |
| 1 | Shikarpur | 61,445 | 210,481 | 667 | 8,317 | 8,984 | 1 | 6 | 8 | 2,236 | 1 | 7,/69 | 5 | 17,974 | ٠ |
| 1 | Bettia | 11,974 | 45,857 | 367 | 1,158 | 1,528 | 3 | 10 | 13 | 734 | • | 2,073 | 8 | 8,007 | • |
| | Bettia sub- division. | 117,400 | 464,831 | 1,945 | 8,216 | 6,461 | 1 | • | 6 | 4,093 | 1 | 10,080 | * | 18,378 | 8 |
| • | Adapur | \$6,004 | 190,785 | 801 | 2,001 | 2 801, | • | | 10 | 1,690 | 1 | 4,232 | | 0,893 | • |
| • | Dhaka | 46,978 | 178,126 | 1,513 | 3,434 | 4,947 | | 7 | 11 | 2,925 | 2 | 4,041 | 3 | 2,800 | |
| • | Motihari | 8 779 | 17,497 | 143 | 810 | 4/32 | | н | 12 | 580 | 1 | 461 | 8 | 651 | |
| 7 | Gobindgani | 6,345 | 26,596 | 111 | 618 | ere | 2 | | 10 | gae | 1 | 1,064 | • | 1,450 | 5 |
| | Kesaria | 40,110 | 140,736 | 406 | 1,903 | 2,500 | 1 | 5 | 6 | 642 | * | 8,643 | 2 | 8,225 | |
| 4 | Madhuban | 22,026 | 60,506 | 474 | 1,000 | 1,403 | * | • | 0 | 683 | 1 | 1,272 | 2 | 1,988 | 8 |
| | Sadār sub- di∀ision. | 146,936 | 644,046 | 8,146 | 9,281 | 12.420 | 2 | 0 | 8 | 5,913 | 1 , | 14,505 | 8 | 80,470 | • |
| | Total | 8,64,143 | 5-1,77 | 4,593 | 14,497 | 18,990 | | | 7 | 10,608 | | 26,233 | - | 85,843 | - |

In the Bettia subdivision we find 5,216 transfers, or 5.5 per 100 holdings, affecting 15,373 acres, or 3.38 per cent., whereas in the Sadar the figures for holdings are 12,429, or 84 per cent, and for area 20,470, or 3:59. Considering that the agricultural conditions in certain portions of the Bettia subdivision are still very undeveloped, the Bettia figures are surprising, but I think they were inflated owing to the fact of their compilation just before and after the famine of 1897. Coming to thanas, we find the largest number of transfers per hundred khatians in Bettia, Motihari, and Gobindganj, where money-lendors are most numerous, but the percentages of these thanas must be considered subject to the qualification that they were compiled for less than one-fifth of the area. Dhaka and Adapur come next, with percentages of 10.5 and 9.9 respectively. They are both accessible to the mahajans of Segauli and Motihari, to whom unfortunately their rich paddy land is more than usually tempting. In all other than except Bagana the percentage ranges between 5 and 7, but it is striking that Shikarpur has 7.7, against 5.7 in Kesaria. The famine no doubt was largely the cause of the high proportion in Shikarpur, but only partially, however, for Bagaha, in the northern part of which also the famine was severe, returns only 1.3 per cent. It is noticeable that in almost all thands the number of mortgages is four or five times as large as that of sales. Again, looking at area, we find the area mortgaged to be double that sold in both subdivisions. The total area transferred is over 5 per cent. of the raigati area in thans Gooindganj, over 4 in Adapur, Dhaka and Shikarpur, over 3 in Motihari and Madhuban, and over 2 in Kesaria and over 1 in Bagaha. Adapur and Dhaka are again high in the list, also Shikarpur. The reasons have already been given.

519. Of the area transferred 64 per cent. in Bettia and 77 in Sadar are made up of part transfers, indicating that it is as a last resort that the agriculturists transfer the entirety of their holdings. It is only in Bagaha and Gobindganj that the number and area of whole holdings transferred is very large, but in the former the total area transferred is insignificant, viz., 1.7 per cent. of the whole, and in the latter the enquiries were not made in the whole thana. The statement, thana by thana, discriminating part from entire transfers is subjoined:—

| | | beld by | | P BUTIR | | | OF PART | | | OTAL AR | | PRR TAG COLUM | | Pane Tag: | B TO | PHRO | TO TO | 4 |
|---|--------------------------|--------------|----------|--------------|--------|-----------|--------------|--------|--------|--------------|--------|---------------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|----------|
| 1 | NAME OF | Total area i | By make, | By mortgage. | Total. | By sucke. | By mortenge. | Total | Bymk | By mortgare. | Total | Of column 4. | Of column 7. | Of column 5. | Of column 8. | Of column 6. | Of column 1. | RREARCE. |
| - | 1 4, | 8 | • | • | | 7 | 8 | p | 10 | 11 | 13 | 18 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| | | Aores. | Acres. | Acres. | Acres. | Aores | Acres. | Acres. | Acres | Acres. | Acres. | | | | | | | |
| ı | Bagaha | 189,995 | 1,452 | 623 | 1,975 | 272 | 1,045 | 1,317 | 1,724 | 1,668 | 3,192 | 84 | 16 | 83 | 67 | 80 | 40 | |
| 1 | Shikarpur | 219,481 | 1,101 | 1,597 | 2,698 | 1,134 | 6,453 | 6,576 | 2,235 | 7,039 | 0,274 | 49 | 51 | 23 | 77 | 29 | 76 | |
| | Bettia | 45,357 | 203 | 460 | 789 | 641 | 1,607 | 2,048 | 784 | 3,673 | 2,807 | 40 | 60 | 323 | 78 | 27 | 73 | |
| | Bettia sub- division. | 454,831 | 2,846 | 2,586 | 5,433 | 1,867 | 8,094 | 9,041 | 4,698 | 10,689 | 15,373 | 61 | 39 | 24 | 76 | 85 | .68 | |
| | Adapur . | 120,788 | 371 | 810 | 1,181 | 719 | 3,422 | 4,141 | 1,090 | 4,233 | 5,322 | 34 | 60 | 19 | 81 | 72 | 78 | |
| - | Uhaka | 178,236 | 948 | 757 | 1,743 | 1,942 | 4,184 | 0,126 | 2,028 | 4,941 | 7,889 | 54 | 66 | 18 | 88 | 22 | 78 | |
| - | Motihari | 17,497 | 43 | 62 | 108 | 177 | 899 | 676 | 220 | 461 | 681 | 10 | 81 | 13 | 87 | 15 | 8.5 | |
| - | Gobindganj | 94,998 | 237 | 315 | 572 | 118 | 783 | 884 | 332 | 1,069 | 1,490 | 67 | 33 | 81 | • | 40 | 80 | |
| - | Kemria | 140,730 | 169 | 219 | 874 | 480 | 2,369 | 3,849 | 643 | 2,581 | 3,393 | 35 | 78 | 8 | 92 | 12 | * | |
| - | Madhuban . | 60,096 | 846 | 260 | 600 | 337 | 1,012 | 1,349 | 643 | 1,272 | 1,955 | 81 | 49 | 30 | 80 | ¥ | • | |
| - | Sadar sub- division. | 844,046 | 8,145 | 2,498 | 4,681 | 8,770 | 19,110 | 18,849 | 8,918 | 16,556 | 20,470 | 36 | 64 | 17 | 83 | 91 | 78 | |
| | District Total | P90,777 | 4,991 | 5,028 | 10,013 | 5,617 | 20,213 | 85,830 | 10,608 | 25,235 | 88,643 | 47 | 63 | 20 | 80 | 28 | 72 | |

The thans statistics of classes of Bettia. It is in thans Motihari, Gobindganj, Adapur and Dhaka that they are chiefly in the ascendant. The landlords account for transfers most largely in Bagaha, Shikarpur, Gobindganj and Madhuban. In Bagaha and Shikarpur there are few mahajans. In Gobindganj the chief landlord is an indigo concern, which probably retains for indigo cultivation raiyati holdings bought in. In the fourth—Madhuban—petty proprietors are abundant.

The value of land in different thans, viz., Rs. 71-6-8. Motihari town being the district head-quarters, the land in its vicinity has a fictitious value. This is probably the reason. Adapur, which comes next with a sale rate of Rs. 59, owes its position to the intrinsic fertility of its soil. Then come Madhuban (Rs. 46-15-6) and Dhaka (Rs. 42-11-6 per acre). In Gobindganj and Kesaria the sale rate is very low, perhaps owing to the discouragement to this form of alienation given by indigo-planters. In Bagaha

the rate per acre is only Rs. 10-3-11 and in Shikarpur Rs. 19-13-2, but in these thanas there is a large supply of land and no demand:—

| | | 0 67809 | LAND | LOBU, | Law | YERS. | Mox Leve | | RAITA | 76. | Total A | RBA TRAPOP | HALLIK. |
|--------|-------------------------------|---|-----------------------------------|-------------------------|---------------|---------------------|--|----------------------------------|--|----------------------------------|--|--|---|
| | Name of Thara. | Tries sumber of green. | Number. | Percentage to total. | Number. | Percentage to total | Number. | Percentage to | Number. | Percentage to total | 4 24 | By mortenge. | į |
| 1 | 8 + | 3 | 4 | • | • | , | 8 | 9 | 10 | n | 18 | 18 | 14 |
| | • | | | | | ! | | | er yaya ngili <mark>Pili nijang</mark> ang maramatapang ya | | Arres. | Acres. | Acres |
| 1 2 3 | Bagaha Shikarpur Bettis | 95 8 8,984 1,115 | 49 199 23 | 5 5 | 99 99 7 | 1.4 | 319 1,301 477 | 34 35 31 | 555 2,371 1,908 | 5H 60 66 | 9,724 9,918 784 | 1,868 7,080 8,078 | 3,901 9,974 8,607 |
| | Bettia subdivision | 6,461 | 3/1 | • | 58 | 1 | 2,187 | 316 | 3,935 | 61 | 4,693 | 10,000 | 18,878 |
| 664743 | Adapur Dhaka | 2,89:2 4,947 46:2 69:6 8,349 1 423 | 36 90 10 87 65 115 | 1 2 2 9 3 | 3 | 014 014 | 1,269 2,234 276 319 820 614 | 41 45 60 51 30 41 | 1,251 2,631 170 247 1,434 769 | 49 43 34 29 62 61 | 1,000 8,128 280 382 643 663 | 4,286 4,941 461 1,068 8,AHI 1,272 | 8, 321 7, 661 641 1, 621 1, 321 1, 934 |
| | Sadar Division Total | 12,429 | 373 | 3 | 13 | | b, 120 | 44 | 8,518 | 6.3 | 6,916 | 14,058 | 20,470 |
| | DISTRICT TOTAL | 18,800 | 684 | 3 | 70 | | 7,711 | 41 | 10,463 | 58 | 10,008 | 14, 235 | 85,844 |

| and and | Warning Management of A. Conf. 1 | | TAID FO | | | | R ACRR I LNAVBILL | | (D | HIGHRAT HAT | S PRE ACRE. | Lowes PRR | DATE | The Control of the Co |
|----------------|--|-----------------|---|-----------|---------------------------------|---------|---|----------------------------------|-------------------|-------------|---|---------------------------|-------------|--|
| Bertal number. | NAME OF TRAFA. | By sale. | By merteuce | Tetal. | Rr 88 Jr. | | By mortalin | [otal. | | # T. | Br mortage. | 9 m.e | By mortpee. | Rumanu |
| | • | 13 | 16 | 17 | 15 | • | 19 | 20 | | 21 | 2.0 | 25 | 24 | 25 |
| • | And the second s | Rv. | Re | lis. | Ra A. | P. | Ra. 4. F | Rs. A | r | Ro a r | Rs. 4. T. | l . | Ro. A. P. | |
| 1 2 3 | Harsha Shikarpur Bettia | 44,304 | 43,514 2,77,189 20,310 | 4 91 4/14 | 10 11 | 9 | 27 4 10 87 8 1 43 9 0 | 34 10 | H | 1.10 0 0 1 | | 3 10 0 | | |
| | Bettin subdivision | 91, 6 07 | 4,10,318 | 5,01,0:0 | 19 8 | 3 | 38 6 9 | 12 16 | 4 | 1,400 0 0 | 1,23 5 0 | 3 10 0 | 1 # 0 | İ |
| 6.67.8.9 | Adapur | 1, 25,094 | 1 05,003 2,11,845 95,638 32,081 71,509 48 04 | | 42 11 71 6 35 14 27 11 | 6 8 8 3 | \$6 3 8 50 1 0 55 11 10 73 12 3 27 11 6 35 4 4 | 52 15 60 12 34 4 127 11 | 9 11 8 4 | 1 800 0 0 i | 1 (00 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 9 0 6 16 9 0 13 0 6 | | |
| | Sadar Division Total . | 2,47,672 | 6 (0),400 | 9,37,072 | 45 1 | 1 | 45 15 10 | 40 7 | 7 | 21,488 E 0 | 1,000 0 0 | 8 16 () | 3 % () | ! |
| | DISTRICT TOTAL | 3,511,279 | 10,79,713 | 14,38,002 | 33 13 | m | 42 13 7 | , 49 2 | 4 | ¥1,42H B 0 | 1,500 9 0 | 2 14 0 | 1 4 0 | |

Taking individual instances of sale, the highest price paid in the district is an extraordinary one, viz., at the rate of Rs. 21,428-2 per acre in Madhuban, no doubt for a small patch of land close to homestead. The lowest price also, viz., Rs. 2-14, is returned by the same thana. The highest rates per acre of sums advanced on mortgage are entered against Dhaka, Adapur and Motihari, Bettia following close behind. Bagaha, with Rs. 27-4-10, closes the list.

523. I have quoted the observation contained in Doctor Hunter's Statistical account of Champaran that "hardly any land was held by tenants with a right of occupancy under Act X of 1859." This was in 1876, and it is

fairly certain that the transfer of occupancy right in Champaran for a money consideration was practically unknown prior to the passing of the Bongal Tenancy Act. It would be reasonable to find a large number of transfers by abandonment and surrender in a district like Champaran where land is pientiful and tenant-right still little understood, but that sales and mortgages should be so numerous, and that so large a proportion of these should take place in the interests of money-lenders is not a good sign, and is moreover very difficult to comprehend. For there can be no district in Bengal where land-lords by virtue of their influence and by virtue of recognised custom, supporting

by legal rulings, have more control over the alienation of tenant-right. There is not an indigo planter who would not say that he regards the mahajan as a blight and a curse. Yet it is in the district where these big zamindaris lie, where these planters are most in the ascendant, that alienation of tenant-right appears to be most practised. I have heard it alleged that factories in point of fact will recognise any person as tenant who pays the salami or agrees to grow indigo. It would appear from the foregoing that there must be some truth in the statement. If they subordinate to a desire for indigo their prerogative for the protection of the cultivator and the confusion of the money-lender, which law and custom have conferred on them, they abandon the position in virtue of which they are entitled to retain that prerogative, namely, that its exercise is for the public good.

Transfer by sale of proprietary rights.

524. The transfers by sale of proprietary rights are in Champaran necessarily very unimportant. The enquiries disclosed only 51 transfers, affecting an area of 6,913 acres, for which Rs. 1,61,205 was paid, giving a rate of Rs. 23.5-1 per acre. Twenty-four of the transferees were landlords and 27 money-lenders, raiyats finding no place amongst them. Madhuban and Kesaria account for 14 and 16 transfers respectively, Dhaka coming next with 5. It is in these three thanas that petty proprietors are found. Everywhere else the Bettia estate and other big zamindars are predominant.

CHAPTER III.

INDIGO.

The cultivation of indigo on European methods, which was started in Muzaffarpur by Mr. F. Grand, the Collector in The introduction and expansion 1782, does not appear to have been introduced into of the industry. Champaran until 30 years later, when in 1813 after the close of the Nipal war, Colonel Hickey founded a factory at Bara. Soon after, the Rajpur and Turkaulia concerns were started by Mesers. Moran and Hill respectively, and later on, in 1845, Captain Taylor built Siraha In those days, however, the main industry of the European was sugar and not indigo. The Collector in 1816, writing of the indigenous products of his districts, omits even the mention of indigo, but a successor, writing in 1830, speaks of the authorities being "able to avail themselves of the assistance of the indigo planters spread over a large extent of country." Sugar, however, continued to be a flourishing industry, until about 1850, and the Revenue Surveyor of 1847 makes frequent mention of steam sugar factories scattered through several parganas of the district. There was one at Mirpur, now an outwork of the Motihari indigo concern. A few years later, however, sugar appears to have been entirely replaced by indigo.

526. In Champaran, a backward district mainly split up into a few extensive zamindaris, the thikadari or farming system largely prevailed from the earliest times, and this naturally was the tenure under which the European planters first acquired their interests in land. Later, however, curcumstances arose which gave them a more permanent and secure hold on the soil. By 1876 the Bettia Raj, owing to the social and religious extravagances of the Maharaja and the mismanagement of his employés, had become so heavily involved in debt that the authorities were stirred to action. The Collector

in a report of that year wrote thus:

"The estate is getting daily deeper into debt, and that part of the income which is not already hypotheticated to pay debts is expended not for the improvement of the soil and the benefit of the people, but in satisfying the extravagances of the Maharaja and his Brahmins. Unless some change takes place, and the Maharaja can be induced to agree to limit his expenditure and to appoint a competent manager with full powers, subject to the approval of the Collector and Commissioner, I do not see any possibility of the estate remaining many years longer."

As a consequence of this representation, a Committee was appointed with the Maharaja of Benares at its head to advise on the situation, and they prevailed upon the Maharaja of Bettia to secure the services of a European Managera. This led to the appointment of Mr. T. Gibbon, who, in order to consolidate the liabilities of the estate, negotiated the English sterling loan. The Guililand House floated a loan of nearly 95 lakhs of rupees on the sole condition of substantial European security. This led to the grant of a number of villages in permanent (mukurrari) lease to the more important factories to cover the interest on the debt. Thus a new era opened. With permanent rights in the soil, the future of the indigo community was placed on a secure and lasting basis. Indigo cultivation was widely extended, and has since then with temporary intervals of depression flourished exceedingly.

537. The following is a list of the indigo factories at present in the district which belong to the Bihar Indigo Planters' Association:—

| Na | me of concer | ъ. | Name of outwor | k. | Thana. | REMARKS |
|------------|--|-----|---|-------|--------------------|---------|
| ··· | and the second of the second o | | COLUMN TO THE PROPERTY OF THE | | | |
| | 1 | | 3 | | 3 | 4 |
| .] | Bara | | | | Kosaria. | |
| • | | | Jagaulia | | 34 11 1 | 1 |
| | | | Manipur | | Ditto. | |
| | | | Mohaua | | Kesaria. | |
| | | | Gondah | | Do. | |
| | | | Rasslpur | | Do. | 1 |
| | Bairia | | ***** | 1 | Bettia. | |
| | | | Nautan | | Do. | |
| } ; | Lal Saraya | ••• | | | Do. | |
| | | | Madhopur | | Do. | 1 |
| | | | Farana | ٠. | Do. | |
| | | | Rajghat | • • • | Do. | |
| | Loheria . | | Lugina | | Do. | |
| | P.1 1 1 | | Lugina | ••• | | |
| | Dhokraha | ••• | ••••• | | Do | |
| | | | Bhamachak | ••• | Do. | |
| 3. | Mallaya | ••• | | | Do. | |
| | 36 43 | | Sirsia. | | Do. | |
| ' . | Motihari | ••• | | | Motihari. | |
| | | | Sugaon | ••• | Ditto. Dhaka. | ! |
| | | | Mirpur | ••• | Do. | |
| | | | Purnabia | ••• | Do. | 1 |
| | • | | Bhelwa | • • • | Motihari. | 1 |
| | | | Herraj | *** | Ditto. | ; |
| ٠ | | | Chailaha | ••• | Dhaka. | 1 |
| | Murla | | Bishambharpur | • • • | Motihari and Adapu | - |
| 3. | Mulie | ••• | Lachmipur | | Adapur. | |
| | | | Pokharia | ••• | Do. | |
| 9. | Pipra | | 1 Ozdajia | ••• | Motihari. | |
| 7. | x 13/2m | ••• | Madhuban | ••• | Pipra. | |
| | • | , | Dakaha | ••• | Motihari. | |
| | | | Jagiraha | .,, | Kesaria. | |
| | | | Dinamat | *** | Ditto. | 1 |
| | | | Dhabaulia | | Pipra. | |
|) . | Rajpur | ••• | ***** | | Kesaria. | + |
| _ | | | Hussaini | | Ditto. | |
| | | | Pakri | ••• | Ditto. | |
| | | | Jamnapur | | Ditto. | • |
| 1. | Parsa | | | | Shikarpur. | |
| | | | Harpur | | Bettie. | • |
| | | | Sorgina | ••• | Bagaha. | |
| 2. | Sathi | | | | Shikarpur. | |
| | | | Malaria | ••• | | |
| 8. | Siraha | | | | Dhaka. | |
| | | | Parewa | | Do. | 1 |
| 4. | Totaria | ••• | | | Madhuban. | |
| | | | Bala | ••• | Ditto | } |
| | | | Chauhani | | Ditto. | |

| Name of conce | ern. | Name of outw | ork. | Thana. | * | REMARKS. |
|---------------|---------|--|---|------------------------|---|----------|
| 1 | | 2 | | 3 | | 4 |
| 5. Turkaulia | ••• | Sanggerafelik enderge destand dek - ede en en en en en en en en en en en en en | | Moʻihari | | |
| | ,,, | Chilaram | | Ditto. | • | • |
| | | Olaha | • | Gobindganj | | |
| | | Barbarwa | | Ditto. | | |
| | 1 | Jalaha | | Ditto. | | • |
| • | j | Makhwa | | Ditto. | | |
| | | Dudahi | ••• | Ditto. | | |
| • | | Ghairi | | Bettia. | | |
| • | | Khairwa | | Gobindganj. | | |
| | | Sakhwa | ••• | Ditto. | | |
| | | Tezpurwa | ••• | Ditto. | | |
| 6. Nawada | ••• | | | ••••• | | |
| | | Rajpur Kewal | ••• | Dhaka. | | |
| - 77 . | | Pareauni | •• | Shiuhar (Muzaffarpur). | | |
| 7. Kuria | | * * * * | | Bettia. | | |
| 0 🛋 | } | Lalghar | ••• | Do. | | |
| 8. Marpa | ••• | *** ** | | Madhaban, Shiuhar. | | |
| 9. Padamkia | ••• | ••• | | Dhaka. | • | |
| O. Hardia | • • • • | ***** | 3 | Adapur. | | |
| 1. Tilhara | ••• } | ***** | | Dhaka. | | |

I find that in 1832-83 the outturn of indigo was 16,000 maunds. In 1888-89 it had increased to 18,912, it rose in 1891-92 to 23,000 maunds, and in 1894-95 reached the record outturn, over 26,000 maunds.

528. I will now pass on to consider the area under indigo at the present time. The average area sown with this crop for the last five years by the concerns that belong to the Indigo Planters' Association amounted to 87,827 bighas, or 76,666.8 acres, the average outturn being 0 seers per acre. The northern thanas of this district consists mainly of paddy-lands unsuited for the growth of indigo, but in the southern thanas upland prevails, and in them the area under indigo is very extensive. The quantity of indigo land found during the survey and settlement operations in each thana is entered in the following statement:—

| | | | | : | - L 5 | - 27477777777 |
|------------|----------------------------|-------------|------------------|--------------------|--|--|
| Serial No. | NAME OF THANA. | Total area. | Cultivated area. | Area under indigo. | Percentage of indigo to cultivation of area. | Remarks. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 8 | 6 | 7 . |
| | | Acres. | Aores. | Acres. | ************************************** | -thorn 1 control consults to appearing |
| • | Bagaha | 396,272 | 198,823 | 2,403 | 1.21 | |
| 2 | Oh II. | 354,558 | 244,781 | 1,845 | 0.75 | |
| 8 | 72-441- | 350,139 | 243,139 | 15,964 | 6.67 | |
| u | Dettia | 000,100 | 10,100 | | | |
| | Bettia Subdivisional Total | 1,100,969 | 686,743 | 20,212 | 2.94 | |
| 4 | Adapur | 143,401 | 122,193 | 3,257 | 2.67 | |
| 5 | Dhaka | 214,528 | 177,846 | 17,702 | 9.96 | |
| 6 | Motibari | 185,180 | 131,337 | 13,751 | 10.47 | |
| 7 | Gobindganj | 182,689 | 127, 963 | 15,197 | 11.88 | * |
| 8 | Kosaria | 174,842 | 138,468 | 19,381 | 13.99 | • |
| 8 | Madhuban | 78,206 | 63,118 | 6,470 | 10.25 | • |
| , | Sadar Subdivisional Total | 978,846 | 760,925 | 75,758 | 7.96 | |
| | DISTRICT TOTAL | 2,079,815 | 1,447,668 | 95,970 | 6.63 | |
| | | | | | a any man a series absented the state of | |

529. The total area under indigo was found to be 95,970 acres, or 6.63 per cent. of the total cultivated area. It will be seen that the percentage of the area under indigo to the total area cultivated is remarkably low in the northern thanss, but increases as we travel southwards, the percentage in ' the Bettia subdivision being 2.97 against 9.96 in the Sadar subdivision. The figures are lowest in Shikarpur and Bagaha, 1.25 and 0.75 respectively, these being paddy growing tracts almost exclusively. A large number of villages in these thanas is held by native thikadars with a view solely to the profits to be made from zamindars, and the concerns that exist ostensibly for the cultivation of indigo make their profits mainly from rice. In the Bettia thana conditions are more favourable, and there the percentage is 6.67. The only Sadar thana returning less than Bettia thana is Adapur with 2.67. It is north of the Sikrahna and an exclusively paddy-growing area like Shikarpur and Bagaha; in Motihari 10.4 per cent. is under indigo, in Cobindganj 11.88 per cent., while Kesaria heads the list with just under 14 per cent. In all the other thanas of the south subdivision indigo is very extensively grown, the percentage being lowest in Dhaka thana, and even there it is nearly 10 per cent. In Madhuban it is 10.27 per cent.

530. It has been shown that the interest of the planters in the land in Champaran is markedly a zemindari one. Leaving

The extent of landlord-right held by indigo concerns.

then on one side for the present the area actually under indigo, I will show in what proportion of the

total area the indigo factories exercise the authority of landlord. The statistics on this point are furnished in the following statement:--

| | | | Ę | | | | | ARRA III | eld by 1 | ERR PACTO | HIKE. | | | | | ĺ |
|---|---|-----|---|--------------------------------|------------------------------|--|---|---|--|--|--|---|--------------------------------------|--|--|---------------|
| | | | | As prop | rietor. | As perm tention-h | | As temp temura-h | | Tuti | n l | An ur termre- | | Total | | |
| • | Name of There | • | Total area of th | Arm. | Percentage to total area. | Area | Percentage to total area. | 4.7.8. | Perrentage to | Arre | Pervectage to total area. | 4.74 4.73 | Properties to | Arms | Percentage to total serie | E Pu s R.Y.S. |
| | 1 | | 8 | 4 | 5 | 6 | 7 | | 9 | 10 | 11 | 12 | 18 | 14 | 15 | 10 |
| | and a second to propose the second to the | | Acres. | Acres. | | Acres | | Acres. | | Acres. | | Acres. | | A: mi | | |
| Bugaba Mikarpur Bottia | | | 364,584 364,584 360,139 | | *** | 17,700 0,791 79,829 | 4 47 1 11 22 63 | 96,3 % 62,665 64,762 | 26 27 17 51 15 02 | 118,848 68,866 147,981 | 24 74 19 42 44 25 | 9,019 36,710 10,802 | 8177 1179 218 | 122,618 105,71 168,248 | 99.18 30.01 | |
| Bel | etia Subdivisional Total | | 1,100,989 | | | 1141,734 | H 42 | 220,061 | 3 (1 (1) | 330,079 | 8/1 1/8 | 63,027 | 6 N7 | 394,300 | 84 1/0 | |
| Adapur Phak* Wotinari Gobindga Kasaria Madhuba | 919 114 196 181 | *** | 148,401 214,529 185,180 182,680 174,842 78,266 | 2,340 788 4,874 3,190 | 1 08 0 39 2 50 4 93 | 3,081 13,657 73,506 80,263 79,038 2,970 | 277 631 3170 43 3 46 84 3 80 | 46,370 317,396 39,380 34,370 46,110 10,063 | 80 76 56 69 90 72 18 81 75 23 24 37 | 49,001 180,677 131,875 114,627 193,203 22,033 | 33 68 61 +0 60 42 d2 74 70 47 25 17 | 4,691 2,186 3,700 1,077 123 43 | 3:27 2:04 0:59 0:07 0:00 | 81,748 185,247 116,397 116,701 127,760 25,878 | 26'80 63 04 65'86 63'88 78'06 35'59 | |
| | Sadar subdivision Total | | 175,840 | 10,530 | 1.0% | 203,360 | 25:40 | 2:17,348 | 39) 37 | 650,704 | 90.54 | 11,466 | 1.81 | 678,000 | 64 56 | 1 |
| | DISTRICT TOTAL | | 8,079,815 | 10,558 | 0 61 | 357,048 | 17 17 | 524,858 | 25 20 | 141,391 | 49 37 | 50,447 | 3110 | 107,490 | 44'08 | ì |

531. It is, to start with, a sufficiently striking fact that in nearly half of the district the indigo concerns exercise the rights of landlord. Under the term land lords are included, of course, all classes of tenure-holding as well as of propriotary right. In the Sadar subdivision the percentage is 58 55, and in Bottia subdivision even just under 35. Kesaria comes out first with 73 per cent, of its land in which factories hold a landlord's interest. Dhaka, Motihari and Gobindganj follow, all verging on 63 per cent. In Adapur, where there is little indigo, planters have landlord's interest in 36:80 per cent. of the land. Here rice is their main source of income. In Madhuban, on the other hand, where indigo, is very much more extensively grown, the percentage falls to 32 31 per The reason is that in Madhuban the conditions approximate to Tirbut where the existence of petty proprietors and pattidari renders the acquisition of occupancy rights practicable. In the Bettia subdivision the Bettia thana, with factories interspersed all over the area, comes out with the highest percentage, viz., 45.18, as against 30.91 in Bagaha and 20.21 in Shikarpur. That in these last two thanas there should be 30 per cent. of land in which indigo concerns hold landlord's interest, when only about 1 per cent. of the cultivated area actually grows indigo is also very striking.

532. Coming now to the four different classes of landholding interest, viz., proprietary, mukarrari, thikadari and kathona (under-tenure), it will be noticed

that the proprietary interests of planters are inconsiderable. They have none in Bagaha, Shikarpur, Bettia, Adapur and Gobindganj, very little in Motihari, 1 per cent in Dhaka, 2½ per cent in Kesaria, and the largest amount, viz. 4 per cent., as might have been expected, in Mulhaban. The proportion of the land in the whole district held by planters as proprietors is only ½ per cent. The whole areas of the thanas where no land is so held belong, of course, to big zamindars. Thus, Adapur is owned partly by the Madhuban Babu, partly by the Babu of Bhupatpur (now the Bettia Raj), and the rest by the Bettia Raj. Gobindganj is owned by the Bettia Raj, and the three northern thanas by it and the Raj Ramnagar. The percentage of land, held by factories in permanent tenure is 25.89 in the Sadar subdivision, or about 8 per cent. above the district figure. In the Bettia subdivision only 9.42 per cent. is so held.' Except in thana Bettia itself, almost all the villages are held, as is natural in a tract so undeveloped, under temporary leases. Hence the low percentages of 4.47 in Bagaha, 1.91 in Shikarpur. In Bettia the percentage is so high as 22.63, because many villages given in mukarrari as security for the sterling loan are found there. The largest percentage of area held by factories is under temporary lease, the district figure being 272 per cent. The percentage for the Sadar subdivision alone is of course greater, viz. 30.37 per cent. Dhaka and Adapur, where the percentage of mukarrari area is the lowest, naturally come out with the highest percentage of thikadari, viz. 54 69 and 30 76, respectively. For the converse reason, the percentages in Gobindganj and Kosaria are comparatively low, Gobindganj, with 1881 per cent., returning a lower figure than even Bettia and Bagaha. That the percentage in Bettia should be 19.62, where there is indigo, and as much as 24.27 in Bagaha, where there is not, is very striking. But here, as I have said, profits are derived mainly from rice or zamindari and not from indige. The percentage of area held in under-tenure is small, 3:15 per cent being the proportion for the whole The percentage in Shikarpur is high (9.97 per cent.) Here there are many native thikadars who find it convenient to sublet to factories. remaining figures call for no comment. The above statistics show the great extent of landlord's interest that the indigo planters of this district at present The interest is mainly tenure-holding, but in thanas Bettia, Motihari, Gobindganj and Kesaria, where the proportion of area held on permanent tenure varies from 23 to 45 per cent., it is for the most part as secure as proprietary right. Seventeen per cent. of the whole district area is held on a permanent tenure.

The status of factories in their indigo lands.

The status of factories in their indigo lands.

The status of factories in their indigo lands.

The status of factories in their grown on the lands in which the factory possesses different rights. For the compilation of statistics three thanas were selected as typical, viz., Bettia, Kesaria and Dhaka, and the percentages so furnished can be regarded as representing the normal conditions of the indigo growing portion of the district. The figures are as follows:—

| | | | 8 | | RE4 | | LH RA H | #LD As T | N N UT R 19-1 | HOLDER. | | | A MEID | | GJRR A | 1 | N SELD | |
|------------------|--------|-----|-------------------------|------------|----------------------|-----------------------|------------------------|-------------------------|-------------------------|-------------------------|-------------------------|------------|---------------------|------------------|-----------------------|--------|----------------------|----|
| | | | 8 | Pace! | LINTON. | Porms | nent. | Tempo | erary. | To | tal. | 18: | PLRN. | | AIYAT. | | PRES. | |
| M W O | r tra: | MA. | E th | -1 | 2 | | B | | 3 | | £ | | 2 | | 8 | | 2 | Ra |
| | | | Total arm uen ei ine | lra. | Percentage total. | Δ79 8 . | Percentage total, | Arre | Fercestage total | Area | Percentage sotal. | Arra. | Perrentage total | Arms. | Percentage total. | Arm. | Percentage Scied. | |
| | 1 | | 3 | 4 | 8 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 19 | 13 | 14 | 18 | 16 | 17 | |
| | | | Acres. | Acres. | | Arres | | Acres. | | Acres | | Acres. | | Acres. | | Acres. | | Î |
| in erin ku | *** | ••• | 7,141 5,843 4,185 | 501 400 | 8-52 9-55 | 4,688 8,314 341 | 65°23 66 33 8 14 | 1,788 1,997 3,266 | 24:87 20:49 77:94 | 6,413 4.521 2,605 | 80°80 70°88 86 08 | 631 151 | 9*12 2'87 | 77 710 170 | 1°68 13°66 4°68 | 18 | 9:31 | |
| | Total | | 17,813 | 901 | 8.28 | 8,818 | 48 80 | 0,236 | 36:17 | 14,533 | R6 47 | 101 | 4'86 | 957 | 8.24 | 18 | 110 | |

534. The total area in the direct cultivation of the factories in these three thanas is 17,212 acres, or 32.4 per cent. of the total area under indigo in them. Thus one-third of the indigo area is cultivated direct, and two-thirds are

cultivated by raiyats. Of the areas in direct cultivation, the area held rent-free is too insignificant to be noticed, that grown by the factory as a raiyat is 5.56 per cent., so that the main bulk, viz., 94.36 per cent., of direct cultivation is in lands held in the capacity of landlord. Thus it can be said that indigo concerns in Champaran have acquired raiyati rights to a very insignificant extent. Those possessed have been acquired mainly from rent-free holders (britders) of villages in lease to factories. The percentage is highest for the three thans. in Kesaria (12 per cent). But being numerous there, the status of concerns that grow most of their indigo on the land in which they themselves possess the landlord's interest is very high and their prestige proportionately great. They are relieved from the necessity of haggling with petty proprietors and cultivators to which their less fortunate friends of Tirlut and Saran have to submit. In Kesaria and Dhaka 8 to 9 per cent. of the direct cultivation is in lands which the planter holds as proprietor. In Bettia no land is so beld. For the three thanas together nearly half of the direct cultivation is in land in which the planters enjoy permanent tenure-holding interests. In Bettia it is as much as 65 per cent. and in Kesaria 56 per cent. In Dhaka, where the total area so held is small, it is 8 per cent. only. Thirty-six per cent. of the direct cultivation is in lands in which factories have thikadari rights. The percentage is necessarily highest in Dhaka, where it is nearly 80. It is 24½ in Bettia and 20½ per cent. in Kesaria. The area on which factories grow indigo in the capacity of undertenure-holders is less than 5 per cent. of the area under direct cultivation and requires no detailed comment beyond that the high percentage in Bettia (9.12 per cent.) is explained by the existence of a large crowd of the Maharaja's Brahmans, who like safe returns without the trouble of management.

The proportion of factory land under indigo.

The proportion of factory land tion of the indigo land held under each status with the total land held under such status by factories in the three thanss of Bettia, Kesaria, and Dhaka. The percentages are as

the contract of the commence of the commence of the contract o

| | | | | l to | NDER | INDIG(| · ; | TOTAL | | D BY THE | ACTOR | • | | | K OCCE ACTOMY: | | |
|----------------|--------------------------|--------------------------|-----|-------------|-----------------------------------|---|-----------|--|--|--|--------------|---|----------------|-------------------------------------|-------------------------------------|--|-------------|
| | | | | | | caltivated | | • | A | u tenure-ho | der. | | | ۸n ; | raprude | ir, | ٠ |
| Berial number. | Name | of that | na, | | 177 | Perventice the | 11.6 | As proprieter | Tenprin | Perraneri | | | , 1 24 | | arra nader inter | Percentage to the street | pechaletor. |
| ı | | 2 | | | 8 | 4 | 1 | ٠ | п | 7 | 1 | | y | | 10 | 11 | i |
| L | Bettia Komma Uhaka | *** | | 15 | CTES. 5,1414 M,381 7,702 | 13 | 57 149 | Acres. 4 374 2,240 | A mea. 64 703 44 110 117, 420 | Acres, 79,229 79,093 13,557 | 147 | 7,591 1,591 1,203 | - Аст 80 | 1 | 2 50 2 50 | | 1145 |
| 3 | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| • | | Total | | M | 8,047 |) a. | DR | 6,614 | 250,173 | 171,879 | | 610 | | 1 | 1.70 | 1 13 | 8 K3 |
| • | are true to a state and | Total | | | | | An | ت سد ند | ilder | | Triks. | As intren | | ate. | Trital in the occupation of fact | her stion | 3 63 |
| berial number. | Name (| Total | | 70 | шроп | 122 | An | NA IN TE | Ider | Total, | rent | A s | | | Total in to occupa of fact | her stion | Entants. |
| Berini munder. | Name (| And agency of the second | | Te | шроп | | An I | Ferentiage to the area under under under the treatment of | Ider | Total, or par of serior of | Trans. | As tren | -6 | and or and or | Total in to occupe of fact | the price of the p | _ |
| Serial number. | Name : | And agency of the second | | 12 1.764 | Percentage to the same under a | Percentage to the same as a seed formary tenures. | An I'e | The transfer to the transfer t | ider contrary | Percentage to the partial state of the partial stat | Per di Acres | Antoning to the same and same | Are | Percentants to the mentant of a der | Total in the occupation of fact | More than the state of the stat | ROMANCS. |

53,047 bighas under indigo in the three thanas one-third, as I have said, is cultivated direct by the planter and two-thirds through raiysts. Another point is noticeable, namely, that the proportion of the indigo tand is 13.67 of the total proprietary land of factories, 4.83 per cent of the total mukarrari land and only 2.71 of the total thikadari land. No doubt in the case of proprietary lands, the areas being very small do not provide a fair basis of comparison, but there must necessarily exist the tendency for an indigo concern to hold the best lands in direct occupation when it is in a position to do so. Then of course a planter naturally tries to get most of his cultivation in those lands where his tenure is permanent and secure, a fact that accounts for the larger proportion of indigo in mukarrari than in thikadari lands. Dhaka, however, is an exception. There the mukarrari area is small and mainly consists of land just round the factories, much of which is used for miscellaneous purposes

SYSTEMS OF INDIGO CULTIVATION.

There are two main systems of direct cultivation called zirait and assamiwar, i.e., cultivation through raiyats under sattas. There are some others also of minor importance. The common use of the term zirait is not confined to its legal signification. Any land in direct occupation held by a proprietor or superior tenure-holder which is not roiyati is called zirait. Zirait indigo land is cultivated by the factory at its own expense and with hired labour. Over one-fourth of the area under indigo is of this class, and owing to its careful cultivation returns the best profits. Of late years, to prevent that deterioration that resulted from constant cropping, more attention has been bestowed on the rotation of indigo with sugarcane, oats, and other crops, but no definite principles have been evolved.

Satta system.

at system, now happily almost extinct, according to which the planters appropriated 3 kathas per bigha out of the raiyat's holding, giving him in return nothing beyond a proportionate reduction of rent. Under the satta system the seed is supplied by the factory, and the raiyat has to cultivate and sow under the directions of the factory servants. The price paid to the raiyat is Rs. 11 per bigha of a 6½ cubit taggi plus rent. This rate is paid for a full crop. The minimum paid is Rs. 5-5 for "bijmar," i.s., where the crop fails through no fault of the cultivator. An advance (dadm) of nearly Rs. 6-8 an acre is always made to these tenants. No interest is charged and a set off is given against the sum due to them when the year's accounts are made up. The indigo is cut and carted at the expense of the factory. Under the terms of the sat a each tenant renders himself liable to damages generally Rs. 50 to 60 per bigha, in case of his wilfully neglecting to grow indigo as stipulated.

539. Bullain or exchange is a prominent characteristic of this system.

Exchange at mids.

Lands after being cropped three and four years successively with indigo require to be sown with grain and other surface root crops. Indigo, being a plant with a deep root, forms an excellent rotation crop with them, but successive crops of indigo exhaust the soil. Hence it seems necessary to arrange for an exchange of land and badlain is a practice universally followed.

540. The khushki system as understood in Muzaffarpur and Darbhanga rarely obtains in Champaran. Under it
the raiyats voluntarily undertake to grow indigo
without any agreement and are paid at a privileged rate. They are, generally
apoaking, cultivators holding lands in other estates, whereas in Champaraa
factories have such extensive tenure-holding rights that they can generally
make better terms with their own raiyats and have no call to enlist the services
of others. In Tirhut khushki is also applied to satiss executed by the raiyats
of estates not in lease to the factory.

541. Under the kurtauli (or shikmi) system the factory sublets from a raiyat and grows the indigo itself with its own labour, the rent agreed on being deducted from

the rent due from the raiyat to the factory in its capacity as landlord. The factory is in short a mere under-raiyat. Kurtauli leases appear to be more

commonly met with in Motihari than else where.

542. Such are the main systems under which indigo is grown in Champatan. They have been more fully and exhaustively described in the Muzaffar-pur report, where also their general advantages and disadvantages have been discussed.

Cart agreement.

The form of agreement is given at the end of this chapter. In consideration of an advance the owner of the cart agrees for a term of years to place it at the disposal of the factory during both first and second manufacturing, and in return receives a fixed rate of payment a little below the ordinary rate. Sometimes, as in the case of the satta attached, a nominal interest is charged on the advance, sometimes none at all.

THE GENERAL ADVANTAGES AND DISADVANTAGES OF INDIGO CULTIVATION.

544. This is a subject which I have discussed at some length in the Muzaffarpur report, and shall therefore refer to more briefly here. There are four aspects of the question—(1) in relation to Government and the administration, (2) in relation to landowners, (3) in relation to cultivators. (4)

in relation to labourers.

- 545. My conclusions are that the indigo industry in relation to Government and the administration, in relation to landowner, and in relation to labourers confers very decided benefits on the district, but that in relation to cultivators its advantages are very much more questionable. I need not repeat all the data on which these conclusions are based, but the advantages to the landowning classes in Champaran are different from those found in Muzaffarpar. In Champaran it is true only to a limited extent that the indige factory performs the function of the landowner's money-lender, and thus saves him from the disgrace attaching to a Hindu who permanently alienates property. Here the utility of the indigo factory is largely connected with the management of the Bettia Raj. It has been seen that it was their security which rendered possible the raising of the Bettia sterling loan. Further, while the factories, to the best of my knowledge, are good and considerate landlords to their raiyuts, they increase the value of property they supervise by dint of good management and pay up their rents with punctuality. The Bettia Raj has not the organisation requisite for the efficient management of all its estates direct. That, relying on indigo and not on zamindari for their profits, indigo factories have been available to share with it the responsibility of management, at 'a very slender rate of romuneration, has proved a decided advantage to that estate.
- The benefits of the indigo industry to the labouring population are still more marked, for these are the classes in greatest need of support. The average number of labourers employed in Chargean per diem by indigo factories is 33,000, and more than half the labour is employed in the cold weather months, when these classes are most liable to destitution. It is true that the factory rates of labour are somewhat lower than those ordinarily paid, and it is often urged that factories have had a tendency to keep down labour rates. A large employer of labour naturally gets it cheaper than the man who employs a single coolie, and if factories have attempted to keep down rates they have not invariably succeeded, as the rates differ considerably in different tracts. Perhaps, too, it is not altogether a disadvantage that the labouring classes should not be encouraged into over-population and improvidence even greater than that already inherent in them by an inflated and, perhaps, precarious prosperity. If a large bulk of the indigo concerns were suddenly called upon to close, the great distress from which these classes would suffera distress which with an ignorant and unenterprising people, would take years to find its remedy in migration - is not pleasant to contemplate. There can be no question, then, of the vast advantages of the indigo industry to the labouring clames.

547. In relation to the agriculturists its merits are more questionable. But here again, so far as raivats not called upon to grow indigo are concerned, an indigo factory as landlord is a very decided advantage. The indigo concern's best interests centre in maintaining stability of rents, and, what is of more importance, this truth is generally both recognised by them and acted upon. It is true that during these operations rents were often raised in villages leased by indigo factories, but I know many of the Managers to have been averse to this course, which, however, they were compelled to take under directions from the superior landlord. Again, non-indigo raiyats who are tenants to factories have their accounts kept well and accurately, are given proper receipts, are not called on for additional demands to meet domestic ceremonies so common in native estates, and are protected and helped when they fall into But to come to raivate who are called on to execute agreements to difficulties. grow indigo on three hathas per bigha in their holdings. In the Musaffarpur report, I have shown that three-fifths of the indigo cultivation is sirait and only two-fifths assamiwar. In Champaran the conditions are reversed; one-third is sirait and two-thirds are assamiwar. Thus if there are disadvantages to the cultivators in the assamiwar system, they are felt more extensively in Champaran. In Champaran the satta system has always been more prevalent. The Champaran concerns are generally more extensive. Perhaps they have less factory stock and shun the extra trouble and outlay zirait cultivation Then, their position as landlords being so much stronger, and the people being more submissive than is the case in Muzaffarpur, they are better able to work their cultivation through raivats.

548. I will not repeat here the calculations made in the Muzaffarpur report as to the relative advantage to the cultivator of growing indige or other crops. But in Champaran the profits from growing other crops being lower than in Muzaffarpur, pecuniarily a cultivator loses per acre by growing This deficiency may or may not be made up by other advantages that he derives, but these are less tangible, and he does not appreciate them at their full value. He finds that if he had grown another crop, he would have made more money. He forgets that he received an advance when he required it; that the existence of indigo gives him more profits from his cart than he would otherwise obtain, and that his rent, had the village been leased to a native thikadar instead of to an indigo planter, would probably have been more onerous. The fact remains that the raiyats on the whole do not like indigo, though I do not think they possess very active sentiments on the subject, their attitude being one of passive acquiescence. Again, the system of accounts is open to the objection, that it tends to check independence of thought and action. The accounts for rents, advances and indigo are all mixed up together, and though kept no doubt well and accurately, are incomprehensible to the ordinary uneducated mind. Finally, the system of exchange (budlain) which I have already referred to raises apprehension in the raivat's mind that his tenant right will be interfered with. His tenant-right is as a rule preserved unimpaired, and the record-of-right will afford him full protection. Moreover, indigo, as a rotation crop for food-grains, distinctly benefits the land. But a raiyat may be asked to give in badlain for indigo, a plot which he has liberally manured and carefully tilled in anticipation of fat profit who be realised from some other crop. Whatever the cause, the fact remains that the badlain system is not generally liked.

549. My general conclusions then are that the cultivators who grow indigo on agreement receive little advantage from it, and in their own opinion the crop is generally believed to be pecuniarily disadvantageous; that, on the other hand, only two-thirds of the indigo cultivation is of this nature, that is to say, only 4 per cent. of the cultivated area in the district, and that to be set against the real and imaginary disadvantages to a comparatively small body of raiyats are the great and material benefits that accrue to the administration, to landlords and to labourers from the presence in the district of the indigo

concerns and their industry.

550. I subjoin specimens of the forms of agreement for the hire of carts and for the cultivation of Indigo generally in use.

AGREEMENT (SATTA) FOR CARTS.

I, Makund Teli, son of Khakhan Teli, by casta Teli, am resident of Jagdispur, tappa Sonsul, pargana Majhaua, thana Kesaria, district Champaran.

I of my own free will took a taken advance of Rs. 20, half of which is Rs. 10, on a monthly interest of 8 annas per cent., on condition of supplying a cart and two stout oxen with other requisites at the time of sowing and maker of indigo to Mr. , Manager of , Mr. , proprietor of Indigo concern, for a period of 20 years from year to year Fash and brought the money in my appropriation under the conditions that I shall supply one cart and two oxen from time to time each season every year during the term of lease, and shall follow the orders of the Manager or the Sub-Manager or his amlas, and shall do everything according to their wishes and custom of the koths, and during mahai time shall fotch the indigo plants from the sirant and assaminar fields to the indigo haus (vat), and shall take back in time the indigo rubbish and throw away wherever directed by the amla of the factory.

I agree to take wages for loading of indigo plants at two pice (lokin) per maund for the first and second trip of morhan, at 3 pice (lokin) per maund for the first and second trip of khunti and the indigo rubbish, the weight of which is to be accepted as written in the

register of the factory at the rate of 1 pice (lohin) per maund.

At the time of so wing seeds I agree to carry them to the sirait and assamicar fields in the country, wages being at 5 annas per day.

If I give my exen to the tanci operation I agree to take 4 annas per bigha according to

the register of the factory.

Deducting the amount of dadni and interest on the advanced sum from my dues of wages, &c., I agree to take the balance in December every year on giving a receipt thereof to

the Manager. If the amount due to the factory exceeds my dues, I agree to pay the balance in cash to the Manager or the Sub-manager, or at their consent, to pay up out of my dues of the next year. Whatever amount will fall due after deduction from dudni, &c, to the kathi, T or

my heirs shall pay, and in default of payment, the factory is entitled to recover it from my moveable and immoveable properties without objection.

I bind myself not to sell my cart and oxen, nor to accept any advance or dadni on them from any other, and not to absent myself during the time of sowing and maken, i.e., during the whole season. Should I fail, I agree to pay a fine of Re. 1 per day as damage to Manager or Sub-manager. If I fail to do this, then the Manager will be entitled to recover the amount from my moveable and immoveable properties. I write this agreement for 20 years that it may be of use in time of need.

SATTA FOR INDIGO.

I, Kali Pandey, son of Adit Pandey, Brahmin by casts, am a resident of mauza Panditpur, tappa Madhaul, pargana Majhaua, thana Motihari, sub-registry and district Champaran. Taking of my free will and inclination, an advance of Rs 12 from Mr. Manager in behalf of Mr.

, proprietor of indigo concern, and its subfactories

in tappa Belwa and Dhekha in tappa Madhaul and Madhuban in tappa Mando, pargana Majhaua, thana and district Champarin, for cultivation of Phagani indigo in an area of 7½ biswas of land for a term of 20 years from 1301 to 1323 Fashi out of 2 bighas 9 cottahs of kasht land (measured with a laggi of 8 haths, prevalent in the factory) held as thika in mauza Panditpur mentioned above, I do hereby declare that in the said thika kasht the portion that will be best suited to the cultivation of indigo I shall cultivate, prepare and sow with as much seed of indige as will be given by the Manager.

That I shall take every possible care and pain in preparing the fields and in sowing, weeding for the first, second and third time, and that I shall do in time all other necessary

duties required for the cultivation of indigo in all its stages.

That if the Phaguai seeds do not germinate in this portion of indigo land I shall sow with Baisakhi and Asarhi indigo, and shall take all possible care thereof, and in case they also do not grow I declare not to sow in it any other grain; if I do, I shall be liable to forfeiture of all sums falling due from the Manager in my account of indigo for which no objection on my part or that of heirs shall be considered valid.

That when the indigo plants are ready to be cut, I shall cut and have them loaded on all

carts whenever sent from the kothi during the time fixed for mehai.

That regarding remuneration it is agreed upon that in cases of good othern Rs. 16 per bigha and in failure Rs. 6 per bigha according to factory measurement be accepted by me

every year during the time of lease.

That if owing to my neglect and inattention any portion of the indigo field be prepared and sowed at the coat of the factory, the Manager will be at liberty to deduct their coat from my dues of indigo, and if that be insufficient to cover the demand he will be outsited to realise the amount from my person and properties.

That the landlord's rent for the land set spart for cultivation of indigo by the Manager

shall be paid by me and not by the factory.

That it is optional with the Manager or his amla to select and measure any other patch of field in the said thike kasht for cultivaton of indigo, but this should be specified in the

month of Baisakh, and I shall cultivate and prepare that without objection being raised on my part or that of my heira.

That if I fail to do so any year or oultivate and sow indigo in fields other than those selected and set apart by the Manager or his amla, I for the breach of the contract shall be liable to pay to the factory damage, after the expiry of the sowing season, of Rs. 48 per bigha

very year till the end of the term of the lease.

That in default of the payment of the damage mentioned above the factory is entitled to bring a civil suit against me and recover the amount from my moveable and immoveable

properties, for which no objection will be raised on my part or that of my heirs. That at the expiry of the term of lease, I am entitled to get from the Manager of the factory whatever amount may fall due to me in my account of indigo deducting therefrom the

amount of the advance mentioned above.

I therefore write this agreement for 20 years for cultivation of indigo that it may be of use in time of need.

CHAPTER 1V.

STATISTICAL ESTIMATE OF THE MATERIAL CONDITION OF THE LOWER Agricultural orders.

551. In view of the fact that portions of the district of Champaran have from time to time been visited by periods of Famines in Champarail. distress more or less severe, it is important to examine what light the statistics compiled during the survey and settlement operations throw on this very important subject. My intentions in this direction have been largely anticipated by Mr. D. J. Macpherson, c.i.e., in his report on the famine of 1897, and I shall therefore draw freely on what he has said as occasion offers. The discussion can be most suitably initiated by a

sheet sketch of the famines from which Champaran has suffered.
5.2. The earliest famine of which we have historical record is that of 1769-70, which, as is well known, is said to have devastated the whole of Bihar and Northern Bengal, and to have killed off one-third of the whole population. It is a pity that there are no reliable data of this famine, because their comparison with those of the recent famine would have thrown a flood of light on the extent to which material conditions have undergone amelioration. We are told that the season of 1768 had been bad; that there had been floods in Angust of that year and no rain after that months that in 1769. floods in August of that year and no rain after that month; that in 1769 the early rains were deficient, and on the 28th July the Resident at Patna reported that the grain sown had been entirely spoilt. Then heavy showers fell, which must have sufficed for transplantation, but after that no rain fell, and the result was that the bhadai crop was poor, the winter rice a total failure, and the spring crop extremely scanty. In October 1769 very gloomy reports were received from Bihar and Bengal, and distress was acutest in Bihar in the spring. The Resident of Bihar estimated that 200,000 people died of starvation in the Bihar province during May, but good rains in June restored confidence and from that time the distress abated. Such is about all we know regarding the character of the 1770 famme in the Bihar province. All that can definitely be said by way of comparison with the visitation of 1897 is that the distress began to make itself felt much sooner in 1769 than in 1896, for so early as October of the former year the people began to flock to the Resident at Patna, pleading that they were starving and demanding food. So early as December rice was being distributed in Patna. It is certain also that had no relief at all been administered in Bihar during 1897, 200,000 persons would not have died during May, for in 1897 the distress in South Bihar was trifling, while in North Bihar only 10 per cent, of the population was affected including these affected even to a very slight. Egree.

553. The fext great famine occurred in 1806, but from 1770 there were periods of distress. In 1783 a severe famine was apprehended, but it was confined mainly to Oudh and the North-Western Provinces, whence it was proposed to import the surplus population to till the unoccupied wastes of Bihar. in 1780 extensive damage was done to crops by excessive rain, followed two or three years lafer by devastating floods of the Gandak, in consequence of which many a zamindar fled to Nipal. In 1791, again, the aghani and rabi-crops failed from drought, the outturn of bhadai also being, in the opinion of the Collector, not sufficient to admit of the monthly collections of revenue going on. In 1803 there was fullure of aghani and bhadai from want of rain. The prices rose by 25 per cont., and the Collector recommended a remission of

revenue amounting to 2 lakhs. 1823 was another year of distress.

1866, the year of the next great famine, was that in which Champaran was constituted a separate district. Separate records for the district regarding it are therefore available. According to the Famine Commissioners'

report, "the tracts that suffered most in Bihar were the northern portions (adjoining the Nipal Terai) of Champaran, Tirhut and Bhagalpur." The rainfall had been deficient and stopped early, none falling in October. The winter rice was almost a total failure, though the autumn crop had been fair, and the spring crops for want of moisture were poor. From April to August rice was selling in Champaran at from 91 to 61 seers per rupee, about three times its usual rate. The mortality was heavy. The police reported 135,000 deaths from starvation in North Bihar and Bengal, mainly in the tract named . and it is certain that this was a very small proportion of the total number. The Famine Commissioners estimated that one-third of the population of the affected districts suffered from severe famine. Had relief in 1897 been as inadequate as it was in 1866, it is certain that a very much less proportion of the population would have been severely affected and the deaths from starvation would have been very much fewer. The appalling mortality that accompanied this famine is still well remembered by old inhabitants.

555. Only eight years later came the great famine of 1874. The rainfall of 1873 had been badly distributed and deficient, and only '46 of an inch fell from September to December. There was a 10-anna bhadai crop, but only a 2-anna winter rice crop, and though the spring crops were much better, they were not of sufficient importance to have had much effect in improving the situation. The distress was felt most soverely in thansa Adapur, Lauria (Shikarpur) and Bagaha. Gobindganj also suffered badly. Expenditure during this famine was so lavish that no trustworthy conclusions can be drawn from . the numbers relieved. It appears, however, that distress did not begin to make itself felt until January, that is to say, a good deal later than in the

famine previously referred to.

556. After 1874 the next period of scarcity which affected this district was in 1888-89. The rainfall of 1888 had proved unpropitious. There was a failure of the rice crop and consequent distress in the tract bordering on the Nipal frontier. In this year relief works were opened in September, but it is

difficult to understand how they could have been required so early.

557. In the year 1896-97 occurred what I believe to have been accurately described as the greatest famine of the century. Here the cause was, in the words of Mr. D J. Macpherson, late Collector of the district, "deficient and unfavourably distributed rainfall in 1895 and 1896, intensified by extraordinarily high prices consequent on similar causes operating over a great part of India." Mr. Macpherson writes: "In May 1896 the showers which facilitate the early sowing of the bhadai crops were much scantier than usual, and the monsoen rains began late, not until the 25th of June, and then only feebly, the fall for June being actually less than Julif the average. The rainfall was capriciously distributed in different localities, and remained in persistent defect throughout the rainy season, being 8.8 per cent. below the normal in July, 20.9 per cent. below it in August, and 74.7 per cent. in September; while not a drop fell after the 18th of that month until Christmas with the exception of a sprinking (only 3 cents) on the 23rd of November. There was a prolonged break in the rains of four weeks' duration from the 21st of July to the 17th of August, which did the greatest possible damage to the autumn rice and the bhadai crops, and after the first of September, the was practically no rain at all that could be of any material benefit to the autumlities crop. The total defect from May to October inclusive was 19 19 inches, or 40.7 per cent." The consequence was a very inferior bhadai harvest and an ulmost total failure of the winter rice crop. The Collector of Champaran in comparing the rainfall of 1896 with that of 1865 and 1873 justly observes:-

"The year 1896-97 has, however, been markedly worse than either, as not only was it preceded by a year of poor crops as 1865-66 was, but its own harvests, taking them all round, have been decidedly inferior to those of 1873-74 and still more so to those of 1865-66.75

About 445 square miles round Ramnagar in thana Shikarpur was the first area to succumb and the last area to recover. Then the south part of thana Dhaka and a small tract round Areraj in thana Gobindganj came under relief in November. In December the greater part of thanas Bagaha and Shikarpur required assistance, as also "a large tract extending from Betia down the southern part of the district in Bettia and Gobindganj thanas and the northern part of Kesaria, while a great part of the eastern portion of the district in North Madhuban, South Dhaka and round Ekderi, east at Adapur, was also suffering severely. The distress was most acute in May, and by that time most of the district had become more or less affected. There were, however, some tracts saved by irrigation, viz., Adapur thana, North Dhaka, the north-east portions of thana Bettia, a few villages near Sathi factory and the whole of the undulating country of the Tharus. A few unirrigated tracts also, viz., the Dhanaha outpost on the Gorakhpur borders, the south-west part of Bettia adjoining it, the alluvial lands along the Gandak and a portion of the district about Mehsi on the Muzaffarpur borders required no 'assistance. The thanas which next became severely affected were Bettia, Gobindganj and Motihari. Kesaria and Madhuban were the last to feel distress and the first to recover from it.

558: The degree of liability to distress of these thanas affords most striking evidence of the fact that famine arises from a failure of the rice crop and from nothing else. The percentage of cultivated area under rice in the several thanas is as follows:—

| | Adapur | *** | *** | *** | | 85 | per cent. |
|----|------------|-----|-------|-----|-----|----|-----------|
| | Shikarpur | ••• | | *** | | 80 | - ,, |
| | Bagaha | ••• | | ••• | ••• | 56 | 19 |
| | Dhaka | ••• | | ••• | ••• | 55 | " |
| | Bettia | | • • • | ••• | | 50 | ,, |
| | Gobindganj | ••• | ••• | | | 35 | 11 |
| ^• | Motihari | | ••• | ••• | ••• | 35 | " |
| | Kesaria | 1 | | | | 00 | ,, |
| | Madhuban | } | • • • | ••• | | 32 | ** |
| | | , | | | | | |

*Adapur was largely protected by irrigation, and Bettia would perhaps have succumbed sooner than Gobindganj and Motihari had it not been similarly protected. It is the thanas with a predominance of upland which grow

indigo, makai and good spring crops that were the last to succumb.

559. That wide spread famine can be caused by the failure of the rice crop alone receives confirmation from the history of every famine that has occurred in North Bihar. And Champaran with so much as 54 per cent. of its cropped area under autumn or winter rice 2 per cent. only of which is irrigated is necessarily the district most susceptible to intense distress. In spite, however, of this fact and of the uselessness of famine estimates for the purposes of comparison, I believe it to be undoubtedly true that the area of liability to famine tends to grow narrower, and the cause must be an all-round amelioration in material condition. Even in the worst months, February—March, only about 10 per cent of the population was in receipt of relief either gratuitous or on relief work, and the error, if any, was certainly on the side of a too liberal treatment. It is, of course, the labouring classes who are most exposed to distress and they constitute 30 per tent. of the population. It is obvious then that true agriculturists can have been affected only to a very small degree.

560. The Government of Bengal in reviewing the famine of 1897 wrote on this subject:—

"As to how far the events of the famine have indicated any increase in the powers of the people to resist the effects of had seasons, detailed and laboured comparisons and deductions from the experience of 1874 have not been attempted. That under less favourable circumstances than in 1873-74 the number requiring Government relief should have been so much less, would people, but the whole conditions of the relief administration during the two famines were so different, that the inference is not so conclusive as it would have been had the same methods been adopted in both cases. Nevertheless, the general experience and observations of the officers engaged in the famine, some of them with knowledge of the facts, both then and now, as well as the concurrent opinions of non-officials acquainted with these provinces, do indicate that, even in Bihar, during the past quarter of a century there has been a considerable advance in material prosperity, and that the power of the country as a whole to withstand the calamities of seasons has greatly increased."

Statistical examination of the elements of agricultural prosperity.

Statistical examination of the elements of agricultural prosperity.

I shall now pass on by the aid of settlement statistics to analyse what the profits of the ordinary agriculturist are and so to ascertain what is the smallest size of holding that will suffice to keep a cultivator and his family in fair comfort.

562. To begin with outturn per acre:—unfortunately there have been no crop cuttings whereon to base an estimate, and the statements of the people themselves are of course

absolutely untrustworthy. The evidence therefore upon which we have to fall back in-

(a) Sir A. P. MacDonnell's "Food-grain supply."

•(b) Collector's report submitted in connection with an irrigation project,

quoted in extenso, in Dr. Hunter's Statistical Account.

(c) Official estimates issued from the office of the Director of Land Records and Agriculture, Bengal.

(d Mr. Macpherson's final report on the last famine of 1896-97.

Mr. Macpherson in recording his own views on this subject has fully criticised previous estimates. He observed :-

"I do not think that the rate of yield in Champaran should be taken so high as for Bihar generally. The soil of the district, as a whole, is not so fertile as that of the adjoining districts of Muzaffarpur and Saran. In the most extensive rice area in the district of the northern half of Bettia, cultivation is inefficient owing to the people having more land than they can till properly, and to their energies being supped by malaria, and this must have the continuous and the same an reduce the average outturn on rice land for the district as a whole. Still we may take it at 12 maunds an acre for winter rice.

"At page 277, volume XIII of Hunter's Statistical Account of Bengal, dealing with Champaran, will be found the average produce per acre as ascertained from an elaborate report furnished in connection with a comprehensive irrigation project for the district. Of the bhadai food crops mentioned there, maize is returned as yielding 8‡ maunds and kodo millet 10‡ maunds per acre; dhan (apparently cleaned rice) is stated to yield 10‡ maunds. Of the the rabi crops barley and china millet are returned 87 maunds, and wheat, gram and peas each at only 67 maunds. The remarks on pages 100—101 of MacDonnell's Food Supply corroborate the view of a relatively low outturn of bhadai and rabi crops, as compared with the rest of Bihar. The crop experiments carried out within the last two or three years have not been conducted with sufficient care to enable trustworthy conclusions to be drawn. In this connection, I think we may accept the average yield for Bengal, generally which is slightly lower than that for Bihar, for bhadai crops in Champaran, viz., 10 maunds an acre, which is 3 maunds higher than the rate adopted in 1876. But the rabi crops certainly do not give an all-round yield of 10½ maunds per acre on an average of years good and bad, much of them look thin and wanting in vigor, being grown on comparatively high and light soil, or as eath crops after rice. I should say that 8 maunds an acre is the outside all-round rate that should be taken for rabi crops in Champaran for an average harvest, and even this is one maund higher than was adopted in MacDonnell's Food-grain Supply."

Mr. Macpherson's general results are in my opinion near the mark, but they can be tested by a detailed examination of the outturn of particular crops. In the following statement the average outturn for each harvest is worked out from the area ascertained to be under each crop multiplied by what I believe to be its average outturn :-

True average outlurn of Rabi, Bhadai and Aghani.

| - | | 1 | 1 | | | | - | | crop. | | | re of rop. | CO | eb er | np. | | and | rat hin Khui Khui | adul 11 | REMARKS |
|-----|----------------|--------|------|--------|---------|------------|------------------|-------|--------------------|-----|------|---------------|-------|------------------|----------|---|------------|----------------------------|------------|--------------------|
| .1 | | | | | | | 3 | • | • | | 6 | | | 6 | | *************************************** | | 7 | | • |
| | | | | | | | | | Mda | Md. | | CH ! | M | 10. | 8. (| | MA | | CE. | 1 |
| 1 | Wheat | *** | | *** | | Babi | 444 | , | 1.05.935 | | 0 | 0 | N,4 | 2,190 | | 0 | | | · . | |
| 1 | Rarley | *** | | | *** | Do. | | | 2, 1 6, (195) | 1 | 0 | 0 | 19,2 | R, NG/ } | 0 | - | 1 | | | |
| 1 | Gram | | | | 1 | Do. | *** | | 87,181 | 1 7 | Ų | 0 | 2,6 | 1,127 | 0 | 0. | The second | _ | | I |
| | Other food | grain, | Inch | ed ing | briter | Do. | 4+ | i | 2.07.950 | | 0 | 0 | | 100.6 | | 0 | 1 -7 | * 4 | | i |
| | Linesed | • | *** | | **- | 1/0. | ** | | 68,M1 | 1 0 | 0 | 0 | | 7,404 | 0 | 0 | 1 | | ┪ | 1 |
| | Mustard | *** | • | | ** | Do. | 400 | | 8,400 | 3 | 0 | 0 | | 100 | 0 | 9 | 1 | | | † |
| | Other crops | inal | -4: | | | Do. | *** | . } | 18,9:5 18,606 | 9 | 0 | 0 | | 3,345 | 9 | 0 | ł | | | |
| | Spices | - | - | | | Da. | | i | 5,976 | 10 | 0 | 0 ' | | 1,000 | U | 0 | 1 | | | Ī |
| | Bugarrage | • •• | *** | *** | *** | Do. | •• | | 11,146 | 3.5 | Û | 0 + | |), MOU 3, M78 | 0 | 0 | | | | |
| - } | Colton | 4 104 | ••• | ~ . | *** | 110. | | *** } | 2.131 | 3.0 | | 0 1 | | 343 | Ü | | í | | | |
| | Juta | *** | •• | | • • • | Do. | *** | | E, 121 | 1 2 | ņ | 0 | | 219 | ŏ | 6 | i | | | 1 |
| | Kusum | | 200 | *** | *** | Do. | 100 | | A45 | ! . | | | 4 | 177 | Ö | | 1 | | | 1 |
| | ()pium | *** | *** | 40. | *** | Do. | 400 | | 87,564 | 1 0 | 7 | | | 300 | ř | | | | | 1 |
| | Tobacco | | *** | *** | | Do. | | | 2.4:5 | 110 | 7 | ā : | | .044 | 4 | ŏ | • | | | |
| | Pointoss | *** | , | 101 | - : . : | tio. | • |) | 3,208 | 10 | ă | | | 910 | ē | ŏ | ŧ . | | | 1 |
| İ | | | 1 | Dotal | | 274. | • | | 7,58,500 | - | | <u> </u> | 84,77 | | | • | | | 54 | Say & manuals. |
| 1 | | | • | | "" | | | i | | · | | | | | <u> </u> | | ' | - | -1 | any to the team of |
| - [| Rice | | •• | •• | | Blad | | 1 | 2,46,671 | 111 | 0 | u | 24,27 | | - | ø | 1 | | | 1 |
| | Matte Marte | ••• | 400 | *** | | Do. | *** | 1 | 1,19,103 | 10 | 6 | 0 | 11,94 | | 0 | | i . | | | 1 |
| . 1 | Kado | *** | | *** | | Do. Do. | *** | | 17,345 | | | 0 | | 1,005 | | • | ı | | | 1 |
| | Savan | ** | *** | ** | *** | Do. | •• | *** | 1,12,203 28,909 | 1 2 | 20 | | | .723 | 20 | 0 | i | | | |
| | Pairs | ••• | | *** | | Do. | *** | ~ | 4,178 | 10 | ä | - 1 | | .780 | 0 | 0 | ĺ | | | 1 |
| | Jawar | | *** | ** | | Do. | | | 6,014 | 10 | ĕ | | | .830 | - | ě | 1 | | | 1 |
| 1 | | | • | letal | *** | | A-100 200 | | 5,45,194 | - | 7111 | - | 14.A | .108 | 29 | • | 10 | | 10 | Say 18 magade |
| Л | Lies | | 440 | | | Autho | ni. | | 6.25,210 | 118 | • | - | 62.1 | | • | • | | | | |
| | Yassa | | *** | *** | *** | Do. | | - " | 19,334 | 75 | | • | 14,30 | | | • | | | | |
| - 1 | | | | otal | 407 | | . (1000) | | 8,44,196 | - | - | | | .900 | _ | _ | 14 | | 7 | 1 |

564. Under rabi potatoes yielding 80 maunds an acre have been included, but to be set against this there are safflower and opium whose outturns are only a few seers. The aghani average outturn goes up to 14 maunds owing to the inclusion of yams which produce not less than 75 maunds per acre.

It is a matter of common knowledge that the yield per acre is not uniform throughout the whole district. It has been often pointed out in this report how marked the difference in the soil is north and south of the Sikrahna, and this was illustrated by the prevalence of certain crops in certain thamas which the crop statistics disclosed. In the following statement an attempt is made to furnish the variation in outturn of the chief crops than by than:—

| | • | | ì | | | | B | HADAI. | | | | | l | AGHANI. | |
|---------------|------------|----------|------------|---------|---|----------------------|---------|------------------|----------------------|---------|------------------|-------------|---------|------------------|-------------|
| | • | , | | | Rtes. | | | MAIRE. | | | Kupo. | | | Rics. | - |
| Serus number. | NAME OF | I II A N | A . | Area | Total | Average per acre. | Area | Total maunds. | Average per acre. | Area. | Total maunds. | Average per | Area | Tota) manuds. | Average per |
| 1 | 1 | | | 8 | 4 | | 6 | 7 | A | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| - | - | • | | Acres. | Agent the prince trapped the section of | | Acres, | | | Acres. | | | Acres | | Ī |
| ı | Bagoha | | | 41,003 | 4,10,030 | 10 | 22,262 | 2,70,358 | 9 | 15,017 | 90,102 | 6 | 70,523 | 7,78,763 | n |
| 2 | Shikarpur | | | 73,131 | 8,04,441 | 11 | 8,183 | 22,291 | 7 | 3,077 | 12,369 | 4 | 121,500 | 17,01,964 | 14 |
| 3 | Rottia | | | 29,677 | 2,95,770 | 10 | 22,007 | 2,29,070 | 10 | 17,191 | 1,37,529 | | 89,080 | 10,68,360 | 13 |
| 4 | Adapur | | | t-4,790 | 7,12,270 | 13 | 1,420 | 12,750 | 9 | 2,112 | 6,448 | | 48,340 | 6,76,760 | 16 |
| 6 | Dhaka | | | 36,051 | 8,90,561 | 11 | 9,592 | 86,324 | 9 | 15,313 | 1,22,504 | - 8 | 61,352 | 7,48,554 | 18 |
| 6 | Mottheri | *** | | 16,111 | 1,35,009 | 9 | 12,568 | 1,34,245 | 11 | 14,724 | 1,17,702 | 8 | 31,105 | 3, 42, 158 | 11 |
| 7 | Gobindganj | ,,,, | | 3,541 | 34, 140 | 10 | 18,763 | 1,57,630 | 10 | 20,524 | 2,05,240 | 10 | 41,602 | 4,15,020 | 10 |
| 8 | Kesaria | | • | 1,079 | 10,790 | 10 | 20,477 | 2,25,357 | 11 | 10,024 | 1,90,240 | 10 | 43,521 | 4,33,210 | 10 |
| 9 | Madhuban | | ••• | 2,085 | 14,765 | 0 | 8,600 | 1,68,972 | 13 | 5,221 | 67, 131 | 11 | 18,218 | 1,82,180 | 10 |
| | District T | otal | | 254,071 | 28,23,066 | 111 | 119,568 | 12,06,024 | 10 | 112,203 | 0,61,593 | 818 | 600,cks | 63,43,988 | 18 |

| 1 | | 1 | | | | RA BI | | | | į | |
|-------------------|---|----------|-----------------|------------------|---------|------------------|------------------|--------|-----------------|------------------|---------------------|
| | | | WHEAT. | 1 | | BARLET | | | GRAM. | | |
| | NAME OF THANA | ~ | | Ä | | - | Z | | | Ž | REMARKS |
| Deliver authorize | | Arcs. | Total maunds | Average acre. | Aich | faluT ebnosus | Average serv. | Ares. | Total maunds | Average Lore. | • |
| Ì | adeles, iga regulateta etikon darin | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | , 20 | 21 | 12 | 23 | 14 |
| | yanan d ari terdakan Persentah angan mangan dari | Acres. | | | Acres. | | | Acres. | | | - committees county |
| 1 | Bagaha | 10,776 | 86,009 | | 24,401 | 1,73,007 | 7 | 2,874 | 23,968 | 5 | |
| 9 | Shikarpui | 19,565 | 1,60,503 | 69 | 14,163 | 1,13,790 | 8 | 13,571 | 81,424 | 6 | |
| 3 | Bettin | 1.18 | 2,13,649 | 0 | 30,036 | 2,70,534 | 9 | 4,410 | 80,°28 | 7 | |
| ٠ | Adapur | 6,407 | 38,419 | 6 | 24,490 | 1,71,403 | 7 | 5,684 | 51,156 | 9 | |
| • | Dhaka | 8,088 | 88,024 | e | 37,973 | 3,41,748 | Q | 7,853 | 54,971 | , | |
| 6 | Motthari . | 9,063 | 03,141 | 2 | #2,667 | 3,26,670 | 10 | 2,161 | 16,127 | 7 | |
| 7 | Gobindgan; . | 10,032 | 92,921 | 83 | 20,156 | 2,01,360 | 10 | 120 | 960 | 8 | |
| | Kesaria | . 12,149 | 97,297 | 6 | 19,037 | 1,98,987 | n | 350 | 2,500 | | |
| 9 | Madhuban | 3,634 | 82,706 | 9 | 11,719 | 1,40,628 | 19 | 120 | 903 | 7 | |
| | District Total | 1,03,203 | 8.43,348 | 8 | 814,099 | 19,38,843 | | 37,161 | 2,61,966 | , | |

565. Another element is the price of the produce. In the following table the average prices for the period 1891—95 are furnished. They have been worked out from the information contained in Mr. Macpherson's report, supplemented by our own

special inquiries. Ten per cent. is deducted to cover the danger of overestimating:-

| Serial No. | NAME OF ARTICLE. | Nam of harve | 1 | pri | erag oe p | er | Av prior allov due 10 p | ring tion | de- | bb | Aver erion agh ada ra | an. | of i, ind | Rı | BWAJ | LEG. |
|------------|-----------------------------------|--------------------|-------|-----|--------------|----|-------------------------------------|--------------|-----|-----|-----------------------------------|-----|-----------------|----|------|------|
| 1 | 3 | 8. | | | 4 | | | 5 | | ĺ | | 6 | | | 7 | |
| | • | | | Ra | Α. | P. | Re | ۸. | Р. | | p. | | . P. | | - | - |
| 1 | Makai | Bhadai | | | 12 | 6 | 1 | 10 | 0 | 1 | 174 | . ^ | . r. | • | • | |
| 2 | 30 | Do. | ••• | ī | 10 | 3 | 1 | 8 | 0 | | | | | | | |
| 3 | 77. 1. | Do. | | 1 | 2 | 0 | 1 | 0 | 0 | | | | | - | | |
| 4 | Bawan | Do. | ••• | 1 | 10 | 0 | 1 | 8 | 0 | 11. | • | | | • | | |
| 5 | D : | Do. | ••• | 1 | 10 | 0 | 1 | 8 | 0 | 15 | 1 | 8 | 9 | | | |
| 6 | T 7 | Do. | ••• | 1 | 10 | 0 | 1 | 8 | 0 | H | | | | 1 | | |
| 7 | 70. | Do. | and | 2 | 7 | 8 | 2 | 4 | 0 | П | | | | | | |
| • | | Agha | ni. | | | | | | | П | | | | | | |
| 8 | Yams | Aghan | | | • • • | | 0 | 8 | 0 | IJ | | | | 1 | | |
| 9 | 7771 | Rabi | • • • | 2 | | 0 | 2 | 7 | 0 | 1 | | | | | | |
| 10 | Barley | Do. | | 1 | 13 | 0 | 1 | 10 | 6 | 11 | | | | | | |
| 11 | 0 | Do. | ••• | 1 | | 0 | 1 | 11 | 0 | П | | | | • | | - |
| 12 | Other food-grains, i | n- Do. | ••• | 1 | 13 | 6 | 1 | 10 | U | П | | | | 1 | | |
| | cluding pulses. | _ | | | _ | | | _ | | | | | | | | |
| 13 | | Do. | •• | 4 | 6 | 0 | 4 | 0 | Ü | П | | | | 1 | | |
| 14 | | Do. | • • • | 3 | 12 | 0 | 3 | 7 | 0 | П | | | | | | |
| 15 | | Do. | ••• | 3 | 7 | 0 | 3 | 2 | 0 | > | . 8 | 3 1 | 6 | | | |
| 16 | Other crops, including oil-seeds. | | • • | 1 | 12 | б | 1 | 10 | 0 | | | | | | | |
| 17 | Poppy seeds | Do. | | | • • • | | 4 | U | 0 | П | | | | 1 | | |
| 18 | Spices | Do. | ••• | 6 | 9 | 0 | 6 | 0 | 0 | 11 | | | | | | |
| 19 | (3" (4) | Do. | ••• | 0 | | 0 | 6 | 0 | 0 | | | | | 1 | | |
| 20 | Sugarcane | Do. | ••• | 1 2 | | 0 | 2 | | O | | | | | | | |
| 21 | 1 45 7 4 | Do. | ••• | 1 | | 0 | 1 | 0 | | 1) | | | | 1 | | |
| 22 | Cotton, cleaned | Do. | ••• | 15 | 12 | 0 | 14 | | | | _ | _ | 3 0 | | | |
| 28 | F99 3 | Do. | ••• | | | | 5 | 0 | 0 | 1 | (| 5 (| 0 (| 1 | | |

The gross value of the agricultural produce.

The total gross value of the agricultural produce of the district therefore works out to Rs. 3,52,68,908-4-6, that is, to Rs. 24-5-9 per acre on the net cropped area. The details are as under:-The state of the s

| Serial Bum- ber. | CROPS. | Total area under each crop. | Average outturn per sore. | Total outturn under each grop. | Average price per maund, | Total value of agricultural produce under each erop. | Average value of produce per acre, including twice cropped land. | Remares. |
|------------------------|---|-----------------------------------|---------------------------------|--------------------------------------|--------------------------------|--|--|----------|
| 1 | 8 | 3 | • | 5 | 6 | 7 | | • |
| | | | | Mrs s. | RA A. P. | Ro. A. P. | Ba. A. F. | |
| 1 | Wheat | 105,906 | | 8,48,190 0 | 2 7 0 | 20,000,040 1 0 | | |
| 3 | Berief | 9,14,099 | 9 | 10,28,001 0 | 1 10 6 | 81,UI, 074,01 | · · | |
| • | Gram | 87,161 | 7 | 2,00,127 0 | 1 11 0 | 4, 54, 986 A | 10- | |
| • | Other fond-grains, includ- | 907,944 | | 16,63,664 0 | 1 10 0 | 27,03,464 0 P | | |
| | ing pulses. | 66,861 | | 3,19,408 0 | . 8 7 0 | 4,89,144 11 0 | | |
| | Til | 8.440 | | 10,500 0 | 4 6 6 | 48 500 0 0 | | |
| 7 | Mustard | 8,225 | ā | MO 895 0 | 8 2 0 | 2,61,415 10 0 | | |
| . i | Other group, including oil- | 18,604 | 10 | 1,56,960 0 | 3 0 9 | 4.70.580 0 0 | ' | |
| - 7 | media. | | | 1,55,755 | | | | |
| 9 | Rpices | 8,979 | | 20,760 0 | 600 | | ; ; | |
| 10 | Engarates | 11,188 | 95 | 2,78,875 O | 2 8 0 | 6,44,8/2 \$ 0 | ١ , | |
| 11 | Cufton | 2,121 | 3 | 6,363 0 | 16 8 6 | Mai und U | | |
| 19 | Jute and musi | 4,966 | 3 | 14,5WB 0 | 2 5 0 | 86,996 0 0 | • | |
| 13 | Sellower | 1,796 | S SEALES | 350 0 | 6 6 6 | 2,184 0 0 | i . | |
| 14 | Opium | 15,694 | 64 90079 | 7,349 7 32,946 0 | 6 paneri | 17,6%,40% 0 0 | | |
| 15 | Tobacco | 2,476 | 18 | 2.61 250 0 | 100 | 2.61.240 0 0 | ; | • |
| 24 | mt | 788.051 | 11 | 90,00,271 0 | 9 4 0 | 1.74.84.775 19 0 | i | |
| 17 | Barrer . | 100 mg | 'à | 2,81,272 0 | 1 8 6 | 8.45.90% 0 0 | 1 | |
| 19 | ¥ | 19,134 | 76 | 14,85,050 8 | | 7.17.525 0 0 | į f | |
| 90 | Jawar | 5,998 | 10 | 89 A30 0 | 1 10 0 | 97.228 12 0 | 1 | |
| 5 | Baire | 4.176 | 10 | 41.750 0 | 1 0 0 | 02 025 t 0 | , | |
| 23 | Maren | 17,866 | | 1,86,660 0 | 1 8 0 | 2 84.507 N U | 1 | |
| 26 | Matal | 119,400 | 10 | 11 04 004 8 | 1 10 0 | 19 47 MBB 0 0 | 1 . | |
| 34 34 34 | Kodo | 1,19,908 | 44 | 9,54,725 20 | 1 0 0 | 9,83,795 # 0 | i . | |
| 95 | Geren perduce | 5,007 | | | 15 9 9 | M4,056 0 0 | 1 | |
| ** | Non-food-Eheruni Other ventalio-Ehekri | \$1,300 | | ł | 7 7 4 | 5,95 200 0 0 26,860 6 0 | | |
| 27 | Other vegetable-Ebskri | 1,79% | | | 15 0 0 | 20,000 9 0 | į | |
| 34 | Fodder grop | 1,598 | | 1 | | 7.940 0 0 | 1 | |
| - 2 | Indian home and others | 1 150 | | | | 100 0 0 | 1 1 | |
| | | | | | <u> </u> | | ļ i | |
| • | Total | 1,094,366 | | 1,46,77,714 97 | 1 | 8.82.68.905 4 S | 10 6 1 | |

567. In trying to arrive at agricultural profits the next element to consider, is cost of cultivation. The results obtained are furnished in the next statement. The amount of seed required varies for different crops from one-fourth of a seer to one seer and a fourth per katha. Taking the average Mothari bigha as one of an 8½ hath laggi an acre equals 13 kathas only. For transplanted rice, both bhadai and aghani, seed is required at the rate of a seer per katha, and for rice sown broadcast, a seer and a fourth. For all other bhadai crops the rate is one-fourth seer per katha, except for kodo, which requires a seer. For all important rabi crops—wheat and barley and cereals like arhar—the rate is one seer per katha, but for peas, gram, khesari, and masuri and such like the rate rises to 1½ seers. Oil-seeds, on the other hand, like most bhadai crops, do not require more than one-fourth seer per katha.

568. Cost of labour.—Labour comprises the following operations:—

- (1) Digging up into clods. This is done for important crops, or on soils that become overgrown with weeds.
- (2) Ploughing.
- (3) Transplanting.
- (4) Weeding.
- (5) Reaping and threshing.
- (6) Husking and cleaning.

It is only special crops that are manured and irrigated.

Labour is remunerated generally in kind, but not uncommonly in cash as well—an innovation arising from the example of the planters. Mr. Macpherson has the following on the present state of wages in the district and their relation to prices of food-grains:—

"The wages of labour have not risen in this district in unison with the rise in prices, either as a normal condition or during the present year of famine. I have examined the wages recorded in the General Administration Reports since the famine of 1874, and find very little change. In the year 1874-75 the wages of unskilled labour, that is, for a common cooly and agricultural labourer, were reported to be two snnas for a man, one and-a-half annas for a woman and one anna for a boy. These rates have continued ever since, except that since the opening of the railway in 1883) they are shown as ranging also up to about half an anna more in each case, so that we may take the average rise as a quarter of an anna. In addition to the above, it has all along been customary to add a small quantity of parched barley or maize for a mid-day mosl, which adds slightly more than a quarter of an anna to the wage. All things considered, the average wage of an adult male cooly now may be taken as a little over two and-a-half annas, as against two and one-fourth annas twenty years ago, a rise of about 11 or 12 per cent. The mean price of the food-grains available for comparison (common rice, wheat, barley and gram) has risen from 23½ seers during the four years 1870—73 to 17½ seers during the five years 1891—95, i.e., by 30.6 per cent. As compared with the five years 1875—79, however the rise in prices during the six years 1891—96 has been only 18.9 per cent. But no doubt the wages quoted in 1875 were those current also before the famine of 1874.

Field labourers are, however, mostly paid in kind, and in this light, the scale of wages has risen in proportion to the rise in prices in so far as the rates of their grain allowances have remained uniform. As these have probably changed but little, we may fairly assume that the ordinary wage of the agricultural labourer at the present day, is a good deal above 24 annas, probably open three annas. This should be borne in mind in comparing the wage paid on famine relationary and the average cost of relief per head of the population, but of course employment is not usually continuous as in the case of famine relief."

In my opinion three annas as the wage including breakfast of an adult male is too high an estimate. I don't believe it to exceed two and-a-half annas and shall take the latter rate for purposes of calculation. There are one or two forms of labour that are always paid in kind or, to speak more strictly, in the actual produce of the field itself. Thus for reaping, the labourer gets one bofks or bundle out of 16 harvested, and in threshing and husking one maund out of 16 threshed and husked. Then come the implement repairers and the watchman, if any, who obtain ten dhurs each per bigha or to the in all, if paid in kind. Generally, however, the raiyat does not have a watchman. He guards the crops himself or deputes a regular servant to do so. The harber and the washerman also come in for their share in the produce, the rate depending on the size of the cultivator's family. No separate provision is made in these calculations for the feed of bullocks, because they are maintained on the straw and chaff of the produce.

569. The cost of cultivation, including the cultivator's personal labour, is .

Total cost of cultivation. furnished in the following statement:—

| | | • | (| 3 none radi | over. | | | | Cost | 07 COLT | TATIOP | OF ALL CI | NOTES | PBR ACRN | op t | RAPA: | | |
|---------------------------------------|---|---------------------|---|---------------------|---------------------------------------|--|----------------------|---|-----------------------|--|-------------------|---|----------------------|----------------------------|---|------------------------------------|---------------------|---|
| | | | Orapa. | Other | kinds. | Total. | l-ee | grahas. | Prepa | ratory ration. | | ng, inclu- front of whee, | pl | Crayus- moding. | • | veding. | Beapi | nt of the |
| Berind antachen. | Нами ор Свор, | Quantity is memble. | Value in rigner. | Quantity is manufa. | Value is rupes. | Value in repess. | Quantity in serve. | Value in repres. | Number of labourers. | Coast fin respons. | Busies of Mouses. | Wages in rapest. | Number of labourers. | Wages in raped. | Humber of labourers. | Wages in repert. | Names of inbourers. | Veges in rapes. |
| 1 | , | 8 | 4 | 5 | 6 | , | 8 | • | 10 | 11 | 12 | . 15 | 14 | 41 | 16 | 17 | 16 | 19 |
| | Bhadai. | K | Re. s. P. | | | Ba, a, p. | | Ra. a. P. | | Bo. A. P. | | RR. 4. P. | | R4. 4. P. | | Ba, A, P. | | Re. A. F. |
| 19845 | Rice transplanted hroadcast Makni Harva Kodo | 12 10 10 9 | 27 C 0 28 R 0 16 4 0 13 S 0 8 S 9 | | 121 127 127 127 128 | 37 0 0 16 4 0 13 8 0 8 8 0 | 16 31 | 0 11 9 0 14 6 0 9 0 0 8 0 0 5 0 | 13 13 4 | 8 0 6 8 0 6 0 10 0 0 10 0 | 1 | 1 1 0 1 3 0 0 10 0 0 0 0 | 11 | * 0 6 * 0 8 | 0 E3 | 0 18 0 8 7 0 8 7 0 0 18 0 | 7 | 1 11 6 |
| 678 | Aghasi. Rice transplanted broadoust Alua, suthul | 18 11 75 | | I | | 20 4 8 26 12 0 87 8 0 | 16 | 0 11 9 0 18 6 3 0 0 | 18 18 10 | 1 0 6 2 0 5 1 0 0 | | 1 8 0 | 1 | 1 0 6 0 16 0 | 9 | 0 13 0 18 0 | 7 | 113 |
| 9 10 11 18 18 14 16 | Rabi. Wheat Barley Peas Gram Khesari Arbar Potstooe Masuri | 7 7 8 10 | 11 13 0 13 0 0 81 6 0 80 0 0 | | | 10 8 6 16 14 6 10 8 6 11 18 0 13 0 0 21 6 0 80 0 0 | 18 16 16 18 | 0 12 3 0 8 0 0 9 6 0 11 0 0 10 6 0 1 0 0 8 0 0 6 3 | 5 5 5 4 4 | 0 12 0 0 14 0 0 15 0 0 12 0 0 10 0 0 10 0 0 10 0 | 6 6 6 | 1 16 0 1 H D 1 R O 1 S B 1 H O 0 13 U 1 16 0 0 U | 15 | 1 0 6 | 1 = 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 0 15 0 | • 6 | 1 8 4 0 15 0 16 0 16 0 16 0 16 0 16 0 16 0 16 |
| 17 15 19 90 81 | Non-food crops, Bugarcane Tobacco Poppy Cotion Linseed Mustard | 2 2 5 | 13 3 | ,, 10 | 86 \$ 0 65 0 0 83 0 0 8 14 0 | 65 0 C | 3 | 0 1 3 | 13 5 13 | 3 2 0 3 0 0 0 13 0 0 2 6 0 9 6 | 10 | 1 14 0 3 0 0 1 14 0 0 9 0 0 9 0 | 19 | 0 15 0 1 14 U 0 10 U | 20 | 8 H 0 0 15 8 0 15 0 | 13 | 8 0 6 1 8 0 0 10 7 0 7 0 |

| | | , | | iki ritas dination manimization | | mitwelfield control of freedom | · | n when hoperatures as | | | The state of the s | Incident | AL CORT. | | | | a keata | |
|--|--|--|----------------------|---|----------------------|--------------------------------|--|--|---|----------------------|--|------------------|-----------------|----------------------|------------------|--|-----------------------------------|-----|
| | | imple- ers, chilb and out | cleanin | ing and g. _t ith of dure. | Special | processos. | Tr | ial cost in | rupres. | | ¥ | anuring. | | la | rustion, | | ¥ | 1 |
| | Name of Crop. | Payment for watchmen, im- ment repairers and others, the produce subere pand of it. | Number of labourers. | Value of wages in rupres. | Number of inbottoms. | Value of wagne to rupres. | Namber of labourers. | Value of wages in rujesta, | Total | Number of labourers. | Wages in rupees. | Prive of manure. | Ti A | Number of integrate. | Wager in represe | H. gbest cost in rupess. | A status and a copie adopted too. | |
| Ì | | 20 | 31 | 22 | 23 | 84 | 35 | 24 | 97 | 20 | 120 | 30 | 11 | 23 | 83 | 84 | 'n | |
| Ī | Bhadai. | Es. A. F. | | Re. s. P. | ĺ | Ba A. P. | | Ba. A P. | Rs. A. P. | 1 | Ba. A. P | HRADE | Re. s P. | | Ba, a P. | Ra A. P. | ßø, | |
| The second second | Rice transplanted broadcast Makai sarus Kode | 1 6 6 1 8 0 0 13 0 0 11 0 0 7 0 | 9 7 5 6 | 1 11 0 1 6 4 1 0 0 0 15 6 0 4 6 | | | 10 | 9 15 6 8 9 6 7 10 9 8 18 6 8 13 9 | 10 11 3 1 15 0 7 12 0 6 5 6 4 1 0 | | | 201 | | | | 70 11 A A 15 U 7 12 O A 15 6 4 Z O | 10 | 8 |
| | Agheni. Rice transplanted broadcash Alms, suthni | 176 | 13 | 1 L3 0 1 7 8 3 5 2 | | | 88 41 48 | 14 10 # 8 6 0 10 \$ 6 | 13 6 8 9 6 6 18 6 6 | | | | | 17. | | 11 6 8 9 & 6 12 5 0 |) 10 18 | |
| THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE OWNER, THE OW | Whent Barley Pass Grane Khosari Arkse Potatoes Master' | 0 15 6 0 19 0 0 8 8 0 7 0 0 10 6 1 1 0 0 6 0 | | 1 8 6 0 15 0 0 30 6 0 8 0 0 18 0 1 5 5 0 10 8 | | | 27 28 17 15 14 25 39 | 6 1 6 4 14 6 2 11 9 3 7 6 4 0 6 6 1 6 7 0 8 2 3 8 | 0 13 3 6 6 6 6 8 3 4 3 9 4 11 0 8 18 6 20 0 0 | 4 | 0 10 0 | 1 0 | 3 2 0 | | • | # 16 # 6 # 6 # 5 # 5 # 6 # 9 9 # 9 | 8 6 8 90 | 12 |
| - | Hyn-food ereps. Begarente Tobecco Peppy Cation Limeed Mattark | 1 4 4 | , , | | 36 13 30 | | 100 100 57 26 16 | 11 4 A 14 6 U 9 6 U 6 11 6 5 2 8 3 6 0 | 14 4 8 14 6 0 10 6 0 6 12 9 8 7 6 8 8 8 | 1 6 | 0 10 0 0 10 0 9 15 0 | 1 2 0 | 2 2 0 0 2 2 7 9 | 7 | 1 1 0 | 16 6 6 8 19 9 14 4 0 0 5 13 9 2 5 7 6 3 8 3 | 14 14 5 | . 0 |

570. The highest cost of cultivation is for rice Rs. 10-8 an acre. This is followed by wheat at Rs. 9 per acre. Makes and marus though requiring much weeding cost somewhat less. The cost of cultivation for all other crops is less than Rs. 6 per acre except of course special crops, such as opium and tobacco. Some of the figures appear rather high, but the labour rate is higher in Champaran than in Muzaffarpur. Then, as I have said, the estimate is in a way fictitious, for the ordinary cultivator does much of the work himself.

a way fictitious, for the ordinary cultivator does much of the work himself.

571. The average cost of cultivation for each harvest worked out in the

area found to be occupied by each crop is given below:--

| | Йами от Опот | ·. | Wheth rabi bhadai aghan | OT | Total area under each erop. | A verse of culti per ac cach | 10 | of | Total co | Юn | of | Avera of cult per a bhada and a | i, | e o rai | d br | net | 00 | | l l | Lam | LARE |
|----------|--|--------|----------------------------------|-----|-----------------------------------|---------------------------------------|----|-----|-----------------------|-----|------|---|----|------------|------|-----|-----|------|------|--------|--------|
| 1 | 3 | • | 3 | | • | | 8 | | 6 | | | | 7 | | | | • | - | T | | • |
| | Rabi. | | 1 | | Acres. | Re. | A. | P. | Be. | 4 | . P. | Ra | | . 1 | p. | R. | . 4 | . P. | | f | |
| 1 | Wheat | | Rabi | ., | 106,905 | | 0 | 0 | 9,47,385 | | | { | | | | | | | | | |
| 9 | Barley | ••• | Do. | *** | \$14,000 | . 6 | Ä | 0 | 11,24,019 | | | ! | | | - 1 | | | | 1 | ′ | |
| | Gram | | Do. | ••• | 87,161 | • | 3 | 0 | 1,68,280 | | 0 | i | | | - 1 | | | | 1 | | |
| 4 | Other food-grains, inc | daing | Do. | | 9,07,958 | 4 | 8 | 6 | 9,08,817 | | 0 | 1 | | | - 1 | | | | | | |
| | Lineoud | • • | Do. | | 63,891 | i | 8 | ŏ | 8,23,583 | | |] | | | - 1 | | | | 1 | | |
| i | Til . | | Do. | | 5,450 | 3 | • | 0 | 16,350 | 0 | | 1 | | | - 1 | | | | 1 | | |
| À. | Mustard | | Do. | *** | 8,615 | 3 | 8 | 0 | 81,587 | 8 | 0 | | | | | | | | 1 | | |
| T | Other crops, including | - | Do. | | 15,696 | | | 0 | 84,838 | 0 | 0 | | | | - 1 | | | | 1 | | |
| | aeuda | ••• | Do. | 144 | 5,078 | ŝ | 7 | 0 | 85,296 | | | } | | | | | | | 1 | | |
| 10 | Buguresno | | 1)0. | | 11,155 | 16 | i | ŏ | 1,84,057 | | ŏ | 1 | | | 1 | | | | 1 | | |
| 11 | Cotton | | Do. | | 2,121 | 6 | 0 | ō | 10,606 | 0 | 0 | Ì | | | - 1 | | | | i | | |
| 18. | Ramower | ••• | Do. | | 1,795 | | 8 | 0 | 4,487 | | 0 | | | | i | | | | 1 | | |
| T) | wpium | | 100. Do. | | 53,894 | | 0 | 0 | 7,50,816 | | 0 | | | | - 1 | | | | | | |
| 14 | Tobacco | | Do. | | 3,408 3,360 | 21 26 | • | 0 | 84,916 | | | | | | - | | | | | | |
| 15 | Polatous | | D 0, | | 3,500 | | - | _ | 04,010 | _ | - | | | | | | | | 1 | | |
| | Total | | ••• | | 784,809 | | | _ | 46,87,570 | 8 | 0 | 6 | 1 | 1 | 9 | | | | İ | | |
| 1 | Bhadas. | | | | | | | | | | | | | | ļ | | | | | | |
| 16 | Makai | | Bhadai | . [| 110,806 | 8 | 0 | 0 | 9, 58,944 | 0 | | | | | ļ | | | | 1 | | |
| 17 | Marua | | Do. | | 17,845 | • | | 0 | 1,47,778 | | | | | | | | | | 1 | | |
| 18 | Kodo | | Do. Do. | | 112,203 | 3 4 | | 0 | 1.01.181 | | | | | | | | | | | | |
| 19 | Bawan | ••• | Do. | | 28,900 250,671 | 10 | | 0 | 25,46,710 | | 0 | | | | - (| | | | 1 | | • |
| 10 11 | Rice | | Do. | | 4,176 | | | 0 | 10,947 | | | | | | - 1 | | | | 1 | | • |
| | Jawns | | Do | | 6,983 | | 8 | | 26,628 | | | | | | i | | | | ! | | |
| - | Total | | | | 545.194 | | | _ | 43,67,336 | _ | 0 | , | 13 | . , | | • | | | ł | | |
| , | | | ••• | | DWD, 10-9 | | | - | 42,07,000 | | - | • | | | • | | | | | | |
| | Aghani. | - 1 | | - 1 | 404 000 | | | | EE 00 (10) | | | | | | 1 | | | | | | |
| 13 | Rice | | Aghani Do, | ::: | 19,134 | 10 12 | | | 55,22,495 2,34,391 | | ő | | | | - | | | | | | |
| 1 | Total | 1 | | - 1 | 845,124 | | | _ | 87,87,946 | ы | 0 | 10 | 8 | 1 | ι' | _ | | |] | | |
| 15 | Fodder crop | | | | 1.588 | 1 | 8 | 0 | 2.382 | Ω | 0 | | | | | | | | | | |
| io I | tarden produce | | ••• | - 1 | 6,097 | | | 0 | 11,674 | | | | | | 1 | | | | 1 | | |
| 7 | Other vegetables, kakt | d and | | - } | , | _ | _ | | | | - 1 | | | | 1 | | | | 1 | | |
| | kharbus | | *** | - 1 | 1,792 | | | 0 | 12,544 | | 0 | | | | - | | | | 1 | | |
| M | Non-food and kharaul | l | | - 1 | 4,808 | | | 0 | 1,20,312 7,200 | | | | | | | | | | 1 | | |
| 1) | Jute and munj Indian hemp and other | ara '' | | - 1 | 880 | | • | ٦ ا | 150 | | | | | | 1 | | | | i | | |
| 1 | Total . | - ' | | 1 | 95,241 | - | | - | 1,54,501 | 0 | 0 | 1 | | 11 | | | | • | | | |
| - | | | • | - 1 | | | | - | 1,48,00,783 | | : | | _ | | | - | | 1 | B | D. | . 7-16 |
| - 1 | LATOT GRANG | | ••• | - (| 1,024,368 | | | ı | **##/46/19/3 | * 1 | ν. | *** | | | - 1 | - 1 | • 4 | | 1007 | , m.e. | . 1-4 |

572. Thus the average cost of cultivation is Rs. 6-2-9 per acre for rabi, Rs. 10-8-11 for aghani, and Rs. 7-13-3 for bhadai. The general average is Rs. 7-10 per acre.

573. We have now to determine the cost of living in Champaran for an average cultivator's family. The census figures work out to an average of six souls per occupied house or family in the district which consists of (avoiding fractions) two males, two females and two children. They ought to live on Rs. 77 a year, as worked out below:—

| | | | | Br. | Br | **. | | | 1 | M DA, | В., | CH. | К | L 4. | , P. | | | HA. | . 📤 | P. |
|-----|--------------------|-------|-----------|--------|-------|--------------|-------|------|-------|-------|-----|-----|------|------|-------|---------|-----|-----|-----|----|
| 1. | Grains, cheaper | kınd | 6 persons | at Ch | | 4∯ per b. | day | × 30 | 5 ~ | 41 | 2 | Ŗ | at 1 | 6 | 0 pe | r maund | - | 56 | 7 | 8 |
| 10. | Vegetables ,, | | 6 ,, | at S |): | 2 . | | × 36 | ő = | . 6 1 | 38 | 12 | at (| | 0 | ** | - | 1 | 11 | 8 |
| 3. | Salt , | | 6 ,, | | | * | | × 86 | ē 🕳 | 0 1 | | 12 | | | | 21 | - | | 11 | 8 |
| 4. | Oil | | 6 ,, | at 5 | - | 1 : | • | × 36 | 6 - | 0 1 | 17 | 12 | at 9 | 0 | 0 | | • | | 18 | 6 |
| 5. | Spices | | 6 ,, | at | 1800 | | | × 36 | 6 = | 0.1 | 7 | 12 | at 6 | 0 | 0 | | * | 2 | 7 | 6 |
| 6. | The law area | | | at 4 | ADDAS | | b | , or | Rs. 1 | 8 per | y q | MT. | | | | *** | 100 | 8 | 0 | 0 |
| 7. | Four dhetis for 2 | male | s at ib a | Bres e | ach f | or one | year | - | *** | ٠. | •• | • 1 | | | *** | ••• | - | 8 | 8 | 0 |
| 8. | Four suris for 2 f | | | | | | | | *** | •• | | | | | *** | 444 | | 3 | 8 | 0 |
| 9. | Four small dhotis | for 1 | childre | n at 4 | an as | s each | for o | ne y | Bar | | | | | | *** | ••• | * | 1 | 0 | 0 |
| 10. | Extra expenses | | *** | *** | 449 | *** | | | ••• | 44 | | | | | *** | ••• | | 0 | | 0 |
| | | | | | | | | | | | | | | | Total | *** | | 76 | 10 | • |

The average comes to Rs. 12-12-6 per head. Dr. Grierson has worked it out to be Rs. 15 per head in Gays, but the standard of living is lower in Champaran, and Dr. Grierson, as I have pointed out in my report on Gays, makes no reduction in his rate per head for the larger size of family. If it costs a family of four Rs. 15 per head to live, it will certainly cost a family of six a less rate, because a large percentage of the units are women and children who eat less.

The net income per sere of net cropped area.

The net income per sere of net cropped area.

The net income per sere of net cropped area.

The net income per sere of net cropped area.

The net income per sere of net come after deducting cost of cultivation and rent and adding the value of the cultivator's own labour comes out as follows:—

| Namber. | DESCRIPTION OF RAITATS. | Oultivated area. | Area under produce rant. | Total. | Rent. | Produce rental calcu- lated at Rs. 2-8 per acre. | Total. | Edmarks. |
|---------|---|---------------------------------------|-----------------------------------|---|---|--|---|----------|
| 1 | 9 | • | • | 6 | 0 | 7 | | • |
| 1 8 | Fixed rates Occupancy raiyate Non-occupancy raiyate | Acres, 23,546 114,665 84,804 | Aerre. 88,468 10,858 | Acres, 23,346 1,204,137 45,342 | 20,632 28,632 28,63,256 10,634 | Ha. 1,48,246 27,108 | 20,639 20,639 25,09,601 96,633 | |
| | Total | 1,107,489 | 69,236 | 1,876,425 | 24,63,498 | 1,73,340 | 26,36,706 | - |

Acres. Rs. A P. Rs. A. P.

The gross value of the produce.

Deduct the total cost of 1,276,835 × 7 10 0 = 97,85,790 10 0

 Sultivation.
 3,13,66,868
 5
 9

 Deduct rent
 ...
 ...
 ...
 26,86,766
 0
 0

The net income therefore is 2,60,31,945 5 8 or Rs. 20-6-8 per sere of the not cropped area.

575. In assessing produce-rent the rate has been taken at Rs. 28 per acre. The cash rent-rate is only Re. 1-12, but this is very low. On the other hand, the area held rent-free has been excluded. All petty rent-free holders have substantial rent-paying holdings of their own, so that they are well off. Thus the net income per acre comes to Rs. 20-6, or nearly twelve times the rent-rate. 576. An average cultivator's family requires, as I have said, Rs. 75 per

The subsistence bolding.

annum to live on. Therefore the subsistence holding, by which I mean a holding sufficient to support an average family in fair comfort, ought to be 3.7 acres, or allowing for the portion necessarily left uncultivated, say 4 acres. Though this size is the district average, I think a distinction is required between the Bettia and Sadar subdivision. In the former the bhadai and rabi crops are inferior, and some of the paddy land is not very productive. It is not so well cultivated. On the other hand, it is not given the same labour. All things considered, it is safest to take the subsistence holding in Bettia at 5 acres, and in the southern subdivision, where crops are more varied and secure, and profitable markets more accessible, at 3½ acres.

577. In a previous chapter I have shown the average size of an occupancy holding than by than to be in the district as follows:—

| | | A | eres. |
|---------------------|-------|-----|------------|
| Bagaha | ••• | | 7. |
| Shikarpur | | *** | 7. |
| Bettia | ••• | *** | 5. |
| Bettia Subdivision- | | ••• | 6. |
| Adapur | ••• | | 5. |
| Dhaka | | ••• | 4.5 |
| Motihari | ••• | | p. |
| Gobindganj | *** | | 5. |
| Kesaria Madhuban | ••• | ••• | 4· 3·5 |
| MEGDINDEN | * *** | ••• | 0.0 |
| Sadar subdivision | | *** | 4. |
| District average | | | 5 · |

As settled occupancy raisets practically cover the whole raiset (rent-paying) area, the above figures can be given general application. Thus the average-sized holding in the district is 5 acres, or one acre more than the subsiftence holding.

Mr. Skrine, while investigating the material condition of the lower Official opinion on the material orders in Bengal in 1891-92, recorded the following condition of Champaran.

"It has been found that a holding at 5 acres is enough to provide an average family of as many souls with every reasonable comfort, and that a fair living may be made in ordinary years from one of 3 acres."

In other words, his estimate of a "subsistence" holding for a family of 5 is 3 acres, so that ours of 4 for a family of 6 is, according to his standard, an over-estimate, if anything. When it is seen that the average size of a holding in the district is an acre larger, and in no thana less than the subsistence holding, the obvious inference is that the agricultural classes must live in a condition of prosperity. Indeed, Mr. Skrine was led, no doubt by considerations of this nature, to assign the highest place in the scale of prosperity in the Patna Division to Champaran. He observed:

"Champaran, to the north, is the best off of all. The soil is more fertile than that of the neighbouring tracts, there is still a reserve of land available for cultivation, and the population is at yet only 526 to a square mile."

He was mainly impressed by the density of the population, for he prefaces

his remarks with the following statement:

"The material condition of the lower classes of the Patna Division varies inversely with the pressure of the population on the soil."

This dictum is a pure fallacy. It is in fact in the thanas where population is most dense that it is also most prosperous. Witness Saran on the one side and North Champaran on the other. But Mr. Skrine was not exceptional in his opinion of the degree of prosperity that Champaran enjoyed.

Mr. Worsley, who was long in charge of the district, wrote:-

"After all I had heard about the impoverished condition of the lower classes in Champaran I was certainly most agreeably surprised to find such a very different state of things from what I had expected. I consider Chumparan to be one of the most prosperous districts

in which I have served.

"The people (Biharies) are well fed, well clothed and moderately well housed; rents appear generally to be very reasonable, and there are pasture lands in abundance for the support of cattle. During my tours I have walked through hundreds of villages and have been often struck with the substantial, clean and comfortable appearance which they presented. The contrast between this district and Muzaffarpur is very marked, and there can be little doubt that to the moderate population of the one and to the excessive population of the other is mainly due the favourable or unfavourable condition of the peasantry. There are good grounds for believing that at an early period of this century the population of what is now Muzaffarpur district was almost as sparse as that of Champaran at the

present day.

"The people of this district, therefore, have hitherto escaped the rack-renting and other
the people of this district, therefore, have hitherto escaped the rack-renting and other
than the people of this district, therefore, have hitherto escaped the rack-renting and other

jected during the last 50 or 60 years

"The extensive poppy cultivation in this district, for which the soil is in many places admirably suited; the enormous timber business carried on by Messrs. Dear & Co. of Monghyr, which gives contain temployment to many thousands of cart-men and wood-cutters; the exceptional factories for irrigation, and the proximity of the district to important grain marts in Nius all combine to place the people of Champarau in a specially advantageous position. If the raivats here are much indebted to mahajans, I cannot but that such indebtedness must have been chiefly brought about by their own improvidence."

Mr. Henry, another Collector, ondersed the above remarks in his general administration report of 1883-84. His arguments, too, were sparse population and no competition for land, but he also concedes the striking indebtedness of the peasantry.

581. Mr. Worsley, writing again on this subject in the annual report for

1886-87, observed :—

"Further experience and careful observation have entirely confirmed me in the opinion which I recorded in the annual administration report for 1883-84 regarding the prosperous

condition of the people of Champaran.

"The last three years have been marked by good or fair harvests of food-grains, opium and of sugarcane, and the extension of the railways has opened new markets for the produce of the district. The following extract from the report of Mr. Bright, who has a thorough

knowledge of all parts of his subdivision, describes with general accuracy the condition of the

raiyata throughout the district.

Prices of common rice are lower than they have been for three years past, and in spite of the increased demand for wheat and the poorness of the makai crop, their prices of are lower than they have been for the last three years. Benefited by the lowness of price, by the goodness of the general harvest, and the increased demand, the raivat's condition is as excellent one for him. Unharassed by the oppressions of the petty landlord, holding a good jote at a very reasonable and often a very low rent, he might well be the object of envy to his poorer-brethren of Tirhut. The large herds of cattle, the number of new granaries to be seen in every village, and the increased eagerness of the people to expend their money by bringing to Court most trivial complaints, which in less prosperous years they would have left unnoticed—all these outward signs testify to the satisfactory conditions of the ordinary Yet with all this even the fairly well-to-do man wears very poor clothes considering his status, and lives in a tatti or mud-walled hut, at which the less prosperous raiyate of Tirbut would often turn up their noses in disgust, not because he cannot afford better clothes and better lodging, but because the standard of comfort is a low one. Another point, and this by no means the least important in considering the material condition of the people, is the almost total absence of serious crime against property. The number of thefts is inconsiderable considering the area of the subdivision, and the amount of property stolen, ridiculously small. In fact, now that the Domes have been settled and are leaving off their old habits of stealing, property is wonderfully secure, considering the extremely small proportion which the police force hears to the population, and the large areas which are included in the thans and outpost jurisdictions."

It is an important admission that the people are so badly housed, for this is the first thing to the improvement of which a Hindu cultivator with spare cash pays attention. Again, crime statistics are altogether inconclusive, and, taking an exporting district generally, very low prices are a decided disadvantage.

Inquiries were instituted by the Government of India in 1888 into the general material condition of the lower orders. The Commissioner of Patna, in criticising the report submitted by the Collector of Champaran on

this subject, observed: -

"By this report Champaran is better off than any district in the Division; better even than Shahabad And yet some of the facts are hard to reconcile with this. 'Sixty per cent. of the population either have no holding or cultivate holdings of two acres or less,' and, again, "the average holding of cultivated land of a family in the district is only 44 acres.

"If it was so, and 60 per cent. of the people were so poorly off, how could the district be

prosperous on the whole?'

In truth, Mr. Boxwell's interrogation suggests the only safe line of investigation. It is essential, before a sound estimate of the material condition of a district can be formed, to take measure of the circumstances of the lowest orders in the district and to ascertain what proportion they bear to the whole.

583. Mr. Henry, in his estimate that 4½ acres was the average size of a proportion of patty holdings. holding, went, as I have shown, very near to the truth. He held that 60 per cent. of the population The proportion of putty holdings. had small holdings or none at all. This obviously is an over-statement. I shall now attempt to determine to what extent it requires modification. In the following statement the settlement holdings for 180 villages have been apportioned into those of 1 acre and under, of 2 acres and under, of 3 acres and under, of 4 acres and under, of 5 acres and under, of over 5 acres:--

| | | | THE PARTY | | P prompt at | | Total N | LMBBR | OF BOL | 11176110 | F. 1 | phone "14. m | i | . , | . 12 discoulter |
|-----------------|---|--|--|---|--|---|--|--|--|---|--|---|--|---|-----------------|
| | | | Unde | T One | | r two | Under acr | | Unde | | Unde | r Ara | Over BC1 | | |
| Berial number. | Нани ор Тиана. | Total. | * | Percentage to total. | Bolding. | Ferrendage to total. | Helding. | Parrentage to total. | Holding. | Percentage to | Holdber. | Permatter to | Briding | Personal in | LRWARYS |
| 1 | 8 | | 6 | | 6 | 7 | 8 | p | 10 | 11 | 18 | 12 | 14 | 15 | 19 |
| 1 2 2 4 7 2 2 2 | Bagahs Shibarpur Bettin Adapur Dhaka Mothari Gabindgani Reseria | \$,071 4,070 3,050 3,184 4,243 3,950 8,866 4,047 3,305 | 1,417 1,618 728 696 985 837 1,071 1,009 | 201'S 20-3 10-3 10-3 31-3 21-3 21-3 26-5 26-6 27-8 | 1,057 787 467 601 820 166 743 661 | \$1 1 1673 2814 1678 1978 1978 1978 | 797 584 690 843 846 546 548 548 | 14.4 14.5 16.8 14.0 14.0 14.2 13.9 14.7 | 483 960 465 778 406 407 4.66 847 814 | 9 6 9 7 11 4 10 4 9 5 10 8 10 8 | 313 292 316 203 3 4 263 366 217 | 7.0 7.8 7.8 8.9 7.6 8.9 7.6 | 944 961 964 1,165 1,217 1,642 960 980 | 19'7' 24'4 \$4'7' \$9'4'4 24'7' \$25'4'4 24'7' \$25'4'4 32'4'4 42'4'4 | |
| • | District Spares | 20,205 | 5,361 | 25-6 | 1,343 | 30-1 | 6,368 | 14.6 | 2,604 | 00 | 2,600 | 7-2 | N.100 | 364.3 | 1 |

584. Now each of these holdings does not comprise all the land held by a single family. If a family has land under different status or under different landlords then it is recorded under different holdings. For this reason these figures do not represent actual facts, and again they have been compiled for a very restricted number of villages, though they were selected with care. Nevertheless, the percentage of holdings under 2 acres, viz., 44 per cent., is very remarkably large. As a set-off for reduplicated families and for small plots of land held by artisans, this figure should be reduced by at least 25 per cent. For similar reasons the 14.8 per cent. for holdings under 3 acres would prove to be held almost entirely by families in possession of over 4 acres. The conclusions I come to are that about 33 per cent. of the holdings belong to those who supplement agriculture by labour or other callings, and 66 per cent. belong to pure agriculturists. But it is necessary to go further, for it cannot be concluded that all those who hold less than the subsistence holding must live on agricultural labour. As I have said, these are artisans holding a few patches of land, on which they are in no sense dependent for their livelihood. Brahmins, too, are often similarly circumstanced. It is proper therefore to study these statistics still more minutely, and so arrive at a classification according to caste.

585. In the following statement the principal castes, the average size of their holdings, and the proportions of their holdings of different sizes are furnished for the 180 villages examined:—

| | Name of | | | | Average ave of a | ¥ | 'ercuntac | n op ho | LDING T | O TOTAL | • | Total number | POPULA- TION IN 1891. | Percent age to total |
|-----|-----------------------------|------|---------|-----|---------------------|------------------|-------------------|------------------|-------------------|-------------------|------------------|--------------------------|-----------------------------|----------------------|
| | · NAME O | ₽ 0 | AUT N. | | holding. | Under I acre. | Under 2 acres, | Under 3 seres | Under 4 acres. | Under 5 acres. | Over 5 acres. | of holdi ngs . | Both sexes, | popula tion. |
| | 2 | | | | 3 | ٨ | 5 | •6 | 7 | 8 | 9 | 16 | 11 | 13 |
| | Coals | | | | 4.8 | 14.0 | 19 5 | 11.7 | 10:0 | 8.6 | 24 0 | 3.876 | 183,732 | 9.5 |
| ì | Darana | | | ** | 60 | 16-9 | 15 3 | 18 i | N.1 | 7.8 | 39·H | 2.042 | 86,440 | 4 |
| | Brahman . | • • | • | | 1.8 | 23.8 | 19-9 | 18 7 | H-H | 7.1 | 96.7 | 3.477 | 84.419 | |
| | EF | • | | ••• | 6.8 | 16 1 | 15 # | 15.3 | 11 H | 8.4 | 23.0 | 9, 264 | 104,477 | 1 3. |
| | Shumihar Be | Äh | 911 | ••• | 64 | 17.5 | 15 9 | 116 | 8.5 | 7:1 | 30'4 | 1.048 | 27,496 | 1 1 |
| 6 | Kayastha . | | ••• | •• | 8.0 | 15.1 | 17 1 | 169 | 8.4 | 770 | 36 3 | 1.342 | 27.024 | 1 1 |
| 7 | Kurmi | • | ••• | | 3.5 | 20.1 | 20 K | 11.5 | 10.5 | 7.7 | 2014 | 1,646 | 96.148 | 5- |
| | A. A 13. A. | | •• | • | 4 13 | 1000 | 19.4 | 161 | 9.4 | 44 | 31 3 | 1.285 | 02 480 | 8 |
| ō | CO . 41 | •• | | | 3.4 | 10.0 | 219 | 10 6 | 10.9 | 7.7 | 23 7 | 1.205 | 58,910 | 3. |
| ñ | Julaha | | | | 27 | 32 0 | 210 | 15 + | 9.4 | 8.8 | 15.8 | 1,412 | 80,358 | 4 |
| i | Kanda | | ••• | | 83 | 260 | 71.9 | 147 | 11 9 | 68 | 19.7 | 1,203 | 6N, 85A | 3 |
| | Mallah | | | | 31 | 25 6 | 24 3 | 14-9 | 8.1 | 7.5 | 18.7 | 1,150 | 63,070 | 8 |
| | Dusadh | | | | 97 | 30 2 | 210 | 15.3 | 10 6 | 7.4 | 18.8 | 1,261 | 91,458 | à. |
| | (hamar . | | | | 7.2 | 34.4 | 28.3 | 16.5 | 107 | 5.6 | 9.1 | 1,847 | 126,097 | 6 |
| š | Kalwar | | | ••• | 42 | 50.1 | 16:6 | 170 | 120 | 8-6 | 25'8 | 646 | 33,796 | 1. |
| | Manta | | | | 211 | 20.41 | 20.7 | 140 | 9.8 | 6.9 | 16.0 | 807 | 54, 943 | 3 |
| , | Lohar | | | | 8.1 | 23 9 | 75.0 | 161 | 107 | 7.6 | 188 | 514 | 28,193 | 11 |
| | Dhobi | | ••• | | 8.1 | 21 A | ¥3.3 | 14.4 | 18 0 | 8'4 | 18-1 | 5(45 | 21,355 | 1: |
| , | Turba | | | | חנ | \$4.3 | 52.5 | 143 | 117 | 711 | 12.0 | 508 | 26,775 | 1 |
|) [| Hainm | | | | 21 ♦ | SHI H | 24.7 | 1770 | 76 | 6.3 | 18'0 | 8468 | 27.230 | 1 |
| ι Ι | Kumhar | | | | 31 | 237 | 88.5 | 160 | 13.5 | 67 | 19.0 | 415 | 84,954 | 1. |
| 3 | Hind | | | | 8.8 | ¥7 7 | 260 9 | 167 | 0.1 | 6 1 | 13 4 | 644 | 27,351 | 1. |
| 1 | | | *** | | 57 | 26.2 | 19 մ | 163 | 8.5 | 4.8 | 38.3 | 270 | 11,044 | ٠, |
| | Dhanukh . | | | *** | 3.6 | 28.6 | 17.5 | 162 | 5.8 | 8.H | 51.8 | 274 | 11,460 | ' |
| 5 | Tatwa | | ••• | ••• | 20 | iid R | 21.7 | 17.9 | H.3 | 4.0 | 8.8 | 884 | 82,501 | 1 |
| 1 | Gondin | | | ** | 3.8 | 24.7 | 80 4 | 15.3 | 11.1 | 10.1 | 18-4 | 里的 | 4.753 | _*; |
| 1 | Dhunia . | | | •• | 80 | 31.1 | 20代 法 | 13.5 | 9 9 | 6.8 | 187 | 303 | 96,964 | 1 |
| • | Harai . | | •• | | 8.8 | 17.8 | 913 | 15 | 14.5 | 9.8 | 27.7 | 207 | 11.756 | 4 |
| | Thuru | | *** | | 08 | 15.8 | 13 2 | 5.3 | 10.5 | 1.6 | 93.6 | 8.9 | 27, ITEN | 1.1 |
| | Miscollaneous by castes. | | iot gr | ing | 3 8 يعنم | 31.0 | 21.4 | 18 8 | 5·8 | 87 | 19-3 | 4,007 | 63,038 309.431 | 161 |
| İ | District | n er | 1700.00 | عبه | 9.0 | 286 | 202 | 14.8 | <u> </u> | 72 | 94.9 | 86.845 | 1,889,466 | 100 |

586. The percentage of holdings over 5 acres can be taken as a rough index of prosperity, but it must always be remembored that the results obtained are liable to modification owing to a single family having more than one holding. They suffice, however, as an approximation. The Tharus head the list with 52.0 per cent. of their holdings over 5 acres, the average size being so large as 9.3 acres. The Tharus, as I have said elsewhere, are probably the most prosperous cultivators in Champaran, but they account for 1.5 per cent. only of the total population and are therefore numerically unimportant. Rajputs and Bhumihar Babhans, the backbone of the high caste peasantry, come next, with 39 per cent. each under this group, the average size of their holdings being 6 acres. Another high caste having a large percentage, viz., 36.3. and a large average holding of 5.8 acres is the Kayasth. These high castes

this diminishes very considerably their margin of profit. Keeris, the skilful and external of cultivators in Bihar, come next, with a percentile of insecolistic followed by the most agricultural of all Musalmans the cities. This is the last of the castes, with a percentage over 30. The to size of the holdings of Koeris and Sheikhs is 4.8 and 4.6 agree, postively. The average amount of land per family would of course work cut somewhat higher than this. Next come the Goales, the most numerous caste in the district, with 28 per cent. over 5 acres. Brahmins follow with 26.7 per cent. The average size of a holding in either case is 4.2 acres. Kalware and Atiths follow next with 25 per cent. each, and an average holding comprising over 4 scree. These castes generally lend money to ordinary raivate and acquire holdings by purchase. Teli, Barai and Kurmi have 20 to 23 percent, of holdings over 5 acres, all other castes return less than 20 per cent, and the proportion is below 10 in the case of Tatwa and Chamar. These are pure labouring castes, and the average size of their holdings is only 2 acres.

387. Just as the percentages taken above are a relative index to agricoltural prosperity, those for one acre and under would danote the reverse, and so demonstrate to what extent each caste contributes to the labouring population. The castes returning over 30 per cent. of their numbers holding less than 1 acre are:—Dhamin, Tatwa, Hajam, Chamar, Dusadh and Jalaha, all of whom work as day-labourers, except perhaps the barber. Between 25 and 30 per cent. come Kurmi, Mallah, Nonia, Turaha, Bind, Dhanuk and Atith, and they all work as labourers except the Atiths, who, when poor, live by begging. Between 20 and 25 per cent. are found Kandu, Lohar, Dhobi, Kumhar and Gond, but the blacksmith, washerman and potter follow agriculture as a supplementry source of income merely. Thus we find that the agricultural castes who, as I have shown elsewhere, occupy 60 per cent. of the area, have the smallest number of holdings under I acre. These castes are—Goala, Rajput, Brahmin, Koeri, Babhan, Kayastha, Kurmi and Sheikh.

588. A fair idea of the relative agricultural position of the various castes

can be further obtained by adding together the proportion of their numbers helding according to this statement 2 acres and upwards. The percentage will be found to exceed 60 per cent. in case of Goals, Rajput, Koeri, Bhumihar, Kayastha, Sheikh, Kalwar, Tharu and Bari, and to fall between 50 and 60 in the case of Brahman, Kurmi, Teli, Kandu, Mallah, Lohar, Dhobi, Kumhar, Atiths, Dhanukh and Gond. Thus the castes named above account for 56 per cent. of the total population. Now we have seen that there is not a single caste which does not return some holdings under 2 acres, and this emphasises the impossibility of classifying all those who hold below a certain acreage as cultivators without consideration of their castos.

589. I have estimated that 33 per cent. of the population is only partially dependent on agriculture. From the statistics that have been furnished and the high percentage of small holdings, it is obvious that everyone almost must have a patch or two of land. It can therefore be estimated with safety that not more than 25 per cent. of the population consists of those who supplement their agriculture with manual labour. It has been said in the chapter dealing with population that 85 per cent. of the district population is dependent in whole or part on agriculture. This 85 per cent. will thus be comprised of the

following elements:

11

Pure cultivators 1 of 28 or 21 Oultivating labourers ... 1 of 28 or 7 Cultivators who follow other professions

Total

The only other class with which we are concerned is that of the landless labourer. The last census returns them as 18 per cent. of the total population, but these as certainly include some of those who supplement their labour by agriculture, and on this account ought to be reduced by one-third, or to 9 per cent. The total population of the district then can be apportioned in the fullowing way:—

| (1) | Pure cultivator | m | ••• | ••• | *** | 57 |
|-----|-----------------|-----------------|-------------------|-------|-------|-----|
| (2) | Ditto | with | other professions | *** | *** | 7 |
| (3) | Cultivating lal | oqur ers | ••• | | ••• 1 | 21 |
| (4) | Landless d | litto | ••• | ••• | ••• | 9 |
| (5) | Miscellaneous | *** | *** | ••• | *** | 6 |
| | | | | Total | ••• | 100 |

691. In my opinion Mr. Henry's estimate of 60 per cent. of the population being either small cultivators or landless is twice too high, if by small cultivator he meant those who required for the support of their families to supplement agriculture by manual labour.

592. The optimistic views of the high degree of prosperity in Champaran to which I have referred receive a most emphatic contradiction from the fact that, given a failure of the rice crop, Champaran is the first district to succumb to distress. In view of its acute susceptibility to famine, general statements of its internal prosperity are either valueless or misleading. Where a district with land plentiful and population sparse has one-third of its people compelled to eke out a living by labour, that district can lay no claim to a general prosperity. Where that district has in addition $2\frac{1}{2}$ per cent. of its raiyati land transferred by sale and 1 per cent. mortgaged, or a total of $3\frac{1}{2}$ per cent., thus alienated in the 10 years, with 40 per cent. of the transferrees belonging to the class of professional money-lenders, its claim to this condition becomes still further diminished.

503. I have furnished the views of the local authorities who have held Champaran to be a prosperous district. In my opinion it is in view of its potentialities infinitely the most backward in the Patna Division, and I will quote some authoritative remarks in confirmation of this. In Doctor Hunter's Statistical Account of Champaran, it is said:—

The people of Champaran, as a rule, are badly off. The whole agricultural population is in debt to the mahajan or village money-lender, who has advanced money or grain on the security of the next crop. Though rents are low, and the produce of the land good, the cultivators are in constant difficulties, partly through this system of mortgaging their future crops, and partly from improvidence. Droughts and floods render matters still worse, so that Champaran, with one of the most fertile soils in Bihar, is probably the poorest district in that province."

504. But the authority entitled to greatest weight is Mr. D. J. Macpherson, C.I.E., who, by being in charge of the district during the famine of 1897, had unrivalled opportunities of gauging the prosperity of the district by the power of resistance it was able to show on the advent of a great and wide-spread natural calamity—

**Reconomic condition of the people.—In addition to its oil-seeds, indigo and opium, the district is able of ordinary years to export about 4,50,000 maunds of food-grain, valued at about ten lakes of rupees, notwithstanding a great increase in population within the last quarter of a century. The economic condition of the people, however, in spite of the very moderate rents they have usually to pay, is far below the standard of adjoining districts. The small attention devoted to irrigation, a most powerful stimulus to careful cultivation, has already been noticed. Freed as he usually is by a sufficiency of natural moisture from the necessity of irrigating, the Champaran peasant is the most inert and inefficient cultivator in the province. In the submentanc tract in the north of Bettia his inefficiency is mainly due to another cause—the prevalence of malaria, which saps his energy. The sparseness of the population there, moreover, leads him to attempt to cultivate more land than he can attend to properly. The physique of the Champaran peasant generally is notoriously below that of other districts in Bihar, and an unsightly form of goitre is very prevalent. The number of cretins is remarkable. In the low rents which prevail (the average money-rent is under Rs. 2 per acre) another potent stimulus to efficient cultivation is wanting. But whatever the causes, the people are undoubtedly very thriftless, and their extravagance has led them greatly into debt and imperilled the possession of their lands. In the portion of the

district where the Settlement Department has completed its enquiries, 8.79 per cent. of the tenants' holdings have been sold or mortgaged within the last ten years, 40 per cent of the transferees being money-lenders, while in Muzaffarpur during the same period only 2-91 per cent. were so affected, and only 9 per cent. of the transferees were money-lenders. The percentage of holdings sold out and out was nearly six times as great in Champaren as

in Muzaffarpur.

"Ohiof occupation.—This condition of things is not alleviated by the existence of any arts or industries affording a diversity of occupation and bringing wealth into the district. •The only non-agricultural manufacture for export is saltpetre, and it affords support only to about 6,400 persons, who have to supplement their earnings by working as labourers. There are only three towns with a population of over 5,000, and between them they represent only 2.3 per cent. of the population of the district. The actual cultivators of the soil possessing land were returned at the census of 1891 as 1,302,228, or 70 per cent. of the soil possessing isnu were returned at the census of 1001 as 1,002,220, or 70 per cent. of the population. General labourers were shown as numbering 251,467, representing a percentage of 13.5. There were only 3,821 weavers, or 0.2 per cent. of the population, and the oil-pressers formed only 0.9 per cent. These figures all include the families of the respective classes. The prosperity of the whole population may therefore be said to be entirely dependent on the condition of the crops, and consequently in the long run on so uncertain an element as the weather."

Mr. D. J. Macpherson's remarks are, in my opinion, a correct summary of actual facts. Mr. Worsley described what the condition of the district ought to be: Mr. Macpherson what it is.

A few words may be added as to the methods of the money-lender. It is generally in Jeth, i.e., May June, that the The money-lender. cultivator has to borrew grain from the moneylender, and the contract usually is for repayment in Kuár (September- . October), just after the bhadai crop is harvested, with an interest amounting to 25 per cent. of the capital. Failing that, the interest is added to the capital, and 50 per cent. of the whole is charged as interest in the Bysakh (April-May) following, and so forth. The raiyat can never get free, and must be sold up in the end, to begin life afresh in some other village. Allowing that the raiyats, with their vitality often sapped by malarial fever, will not struggle to resist the consequences of a temporary calamity,-allowing that the quality of land available tempts them to habits of improvidence, -it is still a puzzle, as I have already said, why the money-lender in a district where free transferability of tenant right does not exist has been allowed to get such a hold on the land. The district for the most part is parcelled out amongst big zamindars, each of whom would be ready to assert that he considers the absence of right to transfer holdings without his consent as one of his most valuable privileges, because it enables him to keep out the money-lender. In Muzaffarpur, where transfers are freely made without the landlord's consent, the money-lenders are few; in Champaran, where the landlord's consent is required in practice as well as in theory, the money-lenders flourish. Perhaps the thikadari system is, to a certain extent, responsible. Where the thikadar grows indigo he is or ought to be as much interested in keeping out the moneylender as any landlord with more permanent rights; but not so the thikadar who

It remains to say a few words regarding the earnings of labourers **596.** in Champaran. Accepting as a rough estimate that The profits of labour. one-third of the population is wholly or partly dependent on agricultural labour, we find 613,623 persons, or 102,270 families, so circumstanced. I have shown above that the average sage of an adult male labourer is $2\frac{1}{2}$ annas a day, a female labourer little more than 1 anna For children the rate varies from 2 or 3 dhabuas to a little over half an anna up to one anna, given in exceptional cases. The carning of a family therefore, taking these rates and assuming two adult males and two adult females to be its working members, comes to Rs. 118-2 for nine working months in the year, which considerably exceeds their cost of living—Rs. 75 per family. But these are the maximum earnings obtainable by a hard-working family. In reality the two women would not work for this period, and it is unlikely that even the men would get full employment for the whole of nine months. In point of fact the margin is very slender, though I have no doubt that in normal years a labouring family can get enough to live on in fair comfort. If the family also cultivates, its condition is probably still better, though the earnings from hired labour of course undergo diminution.

makes his profits from the rents he can collect.

CHAPTER V.

RECOVERY OF SURVEY AND SETTLEMENT COSTS.

597. The discussions which preceded apportionment and recovery of survey and settlement costs have been reviewed in the Muzaffarpur final report. I shall therefore being for Champaran with the actual initiation of this branch of the operations.

682. In January 1898 orders were received to commence computation and recovery of costs without delay. Mr. Colvin drew out computation forms which, owing to the absence of any complication in proprietary interests, were very much simpler than those required for Muzaffarpur. In fact, whereas in Muzaffarpur it was necessary to work through four forms in order to arrive at the demand apportionable on each proprietary interest, in Champaran it was found possible to obtain those results in a single form. Actual recovery was started at the end of February 1896 in the Bettia thana. Babu Hemanta Kumar Maitro was placed in charge of the camp, and out of a total demand of Rs 1,00,195, Rs. 37,495 had been collected, when, owing to the want of finally published records, the work for the season was closed. During the first season costs were recovered only from raiyats and small tenure-holders. Raj and the more important tenure-holders had advanced sums in 1892-93 for the payment of amins and coolies, for which they were entitled to a set-off. The Survey Department had kept no proper account of this money and were mable to furnish papers. The work was therefore handed over to the Settlement Department for adjustment, and Mr. Kerr during recess managed to evolve order out of chaos. At this time also some alterations were introduced into the procedure followed in Champaran. For instance Mr. Colvin had thought that the copy of the record made over to the payer would suffice as his receipt, but, in the absence of counterfoils, it was found impossible to check the accounts. Moreover, since in the case of landlords who were co-sharers, there were separate demands but only one copy of the record, the copy of the record could serve as a receipt to one of them only, namely, the man fortunate enough to get it. The Champaran procedure, in short, was largely remodelled on that introduced into Muzaffarpur. When arrangements had been completed for the recovery of costs from a large area in the ensuing cold weather, 1896-97, the famine came and everything had to be abandoned. It was only from the preprietors and big tenure-holders of thanas Motihari and Gobindganj, and from similar classes whose arrears had been brought under certificate during the previous

598. In the cold weather of 1897-98 two recovery camps were sent out, so that the ground lost in the preceding year might, if possible, be made up. That in charge of Babu Hemanta Kumar Maitro worked in thanas Madhuban, Dhaka, Adapur, and portions of Shikarpur and Bettia, while the other, in charge of Babu Jadab Chandra Mozumdar, took up thanas Motihari, Kesaria and Gobindganj, and also a small portion in the south of Bettia thana. The programmes were carried through without friction. The raiyats paid their demands willingly and often eagerly. The sum collected amounted to Rs. 2,60,782-9-11, leaving a balance of Rs. 2,44,276-8-9, which, however, was mainly due from the Bettia Raj and indigo factories. During recess the Certificate Department was reorganised at head-quarters and the accounts for the

recess, that costs could be recovered. Payments were received at head-quarters.

period hither o dealt with thoroughly overhauled.

599. On the 1st November 1898 Babu Hemanta Kumar Maitro again took the field with his recovery camp. The area to be dealt with was in the extreme north of the district, where agricultural development is very backward and indeed sometimes almost nomadic. The wild Tharus, inhabitants of tappas Ramgir and Chengwan, at first refused to pay; but when Mr. Lewis, the Manager of the Bettia Raj, came to the Assistant Settlement Officer's assistance and directed his stuff stationed at Bagaha to co-operate, the whole demand was completely realised. This was an eminently satisfactory result, as it was anticipated that we should never succeed in collecting the demand of Tharuhat. There were other minor difficulties. Several holdings in Ramnagar had been abandoned and the demands had to be realized from the proprietors. In thans Bettia some holdings had been washed away by diluvion, but Mr. Lowis, the

landlord, paid the demand. The total sum realized in camp this season was Rs. 1.57.563 the balance remaining amounted to Rs. 2.35.401.

Rs. 1,57,563 the balance remaining amounted to Rs. 2,35,401.

600. At the commencement the recovery officer's establishment commencement.

| | | | | | Ra. |
|-------------|-----|-----|-----|-----|----------|
| 1 Accounts | nt | ••• | *** | ••• | 50 |
| 1 Head tah | | ••• | | | 20 |
| 9 Tahuildar | 8 | ••• | ••• | | lò each. |
| 6 Peous | ••• | ••• | ••• | ••• | δ " |
| 4 Guarda | ••• | ••• | ••• | *** | 6 ,, |

The number of collection muharrirs or tabsildars was increased later on and a separate maliki tabsildar was put in. The salaries of the tabsildars and head tabsildars were raised to Rs. 20 and Rs. 25 respectively, and that of the accountant reduced to Rs. 40.

The procedure was similar to that I have described for Muzaffarpur, but the existence of big properties led to two important modifications, one related to computation to which I have already referred. In the absence of a large number of sharers and estates or pattis with a joint interest in shamlat parcels, the computation of the demand for landlords was much simplified. related to actual recovery. The recovery officer was relieved from all responsibility of collecting the dues from important landlords in camp. An amalgamated account was prepared for each at head-quarters and the demand was . paid in there direct. Thus the harassment caused by realizing large sums of The whole of this branch of the operamoney in small driblets was avoided. tions was carried through with great success, and the raiyats were not subjected to any form of esercion. The characteristic feature of the Champaran operations was the payment of dues in lohia or dumpy pice. In the northern part of the district such a thing as a Government copper coin was hardly over met with. It being impossible for this Department to saddle itself with large quantities of uncurrent coin, a baniya was attached to each camp, who in return for a small commission gave Government pice in exchange for dumpy once. The market value of dumpy pice varies, but it can be said that on an average 112 of these coins go to a rupee.

602. The entire cost of the operations was assessed at 8 annas per acre, and under the orders of the Secretary of State this sum was apportioned thus:—

| | | | I I | | | |
|------------|-----|-----|-----|-----|----|--------|
| Government | | *** | *** | • | 2 | annas. |
| | ••• | ••• | *** | ••• | 34 | " |
| Raiyat | | | *** | | 24 | ** |

The actual amount to be collected therefore was annas 6 per acre. The total area brought under recovery being 2,075,166 acres, the total amount realizable was in the calculation Rs. 7,78,187-4, viz. Rs. 4,53,942-9 from landlords and Rs. 3,24,244-11 from occupiers. But by actual computation the total amount came to Rs. 5,59,017-12-6 from landlords, Rs. 2,22,229-9-3 from occupiers, Rs. 4,134-7-11 on account of Kaisar-i-Hind land, or-a total of Rs. 7,85,381-13-8, which is Rs. 7,194-9-8 in excess of the amount, arrived at according to the general caclulation already made. The main reason for the excess is that holdings were subjected to a minimum charge of annas 2-6. Subject to this provision too the rules enjoined that half an acre or less was to be isregarded, and any fraction over half an acre was to be treated as a whole acre.

603. I now subjoin a statement showing the total demand, the sums actually realized, and the arrears left at the close of the operations:—*

| - 10 m | THE PERSON NAMED AND PARTY. | ing carried | The state of the s | ###################################### | 3 pm | - | ~ mo | the second second second |
|------------|-------------------------------|------------------------------|--|--|---|---------------------------|--|--|
| | | D. | ment. | Coll | entions. | A | ryens. | REMARKS. |
| Bertal No. | Class of supercess. | Items of demand. | Demail. | I tems. | Deman4. | Ivens. | Longand | Exercise collec- tion on pre- count of lobias piece |
| | Leadieri Compiere Total | 16,467 277,513 602,766 | Ra. A. P. 6,50,617 18 6 8,56,580 0 8 7,61,367 8 9 | \$1,466 \$75,410 465,650 | Ha, A. 7. 3 34.740 15 6° 1.51,309 10 8 5,46,330 10 8 | 3, NOT 2,4//2 5,5ep | \$4 A F 2,34 405 12 2 984 4 18 2,85,401 8 0 | 14 A A Man Man Mar 1617 |

It will appear from the above statement that the operations were brought to a close with a collection of 58.09 per cent. of the demand from landlords and 99.67 per cent. from occupiers, i.e., 69.19 per cent. of the total demand. Out of the total arrears (Rs. 2,35,401-3) the Bettia Raj owes Rs. 1,82,840-14.8, a sum of Rs. 7,393-8 is due from some factories, and Rs. 9,911-6.6 from the Ramnagar Raj. The arrears from occupiers smount to Rs. 934-6 only. The demands of 5 annas and under, due from actual raiyats, all of which amount to a total of Rs. 179-8-1, have been recommended for remission. The arrears remaining are mainly due in respect of abandoned holdings. The collections therefore from occupiers is practically cent. per cent.—an extraordinarily good result. The vast bulk of the landlords arrears is due from the Bettia Raj. Owing to the heavy drain caused by recent litigation, it has been unable to pay up even the instalments promised, and two or three years no doubt will elapse before the demand is entirely satisfied.

years no doubt will elapse before the demand is entirely satisfied.

604. It should be noted that these figures do not include 6 villages in Gopalganj, 3 in Bettia, and 5 in Gobindganj thanas, surveyed in Champaran but transferred to Saran. They cover an area of 19,778 acres, and the demand, Rs. 7,508-11-6, was mainly realized in Champaran. The cost of 5 villages belonging to Hardia Factory, viz., Hardia, Raxaul, Ganmhoria, Bellahi and Harnahi, the survey and settlement of which were taken up prior to the

general operations, was defrayed entirely by the proprietors.

605. The table given below will show the extent to which the certificate procedure was utilised for the recovery of costs:—

| | 41 | | | 111 | MAND BROUGHT | L ANDER C | BETIPICATE. | | |
|---|--------------------|-----------------------|----------------------------|----------------|--|-----------|------------------------------------|--------------|---|
| | CIANN. | Total : | number filed. | by the | disposed of Nettlement pariment, | then. | ificant de- de to be nitied. | to th | n handed over e Collecter disposal. |
| | From | Oures. | Demand | Caste, | Demaud. | Cases. | Drmand. | Cases. | Demand. |
| | 8 | 3 | • | 3 | 6 | 7 | | 9 | 10 |
| 1 | | | Rs. A P. | | R4 A. P | | Ra. A. T. | • | Ru. A. |
| | Landlord Tennot | 8,796 3,679 | 2,88,461 10 7 1,931 0 9 | 3,468 3,191 | 50,604 14 8 1946 18 11 | . FARS | 179'''8 1 | 1,325 404 | 3,34,406 12 764 16 |
| 1 | Total | 7, 430 | 28,37,388 11 4 | 4,656 | 51,981 12 4 | 983 | 179 8 1 | 1,880 | 2,84,361 31 |

The table shows that 51 per cent. of the demand from landlords and .8 per cent, of the demand from raiyats was brought under certificate. The figures for landlords are misleading. I have referred to the fact that the sum outstanding from the Bettia Raj is Rs. 1,82,840-14-8, from factories Rs. 7,393, and from the Ramnagar Raj Rs. 9,911-6-6, giving a total of Rs. 2,00,145-5-2. It was necessary to enter certificates for the Bettia Raj balances to save limitation in case the civil suit then pending led to the estate passing out of the hands of the Court of Wards. The balance from Ramnagar and the factories could also be realized without coercive measures, but as they had not been paid when our office was closed, it was necessary to place them under certificate. If we omit these items the amount of landlord's demand brought under certificate was 15 per cent. of the total street. The percentage of the total demand actually recovered by the Sottlement Office Cortificate Department was 6.65 per cent., from landlords 9 per cent., and from raivats only 44 per cent. Rs. 179 of the outstanding raivati demand being composed of amounts so insignificant as to be not worth recovering, has been recommended for remission. Thus only Rs. 754-14-9, or 3 per cent., of the demand in 505 items will remain to be realized from raiyats by the Collectorate Certificate Department. The amount to be recovered from landlords is Rs. 2,34,466-12-6 in 1,325 items. Thus only 1,830 certificates in all have been made over to the Collector for enforcement.

Office the disposal of the records of the Recovery Department was exactly the same as that followed in Muzaffarpur, and which I have described in the final report of that district. It mainly follows the directions given in section 39 of the Bihar Recovery Rules, 1897-98.

607. The cost of collection in Champaran comes to Rs. 11,501-3-9, or 2-1
per cent. for computation, and Rs. 18,311-7-7, or
3-3 per cent. for actual recovery, i.s., Rs. 29,812-11-4
in all, or 5-4 per cent. of the total sum realised.

| • | | • | | | To | PAL | Cos | T O | , 1 | Reco | A \$1 | T. | | | | | | | | | Percents |
|-----------------|-----|--------|------|------------|----|-------------|-----|-----|------------|------|--------------|----|--------|------|----------|----------|-------|-------|-----|----|--|
| Year. | | Compu | tati | O ' | 1 | lece Car | | 7 | | He | ed- | | | To | tal. | - | , - | L man | | | of total sost to amount recovered |
| 1 | | |) | | | | 3 | | İ | | • | | ****** | 4 | | Gar Buys | | 6 | | • | 7 |
| | | Re. | ٨. | P. | | Ra. | ٨, | ₽. | | Rs. | ٨. | P. | | Ra. | A | 'n | | Re. | 4. | 7. | |
| R 96 -96 | | 3,948 | | 11 | | 523 | 6 | 3 | | 143 | 9 | 1 | 7. | 618 | 7 | 8 | | 495 | 9 | 4 | 30.8 |
| 1896-97 | ••• | 1,902 | | 11 | | ••• | | | | 733 | 5 | 4 | | 684 | | | | U? L | - | | 3.8 |
| 897-98 | ••• | B,976 | 7 | - | | 403 | | 10 | | ,685 | 6 | O | | ,464 | | | 8,69, | | . 9 | 3 | 4.9 |
| 1498-99 | *** | 1,678 | 13 | 11 | 2 | 787 | Ð | 9 | 3 | .187 | Ü | 4 | 6. | ,648 | 7 | U | 1,66. | 347 | 13 | • | 8.9 |
| Total | | 11,501 | 8 | 8 | 12 | 6(13 | 8 | 10 | 5 | ,648 | 3 | 9 | 29 | 811 | 11 | 4 | 5,40, | 180 | 10 | 2 | 6.4 |

It will be noticed that the percentage of cost was unusually high in the first year of the recovery work, viz. 20.3, but I explained it in the following paragraph, which I quote from the annual report of 1896-97:—" The percentage of cost to collection was exceptionally high in 1895-96, because in that year no recovery could be made from the landlords, the account of the advance that was made to the Survey Department not having been adjusted." In the three subsequent years, when the work was in full swing, specially in 1897-98 and 1898-99, the percentage ranged between 3 and 5 only. Even as it is, the total cost is more than covered by the surplus demand of Rs. 7,194-9-8, the difference between general calculation and the demand as obtained by detailed computation. The surplus collection too that resulted from the conversion of lohia into Government pice led to an excess collection of Rs. 284-7-5, which can also be set against the cost of collection. Thus survey and settlement costs were recovered in reality without any excess expenditure.

advances made to amins and inspectors during the advances made to amins and inspectors during the first year of the operations. These advances were given mainly by the Bettia Raj and European planters. There were, however, some made by native thikadars also. No proper accounts had been kept, and at first these survey subordinates were allowed uncontrolled to obtain money on giving a mere receipt without any sort of authorisation from the head of their Department. It was obviously impossible to find out whether the money had been correctly spent. The demand for set-off had to be admitted if it was shown that the subordinates of the Survey Department had actually received it. The sums allowed as set-off on this account were as follows:—

| | | | | Ka. | A. | P. |
|---------------------|-----|-------|-------|----------------|----|----|
| To the Bettie Raj | ••• | ••• | | 15,361 | 13 | 0 |
| To factories | ••• | ••• | • • • | 7,320 1,271 | 10 | B |
| To native thikadars | *** | ••• | • • • | 1,271 | 12 | |
| | | Total | • • • | 23,951 | 0 | 7 |
| | | | | - | - | - |

Notices were daly issued inviting claims to set-off on demands still untecovered, but without effect. The accounts have now been closed. The above figures therefore can be accepted as final. The total amount allowed as set-off was 0.8 per cent of the total demand for the district.

609. It will be seen from the figures given in Appendix IX that the total cost of the survey was Rs. 4,68,345. The total area in which the traverse was completed was 2,110,720 acres, but further operations were not carried on in more than 2,110,720 acres.

The total cost of the survey per acre on this last area was therefore annua 3-6. It is to be regretted that separate figures for traverse, cadastral and record-writing are not available for the years 1892-93 and 1893-94. The total cost of settlement was Rs. 4,74,954-6-9. Thus the total cost of survey and settlement

was Rs. 9,43,299-6-9, giving an average of annas 7-2 per acre.

610. The total amount received in Court-fee stamps was Rs. 83,757-9, and on miscellaneous heads, such as remeasurement fees, copying fees, sale of tents, office furniture, &c., Rs. 12,496-11-3. The sum recovered as survey and settlement cost was Rs. 5,46,130-10-2, and an amount of Rs. 2,35,221-10-11 remains to be realized by the Collector under the Public Demands Recovery Act and Rs. 4,134-7-11 was charged for Kaiser-i-Hind lands at 6 aimas per acre. The total receipts under survey and settlement costs may therefore be put down at Rs. 7,85,486-13. To this should be added Rs. 3,169-10, which was received as process-fees in the course of the recovery operations and remitted into the treasury in cash. The sum of Rs. 179-8-1 was remitted as irrecoverable, and has therefore been left out of all calculation. The total receipts under all heads amounted therefore to Rs. 8,84,910-11-3. To this being added Rs. 2,62,000, being the Government share of 2 annas per acre, the receipts would amount to Rs. 11,46,910-11-3. This leaves a surplus of Rs. 2,03,611-4-6.

611. The deficit in Muzaffarpur was Rs. 26,051. Muzaffarpur being the Settlement Officer's head-quarters, and there being much incidental expenditure that it is impossible to apportion, some of this deficit is fairly debitable to Champaran. On the two districts taken together the expenditure has been

well covered by the receipts.

CHAPTER VI.

MISCELLANROUS.

Dress and duellings of the people.

Male dress dress. The servant class and the labourers wear nothing more than a langeta, a narrow strip of cloth fastened to a cord (dhara) tied round the waist, but the cultivator wears a dhoti, costing about 10 annas. The man who habitually adds a pagri to his wearing apparel belongs to a higher grade. The average tenant wears a head-dress on special eccasions only. As we get higher up the scale we find a mirri or native coat (value about 10 annas) added to the dhoti and pagri. The cost of the agriculturist's ordinary wearing apparel does not exceed Re. 1-14.

613. A woman of the average tenant class wears a sari (value 13 annas),

the upper end being thrown round the neck and shoulders, and then fastened to the waist piece.

In the lowest classes the sari is reduced to a putti. In the more flourishing tracts in the south of the Sadar subdivision a jhala (bodice) is worn, the cost being about 6 annas. The dhoti is known as mardam, the sari as zenani.

Owelling besses.

Dwelling besses.

Dwelling besses.

Dwelling besses.

The low material condition of the people. These huts are thatched with ikkar or jhalasi grown on the ails between the fields. In the Tribeni tracts and the northern skirts of Bagaha hardly a mud hut is to be seen. Towards the south they become more numerous. Zamindars and mahajans alone can afford tiled or pucka houses.

Agricultural coremonics.

Agricultural coremonics.

Agricultural coremonics.

Agricultural coremonics.

Curmeric), and one to four annas in pice), the pandit unfolds his pairs and proceeds to study the stars. After fixing the time he selects a male member of the family whose horoscope is favourable and at the appointed hour the man chosen proceeds to the field with a kedali on his shoulder and a lots of water in the right hand. Digging for 5 steps (deg) each way in the middle of the field, he scatters seed, and pours out the hallowed water

from his lata there. This preliminary coremony is technically called "muth lagana." Then follows the general sowing of all the fields. To scare away crows or jackals a scare-crow made of straw is set up in the midst of the field. The crops when ready are cut on a day again named by the pandit, for which he gots another purota. They are harvested and brought to the threshing floor, where a mange or dhip post (called mch) is set up in the centre after a few nuts (kasaii) and some pice have been placed in the hole made for the purpose. To this post the bullocks that tread out the grain are fastened. During the subsequent process of husking, any grain that falls outside the basket is jealously guarded and reserved for the consumption solely of members of the family. This is called agwar. After the agwar has been gathered up the grain has to be weighed by the weighman (hatwa) who gets one paseri of about 5 seers for every two bighas. A poor cultivator performs this duty himself. Before the actual weighment begins, a religious ceremony takes place. A fire is ignited on the spot some ghi, linseed, dhip-wood and rice are nixed, and poured over it. A mantra is meanwhile recited by the priest who again comes in for a gratuity, generally of a paseri of rice and 4 amms with some haldi. The heap is then smoothed with the 'sup' (the process being called chakdena), and a ball of cowdung is placed in the centre of the heap as an emblem of good luck. Three sups of grain are next taken out, one set apart for Brahmans (this is called agaon), another distributed to beggars, and the third reserved for the gerait. A sup usually contains a paseri of grain. Finally, the grain is brought home and stored without any further ceremony.

Domestic ceremonies.

Marriage cerements.

Marriage cerements.

Marriage cerements.

Marriage cerements.

Marriage cerements.

Marriage cerements.

parta or horoscope) of the boy is brought by a pandit is paid handsomely according to the means of the parties, receiving also various articles of clothing. The boy's kundali is compared with that of the girl, and if there is no astrological obstacle, the match is accepted. A rupee and dhoti is then sent to the boy as a token of confirmation. If a Brahman or Khattri by caste, a sacred thread is also added. This present is locally called by that familiar word parcha. Then follows the settlement between the two parties of the telak or dowry. The amount of telak knows no bounds. From one rupce and a dhoti it may rise to thousands, according to the means of the bride's guardian. But for an ordinary miyat it would seldom exceed Rs. 25. The telak is sent to the bridegroom on some auspicious day through the pandit and the barber, who each get as a roward some money and a full dress (panch tilk kapra), the value of which depends upon the means of the bridegroom's guardian. It may be anything from a plain dhoti and pagrito a silk dress and shawl.

The next ceremony is that of introduction called lagan. The bridegroom is dressed in a pale yellow dhoti (dyed with turmeric), and goes to the bride at her own house. They are set together. A handful of rice with some silver ornament is put into their hands and married women touch them from the feet upward throwing some rice over their heads. After the lagan no widows are allowed to approach nor may either of the contracting parties leave in sillage. Then follows the matkar ceremony. Earth is brought from a field and put in the court-yard; over it is placed a pitcher of water called khalsa. The pitcher is covered with mango leaves, one pice and some sweetments are put inside, and rice or barley is deposited on the lid. Above this is set the marriage lamp containing four wicks and hence called the chammakh. The mother is succeeded by the mando ceremony. A mandow or shamiana is erected and hung with mango leaves, and a haris—the beam of the plough—is set up hard by. Beneath the shamiana is placed an earth a elephant. Three to seven holes are dug near the plough beam and an image of Ganesh is made there of cowding and worshipped. The bride or the bridegroom sits near it and is painted with haldi by the near relatives, each of whom puts some silver into the vessel containing the haldi, as a gratuity for the male or female barber employed. This ceremony is called haldi charhana, and continues till the marriage day. But the preliminary ceremonies do not end even here. On an auspicious day

fixed by the Brahman Manki puja is observed. This is the worship of all the family gods conducted by the pandit in conjunction with the bride's guardian. The lowest cost to the bride's guardian of this ceremony is Re. 1-4, and may

rise to Rs. 1,125. The raivat expends about Rs. 50.

617. At length the day for the barat or marriage procession arrives. The bridegroom is carried with much display to the bride's house and on arrival is much honoured by the bride's guardian. A garland is thrown round his neck and a tika (mark) of duhi (curd) and achhat (rice) put on his forehead, while some achhar or mantra is recited over him. At the same time he is given a present, the value of which varies from Re. 1-4 to Rs. 125, according to the means of the This ceremony is called Duar puja. On its completion the bride's guardian. Barat retires for a rest (janbasa) and refreshments. Sherbet is served to the Baratis at a cost of from Re. 1 to Rs. 10 according to the number of guests. This is called Dhurchak. Then there is a shastrarth (a competition in reciting Shastras) between Brahman guests and Bahas between the Kayasth guests of either party. When finished the bride's guests retire from the presence of the Baratis. The next function is the presentation of presents to the bride (kaniun mrechan) consisting usually of gold and silver ornaments dresses and sweet-The bridegroom's elder brother accompanied by other relations takes the presents to the shawiana and places them in the outstretched hands of the bride who is brought there for the purpose by the barber's wife. This done The bridegroom is then brought into the shamiana wearing a the men retire. dhow The bride's brother if any must also be there dressed in a sarajora, i.e., a dress given to him by the bridegroom. The bridegroom is seated by the side of the wife's guardian. The pandit now recites the mantra consecrating the marriage, and the guardian bestows the hand of the bride on the bride-This final ceremony is called kaniadan.

The bridegroom's party is then given a big feast which often costs more than the means of the bride's guardian allow. A few years later when the bride is of mature age, she for the first time goes to the house of her husband. The technical term for this is gona, but no particular coremony is observed. Force of custom, however, compels her guardian to give her a dowry of ornaments, furniture, cattle and dress the cost of which he often can very ill

afford.

FUNERAL RITES AND CEREMONIES.

When a Hindu is at the point of death his family if rich give a calf (called baitarns) and if poor some pice to the Hindu ceremonies. Brahman, and certain passages are read out from the Vedas. The dead body is covered with new cloth (about 9 yards costing about Re. 1-4), and borne to the burning ground on a bed or a bamboo ranthi. The heir puts the fire into the mouth. When the corpse is reduced to ashes the mourners retire to the deceased's house, and are fed with plain rice, urid pulse, and cow's milk. A pitcher filled with water and having a small hole in the bottom, is hung from a pipal tree, the idea being that the departed soul of the deceased can drink if so disposed. For ten days thereafter food (pinda) is placed near a river bank as an offering to the deceased. All the relatives assemble on the tenth day called daswan), and are shaven. Pinda is again offered on the eleventh and Mahapatra Brahmans are fed in accordance with the means of the family. The number fed is never less than five. A calf is then branded and let loose. The Brahman gets a gift of all the personal effects of the deceased, new clothing, bedding, and some brass utensils. The Mahapatras avail themselves of this opportunity to squeeze out of the family as much as they can by refusing to eat unless they are amply paid. On the twelfth day the Purchit Brahmans (priestly caste) are fed, and they get as charity 1 pice to 2 annus each. Finally on the following day the relatives of the deceased are entertained to dinner.

Muhammadan ceremonies.

Muhammadan ceremonies.

Muhammadan ceremonies.

Muhammadan ceremonies.

Iittle camphor has been dissolved and is then clothed in the kaffan (which costs about Rs. 3 to Rs. 4);

after this it is borne to the burial ground, where the funeral prayer (nimas) is said and the body interred. Some silver or copper is distributed to beggars. The

services of a Hafts are secured to recite the koran every day on the spot where the deceased breathed his last. This continues for 40 days. On the third or fourth day after the death, called soum or chaharum, the relatives and friends of the family assemble and read the koran. This ceremony, which is called "hall," is again observed on the twentieth and fortieth days. On each occasion food and pice are distributed to the beggars. Well-to-do men give a dinner on each of these three days, but those of humbler condition are content with one on the last, i.e., the fortieth day, when the closing coremony called chehlum takes place. The Hafis gets all the personal effects of the deceased, some copper utensils, and some money. Beggars also got clothing on this day if the family can afford it.

620. As in Western lands, so in the East the first day of the year is a festival. Among the Hindus, on the previous night, bonfires are to be seen in every village. The people look upon this as the funeral ceremony Ceremonies on the first day of the Hindu year. of the old year, but the true explanation is that the bonfires commemorate the burning of a Rukshari (a female demon) named Holika. The story goes that this wicked demon Holika wanted to burn her brother Prahlad, because he had gained the favour of Vishnu through his good actions. Brother and sister went into the fire, and Vishnu saved his favourite, while Holika was burned. Many of the popular songs consist in objurgatory declamation of Holika's evil behaviour.

PRICE OF CATTLE.

The price of cows ranges from Rs. 10 to Rs. 50. Above Rs. 10 the price rises at the rate of Rs. 5 per seer of milk the cow yields.

Buffaloes cost Rs. 20 to Rs. 100 per head, and their price is regulated at

Rs. 10 per seer of milk given.

Plough bullocks can be had for Rs. 20 to Rs. 50 a pair, and the value of

cart bullocks ranges from Rs. 50 to Rs. 150 per pair.

Cows are very seldom slaughtered in this district, so the price of a cow yielding no milk or a bullock unfit for plough or cart is very low. They are often sold at Rs. 3 to Rs. 5 per head.

Cow milk is sold at 1 anna per standard seer; buffalo milk is cheaper.

Cow milk is not much used in its natural state. It is made into curds (dahi), which with churas (flattened rice), forms the chief food of the middle class cultivators. Curds sell ordinarily from 2 pice to 8 pice (lohia) per seer, there being about 7 lohia pice in one anna.

The dung of cattle is utilized for making chipris or goaras, which are used as fuel. It is sold at five to six pattis for the rupeo (a patti is a heap of 7 x 7 Dung is also used for manuring goer lands, and fetches about 3

maunds per rupee in its natural state.

III.-VILLAGE CUSTOMS

622. (1) Under-raiyats acquire no occupancy rights.
(2) Raiyats paying produce-rents (although settled raiyats having occupancy rights under the law) are not treated as such according to village custom. They are ejected at any time. It has proved very difficult to persuade cultivators that their status does not depend on the form in which to pay their rents.

(3) All tenants have to pay salami in case of new settlement or re-settlement, the rate of which varies according to the quality of the land settled.

(4) In villages not the property of the Raj, it is the custom for the tenants to contribute something either in grain or cash as nazarana on the occasion of a marriage in the proprietor's family.

(5) It is the custom for tenants to give salami to the landlord on the They are served in return with pan and ladus and Punia or Dasahra day.

are fed with dahs and chura.

(6) In the case of any well being dug, or a tank excavated, it is the custom to consecrate it by a sham marriage between two wooden human figures. In case of a new embankment all the tenants have to contribute towards the expenses of this so-called marriage. The Brahmins are invariably fed on such occasions.

(7) It is the custom for the patwari in Kartik to send presents of sweetmeats to his landlord and to well-to-do cultivators who in return contribute

· to his dawat puja.

(8) It is a village custom for the kumhars (potters) to supply earthen pots without cost during marriage. They get some grain in return. Similarly the shoomaker supplies a pair of shoes every year and in case of marriage or death in the zamindar's family.

(9) It is the custom for dhobis (washermen) to get the crop of 3 to 4 dhurs of land per male in each family, for which they wash clothes. The barber (hajam) gets the same for each man requiring the razor. The Lohar (blacksmith) gets 10 to 12 dhurs for each plough possessed by a tenant. This is called the " Pal" custom.

(10) The oil-seller (teli) has to contribute a quantity of oil every day for

use in the malik's cutcherry. This is called the cheragi.

- (11) The ploughman often gets no wages in cash from either the landlord or the tenant, but in return uses for his own purposes the plough, and bullocks every third day; the landlord is generally entitled under village custom to use in rotation the plough of each tenant for one day in each of the three seasons—Bhadai, Aghani and Rabi. This is called "Hari."
- (12) The pasi gets as payment the toddy from the palm or date trees on alternate days; he gots no wages in cash from the tenant.

The appendices attached to this report are as follows:—

I.—District map showing the boundaries of thanas and parganas.

II.—List of officers employed on settlement duty in the district of Champaran.

III.—Abstract of the Khasra (Milan Khasra).

IV.—Crop statement (Jinswar).V.—List of tenants' Agricultural stock.

VI.—Terij abstract.
VII.—Transfer of proprietary rights.
VIII.—Transfer of occupancy rights.

IX .- Agricultural calendar for the district of Champaran.

X.—Financial statements.

Conclusion.

This report can fittingly close with a word of praise to those who have contributed their steadfast energies to the construction of an accurate record of rights for the Champaran district. All the Assistant Settlement Officers with, I am glad to say, very few exceptions did good work, but those who were connected with the operations for the longest period deserve a special reference. It will be seen from the list of officers furnished in Appendix II, that Pandit Ram Ballab Missra and Maulvi Syed Ahmed Ali Khan were employed on these operations continuously for nearly five years each, Mr. Kerr for nearly four years and Babu Hemanta Kumar Maitro for over three years. The last named deserves special mention for the success with which years. The last named deserves special mention for the success with which he recovered the costs of the operations from the landlords and raiyats. A large bulk of the fair-rent case work for the district generally, and nearly all the case work of all sorts in the Madhuban Babu's estates in particular fell on Maulvi Syed Ahmed Ali Khan and the results have shown that it was very well , done. He assisted me to a small extent with the final report also. Of Mr. Korr's assistants—to Pandit Ram Ballab Missra however, are my chief acknowledgement? due. He was entrusted with the charge of the head-quarter's Settlement Office, a most onerous and responsible duty entailing powers of organisation, constant supervision and unending strain. He never spared himself and his efforts hore good fruit. As the settlement operations drew to a close, he was employed in compiling the information required for the final report. To this end he laboured unceasingly and with discrimination, and I am much indebted for his help. Mr. Kerr was in subordinate charge of the Champaran operations for nearly the whole of the period during which he was connected with them. In the solution of all difficulties his knowledge of the district and its landowners, his common sense and unfailing tact proved of the utme t value.

Outside the department Mr. E. R. Macnaghten, Secretary of the Bihar Indigo l'hanters' Association, and Mr. J. Lowis, Manager of the Bettia estate, deserve our special acknowledgements for their advice and co-operation.

CHAMPARAN

Scale I link to Miles

2011

Air on Supries Sheet See See



APPENDIX II.

List of Officers employed on settlement duty in the district of Champards.

| NAME OF OFFICER. | Designation. | Nature of employment. | R M | APLO ABBT | ٧. | Dance |
|--|--|---|--------|--------------|--------------|-------|
| RAME OF OFFICER. | tresignation, | e empayment. | Years. | Months. | Unge | REMAR |
| 1 | 1 | 3 | • | 6 | 6 | |
| . G. Colvin, Req., 1.c.s . C. Lyon, Seq., 1.c.s | Magistrate and Collector | Diffo | 2 | • | 26 15 | |
| J. Bievenson-Muore, Esq., 1.0 s. A. Bell, Esq., 1.0 s. | Ditto Joint-Magnetrate and Deputy Collector. | Ditto Assistant Settlement Officer In cliarge, | | 9 | 8 | |
| . H Kerr, Bsq., 1.0 s | Officiating Magnetrate and Collec- tor, | Ditto ditto | 3 | D | 10 | 1 |
| ahu Rajkishore Narain Sinha Iaulyi Gholam Ghaus | Deputy Magistrate and Deputy tollector. Officiating Deputy Collector | Khanapuri and attestation Khanapuri, attestation sud | 1 | 4 | 15 | • |
| abu Makhan Lal Chatterji | Ditto ditto | Case work, Attention | | * | В | |
| Nalin Chandra Rai Lalit Chandra Das Gupta Promotho Nath Datt | 1 0 11 4 | Pitto Pitto Khanapuri, supervision and | 1 | 7 | 15 | |
| Hem Chandra Chatterji Lautvi Syed Ahmod Ali Khaii | Officiating Deputy Collector . Ditto ditto | case work Khanapuri Khanapuri, attestation, case work, recovery and office | | 8 | 17 | |
| andit Ramaballabh Missra | Disto ditto | Attestation, case work and office at hond quarters. | 4 | Ð | | |
| aulv: Abdul Hakan: | Sab-Deputy Collector Officiating Deputy Collector Ditto ditto | Attentation Elmanum Attentation, khanapum and own work. | , | 3 | 7 2 | |
| abu Nagendes Kumar Ghosh Homingsu Nath Chakesvarti | Bub-Deputy Collector Ditio | Ditto ditto | 1 | 5 | | |
| ianty: Yussuf Ali Ahab Muhammad Axam Byed Ali Mazahar abu Hemania Kumar Moitro | 72144 | Ditto Ditto Aftestation, case work, re- | | 4 7 3 | 7 7 16 | |
| • | ** | covery and office work at head-quarters | | | | |
| Harbans Sahai Jadab Chandra Mozamdar Barat Chandra Mukerji | Kanungo Sub-Deputy Collector | Attentation and case work Broovery attentation | 1 | 3 6 | 17 | |
| Inulvi Afzuriur Bahman | Ditto | Khanapuri Ditto | | 5 6 7 | 23 25 | |
| J. Olienbach, Esq | Pitto | khanapur, attatation and computation. Attentation | | 3 | 2 13 | |

APPENDIX III.

Khasra Abstract (Milan Khasra).

(All areas in acres.)*

| | • | | | Ukori | ED ARKA. | | APPENDING APPENDING | - | Cun | | R AREA (| | LUTA | AÈRA | CULTIV | ATTON, | 108 |
|----------------|--|--|------------------------------------|--|--|---------------------------|--|-----------------|------------------|--|----------------------------|--------------|--------------------------------------|--------------|--|----------------------------------|--|
| Serial number. | Name of thaka. | Bbads. | Aghan | Rabr | Total. | Te or orugned. | Net cropped arts. | Carruit fal.ow. | old fallow. | Mang. groves. | Culturable jurale, | Other kinds. | Total. | House sites, | Water, | Other kinds. | Total. |
| 1 | 2 | ้ง | 4 | | 6 | , 7 | 8 | P | 10 | 11 | 12 | 18 | 14 | 15 | 10 | 17 | 18 |
| 1 2 3 | Bugaha Bhikarpur Bethu | 86,016 84,461 130,021 | 123,593 | 105,390 131,495 124,748 | 339 172 | 69,908 91771 95,302 | 241,781 | 11,1919 | | 6 171 | 2,000 11,444 9,134 | 1,616 | | | 11,000 | 27,368 10,643 12,762 | 85,081 26 511 85,096 |
| | Hettin Subdivisional figures | 201,602 | 2911,857 | 307,775 | 944,724 | 259,651 | 656,743 | 31,635 | 171,196 | 20 386 | 23,652 | 50,931 | 206 249 | 9,577 | 67,548 | 50,108 | 117,96 |
| A i | Idapur Dhuka Mothari Gobindganj Keserin Mathuban | 65, 347 84, 264 62, 716 67, 136 86, 410 25, 427 | 63,973 33,97 43,54 55,453 | 78,624 13 1,52 1 = 1,966 6 10% 60,513 (07,944 | 764, 61 174,000 174,007 177,074 | € 40 121 | 122 193 1 177,846 131,337 187 63 138,468 65 115 | | 30, 22 23,656 | 7 155 7 513 5 074 6 466 5,079 2 157 | 711 1 149 577 369 | 9,671 | 19,357 90,889 30,146 18,005 | 1,508 | 4,113 6,828 6,713 9,628 4,711 3,838 | 5,071 6,134 9,973 8,957 | 9,474 14,54; 16,74; 20,84 14,78; 7,84 |
| | Budar Subdivisional figures | 379,348 | 917,1 7 | \$ 50, 5 \$7 | 1,073,614 | 31 7,009 | 76,125 | 14, 40 | 75 (65 | 21223 | J,769 | 7,151 | 115 511 | 10,467 | 37 240 | SM, 418 | 84,021 |
| | District figures | GC4,437 | 556,270 | 7,09,622 | 2,026,338 | 572,670 | 1,417,04 | 49,674 | 240,764 | 4+,600 | 27,451 | \$M,435 |) , 341,759 | 19,034 | 14,794 | N3,586 | 201,314 |

| | | 6 911 01 | Ed 13 | | 11 | | ED AREA BRIOATI | KD B |) (V | PET | | TERTON DARING | | EA AS | NIVE | | • |
|----------------|---|---|---|--------------------------------|-----------------------|-------------------|---------------------------|------------------------|-----------------------------|----------------------|---------|-------------------|-------------------|----------------------------|--|---------------------------------|--------|
| Berra, namber. | NAME OF THANA. | Total carethressy role 14 and 18. | Total ares, columns 5 a | Interior so a | Included from wells | Irrayiol from the | frience that the formate | Irrigated from the | Frank I form other | 4 | W.b. at | tothers including | (wher ford crops. | Non-food crops. | Maschry. | Earthen. | BBX188 |
| | | 10 | 20 | 21 | 113 | 23 | 24 | 2.0 | 26 | ¥, | . 44 | , 40 | 30 | 31 | 32 | \$3 | 34 |
| 1 2 | Bagaha | 197 ,449 169,, 77 107,900 | 308 97 2 33 1 359 330, 33 8 | 7,008 11,204 6m | 73 40 561 | 201 62 | 1,230 4 3.7 157 | 71 1,1% 187 | 5.45% 6,404 151 | 8,029 7,154 12 | | 1,723 1,723 | 25 8+1 30 | 9) 427 34f | 7/19 7/12 21 6 | 61 31 10 | |
| | Bottis Subdivisions) ligures | 41 1, 236 | 100,960 | 14,424 | 617 | 315 | 5,694 | 1,364 | 11,913 | 19 315 | 150 | 2,045 | (A) | 859 | 1,664 | 108 | |
| 4 5 6 7 9 9 | Adaput Diaka Mothart tobinggai k essris Madhuban | 21,408 36 650 53 443 54,7 9 36,17 8 15,058 | 148,401 214 525 186 140 187,089 174,512 78,206 | 4,976 2,04,1 1,044 37 | 510 153 72 9 | 155 13 14 | 32 4 2. 5 62 | 9, 175 1 197 148 | 1,5:3 1,116 164 77 | 45 | 169 | 25.5 | 107 276 3 6 | 3,666 2,8 % 425 2 | 1,007 1,416 426 490 1,132 641 | 90 95 24 5 56 17 | |
| | Sadar Subasvalonal figures | 217,971 | 1074 416 | 9,661 | 776 | 182 | 644 | 4,320 | 5,110 | 223 | 24. | 1,1134 | 118 | 6 245 | 5,949 | 277 | |
| | District tigures | \$3,147 | 2,079,515 | 97,480 | 1,412 | 817 | 0,20% | 5,714 | 11,312 | 13,53 | 876 | 8,003 | 1,312 | 7,404 | 8,906 | 555 | |

APPENDIX IV.

· OROP STATEMENT.

'(All areas in acres.)

| | | | | | Cunn | ALR AN | D PCt#R | U. | _ | | | | 004 | BFD#. | | | 81401 | M. | | Pini | R 160. | |
|---|------------------------------|--------------------|--|---------------------------------------|------------------------------------|--|-------------------------------------|------------------------------|--|---|--|----------|-------------------------------|--|---|--|--------------------------------|------------|------------|----------------------|---------------------------------|---------|
| Bann op Thaba. | i | Wheat | Barley. | Javer (millet). | Hajra (millet). | Merus. | M 4175. | Gram. | Kodo, | Suwan. | or dust sediers in | I. seed. | Liber yeard. | Musica d. | Others. | Conditionnie and spil | Sognanda. | Others, | Cotton. | Jave | | O. here |
| 1 | 3 | • | 5 | 6 | 7 | 8 | р | 16 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 10 | 20 | 21 | 1138 | u | |
| | 111,526 19+700 118 007 | 19,545 | 24,901 14,168 30,034 | 165 186 4 552 | Sit | 1,409 1,907 4,027 | 841 6 | 13,571 | | 1 418 | द्वर के भी क्षेत्र ए.स् इंग्रह्म | 15 113 | 314 | 1 4A+ 1 den 1 12a | 7,631 | 8.4 | | 1119 | 70 | 96. 364) | 904 134 487 | 1,6 |
| Subdivisional* | 494,-37 | A-L 078 | ex usin | 4,703 | 3,78 | 7. 443 | 61,412 | 30, 40 8 | 35,255 | 19 148 | 80.033 | 34,046 | 8,45% | 644 | 13,501 | 3,101 | 11,0113 | ain | 1,204 | 400 1 | 840,1 | i. |
| Adapur Dhaka Mothaci Gobindganj Kesaria Madhuban | | 8,165A 11,111,2 | 84 699 37,979 38,607 20 150 15,097 11,719 | 136 78 540 101 133 148 | 37 47 164 45 16. 35 | 2,37 s 4,463 627 8 3 1,047 21 s | 12.548 12.548 15.76 2.,477 | 2 161 2 161 170 5 6 | # 11 f 18 54 f 14 7 f 20 5 f 19,02 f 6,22 f | 9 4,90 1 914 3 120 3,400 1,00 | 34 606 18 20 1 33 251 34 750 | | 96 406 1379 50 64 | 705 705 715 716 716 716 | 360 329 429 479 976 153 363 | 107 130 148 550 484 496 | 500 121 401 640 58 | 97. 12. | 234 265 | 88 34 68 77 | H6 1146 711 484 120 | 1 |
| Sadar Divi- sional flaures, District figures | 857,528 | * ** ****** | | - | | *1 - 24 | | | 7 98 | | *** | | | | | | 1,125 | , | | 127, | | 1 |

| | | Dyne. | | Dat | ns and s | - in or | ("H | | | Ti d | M t | WILLIAME | 101 (# C f(12) | l' | 4 | | |
|--|---|-----------------------|--|--|------------------------|-------------|---------------------------------------|--------------------------|---|-----------------------|--------------------------------|---|-----------------------|---|---|---|---|
| NAME OF SHANA. | Ind.gn. | Saffren. | (); there. | OF 118. | हैं विकासक, | ومصط معينعا | Ott.crs. | Tank to see that | , m | Garra 17 to 1 | F. 14.03 | 4.8 | A to the Base Section | Nathe | Eni | Are orthod a | Net sam copped. |
| | • 25 | 26 | 27 | 2.5 | 29 | .49 | 1 | 83 | 48 | 36 | i ia i | - an - | 21 | 35 | 119 | 40 | 61 |
| Baraha Shikarpar Bettja | | 30 49 735 | 25 4nt | 2,468 5,456 8.6.5 | 68) 306 1,64* | . 24 | 47 23 | 951 957 364 | 14 453 30 500 10 219 | 865 1157 17,1 f | 280 500 1, 43 | 43) %,3 } | 873 194 186 | 37 1,776 6,947 | 904 771 3 50,554 3 17,441 | 40 00x 94 774 0 . Rees | 108,628 244,781 241,130 |
| Substivis onal | 50,315 | H17 | \$nel | 13,-17 | 2,150 | 71 | 271 | 1,001 | 47.157 | Çavê . | 4, 1, | 414 | 3,134 | H (34) | 946,734 | 959,981 | EMS 740 |
| Adspur Dinka Dishari Goinndrani Kearra Madhuban | 17,702 18,701 18,197 18,851 6,670 | 1 1 62 2 | 10 100 100 105 105 105 101 | 7,780 to, 660 to, 12 %, 611 4,689 1,640 | 117 117 55 85 | :. • | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 219 1 23 4 4 | 9 100 6,053 5,057 4 71 1 4 1 4 5 1 4 | 7 17 371 371 | 107 103 141 276 29 | 7 (6), 2 (6), 2 (6), 4 (6), 6 (8), 6 (6) | (A) | 375 440 9,918 513 446 54 | 1 167, 613 903,701 376,900 174,003 174,075 103,675 | 75- "41 #5-016 #7-012 46-124 #1-296 %3-581 | 128 103 177, 44 131, 387 197, 604 138, 468 63, 118 |
| Sadar Divi | | CN | 434 | 80 777 | 445 | 1 | 644 | 1467 | A- 867 | 1,9 8 | (31 | 17/04 | 614 | - (mer | , 1,074,014 | 8016.9 | 700 938 |
| District theure | ¥ ¥6,070 | 985 | 919 | 53,59% | 2,400 | 25 | N/A | 1,5 % | 67,479 | 6 19 | 3 Mei | 111,134 | | 12.779 | ± 020 338 | 677,670 | 1 417,464 |

APPENDIX V.

Statement of tenants' agricultural stock.

| Serial thans aum- ber, | RAME OF TRANS. | | Rulin and huttocks. | Nelp bullaling. | buffalens, | Hormonyi je toka. | Calcon (mela dig bully a carrest, | Hiseps | Соки, | Moles and donsers, | Plougia, | (neta. | Вуманкя, |
|---------------------------------|---|---|---|--|---|--|---|--|---|--------------------------|---|---|----------|
| 1 | , | 1 | • | 8 | | 7 | , | | 10 | 1 | 12 | 13 | 16 |
| 1 3 8 | Bernhe Shikarpar Settja | 70,636 77,354 89,547 | 46,167 85,177 89,138 | 8,66-6 3 '74 4 763 | 34 R74 37\$ 626 3 1 13 5 | 9,446 2 613 7 7 62 | 99,375 92,145 1 103 | 4 151 1 8 5/8 3 5 854 | # 11,863 18 50 34 005 | 1 437 1,976 1,665 | 38 850 91 914 93 74 1 | 3 (51 4,775 1 (0) | |
| | Bubdivinonal figures | 2,07 841 | 164 634 | 11,2 0 | 163 676 | 9.8.4 | \$6.505 | 15, (15) | 63,246 | 3 404 | 07.546 | H 2464 | |
| 4 4 7 | Adepur Dhakn Motihari Gobindentoj Keenria | 16 505 14,679 12,764 96,207 15,369 6,611 | 26 3 59 25 25 6 16,611 16 371 20,2 8 11 46 | 1,054 1,721 819 1,034 631 473 | 8,370 6 437 6 731 6 724 7 5 (6 3 Gel | 1,884 9 124 1,3 4 1,9 4 1,9 4 1 7 4 | f 904 6 141 61 1 2 142 5,704 7,1 4 | 841 5,7/2 5,00 71 72 2.6 17 20 18 | 17 733 28 4 21 31 501 34 102 37 7 38 4 2 4 | | 16, 16, 16, 16, 16, 16, 16, 16, 16, 16, | 1 5/4 8,162 439 43/8 1,6/1 630 | |
| | Seder Divisional Szurus | 9× 291 | 114,240 | 6,645 | 40 131 | 0.347 | 27.5-1 | | 14 15 4 | 4 462 1 | \$0 1 10 | 1-008 | |
| | District figures | 295,672 | 292,330 | 17,798 | 183,757 | 19 671 | 70.00 | 38,174 | 1,54,144 | 7,711 | JC: 4.2 | 19 996 | |

APPENDIX VI.

AFFENDIA VI.

Statement of Rights and Rents (terij goshuc

| IN CLISTOLETE POSSES. RAINATS AT FIXED RANNS OR RAINS. SEITHED DE OCCUPANCE. | Area of cultivated from the cultivated from th | 2 | A. A. A. A. B. BALT BALT BALT A. A. A. A. A. | 45 120 1744 16 1747 19 1747 19 120 174 120 174 120 174 120 174 100 175 175 175 175 175 175 175 175 175 175 | 3,947 08,246 1,287 T1,288 740 6,177 1,187 0,187 1,187 0,187 | ## 674 5.407 66 5.473 81 10.20 102 1.122 941 9.14 9 0.13 5 74,945 105,648 5.547 100,313 7,062 7.54 7.54 7.54 7.54 7.54 7.54 7.54 7.54 | 14 G. 185 64.113 1856 64.174 2 475 17,140 2,215 19,404 \$5,740 1 6 1 1 6 4 157,396 618,945 61,046 679,991 35,501 | 8,400 1,13,513 3,225 117,000 3,214 25,367 55,467 55,467 55,605 1 5 0 1 2 3 356,140 1,146,639 106,386 1, | RAITAIN, BENT-FREE-BOLDERS, UNOCCUPIED, SER-1. USDER RAITAIN, HIND. | Average rate per fullivated sore, ageing rate and continuated arraging and arraging and arraging and continuate of collivation of collivated arraging arragi | | ALE. Bear | ### 1 | 13 10 11 10 11 4,3803 21,081 4,922 15,382 2,468 35 539 4,165 1,100,900 11,465 5,740 319 4,689 | 20 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | |
|--|--|------|--|--|---|---|--|---|---|--|------------|-----------|---------------------------------|---|--|--|
| | marbariour erra | 4 | . R. A. P. | | 9 13 | OLCOLN National | - | - | | | | 4 | 21 2 2 | 8 | | |
| | | | Be A. F. | | 1 | ************************************** | . 1 | - | K 41- err.i. Hiyd. | fotal arra. | \$ | 4 | | - | | |
| | | | 4 | *** | · | F-8442 | 3 | 8 | CC PLED. | aera laioT | : | 4 | 288 | * | * # # # # # # # # # # # # # # # # # # # | |
| 1 | Area of unculti- | 11 | 4 | | 1.162 | | 91 | | Cro | | | | | 4 | 44 | |
| BAN | | 16 | 4 | 2 4 8 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 | 6,177 | 21.40 | 17,160 | 23.346 | E R.A. | constraint agency of the depth agency of | * | ₹ | | ā | - नव्यक्षा | |
| | Muniper of hold- | 2 | | | | | | | E-HOLD | | | ¥ | , | • | | |
| POSER | 1 | | 4 | | F | வ் டெல் ஜில் பி | * | E | 11 | betavillus to ania | \$ | 4 | | # | | |
| | lands, of moculiti- | /m - | 1. A | 919 | | | | l es | | Number of hold. | | - | -i ei | 1 | at -i ni at | |
| IN CULT | and a | | | | ij | | | <u> ۲</u> ۳ | TAM. | antbulyat man | 6 | P. B. A. | | 1 10 | 可是是这种等 | |
| | Total arm. | 93 | 4 | \$.3.5 \$.3.5 | 15,917 | 400,000 400,000 400,000 400,000 400,000 400,000 | 18,414 | - | | Average rate per cultivated acre. | B . | 3 | 752 | | ***** | |
| PROPRIETORS OF EIRAIT. | -lituona to acriv abital botav | • | 4 | ~ 8 | ž | ~~## # | 3 | R | INCLUDING DIARA | Total of extering | | 4 | 14,836 6,746 86,818 | 3 | | |
| Hath st ra | Arce of cultivated | • | 4 | 7.0.3 2.0.3 2.0.3 | 16.72 | 204-40 528229 | 18,81 | 18 | 53 | Ame of produce | 3 | 4 | *** | 7.78 | 242595 | |
| | Number of hold- | | | £25 | 3 | 35.383 | 1,567 | | ELITAB. | Total area. | 2 | 4 | 8. 61.6 16. 61.6 16. 67.5 | 110,4 | reilli | |
| MOPHIEROE'S PRIVATE LARD (RIBAIT.) | 'Inn | - | 4 | # = | 18 | #집 #2 대학생 :2홍 | 168 8.017 | 1 | ON-OOCE PASET | Arva of uncultivate. | # | 4 | 525 | 3 | 882888 | |
| Frors 5 | huds. | | A. | 853 | • | 12 | 2 | 1 | OM-00C1 | betartities to ser A abstal | 5 | A. | ANY ANY | * N. 23.0 | 15155 | |
| PROPER | hind to moint. | | - | *25 | * | *å* ;*X | i i | 8 | × | -blod to reduction of hold- | 8 | | 8,816 1,446 11,088 | 16,270 | #E268# | |

APPENDIX VII.

Transfer of proprietary rights.

| 1. | | Total 4 | Humber | Area | Percent | , 14 | Mach 2 | li petek | ab. | Share of lead | HE TOTAL SHEET SHEET | Average rate per | | AND DECEMBER | 2 |
|------------------|--|-------------------------------------|----------------|----------------------------------|---|--------------------|----------------------------|--------------------|--------------------------|-------------------------------|--|--|--------------------------------|-------------------------------------|--------|
| | Name of Thama. | village enquired into. | of trusts- | Serred. | age of column i to it. | Landlord class. | Lawyer class. | Money- leaders. | Raiyate, | trans- terned if given, | Prive paid. | arry of land trans- tured. | Righani rese. | Invest. | EFFERE |
| 1, | , | 8 , | • | | • | 7 | | 9 | 10 | 11 | 19 | 1.B | 16 | 16 | 16 |
| | | Acres. | | Acres. | • | |] | | | Rs. s. P. | No. | Ha. A. P. | Se. a. F. | Ra. a. P. | |
| | Bagula | 780 436 1,813 781 4,877 | , 1 | 86 986 1,158 962 967 | 13'04 84'59 #6'89 1'00 \$1'19 | 1 4 9 | , *** ** ** ** | 1 1 3 | 100 101 - 175 | *** | 8,697 1,300 4,600 4,675 18,670 | 89 8 10 6 10 6 84 18 10 6 1 8 18 0 7 | 40 9 16 40 9 16 | 80 15 B 80 1 7 8 7 0 1 1 8 | |
| 6 7 8 0 | Mositari Gobindgani Komita Madhaban | 1,997 1,685 3,888 | 16 16 14 | 676 1,784 | 46-91 46-41 74-14 | 1 1 6 | 17. 184 184 188 | 1 14 6 | 417 214 161 194 | 18 4 10 18 6 1 88 6 8 | 7,100 18,121 69,708 | 10 49 8 17 8 6 | ## 8 6 90 7 11 4,610 0 0 | 1 11 B 0 U 6 5 S O | |
| i. | District Squres | 18,677 | 81 | 4,913 | #P1 | 34 | | 817 | | 70 0 3 | 1,61,008 | #5 0 1 6 | 4 0110 0 0 | 1 1 1 | |

VI.

APPENDIX VIII.

Transfer of occupancy rights of district Champaran.

(All areas in acres.)

| , | | | real area | <u>5</u> | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | NUMBER OF TRANSPERS. | LANGERES. | | H | ANSPERENT | | TRANSFER PLED. | c. | TOTAL ARE | Total arka transferred. | | COLUMN 16 | | . COLUMN 16 | } | TO COLEMN 17. |
|---|-----------------------|---|---|---|--|--|---|---|----------------------|--|--|---|--|--|--|---|---|---|------------------|------------------------------------|---|
| Burn- MANE | MANUS OF TRAINS. | of the fife | 10 M | raivata Ekstings | By sale. | Py Companie | Total. | Br make | le. Br | res Total | By sale. | By By | Total. | By me. inc | By nortgage. | Trial. | 0,00 0,00 0,00 0,00 0,00 0,00 0,00 0,0 | colemn co | Of columns 18. | 2 to 1 | coloum coloums |
| | •• | et . | - | | • | - | • - | o | - J | 11 | 91 | 2 | * | | 91 | 11 | ži Si | ei | 8 | 5 1 | 11 |
| Begaba Wilharper Media | | 25 g | 20.20 20.40 17.40 18.00 | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 853 | | 275 8 21 | | | 201 201 201 201 201 201 201 201 201 201 | CAT. | 27.4.2 27.4.2 71.0.1 | 1.317 \$ 576 \$ 0.00 | 1. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. | 1.5.0.9 9.0.19 8.0.13 | 17 of | II RE | 27 79 8 27 78 27 78 | ne i | 118 | 822 |
| Subdir | Subdivisional fig res | 814,348 | 4:4,631 | 117,409 | 24.1 | 5 3,515 | 5 6,461 | 5,5,5 | | 3 | 27.1 2.3 | 10' | 146.0 | A.S.4 | 10,650 | 6,373 | 3.8 | 25 25 25 | 12.42 | EF 41 | 22. |
| Adapar Phaka Motiosci Gobandeni Kemeta Madha ban | dental in the second | 143,471 216,524 21,167 35,786 174,418 78,205 | 21.17.28.28. 2.27.28.28. 3.27.28.28.28. | 2 7 8 9 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 20 M T T T T T T T T T T T T T T T T T T | 100 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 4.047 | | Carris | 757 757 757 1745 1745 1745 1745 1745 174 | 1181 1783 1783 1784 1785 1787 1787 1787 1787 1787 1787 1787 | HISPER. | 1,141 6,136 5,6 8,48 6,48 1,5 6,48 1,5 1,5 1,5 1,5 1,5 1,5 1,5 1,5 1,5 1,5 | 521222 2 | ###################################### | 24.5 25.5 25.5 25.5 25.5 25.5 25.5 25.5 | 28928 26488 26488 | anguara anguara | 41.50 m 8 | 17075 17075 17075 | 5 2 2 2 2 2 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 |
| Series Bronn | Divisiona! | 607,709 | 214,946 | 14,926 | 3,14 | 4 | 14.40 | 2,146 | | 2,430 4,561 | 51 3,770 | 15,119 | 15,852 | 5,915 | 14,556 | 80,478 | 24.5% | 65.74 | 1673 | 2 | 25.51 |
| Distrik | District Agraves | 1,461,618 | 111,000 | 346,496 | | 3 14.47 | 18,800 | 1687 | | 8197t #20'9 | 18 5,617 | 29,213 | 3 | 10,085 | 8 81 8 | 25,943 | 8 | 28.82 | 10.75 | \$1.2 8 | 2 |
| | | PERCENTAGE COLUMN 4 | TAGE TO | Pres | PERCENTAGE 1 COLUME 5 | To X | 自然的复数形式 医甲基苯二氏 | 14 at | 6 6 | PRICE PAID FOR | AD POR ARE | ARRA TRASE RUPBBB. | RATE PR | RATE FER ACRE FOR LAND TRANS- TREEND IN SCTRES. | LAND TRAN | *************************************** | Bighrey Rayr Per | PER ACKE | Lowest Acts H | LOWEST RATE PER ACRE IN RUPERS. | - |
| MARY Der. | MARN OF TRANA. | Column Column | mm colemn 3. | ooleen * | Of column co | duman Land | da. Law. | Mener. | Rai- | By male. | P.r. mortange. | Total. | By mak. | By By | Total | À | ų į | By mortgage. | 4 | # 5 | |
| | | # # | 8 | 1.0 | | \$ | 31 | £ | * | z | 8 | * | £ . | # | 3 | | | 검 | 2 | # | 1 |
| Been ba Shika rper Rette | 11 | 10-10 04-0 04-0 | 700 | RAY | #31 | 176 | \$17° \$25 | r i | 20 C | 7. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. | 4 4 4 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 | 1.00 see | 7 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 4 700 2 587 | | - 1 | 7 eee | 7.7 4 | Fr. 4.1 | 4 000 | £ 004 |
| Park of the | 1 | 1 | +- | 1 20 | + | | | 1,157 | 188 | F1,608 | 4,10,318 | 5,61,920 | | 9 | 81 10 | - - | • | | 2 | - | 10 |
| Afacer Disks Modified Gobrada Kreura Madbuba | 111111 | 8 8 8 1 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | aceans aceans | FIRES | 191111 | 2008 2008 2008 2008 2008 2008 2008 2008 | 282288 | 1, 92 1, 92 1, 92 1, 92 1, 92 1, 93 1, 2.58 22.22.58 | 64,353 1,25,664 15,712 17,777 | 86.18. 86.18.18. 86.18.18.18.18.18.18.18.18.18.18.18.18.18. | 44 96.12 4.88 96.12 9.88 11.88 | 32:8:3 6:6:1:3 | 228224 | 258271 2524420 | 200 11 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | ***** | 1,128 1,138 | 4000% | **** | |
| 1 | Divisional | 1.06 | 2.10 | i | E | 94.0 | 51 | 6,836 | 6,619 | 2,67,673 | 6,69,400 | 8,37,078 | | et 91 99 | 3 | 7 21,48 | • | 0 0 0071 | 97.8 | • | • |
| District | District Sgures | 1.07 | 3. | * | 1 | 2 2 | 2 | 1,71 | 10.453 | 8.30.278 | 10.79,713 | 14,38,400 | M 13 10 | 4 23 7 | • | - | | 1,000 | 77.8 | : | 1- |

APPENDIA 12. Calendar of Agricultural operations in Champaran.

| Section. | • | · Comment | | • | February. | _ | March | _ | 4 | April. | - | May. | | | June. | |
|---|---|--|---------------------|------------------------------------|---------------------------------|--|--------------------------------|--------------------------------------|--|---|--|--|--|---|---|--|
| Apparelments Mative | Par | - | | Magh | | Phagun. | • | Chait. | | Paisskh | a | | 54b. | | 4 | A16ec. * |
| Lumar hatter sons no- cording to which all operations are perfermed. | Partsblat. | Utrakbarb | 3 | Dhanishtha | - Sachhiba. | Purba Blandrapad | Utra Bhadra- | Beeti. | Avvint | Sharni. | Knüba | Robert. | ¥ | Mogadera. | Lobert | Į |
| - | • | • | • | - | e paleer vo | • | est | • | 91 | n | ถ | 2 | | | 7 | я |
| A. Beard | ÷ | í | | | : | | | | | Hain wanted, but not indis- persably. | - | Rain wunted ploughting and projecting nur- | Rein continue in a market in a | fall for som- for 1 keach- for 1 keach- | maptial for makel, nd medan; unting com- | Rale weatled; has sorting, woulded, transplanting. |
| 1. (c) Baland (matter) (c) Inches coun.) | | : : | 1 ! | : 1 | • | * * * * * * * * * * * * * * * * * * * | | | | Pk-ughing Ditto | Ploughing . Dig to . | Pleaghing and | E 20 2 | oring E. | | Late sowing. |
| | | Plonghing. Weeding and Weeding and weeding, and cheming empty thening empty inning empty inning empty. | Weeding and chenter | od , Cleanuaer and ety weeding. | TRANSPORTER FOR | SOWERDS - | Late scering and seconding. | Weeding | Wending | Reserving (1) | Weeding | Weeding | Late weeding | 3 | Radis wanted cut- ing commences. | Constitute |
| | - | ; | | * ; ; | | S | | : | | Proughing . | Pinering and rassing send- lines. | Pleasthme raising seedle | 72 | 8 | Transplanting . | Treamphatithe |
| 4 | | 1 1: | | . 1: | Picachine an acribe. Data | Picaghing and Pinus bing acwing. and sound Bate Diffe. | · · · | i 1 | : ! ! | Plene hung and | Bearing and | Respine threshing. Deto Floogbing and | and Rearing as ing Ditto | i E | Sarpes | Westland |
| Kude | | 1 | , i | 1 | | | | : | Paraghing and evenor | Plymething and | | | Media | . , | Disto | Diffe. |
| East. | 1 | <u>.</u> | | | : | ! | | | rutti De Bera | | Ploughing | |) Kalaok | Nowing tornaments Sc | Scaing | |
| Appenditures Daglish | | r'at | | | A caract. | | September | | | Ortober | | | November. | | Describe | aber. |
| Approximate Native | | Al bar-condd | | Sevan. | - | Rhaio. | | | Aes. | - | X | Katak | | Agtan | | Par |
| Lunar actorisms or cutting to which all cometens are perfection. | Passing | | 4 | Addit | Marine. | Port. | Tim- Phis.m. | Hatte | want of an er | Christ | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | Pauenkles. | Anwit | Jest ib. | ij | Purbaline. |
| | 16-rends. | | 11 | 90 | 61 | Fi. | ¥3 | 81 | | \$5 | 3 | A | ¥, | lã . | 8 | R |
| A. Burnal . L. (e) Maksi (mad) | Ram wanted his grante, werting transplucture. | Lein man | Table 1 | | Earn wanted B | Romand wast. Rain of a district of a second section. | endage. | Lords the warried man control man | th and Everyone nation throwing on parties | | and Late respirations our and farefulation | 1 | 1 | | | |
| (h) Jenera L Lere (blanks) Transplanting 3. Indian Certific | Thumplanting Cutting | Late trassplanting | planting |)] | 1 1 | Week 12 | Cottine and | 97 | * . | thrafting. | The state of the s | Programme and Pr | Presgiring. 4 mg. | Pleaghing, the | Director, plengh | Plungfolg and |
| f ; | Transfer trag | Weeding. | • | | Weeding | Weeding | Bearing over | Unreduit | and Late of | Late reading and threates. | | e contribution | <u> </u> | 1 1 | | 1 1 |
| | Weeding | Wording | PEG | Broker can B | N. | and lare grapers | <u> </u> | ; [| ** | 11 | : 1 | | | 11 | | ,, |
| | or see | Feeding | | Kending | Party and | | Empion | Threshag | The state of the s | 1 | 1 1 | 1 1 | 1 1 | | 11 | 11 |
| | | | | | | • | · Kride is generally | researchy things of 15 doys after so | - after men | - | - | | | | | |

APPENDIX IX—concluded.

| | _ | · Carrie | 4 | | | | | | | | | | *************************************** | |
|--|---|-------------|-----------------------------|--|--|--|--|--|--------------------------|--------------------|---|---|---|---|
| Monte in the last | | - | , | | | Pregram | Chair | di. | Baisaku. | ka. | | Jeb | ~ | Akbar. |
| Population Section | | Put. | | Mach | | Tree Series | | | | | | | - | |
| Luner seterious ac- cording to where all operations are performed. | Porbs kharh. | Cos kharb. | K | Dissistiche | Besbhilt he. | Parb Bhadra. Ut pad. | Utra Bhadra- Beati. | ati. Aswin. | Bharni | Krethila | Rahni. | Ningian. | Ardra. | Pennite |
| - | • | ** | | in . | e | L | G. | 10 | n | 2 | n | 2 | 12 | 36 |
| E Aghani- | Bespins | Fried | - Creating | T breshing | Threshing and sowing in chura. | Planghuig off a | 1 | | ; | A "- | Ean wented, but not indispensably. Floughing com- | Rais wanted. Pleughine and raising seedlings. | Bain wanted de Piccephing and Piccephing and raing seed lings. | d. Heavy rain of wanted. Trans- gs. planting com- |
| (Alma | E pie | Res print | Reaprage. | Respingend | Besping, ploughing and raining and- | char. | | | Proughing . | Ploughing P | Plonghung | : | ! | menose. |
| (3) Years | Tate resolue | . ; | Ings. | rainte seed. | lings. | 1 | Ploughting | Bowing | Late sowing | 1 | 1 | : | | ,! |
| | Pressing and hothre down the paice to | | Ploughing | Ploaghine | Picaghing | Planting Pla | Pisating | | | | Weeding | W.coding. | Late weeding | l' |
| C.—Mahiii 14. Marter 19. Witter 19. Grant | | Weeding | ! | : | | Besping com- Res | Reaging and Late threshing. | resping | ì | <u> </u> | Deging and ploughing. | | 1 | - |
| Tolera | Nitypiag. | 1 | • | Watering and Place ing com- | Plorking | Placking | Late p.ocking Plucking | | Ploughing | 1 | Ploughing | Proughing | Promphing | Ploughting. |
| Appres forete English | | Juig. | | August | | Bepi | Beptember. | 8 | October. | Me | Rorember. | | December. | |
| Appendicate Native | Aktor cond. | | heven. | | Bhadan. | | Ann. | | Katik | | Agban. | | Ę | |
| Letter seteriors ac- cording to which all operations are performed. | Pararbas considi. | Pakh | - Verifica | Reggie | Perab Phagunt. | . Utra Phagun. | Hathin | Chitn. | Strati. | B Single | Anaredbe | Jetik | Kal | - |
| | 16 eventd. | 11 | 82 | 61 | 8 | 18 | 1 | n | * | . 15 | * | · N | # | |
| | Reary rain wanted Trans- planting com- mences. | Rain wasted | Trensplanting commences. | Tremplenting | Transplanting Late transplar ing and weeding | Rain wanted. Transplan i b g. Weeding. | Rate wanted in- darponeally Late irrappant in K. W-eding. | Rain not wanted. It damages the crops. Weeding. | Rain wanted. Weeding. | | | Beaping cents. notices. Beaping cents | Parity Company | 11 |
| O) Town | : ! | * * | : 1 | Wending Diggine | Weeding. | 1 | : t | Besping commen- cer. | Benping | Beaping Outting | Besping | Resping | Respire | |
| A Market | . ; | | | ************************************** | | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | Picaghing. Sowing | Ploughing and sorting. | Bowing | Bowing | Sequence : | Late south | Right value fadio- persobly wasted. Weeding com- montes. | 1 |
| 4. Princes | Programme | Plonghing | Ploughing | Raising medlings | Byine andline | Transplanting | Transplanting | Weeding commen- | Weeding | Veeding | . Weeding | Kipping | Kipping | Mucha |

APPENDIX X.

Pinancial Biatoment of Bettlement

| Main sub-made of Bu | DOTT, | , tu | emili 200 4-ba | - 1 | Days tu | T. | | Bros (tr 1804 | | 1 | Espendi- fure, 1886-96. | | | BOS-S | | | Espond furr, 1897-66 | | Expend ture, | . 1 | Hap- | 10. | - 1 | M4(130 TH | Total. | , | |
|---|-------|------|----------------------|-----|------------------|--------------|------------|----------------------------------|------|---|-------------------------------|---|-----|-------------------------|----|----|-----------------------------------|-------------------|---------------------------|------|-------|-------------------------|-----|-----------|---------------------------------|------------|----------|
| . 1 | • | | | | 1 | | j | • | | 1 | 1 | - | | 6 | - | | 1 | | | | 4 |) | • | | 10 | | 11 |
| | | R4. | A , | r. | Ha. | ۸. | » . | 24. | A. 7 | 1 | Ra, A. P. | - | H, | K, A. | ۳. | 1 | Rs. 4. | P. | Ra. A. | , p. | Ra. | ۵. | ₽, | 1 | Ra, A. | 7. | |
| 1. Pay and special alleger. Buttlement Officer Assistant Bettleme | | 3,84 | 4 4 | 4 | 90,171 11,394 | | 8 | 9.031 17,635 | A ! | 7 | 16,380 10 30,667 11 | | | 6,966),109 | | | 3.768 R | 10 | *3,919 191,967 | | 1,80 | o` a | 9 | 1. | 58,780 30,000 | 18 | 6 |
| 2. Fixed establishment 3. Temporary establish 4. Contract and job wes | men1 | } u | 8 1 | , | {\$,36 | 8 7 | | 10,5 82 7, 3 97 | | * | 25,191 14 9,749 4 1 | 0 |) 9 | 610,8 899,1 838,1 | 11 | | 1,1994 12 11 1190,08 18,160 | 11 | 1,960 13,183, 6,784 | 9 10 | E, 13 | | | }, | ,00,8 3 11 | • | |
| 5. Travelling allowance Of affects Of establishment | | } * | 18. S | 0 | 6,34 | y 6 | 0 | 6,784 | 14 | 6 | 8,697 9 | 0 | 4 | 241,4 80 | | 0 | 3,454 1 163 1 | 1 1 | 3,304 136 | | 32 | 1 4 19 14 | 0 | } | 20,841 | 15 | 0 |
| 6. Supplies and services Forms Tents Petty construction repairs | i | 8 | 13 10 | 0 | 4,86 | 9 R 17 12 | | 1.176 | 10 | 0 | 678 13 3,330 0 1 | | | *** | | 1 | | | 918 | | | 15 T | 7 0 | | 040 1111,0 444,0 844,0 | 12 1 | n) . *** |
| 7. Contingenties Hot-weather char Office rent Service telegrams postage of | | | 34 S | 3 6 | 8,4 | 10 19 | ı | 3,76 | | 6 | 4,677 2 | б | 1 | | | Ţ, | 1 0#1 19 244 8,938 | 4 0 K 0 4 6 | , | | • | 16 U 1 96 H7 1 | | | ul, ma | ajam terik | _ |
| Total | | 1 | , 44 | 3 7 | \$1,1 | 90 7 | 0 | 65,15 | | 2 | 97,847 \$ | 3 | | 95,746 | | 8 | 78,327 | 7 11 | 78,97 | 6 12 | 1 8,1 | 141. I | 2 | 4 | 4,74,984 | 4 | B |

* Includes travelling allowances of Settlement Officer.

General Statement of Expenditure and Receipt.

| Parket de Architectur | anserma. | mandin un w mm - | | | | | | and the same provided that people is a | a term appear to the term of | . (|
|--|---|----------------------------|----------------------------|---|--|-------------|---|--|------------------------------|---------------|
| 1 | • | | Expandit | UBS. | | | | RHORIPT | | · (|
| YBAR. | | | | | | | | No. | covery of cost, | |
| • | Tieverse survey. | Cadastrul survey. | Records writing. | Settiement. | Total. | Court-free. | Marellaubow. | Cost. Prive | | Total. |
| 1 | 3 | 3 | • | 0 | | 7 | | р 10 | 11 | 18 |
| | Re. | Re. | Ba. | Rs. A. P. | R4, 4, P. | Ka, A, P | Un. A P | Mn. a P. Mn. a | | Sta. a. v. |
| 1,002.05 1,003.04 1,004.05 1,005.07 1,005.07 1,005.00 1,000.1000 | 86,880° 46,666° 93,406 10,866 697 | 70,096 91,870 25,050 | 29,194 50,060 36,216 | 5,464 3 7 51,120 7 0 56,154 5 8 97,347 2 3 98,748 6 5 78,837 7 11 78,976 13 1 6,361,12 4 | 52,503 6 7 1,87,979 7 0 1,92,875 8 2 1,94,656 4 5 74,927 7 11 72,305 12 1 6,341 12 4 | 83,787 U 0 | 59 0 0 400 0, 0 2,148 21 0 2,171 7 -4 4,169 1 6 2,951 13 8 191 10 0 | 1,88,578 3 0 2,913 1 9,155 N 0 108 | 8 0 | |
| Total | 1,87,008* | 1,88,963 | 1,14,460 | 6,74,984 ft 9 | 9,43,390 6 9 | 63,757 9 0 | 12,406 11 8 | 15,44,170 10 2 3,169 1 | 0 0 23,80,864 9 10 | 4,86,930 11 8 |

Includes cost of cadesteal survey and record-writing

DEPARTMENT OF LAND RECORDS AND AGRICULTURE, BENGAL

No. 478T.-S.

FROM P. C. BYON, Esc., 1.c.s.,

Director of the Department of Land Records and Agriculture, Bengal,

TO THE SECRETARY TO THE BOARD OF REVENUE, L.P.

Dated Darjeeling, the 31st October 1901.

SIR,

I have the honour to submit herewith the final report on the survey and settlement of the district of Champaran, by Mr. C. J. Stevenson-Moore, i.c.s., for the information and orders of the Board. This report was originally submitted to me in manuscript late in the year 1899, but its printing took a considerable time, and it was not received from the Press until December 1900. The accompanying report for the district of Muzaffarpur was not ready, however, until March in the present year, and I was not finally informed until the month of June that the orders of the Government of India, contained in Home Department Resolution No. [60], dated 25th February 1901, for the abolition of intermediate reports, did not apply to my reviews of final settlement reports. Since that date the executive and administrative duties of my office, including two months on inspection work in the mufassal, have unfortunately prevented my dealing with these reports before the present date.

2. The Settlement Officer explains, in his introduction to the present report, that most of the larger questions connected with the settlement operations in North Bihar have been dealt with in full in the report for the district of Muzaffarpur. The present report is, therefore, concerned solely with the special features of the work which affected the Champaran district alone, and is accordingly comparatively brief. The report is lucid and excellently arranged. It is divided into two parts, in the first of which a general historical and descriptive sketch of the district is given, while the second contains a full account of the progress of the recent operations and an elaborate analysis of the statistical results obtained. I would venture to invite the special attention of the Board to Chapter IV of the first Part, in which a singularly clear and graphic account is given of the Land Revenue administration of Champaran up to the time of the initiation of the present proceedings, and to the same Chapter in Part II, in which a careful estimate is made of the actual material condition of the lower classes in the district, and cogent reasons are given for a belief that, in this of the sparseness of the population, low routs, and comparatively larger the agriculturists of this district are less prosporous than those of neighbor districts in which these favourable conditions do not exist.

The Appendices to the report are brief, the bulk of the important statistics

having been incorporated in the report itself.

In spite of the care with which the report was checked in proof, I regret to note that there are several misprints to be found in the text as well

as in the tabular statements in the body of the report.

3. The earlier chapters of the report bring out clearly the important fact that in olden times Champaran (or Champakaranya, the jungle of wild Champaka) was an almost untrodden forest, the retreat of religious ascetics, and that its agricultural development is a matter of recent years. This fact, and the proximity of the district to the great Himalayan Terai, must be borne in mind

when the statistical results of the recent settlement proceedings are analysed. The rainfall is heavier than in other parts of Bihar; the district still enjoys an unenviable notoriety for unhealthiness, which is only half deserved; communications are still backward, though fast improving; the railway system is as yet but partially developed; the raiyats are poor agriculturists; irrigation is almost unknown, and even the abiquitous native trader conducts his operations with but little of his usual commercial activity. The report incidentally emphasises, in more than one place, the great advantages that would accrue to the district from the construction of railway lines from Bairagnia, in the Muzaffarpur district, through the north of the Champaran district, to Bagaha on the river Gandak, and from Bettiah to the same place. Both are merely extensions of the existing system of the Tirhut State Railway, and both would do much to open out a tract which is at present

especially liable to famine.

4. In Chapter III of Part I, and again in Chapter IV of Part II, Mr. Stevenson-Moore 'deals with the population of the district, and shows how greatly it is dependent upon agriculture. The ultimate result of his enquiries is to demonstrate that out of a population estimated in 1891 at 1,859,465, no fewer than 57 per cent. are pure cultivators, 7 per cent. unite cultivation with other pursuits, 21 per cent. are labourers owning a little land, and 9 per cent. are landless labourers, leaving only 6 per cent. of the population wholly unconnected with the land. The Settlement Officer has referred in several places in his report to the severity of the famine of 1896 97, and his estimate of the widespread distress caused by it has received melancholy confirmation in the statistics of the census of the present year, which show a decrease of 69,000 in the population of the district, representing a proportion of over 3 The careful calculations made in this report for the purpose of illustrating the material condition of the bulk of the population of the district cannot fail to be of considerable interest to the Census authorities, and the detailed figures for the district will possibly throw light on the difficult questionwhich is called by the author of the report. "the problem of Champaran"-why this tract, which enjoys several marked advantages, should feel the pinch of famine so soon and so severely.

The records of the earlier settlements made in this district, before it came into our possession, are insufficient to give any clear idea of its progress. In the settlement of Raja Todar Mull, in the time of the Emperor Akbar, 99,424 acres are said to have been assessed to a revenue of Rs 1,37,835, giving the high incidence of Re. 1-6 per acre, but it seems uncertain that this area included even all the cultivated land of the district. About a century later, in 1685, this revenue was raised to Rs. 2,10,150, but in 1750 it was again reduced by a few thousand rupees. It is difficult to ascertain what the actually assessed revenue of the district was when we took over the district in 1765, but it appears to have stood at something about 2 lakhs, although the settlement made by Hoshiyar Jung in 1773 would appear to have been much lower and little above that of Todar Mull. In the course of his account of the subsequent revenue history of the district, Mr. Stevenson-Moore points out how closely it was bound up with the history of the Bettiah Raj, and how the four great families of the district, now holding the Bettiah, Ramnagar, Madhuban and Shiuhar properties, came into existence. In the decennial settlement . of 1791 the revenue appears to have been settled at Rs. 3,98,253, and the actual

permenent stated revenue of two years later is returned as Rs. 3,85,587. Sment Officer deals but briefly with the general effects of the permanent int on the landlords and tenants, but goes more fully into the subsequent resumption proceedings. The present revenue of the district is Rs. 5,15,803, assessed upon a cultivated area of 1,447,874 acres, and emphasis is laid in the report upon the fact that while the cultivated area appears to have increased fifteen fold since the time of Akbar, the revenue has increased but four-fold, and the incidence of that revenue has fallen from Re. 1-6 per cultivated acres

to annas 5-8.

6. A full account is given in the report of the general progress of the survey and settlement proceedings, and it will be unnecessary for me to refer to them at any great length. The total area of the district is 3,531 square miles, of which 3,260 square miles were dealt with in these proceedings, 250

square miles of jurgle in the north-west of the district being excluded from the operations, and 30 square miles—belonging to the criminal jurisdiction of Saran—being taken up by us as part of that district. The traverse survey was, commenced by a professional party in 1891-92 and was practically completed in 1894.95, with the exception of an area of 886 square miles in the diaras of the Gandak river which was traversed in 1895-96. The cadastral survey and preliminary record-writing was also carried out by the Survey of India Department, in close co-operation with the Settlement authorities. It was commenced in. 1892-93 by one camp, which was reinforced by a second camp in 1894-95, and the work was completed in 1895-96. The attestation of the records was initiated experimentally in 1892-93, and commenced in earnest in the following year. It should have been completed in the year 1896-97, but progress was checked by the famine of that year, and it did not come to an end until 1897-98. Case work continued for a year after the completion of attestation, during which year also the main work of recovery of the costs was brought to a close, and the records of the settlement were handed over to the The final report was submitted, as has been already noted, in the course of the year 1899. Colonel Sandeman, as Director of Bengal Surveys, at first superintended the survey operations, and was succeeded by Captain Crichton, as Superintendent of Settlement-Surveys, Bengal, who held that post up to the conclusion of the operations. Mr. E. G. Colvin, Lc.s., was Settlement Officer from 1892 to March 1896, with a brief interval of eight months in 1895, when I took up the work in addition to my duties in a Muzaffarpur. From March 1896 to June 1899, Mr. Stevenson Moore was in charge of the operations as Settlement Officer in North Bihar with Mr. J. H. Kerr, I.C.s., as Assistant Settlement Officer in general charge of the district operations, under him.

connected with the preliminary record-writing and the attestation of the records in his report on the proceedings in Muzaffarpur, and touches them but lightly in the present report. I would invite the attention of the Board, however, to the strenuous effort that was made, at the commencement of the operations, to utilize the patwaris as amins for the writing up of the record. The attempt, although made in an area more favourable to it than could be found in any other part of Bihar, completely failed, and this negative result has proved most useful as a practical and final demonstration of the impossibility of making use of the patwaris created by Regulation XII of 1817 for independent revenue work. There were comparatively few boundary disputes—only 988 as compared with 1,475 in a smaller area in Muzaffarpur—and the work of attesting the records proved comparatively simple, such difficulties as were net with being due more to the apathy and ignorance of the raiyats than to any other cause. There being an abundance of land for cultivation in most parts of the district, disputes as to possession were few, and the proceedings were greatly assisted by the fact that considerable areas are held by indigo-planters, whose books and village accounts were always open to our inspection, and were almost invariably

admitted by all parties to be correct.

8. From the very commencement of our operations it became obvious that the settlement of fair rents under section 10% of the Bengal Tenancy Act would form a more important stage of our proceedings in Champaran than in other districts in North Bihar, and Mr. Stevenson-Moore has right dented special attention to this subject in his report, paragraphs 250 of which give a full and careful account of this work. Rent-rates are land is abundant, and there is more competition among landlords for tenants than among tenants for holdings, while at the same time the landlords are for the most part above resort to the oppressive and illegal methods common among the petty proprietors of Muzaffarpur for the enhancement of rents, and look to the law to assess rents for them, at the time of settlement, on excess lands that have hitherto escaped all assessment. The result was that a very large number of applications for the enhancement of rent were filed, and a considerable proportion of them were successful, as the following figures will show, but as the great majority of these applications were merely for the assessment of excess areas to rent, and as in very few cases only has there been any enhancement of rent rates, the incidence of rents per acre of assessed

land has been scarcely affected at all. Out of 364,659 holdings in the district, 118,413 or 32.4 per cent. were brought under aettlement of fair rents through applications made by landlord or tenant (chiefly, of course, by the landlord). In the case of 63 per cent. of these holdings the rent was enhanced, in 23 per cent. the existing rent was settled as the fair rent, in 13 per cent. the applications were withdrawn, and in 0.24 per cent. the rent was reduced. The existing rental of the holdings affected by these proceedings was Rs. 9,33,939, and this was raised by Rs. 91,781 to Rs. 10,25,720r. Out of this increase a sum of Rs. 90,209 was obtained by the landlords, under the provisions of section 52 of the Bengal Tenancy Act, by the assessment of excess areas to rent, and it is noticeable that, of the total rental settled in the course of these proceedings, 75 per cent. was determined by compromise between the parties, and only 19 per cent. by the Court in contested suits. The rents of the holdings affected were raised on the whole by 9.8 per cent., but the rental of the district was raised by 3.9 per cent. only. I do not think that this can be held, in the special circumstances of the district, to be a result in any way inequitable to the tenants, although, in view of the somewhat gloomy account that is given in the report of the material condition of the cultivating classes, it must be a matter for congratulation that the rent roll has not been more substantially enhanced.

9. It is unnecessary to follow the Settlement Officers detailed account of the history of the more important matters that affected our settlement of rents in this district, but I would invite the attention of the Board to the paragraphs dealing with the treatment of compromises and with the question of the calculation of the excess area upon which additional rent should be assessed. In the matter of compromises the views of the Settlement Department were accepted, in spite of an adverse opinion from the Legal Remembrancer, by the Special Judge and by the High Court, and have now been emphasised by the legislature, with the full consent of all parties concerned, in the recent amendments to the Bengal Tenancy Act. In the matter of excess areas the Settlement Department's view has also prevailed, after much controversy and through many appeals, and the equity of making an allowance of area, to cover disparities in the lengths of the measuring rods used at different times and differences in the method of measurement, is not now, I believe, contested. Mr. Stevenson-Moore shows in his report how valuable the work done by Mr. Colvin was at this stage of the proceedings, and to how great an extent the equitable nature of the principles finally adopted as the basis

of our rent settlement proceedings is due to him.

10. The remaining stages of the operations afford little that is worth special comment. The objections summarily decided by the settlement staff numbered 12,432, giving a percentage of 3 10 on the total number of holdings in the district. Of these about 45 per cent. concerned the entries of existing rents, 20 per cent. dealt with entries as to possession, and 15 per cent. with entries as to trees. The suits filed under section 106 of the Bengal Tenancy Act and tried under the Code of Civil Procedure numbered 3,251 or searcely 1 per cent. of the number of holdings. Over 2,000 of these related to rent disputes, and it was in this stage of the proceedings that the oppressive dealings of the Madhuban Babu with his tenantry became more especially noticeable. The office work that was involved in the completion of the records was not so great as all the which had to be carried through in Muzaffarpur; but over three in the sixty thousand khalians had to be dealt with, containing over that it is villages, and the number of temporary muharrirs employed on this work in the Motihari office rose sometimes to over six hundred.

work in the Motihari office rose sometimes to over six hundred.

11. The account of the work of recovery of the costs of the operations which is given by the Settlement Officer in Chapter V of Part II might perhaps have been introduced earlier in the Report. It had been estimated that the total expenditure on survey and settlement proceedings would amount to annas 8 per acre of the area dealt with, and this cost was apportioned in the proportions of annas 2 against Government, annas 8 pies 6 against landlords and annas 2 pies 6 against tenants and occupiers. The actual sum computed for recovery amounted to Rs. 7,85,382 or Rs. 7,195 more than the sum obtainable at the acreage rate, the excess being due

to the working of the rule that the minimum charge on any holding should be annes 2 pies 6, and to the provision that, in the case of holdings above one acre in area, fractions of half an acre and less would be disregarded and higher fractions taken as one acre. I may note here that the figures in paragraph 602 require some explanation, the reason for the apparent excess in the sum apportioned upon the landlords being that this amount includes the large sum paid by those landlords for waste lands and lands in their own cultivation, for which they paid both the landlords' and the tenants'. The recovery proceedings have been wholly successful, although there was some delay in the realisation of the sums due from the Bettiah and Ramnagar estates. A small sum of Rs. 180 was written off as irrecoverable, and the large balance which was handed over to the Collector for recovery at the end of our proceedings has since been satisfied almost in full, the present balance standing at Rs. 161 only. The circumstances of the Champaran district made recovery work much simpler than in the district of Muzaffarpur, the only complications being due to the difficulty found in adjusting advances made by the landlords in the earlier stages of the operations and to the absence of current coin in the north of the district, where all financial transactions appear to be conducted by the people through the medium of "dumpy" or lohia pice, one hundred and twelve of which are said to go to the rupee. The cost of the operations amounted to about Rs. 30,000, or 5.4 per cent. of the actual recoveries made by the Settlement Department; but this percentage will be much reduced if the total recoveries. made up to date are added in, the subsequent realisations from the Bettiah Raj and other landlords having cost very little to make. I may note here that as the cost of the survey and settlement operations in the north of the district fell short of the estimate, the total expenditure actually incurred, less the miscellaneous recoveries made in the course of the proceedings in the shape of court, remeasurement and copying fees, &c., amounted to about annas seven per acre only. Government has benefited by this reduction of expenditure and has ultimately paid a smaller sum as its share of the cost of the proceedings than would otherwise have been the case.

11. On pages 94 and 95 of his report Mr. Stevenson-Moore touches upon the subject of the maintenance of the records, and notes the failure of Act III (B.C.) of 1895 to effect its purpose in this respect. This subject is still under the consideration of Government, and need not be further referred to here. The essentials of any scheme of maintenance or periodical revision of the records in Bengal are that the work shall be done on the ground and shall not depend on the initiative of the people themselves, and that the modifications made from time to time in the Record-of-Rights shall be attested by responsible officers and be given the same evidential value as the original entries in that Record. It is much to be hoped that any scheme that may be

adopted will include provision for these two cardinal necessities.

12. This review would extend to needless length were I to submit to the Board all the comments that are invited by the most interesting paragraphs on the statistical information derived from the settlement proceedings which have been included by Mr. Stevenson-Mooro in his report. This information is dealt with by him very fully and in natural sequence, the total area of the district being first considered, then the classification of that area as cultivated, uncultivated, and unfit for cultivation, the extension description during the period of British occupation being incidentially dealt where them to the status of the cultivators, the size of their holdings, and the paid by them, while the chapter closes with some interesting figures as to the transfer of holdings. The expansion of cultivation in the district is carefully considered in the earlier part of this chapter, and it is shown that whereas less than one-twentieth of the district was under cultivation in the time of Akbar, and only one-fourth at the commencement of British occupation, the cultivated area amounts at the present time to 70 per cent. of the whole. The tables dealing with crops give interesting figures comparing the areas under each crop in Champaran with those under the same crops in the districts of Musaffarpur, Azimgarh, Gorakhpur, Ballia and Gaya, as compiled from cadastral records, and it is shown that a larger percentage of the total area in this district is under rice than in any of its neighbours, while the areas

under indigo and opium are also both actually and proportionately greater. There can be little doubt that these last two crops afford the raiyat some security against the failure of the great rice crop, but opium is itself a precarious crop, and it is not tended in Champaran with the care that secures to the agriculturists of other districts so much profit from its cultivation.

- 13. I would invite the attention of the Board to the interesting paragraphs on "Status" on pages 123 to 130 of the Report, and the noticeable figures that are given to show what a large proportion of the cultivated area of the district is held by tenants possessing occupancy and settled rights under the Bengal Tenancy Act. On page 124, Mr. Stevenson-Moore gives a most apposite quotation from the late Dr. W. W. Hunter's Statistical Account of Champaran, which shows how much the Bengal Tenancy Act, combined with our present operations, has done to establish the rights of the cultivators of this district, while the statistics given on the following page compare the status figures for Champaran with those of several neighbouring districts greatly to the advantage, on the whole, of Champaran. If the figures given as to rents and rent-rates on page 131 of the report are taken into consideration in conjunction with these figures for status, we have still further reason to believe that the position of the Champaran raiyat is in many respects better than that of any of his neighbours.
- interesting paragraphs on the transfer of occupancy 94. In the rights the Settlement Officer gives figures for the transfers that took place in 'the ten years preceding the operations in a considerable proportion of the area of the district. These figures are compared with the similar figures obtained for the district of Muzaffarpur, and demonstrate emphatically the different economic conditions of the two districts. The whole subject of transfers, the harm done by them, and the possibility or advisability of restricting them, have been considered recently by the Board and by Government in a separate correspondence, and in the course of that correspondence attention has been drawn to the necessity of differentiating between Champaran and the other districts of Bihar. Whereas in Muzaffarpur, in an area of 850,000 acres, the transfers numbered 14,500 only, we find nearly 36,000 transfers in one million acres of Champaran, and while in Muzaffarpur 79 per cent. of the transfers were made to fellow-raiyats, and only 13 per cent. to moneylenders but 55 per cent. of the Champaran transfers were made to fellowraiyats and no fewer than 41 per cent. were made to money-lenders. It is obvious that these striking figures demand the careful scrutiny of all who are interested in the material condition of the cultivators of this district.
- Moore discusses the statistics of the cultivation of that crop, the systems under which it is cultivated, and the advantages of its cultivation to the administration, to the cultivators, and to the labourers of the district. This subject has been dealt with more fully in the corresponding chapter of the Muzaffarpur report, and I would only note here that I am doubtful whether the Settlement Officer has estimated sufficiently highly the very considerable advantages which the cultivator derives from the regularity in the payments made to him for indigo, from the excellent management of their estates and tenures by the indigo planters, and from the fact that rents have been kept down to a

by the lease of considerable areas in the Bettiah Raj to the accommunity. There is good reason to consider that the cultivation in the district of Champaran has been of great benefit to the well as to the labourer, and although defects in management mally fendered this cultivation unpopular in a few places, its relinquishment would, I believe, be a matter for much regret.

16. Chapter IV of Part II, to which I have already invited the special attention of the Board, contains a most interesting review of the material condition of the mass of the population of this district, and should be read with the exhaustive report on the famine of 1896-1897, which was submitted by Mr. D. J. Macpherson, C.I.E., who was then Collector of the district. The recent census figures, when available in detail, will prove interesting reading in this connection and will probably confirm the view taken by both Mr. Macpherson and Mr. Stevenson-Moore as to the low place in the scale of well-being which this district really

occupies. While, as I have noted above, elements of prosperity doubtless exist in the fertility of the soil, the sparseness of the population, and the moderate rent-roll, we have on the other side still more potent factors in the comparative unhealthiness of large tracts in the north of the district, the inferior standard of cultivation, the absolute dependence of the population upon agriculture for a subsistence, and the want of communications and consequent stagnation of trade. The increase in the population that may be hoped for in the next ten years, the extension of the railway system (to be accompanied, perhaps, by an improvement in its management), the development of irrigation projects in the north of the district, and a gradual improvement in communications may be looked to for some amelioration of the circumstances of the people of Champaran in the future, but the recommendations that the last of the Famine Commissions has made, for the partial protection of the people from famine by the encouragement of agricultural development and the establishment of agricultural banks, would appear to be especially applicable to the present condition of the district.

17. I venture to ask the attention of the Board, in conclusion, to the noticeable services that have been rendered to Government by the officers who were employed in carrying out the operations that have been reviewed above. The work done by Colonel Sandeman, Mr. W. C. Macpherson, Captain Crichton, and Mr. Stevenson-Moore himself may be there conveniently dealt with in connection with the exhaustive report on the general operations in North Bihar which is contained in the Muzaffarpur Final Report, but the Board will perhaps note with appreciation the excellence of the present report, its conciseness, and the ability with which the important statistics

derived from the operations have been handled.

The whole of the work of initiating the proceedings, organising field, office and case work fell upon Mr. E. G. Colvin, 1.c.s., who was Settlement Officer from the inception of the proceedings in 1892 until the commencement of the recovery of the costs in the year 1896, with but one break of less than nine months—a break necessitated to some extent by failure of health due to the severity of the work. To Mr. Colvin's ability, zeal and foresight the success of our proceedings is in great measure due, and the people of the district are indebted to him for the care with which differences were adjusted between landlord and tenant in matters of the greatest importance to both.

between landlord and tenant in matters of the greatest importance to both.

Of the assistants to the Settlement Officer, Mr. J. H. Kerr, i.c.s, is by far the most prominent, and I venture cordially to endorse Mr. Stevenson-Moore's acknowledgment of the value of "his knowledge of the district and its landowners, his commonsense and unfailing tact" in the solution of all the difficulties of the work. Mr. Kerr has since succeeded Mr. Stevenson-Moore as Settlement Officer in North Bihar, in which responsible capacity his ability and his energy have proved even more notable than in his work in Champaran. Pandit Rama Balabh Misra rendered admirable service in all departments of the work, and Maulvi Syed Ahmad Ali Khan, besides labouring with credit throughout other stages of the settlement proceedings, accomplished the difficult task of settling the differences between the Madhuban Babu and his tenantry thoroughly and well. Babu Hemanto Kumar Maitra proved a good assistant in many ways, and was particularly successful in his conduct of the recovery proceedings, and Maulvi Gholam Ghaus and Babu Hem Chandra Chatterji, whose names will be brought to the spc of the Board in connection with the proceedings in the district of also rendered good service in Champaran. I beg also to identify m the Settlement Officer in his "special acknowledgment" of the lavice and co-operation received from Mr. E. R. Macnaghten, Secretary to the Bihar Indigo Planters' Association, and Mr. J. R. Lowis, Manager of the Bettiah Raj.

I have the honour to be,

SIR.

Your most obedient servant,

P. C. LYON,

Director of the Department of Land Records and Agriculture, Bengah